प्रस्तावना.

प्राचीन कालसे ही साक्षात् चमत्कारदर्शक ज्योतिष शास्त्रका महत्त्व प्रसिद्ध है. इसके दो भाग हैं. पहला फलादेशरूपसे कथित है. दूसरा गणित शास्त्रीय विषयोंकरके प्रतिपादित है. यह गणितशास्त्र बहुतकालतक परिश्रम करनेसे व्युत्पन्न जनोंको समझमें आता है. सूर्यसिद्धान्तसे पञ्चाङ्ग बनानेवालोंके लिये अत्यन्त उपकार करनेवाली मुंबई "श्रीवेङ्कटेश्वर" प्रेसमें ६८ चक्रों सहित "मकरन्दसारिणी" नामक पुस्तक केवल संस्कृतमें छपी है. उसमें प्रतिपादित विषयोंका साधारण संस्कृतज्ञ लोकोंको अनायास ध्यानमें आना कठिन होनेसे और कई कठिन शब्दों (वाटिका, गुच्छ, कन्द आदि) का वास्तविक अर्थ समझमें न आनेके कारण सबको कष्ट होता है यह देखकर सब लोकोंके उपकारके लिये इसपर सरल भाषाटीका होजानेसे बहुत अच्छा होगा इस तरह श्रीमान् मैनेजर चित्तविनोद पुस्तकालय, फर्रुक नगर, जि. गुरुगांवके निवासीजीकी वारंवार प्रेरणासे मैंने अनेक ज्योतिष-ग्रन्थों (ज्योतिष कल्पद्रुमभाषा, पञ्चाङ्गरत्नावली, ग्रहलाघवसारिणी भाषा, स्वरचित अयनांशकल्पद्रुम, गंगाधर बृहत्सारिणीभाषा सोदाहरण इत्यादि) की सहायता लेकर "मकरन्दसारिणी-भाषा सोपपत्ति सोदाहरण" नामक व्याख्या उपपत्ति सहित क्रम और उदाहरण क्षेपक सहित लिखी, अवकाश अत्यन्त कम होनेपर भी ईश्वरकी कृपासे शुद्धतापूर्वक तैयार हुआ है, इसपर भाषाटीका कहीं भी मुद्रित न होनेसे अत्यावश्यक समझकर लिखा है, प्रार्थना है कि विद्वज्जन इसमें प्रतिपादित विषयोंको सूक्ष्मतया ध्यान देकर विचारपूर्वक देखकर मेरे परिश्रमको सफल करें. यदि कहीं कोई विषयकी त्रुटि रह गयी हो तो-"गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः" इस न्यायसे सूचना देकर अनुग्रह करनेसे द्वितीय मुद्रण कालमें सुधार दिया जायगा.

इस पुस्तकका पुनर्मुद्रणादि सर्वाधिकार "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेसके अध्यक्ष खेमराज श्रीकृष्णदासजीके पुत्र श्रीमान् श्रीरङ्गनाथ सेठ तथा आपके कनिष्ठभ्राता श्रीमान् श्रीनिवास सेठ इनके लिये सादर सहर्ष समर्पित करता हूं.

सर्वसज्जनोंका हितैषी-

ज्योतिषी-गंगाधर टंडन,

चौकबाजार-हरदोई (अवध).

श्रीः ।

ग्रन्थकर्त्ताकी जन्मपत्रिकाः—

संवत् १९३५ शाके १८०० कार्तिक कृष्ण १२ बुधे इष्टम् ४१।१५ उत्तराफाल्गुनी ४ चरणे ता. २३ अक्टूबर सन् १८७८ ई.

जन्मलग्नम्.

श्रीः ।

ग्रन्थकर्त्ताके बडे पुत्र चि. हरद्वारीलाल टंडन जो इस समय बी. एस. सी. में पढता है उसकी जन्मपत्रिकाः— श्रीः ।

संवत् १९६२ शाके १८२७ मार्गशीर्ष शुक्ल ४ गुरौ इष्टम् ०।३० उत्तराषाढ १ चरणे सर्वर्क्षम् ५८।५३ गतर्क्षम् २।२६ ता. ३० नवम्बर सन् १९०५ ई.

जन्मलग्नम्. नवांशचक्रम्.
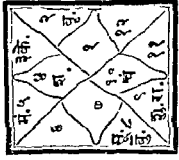
श्रीः ।

ग्रन्थकर्त्ताके छोटे पुत्र चि. हृदयनारायण टंडनकी जन्म पत्रिकाः— श्रीः ।

संवत् १९७४ शाके १८३९ कार्तिक शुक्ल ५ चन्द्रे इष्टम् ३८।३ उत्तराषाढ ३ पे ता. १९ नवंबर.

जन्मलग्नम्.

अब स० १९९० प्रोफेसर लाइसके M SC. LL. B. S' संवत् १९९० में यह नवम कक्षामें पडता है. IN; A. T. C. B. N. S. D. Inter callege Cawnpur. अब संवत् १९९० में यह विश्वम्भरनाथ सनातनधर्म इंटर मिजियट कालिजमें फिजिक्स (साईंस) में लेक्चरर ३ वर्षसे है यह कन्हैयालाल एम्. एस्. सी. एल् एल्. बी. और ए टी. सी. पास है.

विज्ञापन.

सर्व सज्जनोंकी सेवामें प्रकट किया जाता है कि, जो महाशय अपनी जन्मपत्र दिखलाकर आयुभरका संक्षेप फल जानना चाहें तो ११-) या ५१-) का मनी आर्डर भेजकर तथा अपनी जन्मपत्रकी नकल नक्षत्र चरण सहित भेजकर फलादेश जैसा चाहे मंगवा लेवें, यदि स्त्रीकी जन्मपत्र भेजें तो प्रगटकर देवें और जिनको ज्योतिष फलितपर विश्वास नहीं होवे वह नकल जन्मपत्रके साथ उत्तरार्थ टिकट भेजें तो मैं उनको कुछ गुजरा हुआ फल मुफ्तमें लिखकर परीक्षार्थ भेज सक्ता हूं॥

दूसरी बात यह है कि, ज्योतिष फलितके अनुभव किये हुये योग मैंने अबतक नहीं छपवाये हैं जो बहुधा सत्य मिला करते हैं, जिनको थोडा ज्योतिष पढ़ा अर्थात् संज्ञा प्रकरणही जाननेवाला भले प्रकार सीख सक्ता है, जिसकी फीस निम्न लिखित है परंतु प्रथम हमसे दरियाफ्त करके फीसका मनीआर्डर भेजें. क्योंकि ज्योतिष फलितका सिखलाना कभी २ बंदकर दिया जाता है और यह भी बात है कि किसीसे अधिक फीस लिया चाहें या किसीको नहीं सिखलाना चाहें तो हमारी इच्छाकी बात लेखबंद नहीं होसक्ते हैं। अब फीसभी पाहिलेसे बढाई गई है। यथा–संतान कब होगा इसका क्रम बतलानेकी फीस २॥) कितने दिनबाद संतान उत्पन्न हुआ करेगा फीस २॥), विवाह कब होगा २॥) भाग्योदय कब होगा २॥) कबतक अच्छे दिन कबतक खराब दिन रहेंगे २) पढना किस अवस्थातक होगा २॥) प्रथमकी संतान पुत्र या कन्या क्या उत्पन्न होगा २) शरीरमें फोडा चोट आदिका स्थान और समय बतलानेका क्रम ५) बीमारकी जन्मपत्रसे जानना जीवेगा या मरजावेगा २॥) ऊंचेसे गिरनेका योग २) कैद योग १ । ३ । ४ । ६ महीनाकी कैद १ । २ । ३ । ५) वर्षकी कैद तथा कालापानी होनेका योग ५) रंडीबाज (व्यभिचारी) योग

तथा सूजाक बवासीर योग ५) आयुर्दायके बलवर्ष जानना १५) जन्म देश अथवा परदेशमें मृत्युसंभवज्ञान २) इसके अतिरिक्त ज्योतिष गणित पंचांग बनानाभी सिखलाते हैं—

ग्रहलाघव सारिणी अथवा मकरन्दसारिणी द्वारा पंचांग बनाना सिखलानेकी फीस रु. ४१) और गंगाधर बृहत् सारिणीद्वारा सिखलाना फीस ५१) रु. और सिद्धखेटिकासे ग्रहादि बनानेका क्रम सिखलानेकी फीस १५) रु. सिद्धखेटिकासेभी पंचांग बनसकता है॥ इत्यादि इसके अतिरिक्त जो दरियाफ्त करना चाहैं जवाबी कार्ड व्यवहार करें इत्यलम्॥

सर्व सज्जनोंका हितैषी—

(ग्रन्थकर्त्ता—) ज्योतिषी गंगाधरटण्डन,
चौकबाजार- हरदोई (अवध).

ग्रन्थकर्त्ताका वंशवर्णन।

श्रीगणेश शारद सुभग, शिवगिरजा सियराम।
राधाकृष्ण विरञ्च गुरु, इष्टदेव परणाम॥
रवि शशि मङ्गल सौम्य गुरु, भृगु शनि राहू केत।
प्रणवौं शीश भगवानके, दशहूँ गुरू समेत॥
अङ्गिरा ऋषि सन्तानसे, प्रगट भयो निज वंश।
क्षत्री ढाई घरनमें, टण्डन कुल अवतंश॥
पश्चिमसे आवत भये, रहे फरुख आबाद।
खतरम्मा अस्थानमें, आन हुये आबाद॥
शाहजहांपुर पुनि गये, इनमेंसे कछु लोग।
कूँचा लाला ठाममें, वास भयो संयोग॥
मार्गशुक्लपूनौ गुरू, संवत् इकसठ जान।
तब मैं आयो अवधमें, हरदोई अस्थान॥
नाम कहूँ निज वंशको, जो कछु पीढी वृन्द।
टण्डन कुलमें ऊपजे, पञ्जाब राय आनन्द॥
चतुर तनय तिनके भये, सुखानन्द प्रभुलाल।
लाला शिवजी लालजी, और विहारीलाल॥
द्वै सुत शिवजीलालके, लल्तरामराव एक।
अरु दुर्गाप्रसादजी, शशिसम शांति विवेक॥
लल्तराम गृह सुत भये, चाहूमल शुभनाम।
लालाचाहूमल तनय, भूमामल अभिराम॥

लालाधूमामल तनय, प्रगट भये द्वै जात ।
जेठे राजारामजी, गङ्गाधर लघुभ्रात ॥
द्वै सुत राजारामके, वंसीधर बड़ जान ।
गौरीशङ्कर दूसरे, तिन छोटे करमान ॥
गङ्गाधर टण्डन तनय, प्रगटभये द्वै रत्न ।
बड़ हरद्वारीलाल हैं, हृदयनरायणयत्न ॥
गङ्गाधर मम नाम है, हरदोई अस्थान ।
मकरन्दः की सारिणी, भाषा करौं बखान ॥
उपपत्तियुत सरलक्रम, उदाहरण समझाय ।
समयोचित क्षेपक सहित, अच्छी भांति बढ़ाय ॥
संवत् द्वै वसु अङ्क शशि, होली वासर मन्द ।
रचि पुस्तक पूरण करी, गङ्गाधर आनन्द ॥
विद्याको नहिं पार जग, गुणी एकसों एक ।
जो कहुं भूलो होउ मैं, सोधैं गुणी विवेक ॥

विशेष द्रष्टव्य ।

टिप्पणी—तिथ्यादि तिथि, नक्षत्र योगके घटीपल जो स्पष्ट होते हैं उनको प्रायः सूर्योदय कालसे ही जाना करते हैं परन्तु वह प्रातःकाल ६ बजेसे (मध्यमार्कोदय) से होते हैं। स्पष्टार्कोदय(सूर्योदय) से बनानेमें चर संस्कार करना चाहिये। चर संस्कार करनेका यह क्रम है कि सायनार्क मेषादी होय तो चरपलको तिथ्यादिके घटीपलोंमें धन करै और यदि सायनार्क तुलादी होय तो चरपलको तिथ्यादिके घटिकादिमे ऋण करे तब स्पष्ट सूर्योदय से स्पष्ट घटिकादि होती हैं इसका ध्यान अवश्य रखना चाहिये ॥

श्रीः ।

मकरन्दसारिणी–विषयानुक्रमणिका ।
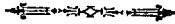
विषय.	पृष्ठांक.	विषय.	पृष्ठांक.
मध्यमतिथिसारिणी	१	ग्रहाणां चरणप्रवेशचक्रम्	४०
तिथिपक्षचालन	२	म.फलम्	४१
तिथिकेन्द्रफलम्	३	प्रत्यंशः क्रान्तिः	४३
मध्यमनक्षत्रसारिणी	५	फलादिशरः	४४
नक्षत्रवृत्तिसाधन	६	चन्द्रदर्शने कर्तव्यता	४५
नक्षत्रकेन्द्रफलम्	७	चन्द्रस्य विक्षेपांगुलादि	४६
योगवृत्तिसाधन	१०	नक्षत्रभोगसाधनम्	४७
योगकेन्द्रफलम्	११	संक्रान्तयः	”
मेषे रविसंक्रमणज्ञानम्	१३	रव्यादीनां राश्यादिसप्तादिनगतयः	४८
मध्यमरविसारिणी	१४	चन्द्रदर्शनसारिणी	”
चन्द्रवाटिका	१५	भौमादीनां वक्रांशाः	४९
चन्द्रकेन्द्रवाटिका	१६	ग्रहाणां गतयः	५०
भौमवाटिका	१७	चरणगत नक्षत्राणि	५३
बुधकेन्द्रवाटिका	१८	उन्नतांशाद्द्वादशांगुलशंकुच्छाया	५४
गुरुवाटिका	१९	नतघटीलंबनम्	५५
शुक्रकेन्द्रवाटिका	२०	सूर्यसौरभम्	५७
शनिवाटिका	२१	चन्द्रसौरभम्	५८
केतोर्वाटिका	२२	भौमसौरभम्	५९
अहर्गणवल्ली	२३	बुधसौरभम्	६०
अंशादिरविफलम्	२७	गुरुसौरभम्	६१
अंशादिचन्द्रफलम्	२८	शुक्रसौरभम्	६२
भौमफलम्	२९	शनिसौरभम्	६३
बुधफलम्	३१	जीर्णपञ्चाङ्गान्नूतनपञ्चाङ्गोत्पत्तिः	६४
गुरोःफलम्	३४	**मकरंदसारिण्याः उदाहरणम्**	**६५**
शुक्रफलम्	३५	संवत्सराद्यानयनम्	८८
शनिफलम्	३७		
ताराग्रहाणां शीघ्रकेन्द्रगतयः	३९		

विषय.	पृष्ठांक.	विषय.	पृष्ठांक.
मकरन्दसारिणी–भाषा ।		सूर्यचन्द्रको स्पष्ट करनेका उदाहरण	१२४
मकरन्दसारिणीका क्रम	९३	गतिस्पष्ट, चन्द्र स्पष्ट	"
तिथि नक्षत्र योग स्पष्ट करनेका क्रम	९४	गति स्पष्ट	१२५
देशान्तर संस्कार क्रम	९५	अयनांश साधन क्रम उदाहरण सहित	"
वर्षमध्ये तिथि नक्षत्र योग स्पष्टकरनेकी रीति	९७	दिनमान साधन क्रम	१२६
सानुपात फल लानेका एक उदाहरण	९८	उदाहरण	"
करण स्पष्ट करनेका चक्र	९९	स्वदेशी दिनमान	१२७
तिथि नक्षत्र योग स्पष्ट करनेका उदाहरण	१००	चरखड बनानेका क्रम	"
वर्ष भरके २४ पक्ष बनानेके निमित्त चक्र	"	अभीष्ट दिनका दिनमान जाननेका उदाहरण	१२८
पञ्चांग लिखनेका क्रम	१०८	चरसाधनके निमित्त चरखड	१२९
बारह महीनोंके नाम	११०	उदयकालीन सूर्य	१३०
ग्रहवल्ली (अहर्गण) बनानेका क्रम तथा मध्यम ग्रह बनानेका क्रम	१११	सूर्यचन्द्रसे तिथि नक्षत्र और योग बनानेका क्रम	"
अहर्गण अर्थात् ग्रह दिनवल्लीकी उपपत्ति	११२	उदाहरण	"
मध्यग्रह (ग्रहवल्ली) बनानेका क्रम	११३	भौमादि पंचतारा स्पष्ट करनेका क्रम	१३४
वल्लीद्वारा वाटिकासे मध्यमग्रह बनानेका क्रम	११५	पचतारा स्पष्ट करनेका उदाहरण	१३६
इसका उदाहरण	११७	च. नं. ३२ द्वारा बुधस्पष्ट	१३९
ग्रहोंको स्पष्ट करनेका क्रम	१२२	च. नं. ३३ से गुरुस्पष्ट	१४१
सूर्यचंद्रकी गतिस्पष्ट करनेका क्रम	१२३	चक्र न. ३४ द्वारा शुक्रस्पष्ट	१४३
		स्थूल सूर्यादिक ग्रह स्पष्ट करनेका क्रम	१४६

विषय.	पृष्ठांक	विषय.	पृष्ठांक.
सौरभोपारि ग्रह स्पष्ट करनेका उदाहरण	१४८	स्पर्शकाल और मोक्षकाल जाननेका क्रम	१६४
अक्षांश बनानेका क्रम उदाहरण सहित	१५४	अयन वलन साधनकी रीति	,,
स्वदेशीय लग्न प्रमाण बनानेका क्रम उदाहरणसहित	,,	मध्यनत जाननेका क्रम	१६५
लङ्कोदयमान तथा स्वदेशीय लग्नमाण	१५५	अक्षवलन साधनकी रीति	,,
तात्कालिक लग्नस्पष्ट करनेकी रीति	१५६	ग्रासांग्रि तथा खग्रासांग्रि जाननेका क्रम	,,
चन्द्रदर्शनज्ञानक्रम	१५७	सूर्यग्रहणके गणितका क्रम	१६६
भौमादि पच ताराओंका उदयास्त तथा मार्गी वक्री आरम्भ होनेका समय जाननेका क्रम	१५८	स्पर्श मोक्षकाल जाननेका क्रम	१६७
राशिचार तथा नक्षत्रचरण प्रवेश समय जाननेका क्रम उदाहरण सहित	१५९	खग्रासक्रम	१६८
अश्विन्यादिनक्षत्रोंका उदय मध्य क्रम होनेपर लग्न ज्ञान क्रम उदाहरण सहित	१६०	सूर्यग्रहणमे सूर्यग्रास जाननेकी अन्य सरल रीति	१६९
ग्रहणसंभवज्ञान	,,	सूर्य चन्द्र ग्रहणकी स्पर्शदिशा मध्यदिशा मोक्षदिशा जाननेका क्रम	,,
सूर्य चन्द्र ग्रहण स्पष्ट करनेका ग्रहलाघवीयक्रम	१६२	मकरन्दीय ग्रहण गणित	१७०
ग्रहणकी मध्यस्थिति तथा खग्रासकी मर्दस्थिति जाननेका क्रम	१६३	मध्यस्थिति साधन क्रम	१७१
स्पर्शस्थिति मोक्षस्थिति तथा स्पर्श मर्द मोक्ष मर्द बनानेका क्रम	१६४	सूर्यग्रहण साधनक्रम	,,
		सूक्ष्मक्रातिसाधन क्रम	१७२
		शरसाधनक्रम	,,
		सूर्य चन्द्र ग्रहणका उदाहरण	,,
		ग्रहण गणित आरम्भ	१७३
		मध्यस्थिति तथा खग्रासकी मर्दस्थिति	१७४
		चन्द्रग्रहणका स्पर्शकाल और मोक्षकाल सम्मीलन तथा उन्मीलन काल	१७५
		अयनवलन	,,
		मध्यनत, अक्षवलन	१७६

विषय.	पृष्ठांक.	विषय.	पृष्ठांक.
वलनांग्रि	१७६	सूर्यकोभी स्पर्शकालीन	१८८
ग्रासांग्रि तथा खमासांग्रि	”	स्पर्शकाल और मोक्षकाल	१८९
ग्रहणकी दिशा जाननेके लिये आकृति	१७७	मकरन्दसारिणी द्वारा सूर्य-ग्रहणका उदाहरण	१९०
मकरन्दके अनुसार चन्द्रग्रहणके गणितका उदाहरण	७८	अमांतकालीन लग्न	१९२
ग्रहण गणितका उदाहरण	१७९	सूर्यग्रहणकी आकृति	१९८
चन्द्रशर	”	मकरन्द ग्रहलाघवीय अंतर सारिणी	२००
सूर्यग्रहणका उदाहरण	१८०	संवत्सर प्रवेश ज्ञानविधि उदाहरण	२०३
उदयकालीन ग्रह	१८२	संवत्सरज्ञानचक्रम्	२०६
सूर्य चन्द्रसे तिथि स्पष्ट	१८३		
मध्यस्थिति	१८७		

इति विषयानुक्रमणिका समाप्ता ।

श्रीगणेशाय नमः ।

मकरन्दसारिणी ।

श्रीसूर्य्यसिद्धान्तमतेन सम्यग्विश्वोपकाराय गुरुप्रसादात् ।
तिथ्यादिपत्रं वितनोति काश्यामानन्दकन्दो मकरन्दनामा ॥१॥

मध्यमतिथिसारिणी । चक्र नं. १ ॥

शकाद्यन्तर वर्ष १६ ।तिथिकन्दे काश्यां वारादौ देशान्तरं धनम् ।०।०।४७ पल ॥

शाका०	१५५४	१५७०	१५८६	१६०२	१६१८	१६३४	१६५०	१६६६	१६८२	१६९८	१७१४	१७३०	१७४६
तिथि	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	००	२७	२४	२१
वार	५	४	३	२	१	०	०	६	५	४	३	२	१
घटि	२६	३२	३९	४५	५१	५७	३	१०	१६	२२	२८	३४	४१
पल	४५	५७	९	२१	३३	४५	५७	९	२१	३३	४५	५७	९
वार्षि	५४	०	५	११	१६	२२	२७	३३	३८	४४	४९	५५	०
घटि	३६	६	३७	७	३७	७	३८	८	३८	९	३९	९	३९
पल	३४	५१	०८	२५	४२	५९	१६	३३	५०	७	२४	४१	५८

शाका०	१७६२	१७७८	१७९४	१८१०	१८२६	१८४२	१८५८	१८७४	१८९०	१९०६	१९२२	१९३८	१९५४
तिथि	१८	१५	१२	९	६	३	००	२७	२४	२१	१८	१५	१२
वार	०	६	५	५	४	३	२	१	०	६	५	४	४
घटि	४७	५३	५९	५	१२	१८	२४	३०	३६	४३	४९	५५	१
पल	२१	३३	४५	५७	९	२१	३३	४५	५७	०९	२१	३३	४५
वार्षि	६	११	१७	२२	२८	३३	३९	४४	५०	५५	१	६	१२
घटि	१०	४०	१०	४१	११	४१	११	४२	१२	४२	१३	४३	१३
पल	१५	३२	४९	६	२३	४०	५७	१४	३१	४८	०५	२२	३९

शाकावशेषः । चक्र नं २ ॥

कोष्ठ०		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
तिथि		११	२२	३	१४	२५	६	१७	२८	९	२०	१	१२	२३	४	१५	२७
कन्द	वा०	१	२	३	४	५	०	१	२	३	४	६	०	१	२	३	६
	घ०	११	२३	३५	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५६	८	२०	३२	४३	५५	६
	प०	४२	२३	५	४७	२८	१०	५२	३४	१५	५७	३८	२०	२	४३	२५	१२
घाती		१५	३०	४५	०	१६	३१	४६	१	१६	३२	४७	२	१७	३२	४८	५
कन्द		१२	२५	३७	५०	३	१५	२८	४०	५३	५	१८	३१	४३	५६	८	३०
		३६	१२	४८	२४	००	३५	१०	४६	२२	५८	३४	९	४५	२१	५७	१७

मन्यादौ शाकोऽयम् १४०० ॥

तिथिपक्षचालन। चक्र नं. ३ ॥

तिथिगुच्छाः गुच्छाङ्क कोष्ठान्तरषष्टि ६० शुद्धं तिथिभक्तं फलमृणम् ॥

को॰	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
गुच्छः	००	००	१	२	२	३	४	५	५	६	००	१	१	२	३	४	४	५	६	०	१	१	२	३	४	५	५	६		
	००	४५	३०	१४	५८	४२	२५	८	५१	३५	१९	४	४९	३५	२२	९	५७	४५	३४	२२	११	५९	४७	३५	२१	७	५३	३८		
	००	४३	३२	५६	४३	१४	२४	३६	५८	४०	४७	२१	४८	४७	२५	३७	२४	५०	१०	५४	२८	४२	४७	५	५०	५५	१६	१६		
तिथि॰	००	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	१			
चालनं	५७	००	२	४	५	७	७	६	५	३	१	५८	५६	५३	५१	४८	४६	४६	४५	४५	४६	४८	५०	५३	५५	५८	००			
ऋणम्॰।	८	४६	२४	५२	५६	२०	१२	३२	१२	३२	१२	४४	४	२८	१२	५२	१६	४०	४	४४	३६	२४	३२	००	४०	३६	००			
[illegible]	००	३२	४	३६	८	४०	१२	४४	१६	४८	२०	५२	२५	५७	२९	१	३३	६	३८	१०	४२	१५	४७	१९	५१	२३	५५	२८		
	००	८	१५	२१	२५	२९	३२	३५	३९	४३	४८	५५	२	१२	२२	३४	४७	२	१६	३१	४६	१	१४	२६	३७	४७	५४	२		
	००	२३	२१	८	३२	२३	२८	४०	११	६	२६	१	५८	१	३१	३३	४६	१५	३४	४९	४०	१	२४	३९	३२	००	५५	२५		
वृ॰	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२			
चालन	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	९	८	८	८	८	८	८	८	८			
धनम्	३३	२७	२३	१७	१५	१२	१२	१४	१५	२०	२५	३१	३६	४२	४८	५२	५७	५७	१	५९	५७	५३	४९	४३	३७	३१	२५			
	३२	५२	८	३६	२४	२०	४८	४	००	४०	४०	८	५२	००	८	५२	५६	१६	००	२४	२४	३२	००	३२	५२	४०	००			

वह्नीकोष्ठकानन्तरं तिथिभक्तं फलं धनम् ॥

॥ तिथि सौरभम् ॥

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१२	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
घ ००	२४	२७	३०	३३	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४७	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४८	४७	४६	४५	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	२९	२७
	५७	५०	४१	२७	३	३२	४९	५३	३९	१२	३४	३३	१८	४४	५४	४७	२५	४५	५४	४९	३०	३	२२	३२	३४	३२	१८	२	४२	२०
घ ६	२५	२८	३०	३३	३६	३८	४१	४३	४४	४६	४७	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४८	४७	४६	४५	४३	४२	४०	३८	३६	३४	३१	२९	२७
	१५	८	५८	४३	१९	४७	२	५	४९	२१	४१	३८	२२	४६	५४	४६	२२	४१	४८	४२	२२	१४	११	२१	२२	१८	५	४९	२८	६
घ १२	२५	२८	३१	३४	३६	३९	४१	४३	४४	४६	४७	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४८	४७	४६	४५	४३	४२	४०	३८	३६	३३	३१	२९	२६
	३३	२५	१५	००	३४	००	१५	१६	५८	३०	४८	४३	२५	४७	५३	४४	१९	२७	४२	३६	१४	४४	१	१०	१०	३	५२	३५	१४	५२
घ १८	२५	२८	३१	३४	३६	३९	४१	४३	४५	४६	४७	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४८	४७	४६	४५	४३	४१	३९	३७	३५	३३	३१	२९	२६
	५०	४३	३२	१५	५०	१४	२८	२७	८	३८	५५	४८	२८	४७	५३	४२	१५	३२	३६	२७	५	३५	५०	५८	५८	५०	३८	२१	००	३८
घ २४	२६	२९	३१	३४	३७	३९	४१	४३	४५	४६	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४८	४७	४६	४४	४२	४१	३९	३७	३५	३३	३१	२८	२६
	७	००	४९	३१	४	२८	४१	३८	१७	४६	१	५३	३१	४८	५२	४०	११	२७	३०	१९	५७	२५	३९	४६	४६	३७	२५	६	४६	२६
घ ३०	२६	२९	३२	३४	३७	३९	४१	४३	४५	४६	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४८	४७	४६	४४	४३	४१	३९	३७	३५	३३	३०	२८	२६
	२४	१६	५	४६	१९	४७	५३	४८	२८	५५	७	५७	३२	५०	५१	३८	७	२२	२४	१२	४८	१५	२८	३४	३३	२४	११	५३	३२	९
घ ३६	२६	२९	३२	३५	३७	३९	४२	४४	४५	४७	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४८	४७	४६	४४	४३	४१	३९	३७	३५	३२	३०	२८	२५
	४२	३३	२२	२	३४	५६	६	००	३६	३	१२	२	३६	५१	५०	३६	३	१७	१७	३	३९	५	१७	२२	२१	११	५८	३९	१८	५५
घ ४२	२७	२९	३२	३५	३७	४०	४२	४४	४५	४७	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४८	४८	४७	४५	४४	४२	४१	३९	३७	३४	३२	३०	२८	२५
	००	५०	३८	१७	४८	९	१८	१०	४५	११	१८	६	३८	५२	५०	३४	५८	१३	१०	५५	३०	५४	६	१०	८	५७	४४	२५	३	४०
घ ४८	२७	३०	३२	३५	३८	४०	४२	४४	४५	४७	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४८	४८	४७	४५	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२७	२५
	१६	७	५५	३३	३	२३	३०	२०	५४	१९	२३	१०	४०	५३	४८	३१	५४	६	३	४७	२१	४४	५५	५८	५५	४५	३०	११	४८	२६
घ ५४	२७	३०	३३	३५	३८	४०	४२	४४	४६	४७	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४८	४८	४६	४५	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	२९	२७	२५
	३३	२४	११	४८	१८	३७	४२	३०	३	२७	२८	१४	४२	५३	४८	२८	५०	००	५६	३८	१२	३३	४४	४४	४२	३०	१६	५७	३५	१२

॥ तिथि सौरभम् ॥

को०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	का०
	३४	२२	२०	१७	१५	१३	११	९	७	५	४	३	२	१	००	००	००	००	००	१	२	३	५	७	९	११	१३	१६	१९	२२	ग०
	५७	३४	१२	५७	३६	२५	२०	२२	३२	५१	२४	५	००	९	२९	७	००	१०	३६	२१	२०	४३	१५	१	५	२२	५१	२७	१२	४	
६	२४	२२	१९	१७	१५	१३	११	९	७	५	४	२	१	१	०	००	००	००	००	१	२	३	५	७	९	११	१४	१६	१९	२२	घ
	४२	१९	५७	३८	२२	१२	८	१०	२१	४२	१५	५८	५४	४	२६	६	००	१२	४०	२५	२७	५१	२४	१२	१८	३६	६	४३	३०	२१	६
१२	२४	२२	१९	१७	१५	१२	१०	९	७	५	४	२	१	१	००	००	००	००	००	१	२	४	५	७	९	११	१४	१७	१९	२२	घ
	२८	५	४३	२४	९	५९	५६	००	१०	३४	७	५१	४८	००	२३	[illegible]	१	१४	४४	३१	३५	००	३४	२४	३१	५१	२१	००	४६	३८	१२
१८	२४	२१	१९	१७	१४	१२	१०	८	७	५	४	२	१	००	००	००	००	००	००	१	२	४	५	७	९	१२	१४	१७	२०	२२	घ
	१४	५१	२८	१०	५६	४७	४४	४९	००	२६	००	४४	४२	५६	२०	४	२	१६	४८	३१	४५	९	४४	३६	४५	६	३७	१६	४	५४	१८
२४	२४	२१	१९	१६	१४	१२	१०	८	६	५	३	२	१	००	००	००	००	००	००	१	२	४	५	७	९	१२	१४	१७	२०	२३	घ
	००	२७	१५	५६	४२	३४	२२	३७	४९	११	५१	३७	३७	५१	१८	४	३	१८	५२	४१	५१	१८	५४	४८	५८	२०	५२	३२	२१	१२	२४
३०	२३	२१	१९	१६	१४	१२	१०	८	६	५	३	२	१	००	००	००	००	००	००	१	३	४	६	८	१०	१२	१५	१७	२०	२३	घ
	४५	२३	१	४३	३०	२१	२०	२६	३९	६	४३	३०	३२	४७	१६	३	४	२१	५७	४५	००	२८	६	१	१२	३५	८	४९	३८	३०	३०
३६	२३	२१	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	४	३	२	१	००	००	००	००	००	१	१	३	४	६	८	१०	१२	१५	१८	२०	२२	घ
	३०	८	४७	३०	१७	८	८	१५	२९	५६	३५	२४	२७	४३	१४	२	५	२३	१	५३	८	३७	१६	१३	२६	५१	२३	५	५४	४७	३६
४२	२३	२०	१८	१६	१४	११	९	८	६	४	३	२	१	००	००	००	००	००	१	२	३	४	६	८	१०	१३	१५	१८	२१	२४	घ
	१५	५४	३३	१७	४	५६	५५	४	१८	४९	२७	१८	२२	३९	१२	१	६	२६	६	००	१६	४६	२७	२६	४०	५	३९	२२	११	४	४२
४८	२३	२०	१८	१६	१३	११	९	७	६	४	३	२	१	००	००	००	००	००	१	२	३	४	६	८	१०	१३	१५	१८	२१	२४	घ
	००	४०	१९	२	५१	४४	४४	५३	१०	४२	२०	१२	१७	३५	१०	१	७	२९	११	६	२४	५६	३८	३९	५४	२०	५४	३९	२९	२२	४८
५४	२२	२०	१८	१५	१३	११	९	७	६	४	३	२	१	००	००	००	००	००	१	२	३	५	६	८	११	१३	१६	१८	२१	२४	घ
	४५	२६	५	४८	३८	३३	३३	४२	००	३२	१२	६	१३	३१	८	००	८	३२	१६	१२	३२	५	४९	५२	७	५	११	५६	४६	३९	५४

मध्यमनक्षत्रसारिणी । चक्र नं. ५ ॥

नक्षत्रकन्दे काश्यां वारादौ देशान्तरं घनम् ०।०।४७ ॥

शक०	नक्षत्राणि	वार घटि पल	वक्री०
१५९२	१६	२ ३४ ४१	१० ४० ३३
१६१६	१२	४ ४७ २४	१९ ३ ९
१६४०	८	६ ५९ ५९	२७ २५ ४५
१६६४	४	२ १२ ३४	३५ ४८ २१
१६८८	२७	४ २५ ९	४४ १० ५७
१७१२	२३	६ ३७ ४३	५२ ३३ ३३
१७३६	१९	१ ५० १८	०० ५६ ९
१७६०	१५	४ २ ५३	९ १८ ४५
१७८४	११	६ १५ २८	१७ ४१ २१
१८०८	७	१ २८ ३	२६ ३ ५७
१८३२	३	३ ४० ३८	३४ २६ ३३
१८५६	२६	५ ५३ १३	४२ ४९ ९
१८८०	२२	१ ५ ४८	५१ ११ ४५
१९०४	१८	३ १८ २३	५९ ३४ २१
१९२८	१४	५ ३० ५८	७ ५६ ५७
१९५२	१०	०० ४३ ३३	१६ १९ ३३
१९७६	६	२ ५६ ८	२४ ४२ ९

नक्षत्रशकावशोपितकोष्ठकाः । चक्र न. ६ ॥

कोष्ठक	नक्षत्रा०	वारादिकम्	घली०
१	१०	१ १८ ३	१५ २६ २७
२	२०	२ ३६ ६	३० ५२ ५४
३	३	३ ५४ १०	४६ १९ २१
४	१२	५ १२ १३	१ ४५ ४८
५	२३	६ ३० १६	१७ १२ १५
६	६	० ४८ १९	३२ ३८ ४२
७	१	२ ६ २२	४८ ५ ९
८	२६	३ २४ २६	३ ३१ ३६
९	९	४ ४२ २९	१८ ५८ ३
१०	१९	६ ०० ३२	३४ २४ ३१
११	२	०० १८ ३६	४९ ५० ५८
१२	१२	१ ३६ ३९	५ १७ २५
१३	२२	२ ५४ ४२	२० ४३ ५२
१४	५	४ १२ ४५	३६ १० १९
१५	१५	५ ३० ४८	५१ ३६ ४६
१६	२४	५ ४८ ९	४ ५१ ००
१७	७	० ६ १२	२० १७ २७
१८	१७	१ २४ १५	३५ ४३ ५४
१९	००	२ ४२ १९	५१ १० २१
२०	१०	४ ०० २२	६ ३६ ४८
२१	२०	५ १८ २५	२२ ३ १५
२२	३	६ ३६ २८	३७ २९ ४२
२३	१३	०० ५४ ३२	५२ ५६ ९
२४	२३	२ १२ ३५	८ २२ ३६

नक्षत्रगुच्छाः ॥ वारान् विहाय गुच्छाङ्ककोष्ठकान्तरं सप्तविंशतिभक्तं फलं धनम् ॥

	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	२७००	००००
गुच्छा	०० ०० ००	६ २० १०	५ ४० १८	४ ५९ ४९	४ १९ ००	३ ३७ ४४	२ ५६ ३	२ १४ ३७	१ ३३ ००	०० ५१ २८	०० १० ४७	६ ३० २४	५ ५० २४	५ १० ३३	४ ३० ४५	गुच्छा	०००० ००००
चालन धनम्	०० ४४ ४८ ५३ २०	०० ४४ ४४ २६ ४०	०० ४३ २२ १३ २०	०० ४२ ३७ ४७ ००	०० ४१ ३८ ०० ००	०० ४० ४२ १३ २०	०० ४१ १५ ३२ २०	०० ४१ ५१ ६ ४०	०० ४१ २ १३ ००	०० ४२ ५६ ०० ००	०० ४३ ३६ ०० ००	०० ४४ २७ ०० ००	०० ४४ ४६ ४० ००	०० ४४ ५३ २० ००	०० ४४ ४५ ०० ००	चालन धन घट्यादि	०००० ००००
वल्ली	०० ०० ००	५९ ३१ २७	५९ २ ५१	५८ ३२ ५४	५८ २ १२	५७ ३० ३३	५६ ५९ ००	५६ २६ ००	५५ ५३ ३०	५५ २१ १५	५४ ५० ५२	५४ २१ ७	५३ ५२ १४	५३ २३ ३७	५२ ५४ २९	वल्ली	०००० ००००
वल्ली चालनं धनम्	२ १२ १६ ३३ २०	२ १२ १६ २६ ४०	२ १२ १२ २६ ४०	२ १२ ११ ४७ ००	२ १२ १० ०० ००	२ १२ ९ ५३	२ १२ ७ ००	२ १२ ८ ००	२ १२ ८ ४२ ०० ४०	२ १२ १२ ७ ०	२ १२ १४ ००	२ १२ १६ ००	२ १२ १६ ००	२ १२ १६ ००	२ १२ १६ ००	वल्ली चालन धनम्	०००० ००००

वल्लीकोष्ठकान्तरं सप्तविंशतिभक्तं धनम् ॥

नक्षत्रकेन्द्रफलम्। चक्र न ८ ॥

॥ नक्षत्रसौरभम् ॥

घे०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	
०	२३ ४	२५ ४३	२८ २०	३० ५२	३३ १६	३५ ३३	३७ ३०	३९ ३४	४१ १४	४२ ३०	४३ ५५	४४ १०	४५ ३३	४५ ५८	४६ ८	४६ २	४५ ४३	४५ ७	४४ २१	४३ १७	४२ ८	४० ४८	३९ १५	३७ ३४	३५ ४४	३३ ४९	३१ ४७	२९ ५०	२७ ३०	२५ १८	० घ०
६	२३ २०	२५ ५९	२८ ३५	३१ ७	३३ ३०	३५ ४६	३७ ५१	३९ ४५	४१ २३	४२ ४७	४४ १	४४ ५५	४५ ३७	४६ ००	४६ ८	४६ १	४५ ४०	४५ ३	४४ १६	४३ ११	४२ १	४० ४०	३९ ५	३७ २४	३५ ३३	३३ २६	३१ ३५	२९ २७	२७ १७	२५ ५	६ घ०
१२	२३ ३६	२६ १५	२८ १०	३१ २२	३३ ४४	३६ ००	३८ ३	३९ ५५	४१ ३२	४२ ५५	४४ ७	४५ ००	४५ ४०	४६ १	४६ ७	४६ ००	४५ ३७	४५ ००	४४ १०	४३ ०४	४१ ५३	४० ३१	३८ ५२	३७ ११	३५ २२	३३ २४	३१ २२	२९ १४	२८ ४	२४ ५२	१२ घ०
१८	२३ ५२	२६ ३१	२९ ६	३१ ३६	३३ ५८	३६ १२	३८ १५	४० ६	४१ ३१	४२ ३	४४ १३	४५ ५	४५ ४३	४६ २	४६ ७	४५ ५८	४५ ३४	४४ ५५	४४ ४	४२ ७	४१ ४६	४० २२	३८ ४५	३७ २	३५ १०	३३ १२	३१ ९	२९ १	२६ ५१	२४ ३९	१८ घ०
२४	२४ ८	२६ ४३	२९ २१	३१ ५२	३४ १२	३६ २५	३८ २६	४० १६	४१ १०	४३ ११	४४ २०	४५ ८	४५ ४६	४६ ३	४६ ६	४५ ५६	४५ ३१	४४ ५०	४३ ५७	४२ ५०	४१ ३८	४० १३	३८ ३५	३६ ५१	३४ ५८	३३ ००	३० ५७	२८ ४८	२६ ३८	२४ २६	२४ घ०
३०	२४ २४	२७ ३	२९ ३६	३२ ७	३४ ३५	३६ ३७	३८ ३८	४० २९	४१ ४९	४३ १८	४४ २६	४५ १२	४५ ४८	४६ ४	४६ ६	४५ ५५	४५ २७	४४ ४५	४३ ५०	४२ ४३	४१ ३०	४० ३	३८ २५	३६ ४०	३४ ४७	३२ ४८	३० ४४	२८ २५	२६ २४	२४ १३	३० घ०
३६	२४ ४०	२७ १८	२९ ५२	३२ २१	३४ ३८	३६ ५०	३८ ५०	४० ३६	४२ ७	४३ २५	४४ ३१	४५ १७	४५ ५०	४६ ५	४६ ५	४५ ५३	४५ २४	४४ ४०	४३ ४४	४२ ३६	४१ २२	३९ ५४	३८ १५	३६ २९	३४ ३६	३२ ३५	३० २२	२८ १२	२६ १०	२३ ५८	३६ घ०
४२	२४ ५६	२७ ३४	३० ७	३२ ३४	३४ ५३	३७ ३	३९ १	४० ४५	४२ १५	४३ ३३	४४ ३६	४५ २१	४५ ५२	४६ ६	४६ ५	४५ ५१	४५ १९	४४ ३६	४३ ३७	४२ २८	४१ १४	३९ ४५	३८ ५	३६ १८	३४ २४	३२ २४	३० १९	२८ ९	२५ ५८	२३ ४४	४२ घ०
४८	२५ १२	२७ ४९	३० २२	३२ ४८	३५ ६	३७ १५	३९ १२	४० ५५	४२ २३	४३ ४१	४४ ४१	४५ २५	४५ ५४	४६ ७	४६ ४	४५ ४८	४५ १५	४४ ३१	४३ ३०	४२ २२	४१ ५	३९ ३५	३७ ५५	३६ ७	३४ १२	३२ १२	३० ६	२७ ५५	२५ ४४	२३ ३१	४८ घ०
५४	२५ २८	२८ ५	३० ३७	३३ २	३५ १९	३७ २७	३९ २३	४१ ४	४२ ३१	४३ ४९	४४ ४६	४५ २९	४५ ५६	४६ ८	४६ ४	४५ ४६	४५ ११	४४ २६	४३ २४	४२ १५	४० ५६	३९ २५	३७ ४५	३५ १५	३४ ००	३२ ००	२९ ५३	२७ ४३	२५ ३२	२३ १८	५४ घ०

	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	
००	२३	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	६	४	२	१	१	००	००	००	००	००	१	२	३	४	६	८	१०	१२	१५	१७	२०	००
	४	५०	२८	२८	२१	२०	२४	३४	५१	१९	००	५१	४७	१	१५	५	००	१०	३५	१८	१३	१९	१४	३४	२९	३५	५२	१६	४८	२५	प०
६	२२	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	५	३	२	१	००	००	००	००	००	००	१	२	३	५	६	८	१०	१३	१५	१८	२०	६
	५०	३६	२५	१५	८	८	१२	२३	४७	११	५३	४४	४२	१७	२२	४	००	१२	३८	१२	१०	३६	४	४५	४१	४२	६	३१	३	४०	प०
१२	२२	२०	१८	१६	१३	११	१०	८	६	५	३	२	१	००	००	००	००	००	००	१	२	३	५	६	८	११	१३	१५	१८	२०	१२
	३७	२२	१२	२	५६	५६	१	१३	३३	३	४६	३७	३७	१३	१०	४	१	१५	३३	२७	२७	४१	१३	५१	४४	२	२०	४६	१९	५७	प०
१८	२२	२०	१७	१५	१३	११	९	८	६	४	३	२	१	००	००	००	००	००	००	१	२	३	५	७	९	११	१३	१६	१८	२१	१८
	२४	१०	५९	४९	४४	४४	५०	३	२३	५४	३९	३०	३२	४९	१७	३	२	१६	४७	३१	३५	४३	१२	७	५	१४	३४	१	३४	१२	प०
२४	२२	१९	१५	१५	१३	११	९	७	६	४	३	२	१	००	००	००	००	००	००	१	२	४	५	७	९	११	१३	१६	१८	२१	२४
	१०	५७	४६	३६	३१	३२	३९	५३	१४	४६	३२	२४	२७	४५	१५	२	३	१८	४१	३७	४१	१	३२	१८	१९	२९	४८	१६	५०	२८	प०
३०	२१	१९	१७	१५	१३	११	९	७	६	४	३	२	१	००	००	००	००	००	००	१	२	४	५	७	९	११	१४	१६	१९	२१	३०
	५६	४४	३३	२४	२०	२१	२८	४३	५	३८	२५	१८	२३	४१	१३	२	४	२०	४६	४२	५०	९	४२	३०	३१	४२	३	३१	६	४४	प०
३६	२१	१९	१७	१५	१३	११	९	७	५	४	३	२	१	००	००	००	००	००	१	१	२	४	५	७	९	११	१४	१६	१९	२२	३६
	४३	३१	२०	११	८	१०	१७	३३	५५	३०	१८	१२	१८	३७	११	१	५	१२	१	४२	५७	१८	१२	४१	४५	५६	१७	४६	२१	००	प०
४२	२१	१९	१७	१६	१२	१०	९	७	५	४	३	२	१	००	००	००	००	००	१	१	३	४	६	७	९	१२	१४	१७	१९	२२	४२
	३०	१७	७	००	५६	५८	६	२३	४६	२२	११	४	१३	३४	१०	१	६	१५	४	५५	५	२७	२	५३	५३	१०	३१	१	३७	१३	प०
४८	२१	१९	१६	१४	१२	१०	८	७	५	४	३	१	१	००	००	००	००	००	१	२	३	४	६	८	१	१२	१४	१७	१९	२२	४८
	१७	४	१५	४६	४४	४६	५५	१३	३७	१५	४	५८	८	३१	८	००	७	२८	८	१	१३	३६	१३	५	८	२४	४६	१६	५३	३२	प०
५४	२१	१८	१६	१४	१२	१०	८	७	५	४	२	१	१	००	००	००	००	००	१	२	३	४	६	८	१०	१२	१५	१७	२०	२२	५४
	२	५१	४१	३३	३२	३५	४५	३	२८	७	५७	५२	५	२८	६	००	८	३१	१८	७	२१	३५	१३	१७	२२	२८	१	३२	८	४८	प०

योगकन्दे काइयां वारादौ देशान्तरं धनम् ।०।०।४७ ॥ चक्र नं. ९

१५२०	१५४४	१५६८	१५९२	१६१६	१६४०	१६६४	१६८८	१७१२	१७३६	१७६०	१७८४	१८०८	१८३२	१८५६	१८८०	१९०४	शकः
१	२४	२०	१६	११	८	४	००	२३	१९	१५	११	७	३	२६	२२	१८	योग०
२	५	००	२	४	००	२	४	६	१	४	६	१	३	५	१	३	वारादि०
५९	११	२४	३७	४९	२	१४	२७	३९	५२	५	१७	३०	४२	५५	८	२०	
१६	५१	२६	१	३६	११	४६	२१	५६	३१	६	४१	१६	५१	२६	१	३६	
४५	५३	२	१०	१९	२७	३५	४४	५२	००	९	१७	२६	३४	४२	५१	५९	घटी
३४	५६	१९	४१	४	२७	४९	१२	३४	५७	२०	४२	५	२७	५०	१३	३५	
२	३८	१४	५०	२६	२	३८	१४	५०	२६	२	३८	१४	५०	२६	२	३८	

योगशकाविशोपितकोष्ठकाः । चक्र नं. १०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	कोष्ठकाः
१०	२०	३	१३	२६	६	१६	२६	९	१९	२	१२	२२	५	१५	२४	७	१७	००	१०	२०	३	१३	२३	योगः
१	२	३	५	६	००	२	३	४	५	००	१	२	४	५	५	००	१	२	४	५	६	००	२	वारादिः
१७	३५	५३	११	२९	४७	५	२३	४०	५८	१६	३४	५२	१०	२८	४९	७	२५	४३	१	१८	३६	५४	१२	
५१	४६	३८	३१	२३	१६	९	२	५४	४७	४०	३३	२५	१८	१०	३३	२६	१८	११	४	५६	४९	४२	३५	
१५	३०	४६	१	१७	३२	४८	३	१८	३४	४९	५	२०	३६	५१	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५२	८	घटी
२६	५२	१८	४४	१०	३६	२	२८	५४	२०	४६	१२	३०	४	३१	५४	२०	४६	१२	३८	४	३०	५६	२२	
४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४९	५३	५७	१	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	

योगगुच्छाः ॥ गुच्छाङ्क कोष्ठकान्तरं खतर्काग्नि (३६०) तोविशुद्धं सप्तविंशतिभक्तं फलमृणम् ॥

योगः	००	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	काष्ठाः
० ० ० ०	०० ०० ००	४ २७ २४	१ ५६ २६	६ २५ ५७	३ ५५ ८	१ २३ १६	५ ४९ ५२	३ १४ ४२	०० ३५ ४५	४ ५९ २८	२ २० २८	६ ४१ ३६	४ ३ ४२	१ २७ १५	५ ५२ ३१	३ १८ ५०	वाय्वादिका-क्षेपक
० ० ० ०	३ २५ ४७	३ २२ ९	३ २१ ४	३ २१ ४९	३ २४ ९	३ २७ ३३	३ ३१ २९	३ ३५ २७	३ ३८ २४	३ ४० ००	३ ३९ ४२	३ ३७ ३३	३ ३४ २०	३ ३० ३१	३ २७ ११	३ २८ ११	चालनं ऋणम्
० ० ० ०	० ० ०	५५ २५ ५५	५० ५५ २४	४६ २५ ५२	४१ ५५ ३७	३७ २३ १२	३२ ४७ ४७	२८ ७ १५	२३ २४ ४	१८ ३७ ४४	१३ ४९ ५०	९ २ १४	४ १६ ४४	५९ ३३ ४७	५४ ५५ ८	५० २४ ८	वल्लीक्षेपकाः
० ० ० ०	२ ३ १३	२ ३ १६ ३८	२ ३ २१	२ ३ १९	२ ३ १५	२ ३ ७	२ २ ५६	२ २ ४९	२ २ ४४	२ २ ४०	२ २ ४१	२ २ ४६	२ २ ५१	२ ३ १	२ ३ १८	२ ३ ००	चालनं धनम्
० ० ० ०	८ ५३ २०	वल्लीकोष्ठकान्तरं सप्तविंशति भक्तं फलं धनम् ॥															

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	का
११	२३	२६	२८	३०	३३	३४	३६	३८	३९	४०	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४१	४०	३९	३८	३६	३५	३३	३१	२९	२७	२५	२३	०
२७	५४	१८	३९	५३	००	५७	४३	१७	३५	४७	३९	१९	४२	५४	५०	३१	००	१७	२२	१५	१	३४	००	१८	२०	३५	३७	३४	३३	
११	२४	२६	२८	३१	३३	३५	३६	३८	३९	४०	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४१	४१	४०	३९	३७	३६	३४	३३	३१	२९	२७	२५	२३	६
४२	९	३४	५१	६	१२	८	५३	२५	४३	५२	४४	२२	४५	५४	४९	२९	५६	१२	१६	८	५२	२५	५१	८	१८	२३	२५	२४	२१	
११	२४	२६	२९	३१	३३	३५	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४१	४१	४०	३९	३७	३६	३४	३२	३१	२९	२७	२५	२३	१२
१७	२३	४८	७	१९	२४	१९	३	३३	५०	५९	४८	२५	४६	५४	४७	२६	५२	७	१०	१	४४	१६	४१	५७	७	११	१३	११	८	
१२	२४	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३८	३९	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४१	४१	४०	३८	३७	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२४	२२	१८
१३	३८	२	२०	३२	३६	३०	१३	४१	५७	४	५२	२८	४८	५३	४६	२३	४८	२	३	१४	३६	७	३१	४६	५६	००	१	५९	५६	
१२	२४	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३८	४०	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३५	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२४
१७	५३	१६	३३	४४	४८	४१	२३	४९	५	१०	५६	२१	४९	५३	४४	२०	४४	५७	५६	४७	२८	५८	२१	३५	४५	४९	४९	४६	४४	
१२	२५	२७	२९	३१	३४	३५	३७	३८	४०	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३५	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	३०
४१	७	३०	४७	५७	००	५१	३२	५७	१३	१५	००	३३	५०	५३	४२	१७	४०	५१	५०	४०	१९	४८	११	२४	३३	३७	३७	२३	३१	
२२	२५	२७	३०	३२	३४	३६	३७	३९	४०	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३५	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	३६
५६	२२	४४	००	१०	१२	३	४१	५	२०	२०	४	३५	५१	५३	४०	१४	३६	४६	४३	३२	११	३९	१	१३	२२	२५	२५	१२	१९	
२३	२५	२७	३०	३२	३४	३६	३७	३९	४०	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३५	३३	३२	३०	२८	२६	२४	२२	४२
११	२६	५८	१४	२३	२३	१२	५०	१२	२७	२५	८	२७	५२	५२	३८	११	३१	४०	३६	२४	२	२९	५०	२	१०	१३	१३	१०	६	
२३	२५	२८	३०	३२	४४	३६	३८	३९	४०	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४१	४०	३९	३८	३६	३५	३३	३१	२९	२८	२६	२३	२१	४८
२५	५०	१२	२७	३५	२५	२३	००	२०	३४	३०	१२	३९	५३	५२	३६	७	२६	३४	२८	१६	५३	२०	४०	५१	५८	१	१	५८	५३	
२३	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	३९	४०	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४१	४०	३९	३८	३६	३५	३३	३१	२९	२७	२५	२३	२१	५४
४०	५	२६	४०	४७	२६	३३	९	२७	४१	५	१६	४१	५४	५१	३४	३	२२	२८	२२	८	४४	१०	२९	४०	४७	४९	४८	४६	४०	

को	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	को
घ.	२१	१९	१७	१५	१३	११	९	७	६	४	३	२	१	००	००	००	००	००	००	१	२	३	४	६	७	९	११	१४	१६	१९	घ.
	२७	२१	१९	१७	१८	२५	३६	५४	२०	५४	३९	३२	३७	५४	२३	४	००	११	३५	१५	७	१९	३७	११	५७	५४	१	१५	३५	००	
६	२१	१९	१७	१५	१३	११	९	७	६	४	३	२	१	००	००	००	००	००	००	१	२	३	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१९	६
	१४	८	६	५	७	१४	२५	४४	१०	४६	३२	२६	३२	५१	२०	३	००	१३	३८	१२	१३	२७	४५	२१	८	७	१४	२८	४९	१४	
१२	२१	१८	१६	१४	१२	११	९	७	६	४	३	२	१	००	००	००	००	००	००	१	२	३	४	६	८	१०	१२	१४	१७	१९	१२
	१	५६	५४	५३	५६	३	१४	३४	१	३८	२५	२०	२७	४७	१८	२	१	१५	४२	२४	२०	३४	५४	३१	१२	१९	२७	४२	४	२९	
१८	२०	१८	१६	१४	१२	१०	९	७	५	४	३	२	१	००	००	००	००	००	००	१	२	३	५	६	८	१०	१२	१४	१७	१९	१८
	४८	४४	४१	४१	४४	५२	४	२५	५३	३०	१८	१४	२३	४३	१६	२	२	१७	४७	२९	२७	४१	४	४१	३१	३१	४०	५६	१८	४३	
२४	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	७	५	४	३	२	१	००	००	००	००	००	००	१	२	३	५	६	८	१०	१२	१५	१७	१९	२४
	३५	३२	२९	२९	३२	४१	५४	१५	४३	२२	११	८	१९	४०	१४	१	३	१९	५०	३४	३४	४९	१३	५१	४२	४८	५४	१०	३२	५९	
३०	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	७	५	४	३	२	१	००	००	००	००	००	००	१	२	३	५	७	८	१०	१३	१५	१७	२०	३०
	२२	२८	१७	१७	२१	३०	४३	६	३५	१५	४	३	१४	३७	१२	१	४	२१	५४	३९	४०	५७	२२	१	५४	५७	७	२४	४६	१३	
३६	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	५	४	२	१	१	००	००	००	००	००	१	१	२	४	५	७	९	११	१३	१५	१८	२०	३६
	१०	८	५	५	९	१९	३३	५६	२६	७	५८	५७	१०	३४	१०	१	५	२३	५८	४४	४९	५	३१	१२	६	१०	२०	३८	१	२७	
४२	१९	१७	१५	१३	११	१०	८	६	५	४	२	१	१	००	००	००	००	००	१	१	२	४	५	७	९	११	१३	१५	१८	२०	४२
	५८	५६	५४	५४	५८	८	२३	४७	१८	००	५१	५२	६	३१	८	१	६	२६	२	५०	५७	१३	४१	२३	१८	२२	२४	५२	१३	४२	
४८	१९	१७	१५	१३	११	९	८	६	५	३	२	१	१	००	००	००	००	००	१	१	३	४	५	७	९	११	१३	१६	१८	२०	४८
	४६	४३	४१	४३	४७	५७	१३	३८	१०	५३	४४	४७	२	२८	७	००	८	२९	६	५५	५	२१	५०	३६	३०	३५	४७	६	३१	५७	
५४	१९	१७	१५	१३	११	९	८	६	५	३	२	१	००	००	००	००	००	००	१	२	३	४	६	७	९	११	१४	१६	१८	२१	५४
	३४	३१	२९	३१	३६	४७	३	२९	२	४६	३७	४२	५८	२५	५	००	९	३२	११	००	११	२९	००	४६	४२	४९	१	२०	४५	१२	

मेषे रविसंक्रमणज्ञान ॥ चक्र न. १२ — मेषसंक्रमणे देशान्तरं धनं० पल ४७ ॥

शा०	१८६८	१८७२	१८७६	१८८०	१८८४	१८८८	१८९२	१८९६	१९००	१९०४	१९०८
वारा-दि	००	३	५	००	२	४	००	२	४	६	१
	५३	६	१२	३१	४४	५६	९	२२	३१	४७	५२
	५३	२९	५	४८	१७	५३	२९	५	४१	१७	५३

शा०	१९६८	१९७२	१९७६	१९८०	१९८४	१९८८	१९९२	१९९६	२०००	२००४	२००८
वारादि	१	४	६	१	३	६	१	३	५	०	३
	१९	१३	१५	२७	४०	३	१६	२२	४१	१४	६
	१३	२९	५	४१	१७	१३	१५	५	४१	१७	५७

कोष्ठ	१	२	३	४	५	६
शा० वारादि	१	२	३	५	६	००
	१५	३१	४६	२	१७	३३
	३१	२	३०	६	३८	९

शेषाब्दचक्रम् न. १३ — मेषादि-संक्रान्ति क्षेपकाः एते सर्वे मेषादिसंक्रमणे योज्याः । — द्वादशसंक्रान्तिज्ञानचक्र न. १४

७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	को
१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	००	०	२	४	५	६	१०	२	वा-
४८	४	१९	३५	५०	६	११	२७	५२	८	२३	३९	५५	१०	२६	४१	१७	१२	र
४१	१२	४४	१५	४७	१८	१०	२१	५३	२४	५६	२७	१८	३०	२	३३	५	३६	दि

म	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी	राशि
०	२	६	३	६	२	४	६	१	२	४	५	वारादि
०	१७	२३	०	३०	३०	५५	४८	१७	३६	३	५३	सद
०	१	१	५१	४	२९	४८	३१	११	४	१५	२१	पक

अश्विन्यादिनक्षत्रे रविज्ञानम् । चक्र न. १५ — म नि

अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	श्ले	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	वि	अनु	ज्ये	मू	पू	उ	अ	श्र	ध	श	पू	उ	रे	मास
००	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	५	५	४	३	३	२	१	००	६	२	६	५	४	३	२	२	१	नक्षत्र
००	४१	३०	२४	२३	२४	२९	३२	३२	३०	१९	५	४३	११	३६	५६	५	१२	१७	१९	१९	९	२३	२६	३०	४०	५१	११	४२	वारादि
००	३४	००	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	११	५०	५१	३५	१५	००	००	००	००	००	००	क्षेपक

वारे रूपं तिथौ रुद्रा ११ नाड्यां पंचदशैव तु । जीर्णपत्रप्रमाणेन ज्ञायते सूर्यसंक्रमे ॥ १ ॥
मीनमेषोदये चन्द्रे सततं दक्षिणोन्नतम् ।, शेषेषु उत्तरं शृङ्गं समश्च वृषकुंभयोः ॥ २ ॥

षड्गुणस्य ग्रहस्यादेस्त्रिंशद्भक्तो गृहादिकाः ॥ अथवा पञ्चभिर्भक्तो राशिस्याद्दशभिर्लवाः ॥ १ ॥ अथ रविवाटिकादेशान्तरऋणं काउयां ०।०।४७॥ नैमिषे ०।०३८॥ ऋणं हातिगावे ०।०। ३९ ॥ १ ॥

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
००	००	००	००	००	००	००	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४
९	९	१९	२९	३९	४९	५९	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३५	४५
५१	५१	४२	३४	२५	१६	८	५९	५०	४२	३३	२४	१६	७	५९	५०	४१	३३	२४	१५	७	५८	४९	४१	३२	२४	१५	६	५८	४९
२१	२१	४३	५	२६	४८	१०	३१	५३	१५	३६	५८	२०	४२	३	२५	४७	८	३०	५२	१३	३५	५७	१८	४०	२	२४	४५	७	२९
४१	४१	२३	५	४६	२८	१०	५२	३३	१५	५७	३९	२०	२	४४	२६	७	४९	३१	१२	५४	३६	१८	५९	४१	२३	५	४६	२८	१०
४४	४४	२८	१२	५६	४०	२४	८	५२	३६	२०	४	४८	३२	१६	००	४४	२८	१२	५६	४०	२४	८	५२	३६	२०	४	४८	३२	१६
२	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२५	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३	४५	४७	५०	५२	५४	५६	५८	००
५	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४	४५	५०	५५	००	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५	००	५	१०	१५	२०	२५

३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९
५५	५	१५	२५	३५	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	११	२१	३१	४१
४०	३२	२३	१४	६	५७	४२	४०	३१	२३	१४	५	५६	४८	३९	३१	२२	१३	५	५६	४८	३९	३०	२२	१३	४	५६	४७	३८	३०
५०	११	३४	५५	१७	३९	१	२२	४४	६	२७	४९	१	३२	५४	१६	३७	५९	२१	४३	४	२६	४८	९	३१	५३	१४	३६	५८	२०
५२	३३	१५	५७	३८	२०	२	४४	२५	७	४९	३१	१२	५४	३६	१८	५९	४१	२३	४	४६	२८	१०	५१	३३	१५	५७	३८	२०	२
१	४५	२९	१३	५७	४१	२५	९	५३	३७	२१	५	४९	३३	१७	१	४५	२९	१३	५७	४१	२५	९	५३	३७	२१	५	४९	३४	१८
२	४	६	८	१०	१२	१५	१७	१९	२१	२३	२५	२७	२९	३१	३३	३५	३७	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	००	२
३०	३५	४०	४५	५०	५५	००	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५	००	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५

आगम्य चद्रागुलस्य पह्लेह्र्थेमाद्वग्मितास्य भूम. । चत्वारि एवं सकलाङ्कयोगो वाचाग्रगाणां खलु कन्द एव ॥ १ ॥ रेखास्वदेशान्तरगे जन्मा गतिर्महस्याभ्रगजैर्विभक्ता । लब्ध विलिप्ता खचरे विधेया प्राच्यामृण पश्चिमतो धनं स्यात् ॥ २ ॥

॥ अथ चन्द्रवाटिका ॥ चक्र नं. १७

देशान्तरमृणम् ०।१०।३२ मिथिला, ०।२०।४८ मालवत्यादेः कलादिः ०।७।८९ ऋणम् ॥

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
२	२	४	६	८	१०	१३	१५	१७	१९	२१	२४	२६	२८	३०	३२	३५	३७	३९	४१	४३	४६	४८	५०	५२	५४	५७	५९	१	३
११	११	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४५	५[illegible]	९	२१	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४	५	१७	२९	४१
४५	४५	३१	१७	३	४९	३४	२०	६	५२	३८	२३	९	५५	४१	२७	१२	५८	४४	३०	१६	२	४७	३३	१९	५	५१	३६	२२	८
४८	४८	३७	२६	१४	३	५२	४०	२९	१८	६	५५	४४	३२	२१	१०	५८	४७	३६	२४	१३	२	५०	३९	२८	१६	५	५४	४२	३१
४०	४०	२१	१	४२	२३	३	४४	२५	५	४६	२६	७	४८	२८	९	५०	३०	११	५२	३२	१३	५३	३४	१५	५५	३६	१७	५७	३८
३८	३८	१६	५४	३२	१०	४९	२७	५	४३	२१	५९	३८	१६	५४	३२	१०	४९	२७	५	४३	२१	५९	३८	१६	५४	३२	१०	४८	२७
१०	१०	२१	३२	४२	५३	४	१४	२५	३६	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	१३	३४	४४	५५	६	१६	१७	३८	४८	५९	१०
४२	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	००	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	००	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८

३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
५	८	१०	१२	१४	१६	१९	२१	२३	२५	२७	३०	३२	३४	३६	३८	४१	४३	४५	४७	४९	५१	५४	५६	५८	००	२	५	७	९
५२	४	१६	२८	३९	५१	३	१५	२७	३८	५०	२	१४	२५	३७	४९	१	१२	२४	३६	४८	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२	३४
५४	४०	२५	११	५७	४३	२९	१५	००	४६	३२	१८	४	४९	३५	२१	७	५३	३८	२४	१०	५६	४२	२७	१३	५९	४५	३१	१७	२
२०	८	५७	४६	३५	२३	१२	१	४९	३८	२७	१५	४	५३	४१	३०	१९	७	५६	४५	३३	२२	११	५९	४८	३७	२५	१४	३	५१
१९	५९	४०	२०	१	४२	२२	३	४४	२४	५	४६	२६	७	४७	२८	९	४९	३०	११	५१	३२	१२	५३	३४	१४	५५	३६	१६	५७
५	४३	२१	५९	३८	१६	५४	३२	१०	४८	२७	५	४३	२१	५९	३८	१६	५४	३२	१०	४८	२७	५	४३	२१	५९	३७	१६	५४	३२
२१	३१	४२	५३	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५०	१	१२	२२	३३	४४	५५	५	१६	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१
००	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	००	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	००	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८

॥ इति चन्द्रवाटिका ॥

॥ अथ चन्द्रकेन्द्रवाटिका ॥ चक्र नं. १८

देशान्तरमृणम् ०'०।५ मालवत्यादेः कलादिः ।०।०।४ ऋणम् ॥

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
२	२	४	६	८	१०	१३	१५	१७	१९	२१	२३	२६	२८	३०	३२	३४	३७	३९	४१	४३	४१	४७	५०	५२	५४	५६	५८	००	३
१०	१०	२१	३१	४२	५३	३	१४	२५	३५	४६	५७	७	१८	२९	३९	५०	१	११	२२	३२	४३	५४	४	१५	२६	३६	४७	५८	८
३८	३८	१७	५६	३५	१४	५३	३२	११	५०	२९	८	४७	२६	५	४४	२३	२	४१	२०	५९	३८	१७	५६	३५	१४	५३	३२	११	५०
५८	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७	४६	४४	४३	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	३०	२९	२८
५५	५३	५१	४६	४२	३७	३३	२८	२४	१९	१५	१०	६	१	५७	५२	४८	४३	३९	३४	३०	२५	२१	१६	१२	८	३	५९	५४	५०
३१	३१	२	३३	५	३६	७	३८	१०	४१	१२	४४	१५	४६	१७	४९	२०	५१	२३	५४	२५	५६	२८	५९	३०	१	३३	४	३५	७
१६	१६	३३	५०	६	२३	४०	५६	१३	३०	४७	३	२०	३७	५३	१०	२७	४३	३०	१७	३४	५०	७	२४	४०	५७	१४	३०	४७	४
४२	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	००	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	००	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८

॥ अथ चन्द्रकेन्द्रवाटिका देशान्तरमृणम् ०।०।५ ॥

३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
५	७	९	११	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२७	२९	३१	३३	३५	३७	४०	४२	४४	४६	४८	५१	५३	५५	५७	५९	१	४	६	८
१९	३०	४०	५१	२	१२	२३	३४	४४	५५	५	१६	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४१	५२	३	१३	२४	३५	४५	५६	७	१७	२८
२९	८	४७	२६	५	४४	२३	२	४१	२०	५९	३८	१७	५६	३५	१४	५३	३२	११	५०	२९	८	४७	२६	५	४४	२३	१	४०	१९
२७	२६	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	१	००	५९	५८	५७	५६
४५	४१	३६	३२	२७	२३	१८	१४	९	५	१०	५६	५१	४७	४२	३८	३३	२९	२५	२०	१६	११	७	२	५८	५३	४९	४४	४०	३५
३८	९	४०	१२	४३	१४	४९	१४	४८	१९	५१	२२	५३	२४	५६	२७	५८	३०	१	३२	३	३५	६	३७	९	४०	११	४२	१४	४५
२१	३७	५४	११	२७	४४	१	१७	३४	५१	८	२४	४१	५८	१४	३१	४८	४	२१	३८	५५	११	२८	४५	१	१८	३५	५१	८	२५
००	४२	२४	२६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	००	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	००	४२	२४	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८

चन्द्रवल्लीमध्ये चन्द्रकेन्द्रवल्ली हीनं कृत्वा सा चन्द्रोच्चवल्ली भवति ॥

पुनः चन्द्रोच्चवल्ली चन्द्रवल्लीमध्ये हीनं कृत्वा चन्द्रस्य मन्दकेन्द्रं स्यात् ॥

देशान्तरमृणम् ०।०२४भौमो भवति भौमगुरुशनीनां शीघ्रोचं मध्यमो रविः भौमगुरुशनीनां मध्ये मध्यमो रविःशोधितो जातं भौमगुरुशनीनां शीघ्रकेन्द्रं स्यात् षड्भाधिकेन्द्रं तदा चक्राच्छुद्धं तस्यांशं कृत्वा अंशप्रमितकोष्ठकफलं ग्राह्यं सानुपातम् ॥ १ ॥

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
५	५	१०	१५	२०	२६	३१	३६	४१	४६	५२	५७	२	८	१३	१८	२३	२९	३४	३९	४४	५०	५५	००	५	११	१६	२१	२६	३१
१४	१४	२८	४३	५७	१२	२६	४०	५५	९	२४	३८	५२	७	२१	३६	५०	४	१९	३३	४८	२	१७	३१	४५	००	१४	२९	४३	५७
२४	२४	४०	१४	३८	३	२८	५२	१७	४२	६	३१	५६	२१	४५	१०	३५	५९	२४	४९	१३	३८	३	२८	५२	१७	४२	६	३१	५६
४१	४१	२३	५	४७	२९	११	५३	३४	१६	५८	४०	२२	४	४६	२७	९	५१	३३	१५	५७	३९	२०	२	४४	२६	८	५०	३२	१३
४१	४१	४२	३४	२५	१७	८	००	५१	४३	३४	२६	१७	९	००	५२	४३	३५	२६	१८	९	१	५२	४४	३५	२७	१८	१०	१	५३
३०	२९	५८	२८	५७	२७	५६	२५	५५	२४	५४	२३	५३	२२	५१	२१	५०	२०	४९	१८	४८	१७	४७	१६	४६	१५	४४	१४	४३	१३
३०	३५	५०	१५	४०	५	३०	५५	२०	४५	१०	३५	००	२५	५०	१५	४०	५	३०	५५	२०	४५	१०	३५	००	२५	५०	१५	४०	५

३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५
३७	४२	४७	५२	५८	३	८	१३	१९	२४	२९	३४	४०	४५	५०	५५	१	६	११	१६	२२	२७	३२	३७	४२	४८	५३	५८	३	९
१२	२६	४१	५५	९	२४	३८	५३	७	२२	२६	५०	५	१०	३४	४८	२	१७	३१	४६	००	१४	२९	४३	५८	१२	२७	४१	५५	१०
२०	४५	१०	३५	५०	२४	४९	१३	३८	२	२७	५२	१७	४१	६	३१	५६	२०	४५	१०	३४	५९	२४	४८	१३	३८	३	२७	५२	१७
५५	३७	१९	१	४३	२५	६	४८	३०	१२	५४	३६	१८	५९	४१	२३	५	४७	२९	११	५२	३४	१६	५८	४०	२२	४	४५	२७	९
४४	३६	२७	१९	१०	२	५३	४५	३६	२८	१९	११	२	५४	४५	३७	२८	२०	११	३	५४	४६	३७	२८	२०	११	३	५४	४६	३५
४२	११	४१	१०	४०	९	३९	८	३७	७	३६	६	३५	४	३४	३	३३	२	३२	१	३०	००	२९	५९	२८	५७	२७	५६	२६	५७
३०	५५	२०	४५	१०	३५	००	२५	५०	१५	४०	५	३०	५५	२०	४५	१०	३५	००	२५	५०	१५	४०	५	३०	५५	२०	४५	१०	३५

स्वाहृता खेटलवा नवयुर्भनाणि भक्ताः खगुणे ३० र्गृहाः स्युः । तेष्वर्कभक्ता भगणा भवेयुः समार्जनार्थी गणकैः प्रयत्नात् ॥ १ ॥
वर्गीशिरांकेषु स्वो गृहाणि शेषं दशाप्त यदि वाल्कवारि । भार्द्धत्रिगुणानि फलानि यानि इन्दजनुकोष्टस्वाधिकातः ॥ २ ॥
तानीह केन्द्राणि भवति तेषामुखानि नैवेत्यवगच्छ नूनम् । तुङ्ग भवेत्केन्द्रविहीनखेटस्तुंगो न खेटः किलकेन्द्रमेवम् ॥ ३ ॥

॥ अथ बुधकेन्द्रवाटिका ॥ च० न. २०

देशान्तरऋणं अंशादि ०।३।१६ वीजं धनं बुधवाटिकामध्ये शोधिता बुधोच्चं भवति बुधोच्चे वीजं धनं कृतं वीजसंस्कृत बुधोच्चं रविमध्ये शोध्यं बुधस्य शीघ्रकेन्द्रं स्यात् ॥ मिथि ०।६।३२।५ ॥ मालवत्रा कलादि ०।२।१२ अंकादि भूगुण ३१७९ युतः शाको कल्पाब्दो भवति कल्पाब्दभाजक ७५० लब्धं वीजं अंशादि धनं ६।१६।५२ इति बुधवाटिका० ॥

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	
२८	५९	५८	५६	५७	५७	५६	५६	५५	५५	५४	५४	५३	५३	५२	५२	५१	५१	५०	५०	४९	४९	४८	४८	४७	४७	४६	४६	४५	४४	०
५५	२८	५७	२६	५५	२४	५३	२२	५१	२०	४९	१८	४७	१६	४५	१३	४२	११	४०	९	३८	७	३६	५	३४	३	३२	१	३०	५९	०
५८	५५	५१	४७	४३	३९	३५	३१	२७	२३	१९	१५	११	८	३	५९	५५	५१	४७	४३	३९	३५	३१	२७	२३	१९	१५	११	७	३	०
१४	५८	५६	५४	५२	५१	४९	४७	४५	४४	४२	४०	३८	३७	३५	३३	३१	३०	२८	२६	२४	२३	२१	१९	१७	१६	१४	१२	१०	९	०
४५	१४	२९	४४	५९	१३	२८	४३	५८	१२	२७	४२	५७	११	२६	४१	५६	१०	२५	४०	५५	९	२४	३९	५४	८	२३	३८	५३	७	०
२९	४५	३०	१६	१	४७	३२	१८	३	४९	३४	२०	५	५१	३६	२२	७	५३	३८	२४	९	५५	४०	२६	११	५७	४२	२८	१३	५९	०
२०	२९	५८	२८	५७	२६	५६	२५	५४	२४	५२	२२	५२	५१	५०	२०	४९	१८	४८	१७	४७	१६	४५	१५	४४	१३	४३	१२	४१	११	०
४८	२०	४७	३	२४	४५	६	२७	४८	९	३०	५१	१२	३३	५४	१५	३६	५७	१८	३९	००	२१	४२	३	२४	४५	६	२७	४८	९	२

३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	को.
४४	४३	४३	४२	४२	४१	४१	४०	४०	३९	३९	३८	३८	३७	३७	३६	३६	३८	३५	३४	३४	३३	३३	३२	३२	३१	३१	३०	२९	२९	
२७	५६	२५	५४	२३	५२	२१	५०	१९	४८	१७	४६	१५	४४	१३	४१	१०	३९	८	३७	६	३५	४	३३	२	३१	००	२९	५८	२७	
५९	५५	५१	४७	४३	३८	३४	३०	२६	२२	१८	१४	१०	६	२	५८	५४	५०	४६	४२	३८	३४	३०	२६	२२	१८	१४	१०	६	२	
७	५	३	२	००	५८	५६	५५	५३	५१	४९	४८	४६	४४	४२	४१	३९	३७	३५	३४	३२	३०	२८	२७	२५	२३	२१	२०	१८	१६	
२२	३७	५२	७	२१	३६	५१	६	२०	३५	५०	५	१९	३४	४९	४	१८	३३	४८	३	१७	३२	४७	२	१६	३१	४६	१	१५	३०	
४४	३०	१५	१	४६	३२	१७	३	४८	३४	१९	५	५०	३६	२१	७	५२	३७	२३	८	५४	३९	२५	१०	५६	४१	२७	१२	५८	४३	
४०	९	३९	८	३७	७	३६	५	३५	४	३४	३	३२	२	३१	००	३०	५९	२८	५८	२७	५६	२६	५५	२४	५४	२३	५२	२२	५१	
३०	५१	१२	३३	५७	१५	३६	१७	१८	३९	००	२१	४२	३	२४	४५	६	२७	४८	९	३०	५१	१२	३३	५४	१५	३६	५७	१८	३९	

॥ अथ गुरुवाटिका० ॥ च० नं. २१

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००
४९	००	१	२	३	४	४	५	६	७	८	९	९	१०	११	१२	१३	१४	१४	१५	१६	१७	१८	१९	१९	२०	२१	२२	२३	२४
५१	४९	३९	३९	१९	९	५९	४९	३८	२८	१८	८	५८	४८	३८	२८	१७	७	५७	४७	३७	२७	१६	६	५६	४६	३६	२६	१६	५
२८	५१	४२	२४	२५	१७	८	००	५१	४३	३४	२६	१७	९	००	५२	४३	३४	२६	१७	९	००	५२	४३	३५	१६	१८	९	१	५२
५	२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	४०	९	३७	५	३३	१	२९	५७	२५	५३	२१	५०	१८	४६	१४	४२	१०	३८	६	३४
५७	५	११	१७	२३	२९	३५	४१	४७	५३	५९	५	११	१७	२३	२९	३५	४१	४७	५३	५९	५	११	१७	२३	२९	३५	४१	४७	५३
५६	५७	५५	५३	५१	४९	४७	४५	४३	४१	३९	३७	३५	३३	३१	२९	२६	२४	२२	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	४	२	००
१७	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४	००	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४

॥ गुरु वाटिका० ॥

३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००
२४	२५	२६	२७	२८	२९	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३४	३५	३६	३७	३८	३९	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४४	४५	४६	४७	४८	४९
५५	४५	३५	२५	१५	५	५४	४४	३४	२४	१४	४	५४	४३	३३	२३	१३	३	५३	४३	३२	२२	१२	२	५२	४२	३२	२१	११	१
४४	३५	२६	१८	९	१	५२	४४	३५	२७	१८	१०	१	५३	४४	३६	२७	१९	१०	१	५३	४४	३६	२७	१९	१०	२	५३	४५	३६
२	३१	५९	२७	५५	२३	५१	१९	४७	१५	४३	१२	४०	८	३६	४	३२	००	२८	५६	२४	५३	२१	४९	१७	४५	१३	४१	९	३७
५८	४	१०	१६	२२	२८	३४	४०	४६	५२	५८	४	१०	१६	२२	२८	३४	४०	४६	५२	५८	४	१०	१६	१७	२८	३४	४०	४६	५१
५८	५५	५३	५१	४९	४७	४५	४३	४१	३९	३७	३५	३३	३१	२९	२७	२४	२२	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	४	२	००	५८
००	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४	००	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३२	२८	२४	२०	१६	१२	८	४

गुरुवाटिका दशान्तरं ऋण ०।०४ मिथिला ०।०८ मालकलादि ०।०३ कल्पाब्द भाजांकः १५००१० बीजं ऋणम् ॥

॥ शुक्रकेन्द्रवाटिका ॥ चक्र नं. २२.

ऋणफलम्	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
	५३	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५८	५८	५८	५८	५८
	५०	५३	४७	४१	३५	२९	२३	१६	१०	४	५८	५२	४६	३९	३३
	४	५०	४०	३०	२०	१०	००	५०	४०	३०	२०	१०	००	५०	४१
	२५	४	८	१३	१७	२२	२६	३०	३५	३९	४४	४८	५३	५७	१
	३०	२५	५१	१६	४२	७	३३	५८	२४	४९	१५	४०	६	३१	५७
	१३	३१	२	३३	४	३६	७	३८	९	४०	१२	४३	१४	४५	१७
	१५	१३	२६	३९	५३	६	१९	३२	४६	५९	१२	२५	३९	५२	५
	५८	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४

ऋणफलम्	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
	५८	५८	५८	५८	५८	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७
	२७	२१	१५	९	२	५६	५०	४४	३८	३२	२५	१९	१३	७	१
	३१	२१	११	१	५१	४१	३१	२१	११	१	५१	४१	३१	२२	१२
	६	१०	१५	१९	२४	२८	३२	३७	४१	४६	५०	५५	५९	३	८
	२२	४८	१३	३९	४	३०	५५	२१	४६	१२	३८	३	२९	५४	२०
	४८	१९	५०	२१	५३	२४	५५	२६	५८	२९	००	३१	२	३४	५
	१९	३२	४५	५८	१२	२५	३८	५१	५	१८	३१	४४	५८	११	२४
	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४

धनफलम्	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५५	५५	५५	५५	५५	५५
	५५	४८	४२	३५	३०	२६	१८	११	५	५९	५३	४७	४१	३४	२८
	२	५२	४२	३२	३२	१२	२	५२	४२	३२	२२	१३	३	५३	४३
	१२	१७	२१	२६	३०	३४	३९	४३	४८	५२	५७	१	५	१०	१४
	४५	११	३६	२	२७	५३	१८	४४	९	३५	००	२६	५१	१७	४२
	३६	७	३९	१०	४१	१२	४३	१५	४६	१७	४८	२०	५१	२२	५३
	३८	५१	४	१७	३१	४४	५७	१०	२४	३७	५०	३	१७	३०	४३
	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४

धनफलम्	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
	५५	५५	५५	५५	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५२
	२२	१६	१०	४	५७	५१	४५	३९	३३	२७	२०	१४	८	२	५६
	३३	२३	१३	३	५३	४३	३३	२३	१३	३	५४	४४	३४	२४	१४
	१९	२३	२७	३२	३६	४१	४५	५०	५४	५८	३	७	१२	१६	२१
	८	३३	५९	२४	५०	१६	४१	७	३२	५८	२३	४९	१४	४०	५
	२४	५६	२७	५८	२९	१	३२	३	३४	५	३७	८	३९	१०	४२
	५७	१०	२३	३६	५०	३	१६	२९	४३	५६	९	२२	३६	४९	२
	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४

देशान्तरं ऋणं काश्यां ११७ कलिगतभाजकः १००० अंशादिधनम्। इति शुक्रवाटिका ॥

॥ शनिवाटिका ॥ चक्र नं. २३.

शे.क.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००
००	००	००	००	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९
१०	२०	१०	४०	००	२०	४०	००	२०	४०	००	२०	४०	००	२०	४०	००	२१	४१	१	२१	४१	१	२१	४१	१	२१	४१	१	२१	४१
३	३	३	७	११	१५	१९	२२	२६	३०	३४	३८	४१	४५	४९	५३	५७	१	४	८	१२	१६	२०	२३	२७	३१	३५	३९	४३	४६	५०
४८	४८	४८	३७	२६	१५	४	५३	४२	३१	२०	९	५७	४६	३५	२४	१३	२	५१	४०	२९	१८	७	५५	४४	३३	२२	११	००	४९	३८
५४	५४	५४	४८	४२	३७	३१	२५	२०	१४	८	२	५७	५१	४५	४०	३४	२८	२३	१७	११	५	००	५४	४८	४३	३७	३१	२६	२०	१४
१७	१७	१७	३५	५३	११	२९	४६	४	२२	४०	५८	१५	३३	५१	९	२७	४४	२	२०	३८	५६	१३	३१	४९	७	२५	४२	००	१८	३६
४८	४८	४८	३६	२४	१२	००	४८	३६	२४	१२	००	४८	३६	२४	१२	००	४८	३६	२४	१२	००	४८	३६	२४	१२	००	४८	३६	२४	१२

	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००
	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१९	१९	१९
	१	२१	४१	२	२२	४२	२	२२	४२	२	२२	४२	२	२२	४२	२	२२	४२	३	२३	४३	३	२३	४३	३	२३	४३	३	२३	४३
	५४	५८	२	५	९	१३	१७	२१	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४७	५१	५५	५९	३	६	१०	१४	१८	२२	२६	२९	३३	३७	४१	४५
	२७	१६	४	५३	४२	३१	२०	९	५८	४७	३६	२५	१४	२	५१	४०	२९	१८	७	५६	४५	३४	२३	११	००	४९	३८	२७	१६	५
	८	२	५७	५१	४६	४०	३४	२८	२३	१७	११	६	०	५४	४९	४३	३७	३१	२६	२०	१४	९	३	५७	५२	४६	४०	३४	२९	२३
	५४	११	२९	४७	५	२३	४०	५८	१६	३४	५२	९	२७	४५	३	२१	३८	५६	१४	३२	५०	७	२५	४३	१	१९	३६	५४	१२	३०
	००	४८	३६	२४	१२	००	४८	३६	२४	१२	००	४८	३६	२४	१२	००	४८	३६	२४	१२	००	४८	३६	२४	१२	००	४८	३६	२४	१२

देशान्तरं ऋणम् ० । ० । २ शनिभाजकः १०००शनिबीजं धनम् । इति शनिवाटिका ॥

॥ केतोर्वाटिका राहोः सैकाः ॥ ३० ॥ चक्र नं. २४

६०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	कोष्टकः
५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	
२८	५९	५८	५८	५७	५७	५६	५६	५५	५५	५४	५४	५३	५३	५२	५२	५१	५०	५०	४९	४९	४८	४८	४७	४७	४६	४६	४५	४५	४४	
१२	२८	५६	२४	५२	२१	४९	१७	४५	१३	४२	१०	३८	६	३४	३	३१	५९	२७	५५	२४	५२	२०	४८	१७	४५	१३	४१	९	३८	
३०	१२	२५	३७	५०	२	१५	२७	४०	५२	५	१७	३०	४२	५५	७	२०	३२	४५	५७	१०	२२	३५	४७	००	१२	२५	३७	५०	२	
५०	३०	१	३२	३	३४	५	३५	६	३७	८	३९	१०	४०	११	४२	१३	४४	१५	४५	१६	४७	१८	४९	२०	५०	२१	५२	२३	५४	
२	५०	४०	३०	२०	१०	००	५०	४०	३०	२०	१०	००	५०	४०	३०	२०	१०	००	५०	४०	३१	२१	११	१	५१	४१	३१	२१	११	
५५	२	५	८	११	१४	१७	२०	२३	२६	२९	३२	३५	३८	४१	४३	४६	४९	५२	५५	५८	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२४	
४४	५६	५२	४८	४४	४०	३६	३१	२७	२३	१८	१४	९	५	१	५७	५२	४८	४४	४०	३५	३१	२७	२३	१९	१४	१०	६	१	५७	

३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	कोष्टकः
५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५०	५०	५०	५०	५०	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	
४४	४३	४३	४२	४१	४१	४०	४०	३९	३९	३८	३८	३७	३७	३६	३६	३५	३५	३४	३४	३३	३२	३२	३१	३१	३०	३०	२९	२९	२८	
६	३४	२	३०	५९	२७	५५	२३	५१	२०	४८	१६	४४	१२	४१	९	३७	५	३४	२	३०	५८	२६	५५	२३	५१	१९	४७	१६	४४	
१५	२७	४०	५२	५	१७	३०	४२	५५	८	२०	३३	४५	५८	१०	२३	३५	४८	००	१३	२५	३८	५०	३	१५	२८	४०	५३	५	१८	
२५	५५	२६	५७	२८	५९	३०	००	३१	२	३३	४	३५	५	३६	७	३८	९	४०	१०	४१	१२	४३	१४	४५	१५	४६	१७	४८	१९	
१	५१	४१	३१	२१	११	१	५१	४१	३१	२१	१२	२	५२	४२	३२	२२	१२	२	५२	४२	३२	२२	१२	२	५२	४२	३२	२२	१२	
२७	३०	३३	३६	३९	४२	४५	४८	५१	५४	५७	००	३	५	८	११	१४	१७	२०	२३	२६	२९	३२	३५	३८	४१	४४	४६	४९	५२	
५३	४९	४४	४०	३६	३२	२७	२३	१९	१५	१०	६	२	५७	५३	४९	४५	४०	३६	३२	२८	२३	१९	१५	१०	५	१	५७	५३	४९	

॥ देशान्तरमृणं कलादिः ॥

॥ अहर्गणवल्ली ॥ चक्र नं. २१

शकः	राशि	अंश	कला	विकलाः	वाराः
२६५४	९				४
२५९७	९				३
२५४०	९				२
२४८३	९	३४	२५	३५	१५
२४२६	९	२८	३८	३६	१
२३६९	९	२२	५१	३७	६
२३१२	९	१७	४	३८	२
२२५५	९	११	१७	३९	४
२१९८	९	५	३१	४०	३
२१४१	८	५९	४५	४१	२
२०८४	८	५३	५८	४२	१
२०२७	८	४८	११	४३	०
१९७०	८	४२	२४	४४	६
१९१३	८	३६	३७	४५	५
१८५६	८	३०	५०	४६	४
१७९९	८	२५	३	४७	३
१७४२	८	१९	१६	४८	२
१६८५	८	१३	२९	४९	१
१६२८	८	७	४२	५०	०
शेषांक धारक ५१	००	७	४६	५०	वर १

वर्षमध्ये अहर्गणवल्ली चालन ॥ चक्र न. २७.

मास						
चै.शु	•	•	•	•	१५	१
व.		०	०	•	३०	२
वै.शु		०	•	०	४५	२
व		०	•	•	५९	३
ज्ये.शु		०	०	१	१४	४
व.		०	०	१	२९	५
आ.शु		०	०	१	४३	५
व.क्ष		०	०	२	५८	६
श्रा.शु		०	०	२	१३	०
व.		०	०	२	२८	१
भा.शु क्ष		०	०	२	४२	१
व.क्ष		०	०	२	५७	२
आ.शु ध		०	०	३	१२	३
व.ध		०	०	३	२७	४
का.शु		०	०	३	४१	४
व.		०	०	३	५६	५
मा.शु		०	०	४	११	६
व.		०	०	४	२६	०
पौ.शु		०	०	४	४०	०
व.		०	०	४	५५	१
मा.शु		०	०	५	१०	२
व.		०	०	५	२५	३
फा.शु		०	०	५	४०	४
व		०	०	५	५४	४

॥ वल्यापाक्षिकं चालनं धनम् ॥

चक्र न. २८.

कोष्ठ०	काश्यी		कान्यकुब्ज	
०	३०	००	३०	००
१	३०	२४	३०	२४
२	३०	४७	३०	४८
३	३१	१०	३१	१२
४	३१	३३	३१	३६
५	३१	[illegible]	३२	[illegible]
६	३२	१६	३२	२२
७	३२	३६	३२	४७
८	३२	५४	३३	७
९	३३	१२	३३	२०
१०	३३	२७	३३	३८
११	३३	४१	३३	५०
१२	३३	५२	३४	२
१३	३४	००	३४	१०
१४	३४	४	३४	१५
१५	३४	५	३४	१८
१६	३४	४	३४	१०
१७	३४	००	३४	१०
१८	३३	५२	३४	२
१९	३३	४१	३३	५०
२०	३३	२७	३३	३८
२१	३३	१२	३३	२८
२२	३२	५४	३३	१०
२३	३२	३६	३२	४७
२४	३२	१८	३२	२२
२५	३१	५५	३२	००
२६	३१	३३	३१	३६
२७	३१	१०	३१	१२
२८	३०	४७	३०	४९
२९	३०	२३	३०	२४
३०	३०	००	३०	००
३१	२९	३७	२९	३७
३२	२९	१३	२९	१०
३३	२८	५०	२८	४८
३४	२८	२७	२८	२४
३५	२८	५	२८	००
३६	२७	४४	२७	३८
३७	२७	२४	२७	१८
३८	२७	६	२६	५८
३९	२६	४८	२६	४०
४०	२६	३३	२६	२०
४				
४१	२६	१८	२६	१०
४२	२६	८	२५	५८
४३	२६	००	२५	५०
४४	२५	५६	२५	४४
४५	२५	५५	२५	४२
४६	२५	५६	२५	४४
४७	२६	००	२५	५०
४८	२६	८	२५	५८
४९	२६	१८	२६	१०
५०	२६	३३	२६	२२
५१	२६	४८	२६	४०
५२	२७	६	२६	५८
५३	२७	२४	२७	८
५४	२७	४४	७	३८
५५	२८	५	२८	००
५६	२८	२७	२८	२४
५७	२८	५०	२८	४८
५८	२९	१३	२९	१०
५९	२९	३७	२८	३६

सायनग्रहस्य अंशं कृत्वा पञ्चभक्तं लब्धं कोष्ठफलं गृहीत्वा दिनमान साधनादौ स्फुटरविं सायनं कृत्वा संस्थाप्य तस्य त्रिंशता गुण्य अंशान् संयोज्य षड्भिर्भाज्य तत्समानकोष्ठफलं ग्राह्यमन्यदनुपातेन ज्ञेयम् ॥ १ ॥

॥ अंशादिचन्द्रफलम् ॥ च० नं. ३०.

चन्द्रस्य मन्दोच्चं १०।१४।६।२८ ॥ चन्द्रगतिः ॥ ७९०।३५ ॥

कोष्ठ	फल			गति फल		कोष्ठ०	फलं			गति फल		कोष्ठ०	फल			गति फल	
१	०	५	२०	६९	३९	३१	२	३६	३५	५९	२०	६१	४	२५	६	३३	४४
२	०	१०	४०	६९	३६	३२	२	४१	२	५८	४१	६२	४	२७	३६	३२	३९
३	०	१६	००	६९	३३	३३	२	४५	२७	५८	००	६३	४	२९	५९	३१	३५
४	००	२१	१९	६९	२८	३४	२	४९	५०	५७	१९	६४	४	३२	१९	३०	२९
५	००	२६	३६	६९	२१	३५	२	५४	११	५६	३७	६५	४	३४	३७	२९	२३
६	००	३१	५४	६९	१३	३६	२	५८	३४	५५	५६	६६	४	३६	५३	२८	१३
७	००	३७	१२	६९	३	३७	३	२	५४	५५	१४	६७	४	३८	१४	२७	७
८	००	४२	२१	६८	५३	३८	३	७	५	५४	२१	६८	४	४०	५४	२६	१
९	००	४७	४४	६८	४३	३९	३	११	१२	५३	४४	६९	४	४२	५२	२४	५५
१०	००	५२	५७	६८	२९	४०	३	१५	१६	५२	५८	७०	४	४४	४०	२३	४९
११	००	५८	१०	६८	११	४१	३	१९	१८	५२	१२	७१	४	४६	२४	२२	४१
१२	१	३	२३	६७	५२	४२	३	२३	१४	५१	२६	७२	४	४८	५	२१	३४
१३	१	८	३५	६७	२६	४३	३	२७	९	५०	३८	७३	४	४९	३९	२०	२४
१४	१	१३	४५	६७	१७	४४	३	३०	१५	४९	४६	७४	४	५१	८	१९	१४
१५	१	१८	५३	६६	५७	४५	३	३४	५९	४८	५४	७५	४	५२	३३	१८	५
१६	१	२४	००	६६	३८	४६	२	३८	२	४८	००	७६	४	५३	५९	१६	५२
१७	१	२९	५	६६	१८	४७	३	४१	१२	४७	५	७७	४	५५	९	१५	३९
१८	१	३४	९	६५	५७	४८	३	४५	३८	४६	९	७८	४	५६	१५	१४	२५
१९	१	३९	१०	६५	३६	४९	३	४९	८	४५	१२	७९	४	५७	१७	१३	१४
२०	१	४४	९	६५	१४	५०	३	५२	३०	४४	१९	८०	४	५८	१३	१२	३
२१	१	४९	७	६४	५०	५१	३	५५	४७	४३	२७	८१	४	५९	६	१०	५३
२२	१	५४	३	६४	२४	५२	३	५९	३३	४२	३२	८२	४	५९	५३	९	४१
२३	१	५८	५६	६३	५६	५३	४	२	२	४१	३७	८३	५	००	३३	८	२०
२४	२	३	४५	६३	२४	५४	४	५	८	४०	४१	८४	५	१	१८	७	१४
२५	२	८	३२	६२	५३	५५	४	८	१६	३९	४४	८५	५	१	४१	६	२
२६	२	१३	१९	६२	२०	५६	४	११	१६	३८	४७	८६	५	२	३	४	५१
२७	२	१८	४	६१	४८	५७	४	१४	११	३७	५०	८७	५	२	२२	३	४०
२८	२	२२	४६	६१	३	५८	४	१७	००	३६	११	८८	५	२	३७	२	२७
२९	२	२७	२५	६०	२५	५९	४	१९	४६	३५	४८	८९	५	२	४५	१	१४
३०	२	३२	२	५९	५६	६०	४	२२	२९	३४	४५	९०	५	२	४८	०	०

नं. ३१.

अथ भौमफलं शीघ्रं मान्द्यं च । मन्दोच्चं भ० ९२।४।१०।२।३९।२९ गतिः ३।१२६ ॥

को	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०९	११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	१२०
शी	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
	६	२३	४०	५७	१३	२९	४६	२	१८	३४	४९	४	१८	३९	५३	४	१५	२६	३७	४७	५७	७	१६	२५	३३
मां	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	३०	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३१	३१	३०	२९	२७	१३	१०	७	४	१	५७	५३	४८	४४	३९	३४	२९
को	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	१५०
शी	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	३९	३९	३९	३९	३८	३८	३८	३८	३७	३७	३६	३६
	४०	४६	५२	५८	३	७	१०	१३	१५	१६	१६	१६	१५	४१	३३	२१	९	५५	४०	२२	५	४५	२२	५७	३१
मां	१०	१०	१०	१०	१०	९	९	९	९	९	९	९	९	८	८	७	७	७	७	७	७	६	६	६	६
	२४	१८	१३	७	१	५४	४७	४०	३३	२६	१९	११	३	१२	३	५५	४४	३४	२४	१४	३	५३	४३	३२	२१
को	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	१६०	१६१	१६२	१६३	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०
शी	३६	३५	३४	३४	३३	३३	३२	३१	३०	२९	२८	२७	२६	१८	१७	१५	१४	१२	१०	९	७	५	३	१	००
	२	३०	५७	२०	४२	००	१६	२८	३८	४४	४७	४६	४२	१०	२९	५७	२०	४१	५८	१३	२५	३६	४५	५३	००
मां	६	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	३	२	२	२	१	१	१	१	००	००	००	००	००
	१०	५९	४८	३६	२५	१३	१	४९	३७	२५	१३	००	४७	२०	१६	२	४९	३६	२२	९	५६	४२	२८	१४	००

भौमस्य वक्रांशाः १६४ पश्चादस्तांशाः २८ प्रागुदयांशाः ३३२ वक्रदिनानि ७२ अस्तदिनानि १२४ ॥

चक्र नं. ३२.

॥ अथ बुधफलम् शीघ्रमान्द्यर्थं ॥ मन्दोच्चं भं० १६६।७।१०।१२८।१३।२३ गतिः २४५।३२ ॥

के	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
अं	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७
	१७	३३	४९	५	२१	३७	५३	९	२६	४२	५८	१४	३०	४६	२	१८	३४	५०	६	२१	३७	५३	१	२४	२९	५५	१०	२५	४१	५७
मा	०	०	०	०	०	००	००	००	००	००	००	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२
	५	१०	१४	१९	२४	२८	३३	३८	४२	४७	५२	५६	१	५	१०	१४	१९	२४	२८	३२	३६	४१	४५	४९	५४	५८	२	६	१०	१४

के	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
अं	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१५
	१२	२७	४२	५७	१२	२७	४३	५७	१२	२७	४२	५६	११	२५	४०	५४	८	२२	३६	४९	३	१७	३१	४४	५७	१०	२३	३६	४९	२
मा	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
	१८	२२	२५	२९	३३	३६	४०	४४	४७	५१	५५	५९	२	५	८	११	१४	१७	२०	२३	२६	२९	३२	३४	३७	४०	४२	४५	४७	५०

के	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
अं	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०
	१४	२७	३९	५१	३	१५	२७	३९	५०	२	१३	२४	३४	४४	५५	६	१६	२६	३६	४५	५४	३	११	२०	२९	३७	४५	५३	००	७
मा	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	५३	५४	५६	५८	००	२	४	६	८	९	१०	११	१२	१३	१५	१७	१८	१९	२०	२२	२३	२४	२५	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२७

||गुरु|| च० न. ३२

को	शी	मा	को	शी	मा	को	शी	मा
९१	२० १४	४ २७	१२१	२१ १२	३ ५६	१५१	१४ ४४	२ १९
९२	२० २१	४ २८	१२२	२१ ८	३ ५४	१५२	१४ २१	२ १५
९३	२० २८	४ २८	१२३	२१ ३	३ ५२	१५३	१३ ५८	२ ११
९४	२० ३५	४ २७	१२४	२० ५७	३ ४९	१५४	१३ ३४	२ ६
९५	२० ४१	४ २७	१२५	२० ५१	३ ४७	१५५	१३ ९	२ २
९६	२० ४६	४ २७	१२६	२० ४४	३ ४४	१५६	१२ ४३	१ ५७
९७	२० ५१	४ २७	१२७	२० ३६	३ ४१	१५७	१२ १७	१ ५३
९८	२० ५६	४ २६	१२८	२० २९	३ ३९	१५८	११ ४९	१ ४८
९९	२१ १	४ २६	१२९	२० २१	३ ३६	१५९	११ २३	१ ४४
१००	२१ ५	४ २५	१३०	२० १३	३ ३३	१६०	१० ५५	१ ३९
१०१	२१ १०	४ २४	१३१	२० ५	३ ३०	१६१	१० २७	१ ३५
१०२	२१ १४	४ २४	१३२	१९ ५४	३ २७	१६२	९ ५७	१ ३०
१०३	२१ १८	४ २३	१३३	१९ ४३	३ २४	१६३	९ २७	१ २५
१०४	२१ २१	४ २२	१३४	१९ ३२	३ २१	१६४	८ ५७	१ २०
१०५	२१ २३	४ २१	१३५	१९ २०	३ १८	१६५	८ ५६	१ १६
१०६	२१ २५	४ २०	१३६	१९ ८	३ १५	१६६	७ ५५	१ ११
१०७	२१ २७	४ १९	१३७	१८ ५५	३ १२	१६७	७ २६	१ ६
१०८	२१ २९	४ १८	१३८	१८ ४२	३ ८	१६८	६ ५०	१ १
१०९	२१ ३१	४ १७	१३९	१८ २७	३ ५	१६९	६ १८	० ५६
११०	२१ ३१	४ १६	१४०	१८ १३	३ २	१७०	५ ४५	० ५१
१११	२१ ३१	४ १५	१४१	१७ ९	२ ५९	१७१	५ १२	० ४५
११२	२१ ३१	४ १३	१४२	१७ ४२	२ ५५	१७२	५ ३८	० ४०
११३	२१ ३१	४ ११	१४३	१७ २४	२ ५१	१७३	४ ४	० ३६
११४	२१ ३०	४ ९	१४४	१७ ६	२ ४७	१७४	३ २९	० ३१
११५	२१ २९	४ ८	१४५	१६ ४८	२ ४३	१७५	२ ५५	० २६
११६	२१ २८	४ ६	१४६	१६ २९	२ ३९	१७६	२ २०	० २१
११७	२१ २५	४ ४	१४७	१६ ९	२ ३५	१७७	१ ४५	० १५
११८	२१ २२	४ २	१४८	१५ ४९	२ ३१	१७८	१ ११	० १०
११९	२१ १९	४ ००	१४९	१५ २८	२ २७	१७९	० ३६	० ५
१२०	२१ १६	३ ५८	१५०	१५ ६	२ २३	१८०	०० ००	०० ००

बुधस्य वक्रांशाः २१६ । मार्गांशाः १४४ । पश्चादस्तांशाः २०५ । प्रागुदयांशाः १५५ । प्रागस्तांशाः ५०पश्चादुदयांशाः ३११ । अस्तादिनानि १६ । वक्रदिनानि २४ । मार्गदिनानि ३ । अस्तादिनम् ३२ ॥

॥ गुरु ॥ चक्र नं. ३३.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	०
०	०	०	०	०	००	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	
१०	१९	२९	३८	४८	५८	८	१८	२७	३७	४७	५७	७	१६	२६	३६	४६	५५	४	१४	२४	३३	४२	५२	२	११	२०	३०	३९	४९	
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	
५	१०	१५	२१	२६	३१	३७	४२	४७	५२	५७	२	७	१२	१७	२२	२७	३२	३७	४२	४७	५२	५७	१	७	११	१५	२०	२४	२९	
३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०
४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	८	
५९	७	१७	२६	३४	४३	५२	१	९	१८	२६	३५	४४	५२	००	९	१७	२५	३३	४१	४८	५६	४	१२	२०	२७	३४	४१	४८	५५	
२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	
३३	३८	४२	४७	५१	५५	५९	४	८	१२	१६	२०	२३	२७	३१	३५	३९	४२	४५	४९	५२	५६	५९	२	५	८	११	१४	१७	२०	
६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	
९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	
१	८	१४	२१	२८	३४	४०	४५	४९	५४	५९	४	९	१४	१९	२४	२८	३३	३७	४१	४६	५०	५४	५८	१	४	७	१०	१३	१६	
४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	
२२	२५	२७	३०	३२	३५	३७	३९	४१	४३	४५	४६	४९	५१	५२	५४	५५	५६	५७	५९	०	१	१	२	२	३	४	५	५	५	

गुरोर्वक्रांशाः ३२० । मार्गांशाः १३० । पश्चादस्तांशाः १४ । प्रागुदयांशाः ३४६ । वक्रदिनानि ११२ अस्तदिनानि ३२ ॥

चक्र नं. ३३.

अथ गुरोः फलम् ॥ शीघ्रमान्द्यं च० मन्दोच्च भ० ४०७।८।२१।२२।४।३। गतिः ५।०॥

९१	११	१९	५	६	१२१	१०	४६	४	२९	१५१	६	३४	२	३६
९२	११	२२	५	६	१२२	१०	४१	४	२६	१५२	६	२३	२	३१
९३	११	२५	५	६	१२३	१०	३६	४	२३	१५३	६	११	२	२७
९४	११	२७	५	६	१२४	१०	३१	४	२१	१५४	५	५९	२	२२
९५	११	२८	५	६	१२५	१०	२५	४	१८	१५५	५	४७	२	१७
९६	११	२९	५	५	१२६	१०	१९	४	१५	१५६	५	३४	२	१२
९७	११	३०	५	५	१२७	१०	१३	४	१२	१५७	५	२१	२	७
९८	११	३०	५	४	१२८	१०	७	४	९	१५८	५	८	२	२
९९	११	३०	५	४	१२९	१०	१	४	६	१५९	४	५५	१	५७
१००	११	३१	५	३	१३०	९	५४	४	३	१६०	४	४२	१	५१
१०१	११	३१	५	३	१३१	९	४७	३	५९	१६१	४	२९	१	४६
१०२	११	३१	५	२	१३२	९	३९	३	५५	१६२	४	१६	१	४१
१०३	११	३१	५	१	१३३	९	३२	३	५२	१६३	४	२	१	३५
१०४	११	३०	५	००	१३४	९	२५	३	४९	१६४	३	४८	१	३०
१०५	११	२९	४	५९	१३५	९	१७	३	४५	१६५	३	३४	१	२४
१०६	११	२८	४	५८	१३६	९	७	३	४१	१६६	३	२०	१	१९
१०७	११	२७	४	५७	१३७	८	५९	३	३७	१६७	३	६	१	१३
१०८	११	२६	४	५५	१३८	८	५०	३	३३	१६८	२	५२	१	८
१०९	११	२५	४	५४	१३९	८	४१	३	२९	१६९	२	३८	१	२
११०	११	२४	४	५२	१४०	८	३२	३	२५	१७०	२	२४	०	५७
१११	११	२२	४	५०	१४१	८	२२	३	२१	१७१	२	१०	००	५१
११२	११	१९	४	४९	१४२	८	१२	३	१७	१७२	१	५५	००	४५
११३	११	१६	४	४७	१४३	८	२	३	१३	१७३	१	४१	००	४०
११४	११	१३	४	४५	१४४	७	५२	३	८	१७४	१	२७	००	३४
११५	११	१०	४	४३	१४५	७	४१	३	४	१७५	१	१३	००	२९
११६	११	६	४	४१	१४६	७	३१	३	००	१७६	०	५९	००	२४
११७	११	२	४	३८	१४७	७	१९	२	५५	१७७	००	४४	००	१८
११८	१०	५९	४	३६	१४८	७	८	२	५०	१७८	००	२९	००	१२
११९	१०	५५	४	३४	१४९	६	५७	२	४६	१७९	००	१५	००	६
१२०	१०	५१	४	३१	१५०	६	४६	२	४१	१८०	००	००	००	००

च० नं० ३

अथ शुक्रफलम्। शीघ्रमान्द्यं च। मन्दोच्चं भ० २४२।२।१९।५२/५२।५/७।६/६। गतिः ९४१८॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	०	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	७	७	७	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२
२५	५१	१६	४१	६	३१	५७	२२	४७	१२	३७	३	२८	५३	१८	४३	८	३३	५८	२४	४९	१४	३९	४	३९	५४	१९	४४	९	१३
००	००	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	४	६	८	१०	१२	१५	१७	१९	२१	२३	२५	२७	२९	३०	३२	३४	३६	३८	३९	४१	४३	४४	४६	४८	४९	५१	५३	५४	५६
३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
१२	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	१७	१७	१७	१८	१८	१९	१९	१९	२०	२०	२१	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४
५८	२३	४८	१३	३७	२	२७	५१	१६	४१	५	३०	५४	१९	४३	७	३२	५६	२०	४४	८	३२	५६	२०	४४	८	३२	५६	२०	४४
००	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
५७	५९	०	२	३	५	६	७	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
२५	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२९	२९	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३५	३५	३५
७	३०	५३	१६	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२०	४३	५	२७	४९	१२	३५	५७	१९	४०	३	२३	४४	६	२८	४९	१०	३१	३२
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
३२	३३	३४	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४२	४२	४३	४३	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५

चक्र नं. ३४.

॥ शनिफलं शीघ्रयंमान्द्यंच ॥ चक्र नं० ३९.

को	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
शी	० ६	० १२	० १८	० २३	० २९	० ३५	० ४१	० ४७	० ५३	० ५९	१ ५	१ ११	१ १७	१ २३	१ २९	१ ३५	१ ४१	१ ४७	१ ५३	१ ५९	२ ५	२ ११	२ १७	२ २२	२ २७	२ ३२	२ ३७	२ ४२	२ ४७	२ ५२
मा	० ८	० १५	० २३	० ३०	० ३८	० ४६	० ५३	१ १	१ ८	१ १६	१ २३	१ ३१	१ ३८	१ ४६	१ ५४	२ १	२ ८	२ १५	२ २३	२ ३०	२ ३७	२ ४४	२ ५१	२ ५८	३ ५	३ १२	३ १९	३ २६	३ ३३	३ ३९
को	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
शी	२ ५७	३ २	३ ८	३ १३	३ १८	३ २३	३ २८	३ ३३	३ ३८	३ ४३	३ ४८	३ ५२	३ ५७	४ २	४ ७	४ ११	४ १६	४ २०	४ २५	४ ३०	४ ३५	४ ४०	४ ४४	४ ४८	४ ५२	४ ५६	५ ००	५ ४	५ ८	५ १२
मा	३ ४६	३ ५२	३ ५८	४ ५	४ ११	४ १७	४ २३	४ ३०	४ ३६	४ ४२	४ ४८	४ ५४	५ ०	५ ५	५ ११	५ १६	५ २२	५ २७	५ ३३	५ ३८	५ ४३	५ ४८	५ ५३	५ ५८	६ २	६ ७	६ ११	६ १६	६ २०	६ २५
को	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
शी	५ १५	५ १८	५ २१	५ २५	५ २९	५ ३२	५ ३५	५ ३८	५ ४१	५ ४४	५ ४६	५ ४८	५ ५१	५ ५४	५ ५७	५ ५९	६ १	६ ३	६ ५	६ ७	६ ९	६ ११	६ १३	६ १४	६ १५	६ १६	६ १७	६ १८	६ १९	६ २०
मा	६ ३०	६ ३३	६ ३६	६ ४०	६ ४४	६ ४८	६ ५१	६ ५४	६ ५८	७ २	७ ५	७ ८	७ ११	७ १३	७ १६	७ १८	७ २१	७ २३	७ २५	७ २७	७ २९	७ ३०	७ ३२	७ ३३	७ ३४	७ ३५	७ ३६	७ ३७	७ ३८	७ ३९

मन्दोच्चं भ० १७२।०७।२६।३७।३३।२२। ग० २।० शीघ्रोच्चगतिः ५९।८ ॥

पृ० सं० ३१.

९१	६ २०	७ ३९	१२१	५ ४५	६ ४८	१५१	३ २१	३ ५८
९२	६ २१	७ ४०	१२२	५ ४२	६ ४३	१५२	३ १५	३ २१
९३	६ २१	७ ४०	१२३	५ ३९	६ ३९	१५३	३ ९	३ ४३
९४	६ २२	७ ४०	१२४	५ ३५	६ ३५	१५४	३ ३	३ ३५
९५	६ २२	७ ६०	१२५	५ ३२	६ ३१	१५५	२ ५७	३ २८
९६	६ २२	७ ४०	१२६	५ २८	६ २७	१५६	२ ५०	३ २१
९७	६ २२	७ ३९	१२७	५ २४	६ २३	१५७	२ ४३	३ १३
९८	६ २२	७ ३८	१२८	५ २०	६ १९	१५८	२ ३६	३ ५
९९	६ २२	७ ३८	१२९	५ १६	६ १४	१५९	२ ३०	२ ५७
१००	६ २१	७ ३७	१३०	५ १२	६ ९	१६०	२ २३	२ ४९
१०१	६ २०	७ ३७	१३१	५ ८	६ ४	१६१	२ १६	२ ४२
१०२	६ २०	७ ३७	१३२	५ ४	५ ५८	१६२	२ ९	२ ३४
१०३	६ १९	७ ३६	१३३	४ ५९	५ ५३	१६३	२ २	२ २५
१०४	६ १८	७ ३४	१३४	४ ५६	५ ४८	१६४	१ ५५	२ १७
१०५	६ १७	७ ३२	१३५	४ ५०	५ ४३	१६५	१ ४८	२ ९
१०६	६ १७	७ ३०	१३६	४ ४५	५ ३६	१६६	१ ४१	२ ०
१०७	६ १६	७ २८	१३७	४ ४०	५ ३०	१६७	१ ३४	१ ५२
१०८	६ १५	७ २६	१३८	४ ३५	५ २४	१६८	१ २७	१ ४४
१०९	६ १५	७ २	१३९	४ ३०	५ १८	१६९	१ १९	१ ३६
११०	६ १२	७ २१	१४०	४ २५	५ १२	१७०	१ १२	१ २७
१११	६ १०	७ १८	१४१	४ २०	५ ६	१७१	१ ५	१ १८
११२	६ ७	७ १५	१४२	४ १४	५ ०	१७२	० ५८	१ ९
११३	६ ५	७ १२	१४३	४ ८	४ ५४	१७३	० ५१	१ ०
११४	६ ३	७ ९	१४४	४ ३	४ ४८	१७४	० ४३	० ५२
११५	६ १	७ ६	१४५	३ ५७	४ ४१	१७५	० ३६	० ४३
११६	५ ५८	७ ३	१४६	३ ५२	४ ३४	१७६	० २९	० ३५
११७	५ ५५	७ ०	१४७	३ ४६	४ २७	१७७	० २२	० २६
११८	५ ५२	६ ५७	१४८	३ ४०	४ २०	१७८	० १५	० १७
११९	५ ५०	६ ५४	१४९	३ ३४	४ १३	१७९	० ८	० ९
१२०	५ ४७	६ ५१	१५०	३ २८	४ ५	१८०	० ०	० ०

शनेर्वक्रांशाः २४५ । मार्गांशाः ११५ । पश्चादस्तांशाः १७ । प्रागुदयांशाः ३४३ । अस्तदिनानि ३६ । वक्रदिनानि १३४ ॥

ताराग्रहाणां शीघ्रकेन्द्रगतयः   चक्र नं. ३६.

वक्रिग्रहणां पादप्रवेशः मं $\frac{२७}{४३}$ बु $\frac{१८६}{२४}$ गु $\frac{५४}{८}$ शु $\frac{२७}{०}$ श $\frac{५७}{६}$

नक्षत्र	चतुर्थ ४	तृतीय ३	द्वितीय २	प्रथम १
रे	०० ०० मी	११ २६ ४०	११ २३ २०	११ २० ००
उ	११ १६ ४०	११ १३ २०	११ १० ०	११ ६ ४०
पू	११ ३ २०	११ ०० ०० कु	१० २६ ४०	१० १२ २०
श	१० २० ००	१० १६ ४०	१० १३ २०	१० १० ०
ध	१० ६ ४०	१० ३ २०	१० ० ० म	९ २६ ४०
श्र	९ २३ २०	९ २० ००	९ १६ ४०	९ १३ २०
उ	९ १० ००	९ ६ ४०	९ ३ २०	९ ० ० ध
पू	८ २६ ४०	८ २३ २०	८ २० ०	८ १६ ४०
मू	८ १३ २०	८ १० ००	८ ६ ४०	८ ३ १०
ज्ये	८ ० ० वृ	७ २६ ४०	७ १३ १०	७ २० ००
अनु	७ १६ ४०	७ १३ १०	७ १० ०	७ ६ ४०
वि	७ ३ १०	७ ० ० तु	६ २६ ४०	६ १३ २०
स्वा	६ २० ००	६ १६ ४०	६ १३ २०	६ १० ० ०
चि	६ ६ ४०	६ ३ २०	६ ० ० क	५ २६ ४०
ह	५ २३ २०	५ २० ००	५ १६ ४०	५ १३ २०
उ	५ १० ००	५ ६ ४०	५ ३ १०	५ ० ० सिं
पू	४ २६ ४०	४ २३ २०	४ १० ०	४ १६ ४०
म	४ १३ २०	४ १० ०	४ ६ ४०	४ ३ १०
श्ले	४ ० ० ० क	३ २६ ४०	३ २३ २०	३ २० ०
पु	३ १६ ४०	३ १३ २०	३ १० ०	३ ६ ४०
पुन	३ ३ २०	३ ० ० मी	२ २६ ४०	२ २३ २०
आ	२ २० ०	२ १६ ४०	२ १३ २०	२ १० ००
मृ	२ ६ ४०	२ ३ २०	२ ० ० वृ	१ २६ ४०
रो	१ २३ २०	१ २० ००	१ १६ ४०	१ १३ २०
कृ	१ १० ०	१ ६ ४०	१ ३ २०	१ ० ० मे
भ	० २६ ४०	० २३ २०	० २० ०	० १६ ४० ००
अ	० १३ २०	० १० ० ०	० ६ ४०	० ३ २० ००

इष्टकोष्ठमध्ये यदा ग्रहः पतति तदा मिश्रमानमध्ये तत्फलं ऋणं कार्य्यम् ॥ स्पष्टग्रहमध्ये यदा चरणं पतति तदा मिश्रमानमध्ये तत्फलं धनं कार्यम् ॥ अथाऽगस्त्योदयाऽस्तांशाः ४।१९।२०।१ ईदृशेऽकेंऽगस्त्योदयः ११।१०।२३।२० ईदृशेऽर्केऽगस्त्यास्तः ॥

॥ ग्रहाणां चरणप्रवेशचक्रम् ॥ चक्र न. ३७.

ईदृशोऽर्के १।२।०।० अगस्त्यास्तः ॥ ईदृशोऽर्के अगस्त्योदयः ४।२४।०।० काश्याम् ॥

नक्षत्र	प्रथम १	द्वितीय २	तृतीय ३	चतुर्थ ४
अ	० ३ २० ०	० ६ ४० ०	० १० ० ०	० १३ २० ०
भ	० १६ ४० ०	० २० ०० ०	० २३ ३० ०	० २६ ४० ०
कृ	१ ० ० वृ०	१ ३ २०	१ ६ ४०	१ १० ० ०
रो	१ १३ २०	१ १६ ४०	१ २० ००	१ २३ १०
मृ	१ २६ ४०	२ ०० ०० मि०	२ ३ २०	२ ६ ४०
आ	२ १० ००	२ १३ २०	० १६ ४०	२ २० ००
पु	२ २३ २०	२ २६ ४०	३ ० ० क०	३ ३ २०
पु	३ ६ ४०	३ १० ००	३ १३ २०	३ १६ ४०
आश्ले	३ २० ००	३ २३ २०	३ २६ ४०	४ ० ० सिं०
म	४ ३ २०	४ ६ ४०	४ १० ००	४ १३ २०
पू	४ १६ ४०	४ २० ००	४ २३ २०	४ २६ ४०
उ	५ ० ०० क०	५ ३ २०	५ ६ ४०	५ १० ००
ह	५ १३ २०	५ १६ ४०	५ २० ००	५ २३ २०
चि	५ २६ ४०	६ ०० ०० तु०	६ ३ २०	६ ६ ४०
स्वा	६ १० ००	६ १३ २०	६ १६ ४०	६ २० ००
वि	६ २३ २०	६ २६ ४०	७ ० ० वृ०	७ ३ २०
अनु	७ ६ ४०	७ १० ००	७ १३ २०	७ १६ ४०
ज्ये	७ २० ००	७ २३ २०	७ २६ ४०	८ ० ० ध०
मू	८ ३ २०	८ ६ ४०	८ १० ००	८ १३ १०
पू	८ १६ ४०	८ २० ००	८ २३ २०	८ २६ ४०
उ	९ ० ० म०	९ ३ २०	९ ६ १०	९ १० ००
श्र	९ १३ २०	९ १६ ४०	९ २० ००	९ २३ २०
ध	९ २६ ४०	१० ०० ०० कु०	१० ३ २०	१० ६ ४०
श	१० १० ००	१० १३ २०	१० १६ ४०	१० २० ००
पू	१० २३ २०	१० २६ ४०	११ ० ० मी०	११ ३ २०
उ	११ ६ ४०	११ १० ००	११ १३ २०	११ १६ ४०
रे	११ २० ००	११ २३ २०	११ २६ ४०	० ० ० ०
	१	२	३	४

पठितकेन्द्रांशा अधिकाः संति इष्टकेन्द्रांशा न्यूनाः तदा फलं ऋणं मिश्रमानवारादिमध्ये यदा इष्टकोष्ठकेन्द्रांशा अधिकाः सन्ति पठितकेन्द्रांशा न्यूनास्तदा फलं मिश्रमानवारादिमध्ये धनम् ॥

वर्तमानपाद प्रवेशः परन्तु पूर्वपदेनान्तरं कार्य्यम् ।

मध्य लग्नम् ॥ चक्र नं. १८.

कोष्टक	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	
घटी	२	२	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	
पल	४७	५६	५	१४	२४	३३	४८	५१	१	१०	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	
विपल	००	१६	३५	५१	७	२२	३९	५२	११	२७	४३	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	
कोष्टक	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
घटी	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२
पल	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	००	११	२१	३२	४३	५४	४	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४१	५२
विपल	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	४६	४२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	१८	३४
कोष्टक	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	
घटी	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	
पल	३	१४	२४	३५	४६	५७	७	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३४	४४	५५	६	१७	२७	३८	४९	००	१०	२१	३२	४३	५४	४	१५	
विपल	२०	६	५२	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	००	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	१	४८	३४	

मध्य लग्नम् ॥ चक्र नं. ३८

कोष्ठक	घटी	पल	विपल	कोष्ठक	घटी	पल	विपल	कोष्ठक	घटी	पल	विपल
९१	२३	२४	००	१२१	२८	९	४	१५१	३२	४७	२
९२	२३	१४	००	१२२	२७	५९	४८	१५२	३२	३७	१८
९३	२३	४	००	१२३	२७	५०	३२	१५३	३२	२८	३२
९४	२२	५६	००	१२४	२८	४१	१६	१५४	३२	१९	१६
९५	२२	४४	००	१२५	२७	३२	०	१५५	३२	१०	००
९६	२२	३६	००	१२६	२७	२२	४४	१५६	३२	०	४४
९७	२२	२४	००	१२७	२७	१३	२८	१५७	३१	५१	२८
९८	२२	१४	००	१२८	२७	४	१२	१५८	३१	४२	१२
९९	२२	४	००	१२९	२६	५४	५६	१५९	३१	३२	५६
१००	२१	५४	००	१३०	१६	४५	४०	१६०	३१	२३	४०
१०१	२१	४४	००	१३१	२६	३६	२४	१६१	३१	१४	२४
१०२	२१	३४	००	१३२	२६	२७	८	१६२	३१	५	८
१०३	२१	२४	००	१३३	२६	१७	५२	१६३	३०	५५	५२
१०४	२१	१४	००	१३४	२६	८	३६	१६४	३०	४६	३६
१०५	२१	४	००	१३५	२५	५९	२०	१६५	३०	३७	२०
१०६	२०	५४	००	१३६	२५	५०	४	१६६	३०	२८	४
१०७	२०	४४	००	१३७	२५	४०	४८	१६७	३०	१०	४८
१०८	२०	३४	००	१३८	२५	३१	३२	१६८	३०	९	३२
१०९	२०	२४	००	१३९	२५	२२	१६	१६९	३०	०	१६
११०	२०	१४	००	१४०	२५	१३	००	१७०	२९	५१	०
१११	२०	३	२४	१४१	२५	०	००	१७१	२९	४१	४४
११२	१९	५२	२८	१४२	२४	५४	००	१७२	२९	३२	२८
११३	१९	४१	४२	१४३	२४	४४	००	१७३	२९	२३	२४
११४	१९	३०	६	१४४	२४	३४	००	१७४	२९	१३	१६
११५	१९	२०	१०	१४५	२६	२६	००	१७५	२९	४	४०
११६	१९	९	३४	१४६	२४	१४	०	१७६	२८	५५	२४
११७	१८	५८	३८	१४७	२४	४	०	१७७	२८	४६	८
११८	१८	४६	५२	१४८	२३	५४	००	१७८	२८	३६	५२
११९	१८	३७	६	१४९	२३	४४	००	१७९	२८	२७	३६
१२०	१८	१६	२०	१५०	२३	३४	०	१८०	२८	१८	२०

च० नं. ३९. अथ प्रत्यंशः क्रान्तिः सायनांशग्रहभुजांशसम्मितकोष्ठकस्था क्रांतिः सानुपातात् ग्राह्या ॥

अंश	क्रान्ति अंश	कला	विकला
१	०	२४	३५
२	०	४२	५०
३	१	१३	१५
४	१	३७	४०
५	२	२	५
६	२	२६	३०
७	२	५०	४२
८	३	१४	५४
९	३	३९	४
१०	४	३	८
११	४	२७	१०
१२	४	५१	१२
१३	५	१५	०
१४	५	३८	४७
१५	६	२	२३
१६	६	२६	७
१७	६	४९	४६
१८	७	१३	१४
१९	७	३६	३५
२०	७	५९	३५
२१	८	२२	४६
२२	८	४५	३७
२३	९	८	२८
२४	९	३१	१८
२५	९	५३	२९
२६	१०	१६	००
२७	१०	३८	१९
२८	११	०	१४
२९	११	२२	८
३०	११	४४	०
३१	१२	५	१६
३२	१२	२	४२
३३	१२	४७	४७
३४	१३	८	२७
३५	१३	२९	९
३६	१३	४९	००
३७	१४	९	३९
३८	१४	२९	४६
३९	१४	३९	८३
४०	१५	१९	२
४१	१५	२८	१९
४२	१५	४७	३६
४३	१६	५	५८
४४	१६	२३	४२
४५	१६	४२	१४
४६	१७	६	४६
४७	१७	१७	१८
४८	१७	३५	१८
४९	१७	५२	०
५०	१८	९	३९
५१	१८	२५	१७
५२	१८	४१	५
५३	१८	५६	१३
५४	१९	१३	४२
५५	१९	२७	२२
५६	१९	४२	२
५७	१९	५६	४१
५८	२०	१०	१८
५९	२०	२३	५४
६०	२०	३७	३०
६१	२०	४९	५६
६२	२१	२	३२
६३	२१	१४	४८
६४	२१	२६	६
६५	२१	३७	२४
६६	२१	४८	४२
६७	२१	५८	४५
६८	२२	८	४८
६९	२२	१८	५२
७०	२२	२७	४३
७१	२२	३६	३४
७२	२२	४५	४०
७३	२२	५२	५४
७४	२३	०	२४
७५	२३	५	५५
७६	२३	११	२८
७७	२३	१८	५८
७८	२३	२३	३६
७९	२३	२८	७
८०	२३	४३	१७
८१	२३	४५	७
८२	२३	४७	३६
८३	२३	४९	७
८४	२३	५१	३६
८५	२३	५३	५२
८६	२३	५५	३७
८७	२३	५७	५२
८८	२३	५९	३५
८९	२३	५९	३५
९०	२४	००	००

इति क्रांतिसूक्ष्मः ॥

चक्र नं. ४०. अथ कलादिशरः ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
४	९	१४	१८	२३	२८	३२	३७	४२	४६	५१	५६	६०	६५	६९
२३	२५	८	१९	२१	१२	५२	३२	११	५०	२९	९	४४	१८	५१

१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
७४	७८	८३	८७	९२	९६	१-१	१०५	१०९	११४	११८	१२२	१२६	१३१	१३५
२३	५५	२७	५३	२८	४०	५३	२७	४८	२	१५	२८	४०	५१	००

३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
१३९१०	१४३२०	१४७३०	१५११४	१५४५८	१५८४२	१६२३६	१६६१०	१६९५४	१७३२९	१७७४०	१८१२९	१८४४०	१८७३०	१९०१५

४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
१८४१०	१९३२५	२००३९	२०३४२	२०६४४	२०९४९	२१२४२	२१५५५	२१८२७	२२०७०	२२३४७	२२६४७	२२८५८	२३१२२	२३३५१

६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
२३६६०	२३८२१	२४०२५	२४२३७	२४४२८	२४६३१	२४८१६	२५०/३	२५२००	२५३३६	२५५१२	२५६५८	२५८९०	२५९२८	२६०४८

७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
२६१५६	२६३००	२६४६०	२६४५७	२६५४८	२६६५०	२६७१७	२६७५४	२६९३०	२६८२१	२६९२०	२६९१७	२६०२६	२६९५४	२७०००

प्रत्यंशविक्षेपकला, चन्द्रस्य भुजांशसंमितकोष्ठकस्थशरः सानुपातो ग्राह्यः अयंशरः सूक्ष्मः, कलादिस्त्रिहृतोंगुलादिर्भवति ॥
अयं सूक्ष्मभागादिः ॥

चक्र नं० ४१. अथ चन्द्रदर्शने कर्तव्यता ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	०	०	भुजांशाः
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	०	०	
२	५	८	११	१३	१६	१८	२१	२३	२५	२६	२८	२९	३०	३१	३१	३२	३२	३०	३१	३०	२८	२४	२४	११	१८	१४	१०	५	०	०	०	
५०	२८	२१	७	४५	४०	४४	१	१०	१८	२५	२८	४२	५६	४५	३८	३२	२८	३०	१६	८	३६	३९	१५	१६	८	१२	८	१९	०	०	०	

३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
३०	३१	३२	३	३४	३५	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४०	४१	४२	४३	४३	४४	४५	४५	४६	४७	४७	४८	४९	४९	५०	५०	५१	५१
५४	४३	४०	[illegible]	२४	१६	६	५६	४५	३४	४१	९	५५	४०	२५	९	५२	३५	१६	५७	३७	१६	५५	३२	८	४४	१९	५२	२५	५७
८	७	४१	६	४२	१	५८	२३	४३	२	४९	५२	११	१६	२५	४७	५२	१९	५७	४५	४३	२०	५	२७	५६	३२	१३	५८	५८	४१

६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
५२	५२	५३	५३	५४	५४	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५८	५८	५८	५८	१९	१९	५९	५९	५०	५९	५९	५९	५२	५२	५२	६०
२८	५८	५७	५५	१२	४८	१३	५७	०	२२	४३	२	२२	४०	५७	०	२७	४१	५३	०	०	४०	०	४०	०	५१	५५	५७	०	०
३८	२७	३५	४०	४३	४६	४९	१३	५२	५४	५२	४८	४२	३२	२	४०	४४	२०	३१	०	०	०	०	१७	०	१४	५	४८	०	०

कुहूघटीप्रतिपत्षष्टि ६० क्षिप्तेऽर्हमितम् ॥ रवीन्दुपातनाडिकातिरेकतः शशीक्ष्यते ॥

अस्यार्थः—अमावास्याघटीः षष्ट्या प्रोह्य दिनेशान् संयोज्य सूर्य्यराहुघटीन्यरयदधिकास्तदा शशी दृश्यते ॥

मीने मेषोदये चन्द्रः प्रायः स्याद्दक्षिणोन्नतः ॥ शेषेषु चोत्तरं शृङ्गं समता वृषकुंभयोः ॥ बिम्बतः स्यात्समश्चेन्दौ दुर्भिक्षं दक्षिणोन्नते ॥ १ ॥

च. नं. ४२. चन्द्रस्य विक्षेपांगुलादिः ॥ सपातचन्द्रो विराहुर्वा चन्द्रः षडधिकश्चेच्चक्रा १२ च्छोध्यः, अन्यथा यथास्थित एव तस्यांशाः कर्तव्याः। ते षड्भिर्भाज्या लब्धकोष्ठकस्थो विक्षेपः सानुपातो ग्राह्यः अंगुलादिर्भवति ॥

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
	९	१८	२७	३६	४५	५२	६०	६६	७२	७७	८२	८५	८८	८९	९०	८९	८८	८५	८२	७७	७२	६६	६०	५२	४५	३६	२७	१८	९	०
	२४	४३	४९	३६	०	१४	१३	५३	४४	५७	१३	३६	२	३०	०	३०	२	३६	१३	५७	४४	५३	१३	५४	०	३६	४९	४३	२४	०

च. नं. ४३. सायनांशग्रहः षडधिकश्चेच्चक्राच्छोध्यः, तस्यांशाः षड्भिर्भाज्याः लब्धकोष्ठकस्था क्रांतिः सानुपातात् ग्राह्या। पश्चात्षड्गुणितांशादिस्थूलक्रांतिर्भवति ॥

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
थूल्क्राति	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	३	३	३	४	३	३	३	३	३	३	३	२	२	१	१	१	०	०	०
लघन-	२४	४८	१२	३५	५७	१८	३७	५५	१२	२६	३८	४७	५४	५८	०	५८	५४	४७	३८	२६	१२	५५	३७	१८	५७	३५	१२	४८	२४	०
साधन च	२५	३२	१२	१३	२०	१८	१६	५३	७	१५	७	३४	२६	३६	०	३६	२६	३४	७	१५	७	५३	५६	१८	२०	१३	१२	३२	२५	०

च. नं. ४४.

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२								
	१	२	२	२	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	—	—	—	—	—	—	—	—
	२९	४	३०	५०	७	२२	३५	४६	५६	४	११	१८	२३	२८	३१	३४	३६	३७	३७	३८	३८	३८								

भानुभाज्यं च दशभे निशि चन्द्रो यदा भवेत् ॥ प्रतिपत्पूर्णिमासन्धौ विधुग्रहणमादिशेत् ॥ १ ॥
मासाभिधाननक्षत्रात्षोडशर्क्षे यदा रविः ॥ दिवामाप्रतिपत्सन्धौ सूर्यग्रहणमादिशेत् ॥ २ ॥
पञ्चसु सर्वग्रहणं सप्तसु पादोनितं भवत्यर्द्धम् ॥ एकादशे चतुर्थांशं नास्ति ग्रहणं चतुर्दशे भागे ॥ ३ ॥
राहुचन्द्रमसोर्मानं योगार्द्धं शरवर्जितम् ॥ ग्रासश्चन्द्रस्य तस्यार्द्धं त्रिघ्नं विंशोपका स्मृता ॥ ४ ॥

चक्र नं. ४५. नक्षत्रभोग साधनम् ॥

	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	
चन्द्र	११	११	११	१०	१०	१०	१०	१०	१०	९	९	०००
बिंब	३४	२२	१०	५९	१८	३७	२७	१७	७	५८	४८	०००
पात	२९	२८	२८	२७	२७	२६	२५	२५	२४	२४	२४	०००
बिंब	३४	५४	१६	३८	२	२७	५३	२०	४९	१८	४८	०००
बिंबचन्द्र	८३७	८२२	८२५	८१३	८०३	७८२	७८३	७६३	७५०	७३८	७२०	०००
भुक्ति	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००

चक्र न. ४६. संक्रान्तयः ॥

मे०	वृ०	मि०	क०	सिं०	क०	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०	
१०	१०	१ .	१	१०	१	१०	११	११	११	११	११	बिंब
४६	३५	२५	२६	२३	४४	५७	८	१६	१५	८	८	
००	००	००	००	००	००	००	००	००	०	०	०	प्रतिबिंब
२२	१	२७	२७	३१	२२	१४	५	१	०	५	१३	
५८	७	५६	५६	५७	५	१९	१०	६१	११	६०	५९	रविभुक्ति
४	२	५८	५७	३८	३४	१२	१२	१८	१२	१५	१८	कलादि

नक्षत्रस्य गतैष्यघटिकैक्यभोगतद्वशाच्चन्द्रबिंबं च तत्र पात-बिंबं संक्रान्तिवशात्संसेन यज्यिं चन्द्रबिंबं पातबिंबं कलादिना हीनमंगुलादिग्रासो भवति ग्रासो विंशतिगुणितः चन्द्रबिंबभक्तो विंशोपकाः स्युः ॥ इति चन्द्रग्रहणम् ॥

$\frac{४७}{५२}$ ॥ च. नं. ४७.

रव्यादीनांराश्यादिसप्तदिनगतयः ॥

सू	च	म	बुके	बृ	शुके	श	रा	के उ	बु उ
•	३	•	११	०	११	•	•	०	०
६	२	३	८	०	२५	०	०	०	२८
५३	१४	४०	१५	३४	४१	१४	२२	४६	३८
५७	४	५	१०	५५	३	२	१५	४६	४६
११ ०	२६	१७	४६	१	५ ५१	४	१४	४६	३५
ध	ध	ध	ध	ध	ध	व	ऋ	ध	ऋ
१२	४३	१८	१९	४०	५१	१४	३४	३५	०
४९	२०	२	५०	१०	५२	०	५७	३९	०
२७	२४	३५	३०	३३	४२	२७	५६	४८	•
३०	०	३७	०	१९	०	२२	५५	५६	०

च. नं. ४८.

चन्द्रदर्शनसारिणी ॥

•	•	रा १	रा २	रा ३	रा ४	रा ५	रा ६	रा ७	रा ८	रा ९	रा १०	रा ११	रा १२
मे	११	४३	५४	५५	५२	५६	५५	५४	५३	५२	५५	५३	५२
वृ	२१	४८	५१	५४	५८	५७	५७	५५	५३	५०	४८	४७	४७
मि	३१	४४	४७	५६	५७	५९	६३	६३	६१	५६	५१	४९	४४
क	४१	४८	४९	५३	६०	६४	७३	७७	७७	७२	६६	६२	५२
सिं	५१	६४	५८	५९	६४	७१	८२	८२	९४	९३	८२	८२	७२
क	६१	७९	६९	६५	६५	६८	९८	८८	९७	१०२	१००	९७	८०
तु	७१	८४	७४	६६	६२	६४	६६	७५	८४	८२	९७	९७	९२
वृ	८१	७८	७१	६३	५७	५४	५४	५७	६४	७३	७८	८२	६६
ध	९१	६६	६३	५७	५२	४८	४५	४२	४८	५८	५९	६३	६६
म	१०१	५८	५८	५६	५३	५०	४७	४५	४८	४८	५१	५४	५६
कु	१११	५३	५६	५७	५४	५३	५२	५१	४९	५०	५१	५२	५३
मी	१२१	५५	५३	५५	५६	५५	५५	५४	५०	५३	५३	५४	५४

च. नं. ४९. मार्गी. मार्गी.

स्वा	६	६	४०	वि		अ	०	०	०	रे
वि	६	२०	०	स्वा		भ	०	१३	२०	अ
अनु	७	३	२०	वि		कृ	०	२६	२०	भ
ज्ये	७	१६	४०	अ		रो	१	१०	००	कृ
मू	८	०	०	ज्य		मृ	१	२३	२०	रो
पू	८	१३	२०	मू		आ	२	१०	४०	मृ
उ	९	२६	४०	पू		पु	२	२०	००	आ
श्र	९	१०	०	उ		पु	३	३	२०	पु
ध	१०	२३	२०	श्र		श्ले	३	१६	४०	पु
श	१०	६	४०	ध		म	४	०	७	श्ले
पू	११	२०	००	श		पू	४	१३	२०	म
उ	११	२०	३	पू		उ	४	२६	४०	पू
रे	११	२०	२०	पू		ह	५	१०	०	उ
रे	११	१६	४०	उ०		चि	५	२३	२०	ह
आदि				अंत						

च. नं. ५०. अथ भौमादीनां वक्रांशाः ॥

मंगल १६४, बुध १४४, बृहस्पति १३०, शुक्र १६३, शनि ११९, इमे षष्ट्यधिकशतत्रये मध्ये पातित- मार्गांशाः । मं. १९६, बुध २१६, बृ २३०, शु १९७, श २४१, एतच्छीघ्रकेन्द्रे वक्रारंभमार्गारंभौ भौमादीनां प्राच्योदयांशाः । भौ २८, गु १४, श १७ भौमादीनां पश्चादस्तांशाः । भौ ३३२, गु ३४६, श ३४३, बुधशुक्रयोः प्रतीच्यामुदयांशाः बु ९०, शु २४, प्रतीच्यामस्तांशाः बु १५९, शु १७७, प्राच्यामुदयांशाः बु २०९, शु १८३ प्राच्यामस्तांशाः बु ३१०॥ शु ३३६॥

च. नं. ११.

सूर्यगतयः ॥

१	१३	१४	१५	१६	१७
००	०	०	०	०	०
०	१२	१३	१४	१५	१६
५९	४८	४१	२	४६	४५
८	४६	५४	३२	२०	२८
५४	१२	२२	३६	४२	५२
१४	१४	३	३	४६	४६
३८	४३	३८	६०	२७	५२
४३	३०	३५	३०	२०	२
					३०

(च. नं. ११.)

चंद्रगतयः॥७९०।३५

१	१३	१४	१५	१६	१७
०	५	६	६	७	७
१३	११	४	१७	०	१३
१०	१७	२८	३८	४८	१२
३४	३३	८	४३	१०	३९
५२	२६	५२	०	५३	४७
३	४८	१६	५७	१	४
५९	३७	५८	१६	५	५४
४	५८	४८	०	७	११
२२	३६		३	१२	२४

अतश्च न्यूनाधिकत्वे अनुपातो विधेयः।

च. नं. ५२ चन्द्रोच्चगतयः

१	१३	१४	१५	१६	१७
०	०	०	०	०	०
०	१	१	१	१	१
६	६	२२	४०	४६	५४
४०	५२	३३	१४	५५	३६
५८	५०	२९	३७	३६	२४
३०	२८	९	४०	११	४१
४१	५८	३९	२५	२	४३
२४	१३	२७	२	२६	५०
	४१		०	८	१६

चन्द्रपातगतयः

१	१३	१४	१५	१६	१७
०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०
३	४१	४४	४७	५०	५३
१८	१९	३०	४१	५०	२
५६	४३	२८	१३	५८	४३
४६	४४	२९	४४	२९	२४
५९	५६	५५	५५	१५	५५
४२	१५	५३	३६	१८	१
२५	२५	५७	१५	४०	५

भौमगतयः

१	१३	१४	१५	१६	१७
०	०	०	०	०	०
०	६	७	७	८	८
३१	८	२०	५१	२३	५४
२६	१४	१०	३७	३	२९
२८	६	३४	२	३०	५९
११	२०	२६	५०	५८	९
८	५६	५	१४	२३	३२
५६	१४	११	७	४	००
२१	५३	१४	४५	१६	६१

बुधशीघ्रोच्चगतयः

१	१३	१४	१५	१६	१७
०	१	२	२	२	२
४	२३	२७	१	५	९
५	१२	२७	२३	२८	३६
३२	००	३६	५	३७	९
१०	२९	५९	१०	३५	५५
४५	४	४५	२७	९	५५
५१	६	५७	४९	४०	३५
१६	३२	५०	६	२३	२९
२६	३८	४	३०	५८	२२

गुरुगतयः

१	१३	१४	१५	१६	१७
०	०	०	०	०	०
०	१	१	१	१	१
४	४	९	१४	१९	२४
५९	४८	४८	४७	१५	४५
८	५४	३	१३	१०	४०
४८	३१	२०	१	५३	४६
३५	४५	११	५६	३२	८
४७	१०	८	५४	४१	१०
२७	००	२८	१५	१२	१२
	१	२८			

शुक्रशीघ्रोच्चगतय

१	१३	१४	१५	१६	१७
०	०	०	०	०	०
२६	२८	१२	१४	१५	२७
७	४९	२५	५५	३८	१४
४३	४०	४८	५४	३	११
३७	२७	१०	१९	३७	२१
१६	४	४०	१३	५६	३३
१२	१९	२६	१३	३०	४६
५९	१७	१०	२०	६	५९
	४१	३६		२४	१८

शनिगतयः

१	१३	१४	१५	१६	१७
०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०
२	२६	२८	३०	३३	३४
०	४	५	५	६	६
१२	५७	२०	४३	६	२९
५३	३४	२८	२१	१४	८
२५	३५	००	२६	४२	५८
४६	९	५५	४०	२९	१५

चक्र नं. ५२.

अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	ऽश्ले	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	वि	अ	ज्ये	व्या.घ.
०	०	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	६	६	७	७	७	उदय
१	१२	४	२१	७	१८	१०	१६	२१	९	१९	२९	२४	४	१	३	१५	२१	लग्न
३६	२९	४८	५६	११	१९	१९	००	१८	००	११	४४	५४	५४	५४	४९	४४	२१	
३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	८	९	८	९	१०	१०	१०	मध्य
१४	२४	८	१९	२	१३	३	१४	१६	१४	१७	६	१९	१६	१८	१	८	२६	लग्न.
३६	४८	४	३९	१७	४८	१८	४५	४८	४८	७६	१५	५४	१२	१८	३०	००	००	
६	६	६	७	७	८	९	९	९	१०	११	११	११	११	००	१	१	१	अस्त
१२	२६	१०	१६	२७	९	७	१६	२४	९	३	१४	१२	२८	१०	२	१६	१६	लग्न.
५८	१७	३०	५०	२०	१९	२०	००	१२	००	११	५६	४४	४८	१२	१८	२४	२६	

मू	पू	उ	अ	श्र	ध	श	पू	उ	रे		हु	म	आ	व	आ		व्या घ.
८	८	८	८	८	८	१०	१०	१०	११		०	४	४	५	०	३	उदय
६	१८	२३	२१	२२	२८	२०	१८	२९	१७		२४	१२	१२	२७	६	९	लग्न.
५८	२९	३०	२	१२	२	२७	५०	५०	४५		४५	३०	३०	४५	६	३६	
११	११	०	१	२	२	२	३	३	३		०	४	४	५	०	३	मध्य
२३	२३	१७	०	४	१०	२०	३	३	३		२४	१२	१२	२७	६	९	लग्नं.
३	२४	१८	०	५७	२६	२	५४	५४	५४		४५	३०	३०	४५	६	३६	
१	२	२	३	३	४	४	५	५	५		७	८	०	१	९	८	अस्त
२६	११	११	१९	१९	२	१९	६	१८	२९		२७	१९	१	३	२२	३	लग्न.
२	१	५	२२	५९	१२	५६	३०	४१	५०		६	२५	१	१२	५५	३६	

च० न. १४. ॥ चरणगतनक्षत्राणि ॥

उदा०	प्रथम चरण	द्वितीय चरण	तृतीय चरण	चतुर्थ चरण
रे	११ १६ ४०	११ २० ००	११ २३ २०	११ २६ ४०
उ	११ ३ २०	११ ६ ४०	११ १० ००	११ १३ २०
पू	१० २० ००	१० २३ २०	१० २६ ४०	११ ० ०
श	१० ६ ४०	१० १० ००	१० १३ २०	० १६ ४०
ध	२९ २३ २०	९ २६ ४०	१० ० ०	१० ३ २०
श्र	९ १० ००	९ १३ २०	९ १६ ४०	९ २० ००
अ	९ ६ ४०	९ ७ ४३ २३ २०	९ ८ ४३ ४५	९ [illegible] ५० ७ २०
उ	८ २६ ४०	९ ० ०	० ३ २०	९ ६ ४०
पू	८ १३ २०	८ १६ ४०	८ २० ००	८ २३ २०
मू	८ ० ०	८ ३ २०	८ ६ ४०	८ १० ००
ज्ये	७ १६ ४०	७ २० ००	७ २३ २०	७ २६ ४०
अनु	७ ३ २०	७ ६ ४०	७ १० ००	७ १३ २०
वि	६ ०० ००	६ २३ २०	६ २६ ४०	७ ० ०
स्वा	६ ६ ४०	६ १० ०	६ १३ २०	६ १६ ४०
चि	५ २३ २०	५ २६ ४०	६ ० ०	६ ३ २०
ह	५ १० ०	५ १३ २०	५ १६ ००	५ २० ००
उ	४ २६ ४०	५ ० ०	५ [illegible] २०	५ ६ ४०
पू	४ १३ २०	४ १६ ४०	४ २० ००	४ २३ २०
म	४ ०० ००	४ ३ २०	४ ६ ४०	४ १० ००
श्ले	३ १६ ४०	३ २० ००	३ २३ २०	३ २६ ४०
पु	३ ३ २०	३ ६ ४०	३ १० ००	३ १३ २०
पुन	२ २० ००	२ २३ २०	२ २६ ४०	३ ० ०
आ	२ ६ ४०	२ १० ००	२ १३ २०	२ १६ ४०
मृ	१ २३ २०	१ २६ ४०	२ ० ०	२ ३ २०
रो	१ १० ००	१ १३ २०	१ १६ ४०	१ २० ०
कृ	० २६ ४०	१ ० ०	१ ३ २०	१ ६ ४०
भ	० १३ २०	० १६ ४०	० २० ०	० २३ २०
अ	० ० ०	० ३ २०	० ६ ४०	० १० ०

चक्र नं. ५५. — उन्नतांशोद्वादशांगुलशंकुच्छाया ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	४
२८७	२४३	२२८	१७१	१३३	११४	९७	८५	७५	६८	६१	५६	५१	४८	४४	४१	३९	३६	३४	३२	३१	२९	२८	२६	२५	२४	२३	२२	२१	२०	४
२५	२६	५७	२६	१०	२६	४३	२३	४५	३	४४	२७	५८	७	४७	५०	१५	५५	५१	५८	१५	४२	१६	५७	४४	३६	३३	३४	२८	४७	

३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	४
१९	१९	१८	१७	१७	१६	१५	१५	१४	१४	१३	१३	१२	१२	१२	११	११	१०	१०	१०	९	९	९	८	८	८	७	७	७	६	४
५८	२२	३८	४७	८	३१	५५	११	४९	१८	४८	१९	५२	२५	००	३५	११	४९	२५	४	४३	२२	२	४३	२४	५	४७	२९	१२	५५	

६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	४
६	६	६	५	५	५	५	४	४	४	४	३	३	३	३	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	४
३९	२२	६	४१	३५	२०	५	५०	३६	२२	७	५३	४०	२६	१२	५९	४६	३३	१९	७	५४	४१	२८	१५	१०	५०	३७	२५	१२	०	

च. नं. ५६.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
१७३	१७६	१७८	१७२	१७९	१७९	१७९	१७९	१७९	१७९	१७८	१७७	१७५	१७२	१६८	१६३	१५७	१५२	१४४	१३७	१३१	१२५	१२०	११७	११५	११६	११८	१२२	१२७	१३३	१४०	१४७	१५४	१६०	१६५	१७०
३४	६	००	००	३३	३५	५२	५१	४२	२४	३०	१५	९	००	१२	१८	४०	४८	२४	४२	३	१९	४५	१४	१८	२७	४०	२७	४८	५१	३०	२७	९	१२	३६	६

चक्र नं. १७. नतघटीलंबनम् ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
०	१	१	२	२	३	३	३	३	३	४	३	३	३	३	३	३
४२	२४	५६	३१	५६	१३	३४	४६	५४	५८	००	५९	५५	४९	४१	२८	१०

दर्शान्तनतनाडीभ्यो लम्बन माह्यं सार्द्धघटीद्वयाधिकनतशीघ्रभागसंस्कृतं यथागतं सूर्यांशकादुन्नतिर्माणा लंबन मुन्नतिघ्नमघीत्याधिकशत १८० भक्तं स्फुटं स्यात्। तद्दर्शांतः प्राङ्नते ऋणं पश्चान्नते धनं [illegible] पर्वांतं स्फुटं स्यात् सार्द्धम् ॥

चक्र न. १८.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८
२८१	२८२	३०२	३१२	३२७	३३७	३३१	३३३	३३९	३२९	३२४	३१७	३०८	२९८	२८७	२७५	२६८	२५७
०	३०	५७	४३	००	३६	४४	३९	९	४१	४५	२५	४५	३०	२१	५०	१८	५७

१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
२४३	२३३	२२४	२१६	२११	२०६	२०३	२०२	२०२	२०५	२०८	२१३	२१९	२२७	२३६	२४७	२५७	२६९
१७	३०	३	३३	३९	३६	२४	१२	३८	४२	३	१५	४०	९	४८	००	५७	२७

चक्र नं. ५९.

१०	१०	१०	६	४	४	६	१०	१०	१०
१६.	१७	१८	१९	२०	३४	३५	००	१	२
५३१	३३७	१८६	६४	०	०.	४६	१८६	६७	५३१
४५	०	०	९८	०	०	९८	००	०	४५

१	२	३	४.	५	६	७	८	९	१०	११
०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२
३८	१६	२६	४०	४९	५७	४	१०	१६	२१	२५
१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
२९	३२	३५	३७	३९	४१	४३	४४	४५	४५	४५

घटीद्वयाधिक स्फुट पर्वान्तनतं कुर्यात् रसघ्ननतभागं सस्कृतं सूर्योशादशकात्सैकादवनतिर्माद्या स्फुटं चंद्रभुक्तित्रयोदशांशः स्यात् । स्फुटार्कगत्या सद्योगस्तस्य मानसंज्ञाः यथागतपर्वांत कालोनसूर्यत्रयोदशलंबनघटिकाभिः संस्कृतं सर्वदा राहुणैव हीनः कार्यः तदंशकाद्विक्षेपो ग्राह्यः विक्षेपमानस्य सदान्तर स्फुटः शरः । शरमाने भाप्यग्रासः स्यात्ग्रासोदशाभो रविभुक्तिः ॥

चक्र न. ६०.

ग्रासः स्याद्राहुसूर्यांतरलवगुणिता पञ्चषष्टि ६५ विशुद्धा राहोर्दूरेऽर्ककेत्वाद्दिलवः गुणिता चंद्रभुक्तेः स्फुटा या ॥ ग्रासो बाणाग्निनिघ्नः स्फुटशशिगतिहृद्विंशकाः स्युश्चतेभ्यः स्थित्यर्द्धं तेन हीनान्वितातिथिघटिकाः स्पर्शमोक्षौ भवेताम् ॥ चन्द्रसूर्यग्रहणे विंशोपकाभ्यास्थित्यर्द्धः ॥ ग्रासोनाद्द्विपः प्रोक्तः स्वाब्धिविंशोपकाधिकेन मीलनोन्मीलनके स्थित्यर्द्धोनपुनस्तया ॥ १ ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
५०	३०	५७	२७	२२	३७	४७	५४	३	११	१९	२६	३२	३७	४३	४९	५४	५९	४	८	११	१४	१७	२१	२५	२७	२९	३१	३१	३३	३५	३७	३८	३९	४०	४०

चक्र न. ६१. सूर्यसौरभम् ॥

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	कोष्ठकः
०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	२९	स्पष्ट
३१	३०	१९	१८	१७	१६	१४	१२	१०	८	६	४	२	५९	५७	५५	५२	५०	४८	४६	४५	४३	४२	४०	३९	४८	३८	३८	३८	३८	३८	सूर्यः
१४	२८	४८	४६	२५	१२	२९	४२	२५	४३	३४	२०	१	४३	२६	३	५४	४६	४५	५१	७	३३	१०	५८	५८	१३	२९	२०	१५	२३	४६	

३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०		कोष्ठकः
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९		स्पष्ट
३९	४०	४१	४२	४३	४५	४७	४९	५१	५३	५५	५७	१९	२०	२	५	७	९	११	१३	१५	१६	१७	१९	२०	२७	२१	२१	२१	२१		सूर्यः
२३	४२	१४	२८	३०	३१	३८	२४	१७	२६	४०	५८	४	१७	३४	५७	६	१४	१५	९	३	२७	५०	२	२	४७	३१	४२	४५	३७		

चक्र नं. ६२. चन्द्रसौरभम् ॥

कोष्ठक	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
फल	०	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
	०	४४	४९	४८	३९	३४	३०	२६	२२	१९	१६	१३	११	१०	९	९	९	१०	११	१३	१६	१९	२२	२६	३०	३४	३९	४४	४९	४४
	०	४१	२६	२४	२२	४०	१८	८	२५	७	१५	५२	१९	३१	४१	३२	४०	३०	४९	५०	१५	१०	२५	००	१४	३०	२२	२४	३०	४१
भुक्तिः	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
	०	०	०	०	१	१	२	३	४	४	५	७	८	९	१०	११	१२	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२१	२२	२५	२३	२३
	०	९	२८	४७	१८	४७	२८	११	५	५९	५८	५	८	२४	३४	४६	५०	८	२३	२८	३४	३३	२७	२१	४	४५	१४	४५	१४	१७

कोष्ठक	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
फलं	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	५	१०	१५	२०	२५	२९	३३	३७	४०	४३	४६	४८	४९	५०	५०	५०	५०	४८	४६	४३	४१	३९	३७	३४	२९	२५	२०	१५	१०	५
	०	२१	३०	३६	३८	२०	४४	५१	५१	५३	१५	२०	१	२२	११	२०	११	२	१	२०	४६	५३	३४	००	४६	२०	४०	३५	३४	२१
भुक्तिः	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
२	२३	२३	२३	२२	२२	२१	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१२	११	१०	९	८	७	५	४	४	४	३	२	१	१	०	०
१०	३३	१७	१४	४५	१४	४५	४	२१	१७	३३	३४	२८	२३	८	१७	४६	३४	२४	८	४	१८	५९	५८	५	११	३८	४७	१८	४७	२८

च. नं. ६३. भौमसौरभम् ॥

को.२९	वली.			उपकद फलम्			सुवली फलम्		
०	३९	१९	३७	२	०	०	८	४७	४६
१	३८	७	४४	१	५३	५२	८	१३	४०
२	३७	५६	००	१	३३	५४	८	०	०
३	३७	४४	१४	१	२७	३९	७	३६	२०
४	३७	३२	३३	१	१६	३५	७	११	४२
५	३७	२१	५३	१	६	२५	६	४२	१३
६	३७	९	३१	०	५७	५	६	१५	५३
७	३६	५९	७	०	४७	५९	६	२	४१
८	३६	४६	५५	०	४१	३५	५	३९	४५
९	३६	३५	५३	०	३१	५५	५	१७	२०
१०	३६	२५	६	०	२५	१	४	५४	३६
११	३६	१४	२०	०	१९	१	४	३२	३२
१२	३६	४	१२	०	१३	५७	४	१०	५७
१३	३५	५४	१२	०	९	५९	३	४९	४५
१४	३५	४४	४४	०	६	५९	३	२९	१०
१५	३५	३५	३५	०	५	१२	२	८	१६
१६	३५	३७	७	०	४	३८	२	५०	१४
१७	३५	१८	१८	०	५	०	२	३१	५५
१८	३५	१२	३३	०	७	१८	२	१५	००
१९	३५	६	३१	०	१०	३५	१	५९	२४
२०	३५	१	५५	०	१५	९	१	४५	४२
२१	३४	५९	२	०	२१	१	१	३३	३७
२२	३४	५९	४३	०	२८	९	१	२४	३५
२३	३५	००	२५	०	३६	२७	१	१८	४९
२४	३५	६	१८	०	४५	५४	१	१७	३२
२५	३५	१७	४	०	५६	२४	१	२१	३६
२६	३५	३४	३७	१	७	४८	१	३३	३२
२७	३६	००	५६	१	२०	२	१	५४	५४
२८	३६	३७	२५	१	३२	५५	२	२०	०
२९	३६	५४	४६	१	४६	१८	२	२२	३७

काष्ठक	वली.			उपकद फलम्			सुवली फलम्		
३०	३८	१९	३७	२	०	०	४	३५	३५
३१	३९	१४	१८	२	११	४३	६	१०	१८
३२	४०	१	४९	२	५७	५	८	०	०
३३	४०	३८	१८	२	३९	५८	९	४२	४२
३४	४१	१०	३७	२	५२	१२	११	२४	२५
३५	४१	२२	१०	३	३	३६	१२	२७	२३
३६	४१	२२	५६	३	१४	६	१३	३०	००
३७	४१	३८	४९	३	२३	३३	१४	५	६
३८	४१	४०	५६	३	३३	५१	१४	३६	३८
३९	४१	४०	२०	३	३८	५९	१४	३८	३४
४०	४१	२७	१९	३	४४	५४	१४	४२	३९
४१	४१	३१	३३	३	४९	२५	१४	४१	११
४२	४१	२६	५१	३	५२	४२	१४	३५	२५
४३	४१	१९	५६	३	५४	४०	१४	२६	१३
४४	४१	११	७	३	५५	२२	१४	१४	२८
४५	४१	३	३९	३	५४	४८	१४	००	३१
४६	४०	५४	३०	३	५३	१	१३	४५	००
४७	४०	४६	५९	३	५०	५	१३	२८	५
४८	४०	३५	२	३	४६	३	१३	९	४६
४९	४०	२४	४४	३	४०	४४	१२	५०	४४
५०	४०	१४	८	३	३४	१८	१२	३०	४०
५१	४०	३	२१	३	२८	५	१२	१०	१५
५२	३९	५२	१९	३	२०	५५	११	४९	३
५३	३९	४१	७	३	१२	१९	११	२७	२८
५४	३९	२९	४३	३	०	५८	११	५	२४
५५	३९	१८	१७	२	५३	२५	१०	४३	००
५६	३९	६	४१	२	४३	२	१०	२०	२३
५७	३८	५५	००	२	३२	५५	९	५७	३९
५८	३८	४३	१५	२	२२	८	९	३४	८
५९	३८	३१	७	२	११	९	९	१०	४७

चक्र नं. ६४ बुधसौरभम् ॥

काष्ठक	वाली फलम्			उपकद फलम्			सुवली फलम्		
०	२३	१९	२४	२	०	०	८	३२	१७
१	२३	११	१७	१	५५	१५	८	१६	१०
२	२३	३	१६	१	५०	३६	८	०	०
३	२२	५५	१३	१	४६	६	७	४३	५०
४	२२	४७	२५	१	४१	४७	७	२७	४३
५	२२	३९	४४	१	३७	४२	७	११	३७
६	२२	३१	७	१	३३	५३	६	५६	६
७	२२	२४	४४	१	३०	००	६	४०	४०
८	२२	१७	२६	१	२७	८	६	२५	२५
९	२२	१०	४५	१	२४	१४	६	१०	४०
१०	२२	४	४७	१	२१	४५	५	४६	२३
११	२१	५८	८	१	१९	४५	५	४२	४२
१२	२१	५२	२५	१	१७	५३	५	२९	४५
१३	२१	४७	१४	१	१६	४०	५	१७	२८
१४	२१	४२	४३	१	१५	००	५	६	२
१५	२१	३६	५८	१	१५	२६	४	५६	००
१६	२१	३५	९	१	१५	३०	४	४६	३७
१७	२१	३३	१५	१	१६	००	४	३९	००
१८	२१	३२	००	१	१६	१८	४	३१	११
१९	२१	३१	५४	१	१८	२६	४	२७	४२
२०	२१	३२	४	१	२०	००	४	२५	१३
२१	२१	३५	४२	१	२२	३८	४	२५	००
२२	२१	३९	५४	१	२५	२६	४	२७	२६
२३	२१	४५	४६	१	२८	३७	४	३२	३६
२४	२१	५३	५४	१	३२	११	४	४०	५९
२५	२२	३	५२	१	३६	९	४	५३	४
२६	२२	१५	०८	१	४०	२५	५	८	४९
२७	२२	२९	४१	१	४५	००	५	२८	५५
२८	२२	४५	१४	१	४९	५०	५	५२	४७
२९	२३	२	५८	१	५४	५१	६	२०	३०
३०	२३	१९	१४	२	०	०	६	११	१०
३१	२३	३६	५०	२	५	०	७	२५	८
३२	२३	५३	३४	२	१०	१०	८	०	०
३३	२४	९	७	२	१५	००	८	३४	५२
३४	२४	२१	०	२	१९	३५	९	८	१०
३५	२४	३४	५६	२	२३	५१	९	२९	३६
३६	२४	४४	५४	२	२७	४९	१०	७	१३
३७	२४	५२	५२	२	३१	२३	१०	३१	५
३८	२४	५८	५४	२	३४	३४	१०	५१	६
३९	२५	३	६	२	३७	२२	११	६	५६
४०	२५	५	४४	२	३९	४०	११	१९	७
४१	२५	६	५४	२	४१	३४	११	२६	२६
४२	२५	६	४८	२	४३	१	११	३२	४०
४३	२५	५	३	२	४४	०	११	३५	००
४४	२५	३	४६	२	४४	२०	११	३४	४७
४५	२४	५९	५	२	४४	३४	११	३२	१८
४६	२४	५६	४५	२	४४	१०	११	२८	४५
४७	२४	५१	३२	२	४३	२०	११	२०	५३
४८	२४	४४	३२	२	४२	३	११	१३	३३
४९	२४	४०	४०	२	४०	२५	११	४	२०
५०	२४	३४	३१	२	३८	१५	११	१३	४८
५१	२४	२३	३	२	३५	४५	१०	४३	२२
५२	२४	२१	१२	२	३२	५२	१०	३०	१५
५३	२४	१४	४	२	३०	००	१०	१७	१८
५४	२४	४१	५१	२	२६	७	१०	३	२७
५५	२३	५९	४	२	२२	३८	९	४९	२०
५६	२३	५१	२५	२	१८	१३	९	३४	३५
५७	२३	४२	३५	२	१३	५४	९	१०	२०
५८	२३	३५	३२	२	९	२४	९	३	५७
५९	२३	२७	५९	२	४	४५	८	४८	२३

च. नं. ६६. शुक्रसौरभम् ॥

कोष्ठक	वली फलम्			उपकेंद्र फलम्			सुवली फलम्		
०	४६	३१	२८	२	०	०	८	२५	२८
१	४६	१८	५१	१	५८	४	८	२५	२५
२	४६	६	१४	१	५६	१०	८	०	०
३	४६	५३	३८	१	५४	२०	७	३४	४५
४	४५	३१	१०	१	५२	३६	७	८	३२
५	४५	२८	४१	१	५०	२८	६	४४	११
६	४५	१६	२७	१	४९	५८	६	१८	२३
७	४५	४	०	१	४८	४	५	५४	३६
८	४४	५१	३८	१	४७	४९	५	२९	४४
९	४४	३०	४७	१	४५	४६	५	५	४
१०	४४	२७	४२	१	४४	४८	४	४०	४१
११	४४	१६	१३	१	४३	४९	४	१६	३८
१२	४४	४	४८	१	४३	२०	३	५३	४६
१३	४३	५३	३८	१	४२	५६	३	३	२०
१४	४३	४१	४६	१	४२	३६	३	६	२९
१५	४३	३२	१२	१	४२	२०	२	४४	११
१६	४३	२२	१८	१	४२	३४	२	२२	३६
१७	४३	१३	३८	१	४२	४९	२	१	२८
१८	४३	३	५८	१	४३	१२	१	४१	३९
१९	४२	५५	४७	१	४३	४७	१	२२	२०
२०	४२	४९	१२	१	४४	३३	१	४	४८
२१	४२	४३	५१	१	४५	३२	०	४८	५७
२२	४२	४०	२१	१	४६	२३	०	३५	२८
२३	४२	३९	२९	१	४७	४८	०	२४	४६
२४	४२	४०	१७	१	४९	१२	०	१७	४५
२५	४२	५०	८	१	५०	४४	०	१६	२
२६	४३	५	३२	१	५२	२३	०	२१	२७
२७	४३	२१	४०	१	५४	१०	०	३७	१९
२८	४४	४३	२७	१	२४	१०	०	३७	१९
२९	४५	१४	४१	१	५८	१०	२	०	२३
३०	४६	३१	१८	२	०	०	३	२७	५७
३१	४७	५८	१५	२	२	०	५	३६	२६
३२	४८	५६	२०	२	३	१८	८	०	०
३३	४९	२१	१६	२	५	४०	१०	३३	३३
३४	४९	५३	२१	२	७	३७	१२	३६	३
३५	५०	१२	४८	२	९	१६	१३	५०	२६
३६	५०	२०	३९	२	१०	८	१४	५१	५३
३७	५०	२३	२७	२	१२	१२	१५	२२	४१
३८	५०	२२	३५	२	१३	३७	१५	३८	२३
३९	५०	१९	५	२	१४	२८	१५	४३	५८
४०	५०	१३	४४	२	१५	२७	१५	४२	१५
४१	५०	६	५९	२	१६	१३	१५	३०	२४
४२	४९	५८	५८	२	१६	४८	१५	२४	२२
४३	४९	५०	१८	२	१७	११	१५	११	३
४४	४९	४०	३८	२	१७	२६	१४	५५	१
४५	४९	३०	४४	२	१७	३०	१४	३७	२९
४६	४९	२०	१०	२	१७	२३	१४	१८	२१
४७	४९	९	१८	२	१७	४	१३	५८	३२
४८	४८	५८	८	२	१६	३९	१३	३७	२४
४९	४८	४६	४३	२	१६	६	१३	१६	४१
५०	४८	३५	४	२	१५	१३	१२	५३	११
५१	४८	२२	९	२	१४	१५	१२	३०	३०
५२	४८	११	८	२	१३	११	१२	७	१३
५३	४७	५८	५६	२	११	५४	११	४३	२२
५४	४७	४६	३६	२	१०	३२	११	१९	१९
५५	४७	३४	१५	२	९	२	१०	५४	५६
५६	४७	२१	४६	२	७	२४	१०	३०	१६
५७	४७	९	१८	२	५	४०	१०	५	३४
५८	४६	५६	४२	२	३	५०	९	४०	३७
५९	४६	४४	५	२	१	५६	९	१५	२९

तिथ्यादिकम् २७ । ६ । ६ । १२ वल्ली ६ । ३० । १७ अनयोर्योगे जात वर्षादौ तिथ्यादिकं २४ । ४ । ३२ । ६७ वल्ली ० । ६ । ६१ अथवा इष्टशकः १६६० एतन्मध्ये अयं पुस्तकीयः शकः १६६० शुद्धः शेष० पुस्तकीयशकादधःस्थतिथ्यादिक २४ । ४ । ३२ । ६७ । वल्ली० । ६ । ६१ । शेषपंक्तौ शून्यकोष्ठकस्याभावाज्जातं वर्षादौ तिथ्यादिकं पूर्वतुल्यमेव ॥ एवमिष्टशकमध्ये पुस्तकीयशके शुद्धे यच्छेषं भवति तत्प्रमितकोष्ठकादधःस्थं तिथ्यादिकं स्थाप्यं वल्ली च स्थाप्या॥एतन्मध्ये पुस्तकीयशकादधःस्थतिथ्यादिकं योज्यम् वल्ल्यां वल्ली योज्या । तद्यथा–तिथिस्थाने तिथिर्योज्या ॥ वारस्थाने वारो योज्यः ॥ घटीषु घटी योज्या पलेषु पलानि॥ततः पलस्थाने षष्टिभक्ते सति फलं घटीषु योज्यम्॥ घटीषु षष्टिभक्तासु फल वारे योज्यम्॥वारेषु सप्ततष्टेषु शेषमितो रव्यादिवारो ज्ञेयः॥अत्र लब्धस्यागः॥ एव वर्षादौ वारो भवति ॥अस्मिन्मकरंदे सर्वत्र वर्तमानो वारो ज्ञेयः ॥ तिथिस्त्रिंशत्तष्टा शेषा वर्षादौ तिथिर्भवति॥अस्यैव नामान्तरं शुद्धिः॥ वल्ल्या ऊर्ध्वांकः षष्ट्याधिकः षष्टितष्टः शेषा वर्षादौ वल्ली भवति ॥ तदनंतरम् अस्मिन्वारादौ देशांतरसंस्कृतिः कार्या। तद्यथा–रेखा स्वदेशांतरयोजनघ्नी गतिर्ग्रहस्याग्रगजैर्विभक्ता॥लब्धा विलिप्ताः खचरे विधेयाः स्वर्ण परे प्राक्समये विलोमम्॥इति ॥ यानि देशांतरयोजनानि रविमध्यगत्या गुणितानि कार्याणि॥पश्चादशीत्या भक्त्वा लब्धपलानि वारादिपलस्थाने-रहितसहितानि कार्याणि यदा ग्रहे ऋणानि तदा धनानि यदा धनानि तदा ऋणानि तिथिनक्षत्रयोगसंक्रांतिमहानक्षत्रेषु ग्रहापेक्षया विपरीतमित्युक्तत्वात्॥ उदाहरणम्॥ काश्यांतरदेशांतरयोजन ६४ ऋणानि सूर्यगत्या ५९ । ८ गुणितानि ३७८४ अशीत्या ८० भक्तानि लब्धपलानि ४७ ऋणानि देशांतरस्य ऋणसंज्ञकत्वात् तिथौ विपरीतमित्युक्तत्वात् जातानि धनानि॥ रेखापुरात् स्वपुरस्थप्रागपरदिग्वस्थित्या ऋणधनत्वमवगतव्यम्॥यस्मिन्वर्षे शुद्ध्यंक एकविंशतिमारभ्य त्रिंशत्पर्यंतं समायाति तस्मिन्वर्षेऽधिमासो ज्ञेयः॥ तद्यथा॥ इष्टशके १९९२॥ एतन्मध्ये पुस्तकीयशके १९४४ शोधितशेष ८ शेषादधस्था तिथिः २८ शकादधस्था तिथिः २७ योगः ५५ त्रिंशत्तष्टे शेषम् २५ अस्मिन्वर्षेऽधिमासो ज्ञेयः॥ संक्रमणवशात् मासो ज्ञेयः ॥ यस्मिन्मासे संक्रांतिर्न भवति सः अधिमासः ॥ अथ उदाहरणक्रमो लिख्यते ॥ इष्टशकः १९९१ एतन्मध्ये पुस्तकीयशकः १९४४ शोधितः शेषं ७ पुस्तकीयशकादधस्थांकः २७ । ९ । २६ । ४५ शेषादधस्थांकः १७ । १ ।

२१ । ९२ अनयोर्योगे जातम् ॥ १४ । ६ । ४८ । ३७ इदं देशांतरपलैः ४७ सहितं जातं वर्षादौ तिथ्यादिकम् १४ । ६ । ४९ । २४ एवं चैत्रशुद्धचतुर्दशी-शुक्रवारमारभ्य वर्षप्रवृत्तिः ॥ शकादधःस्थवल्ली १४ । ३६ । २४ शेषादधःस्थ-वल्ली ४६।२८।१० अनयोर्योगे जाता वर्षादौ वल्ली ४१ । ४ । ४४ एवं कृता इति इदं वारादिकं वल्लीसहितं पंचविंशतिधा स्थाप्यम्॥अथानुक्रमेण तत्तत्पक्षस्थ तिथिगुच्छो योज्यः । तद्यथा—प्रथमस्थाने शून्यकोष्ठकादधःस्थं वारादिकं योज्यम् ॥ ० ० । ० तदधस्था वल्ली ० । ० । ० वल्लीषु योज्या ॥ एवं द्वितीयस्थाने प्रथम-कोष्ठकाधःस्थं वारादिकं ० । ४९ । ३६ योज्यः तदधःस्था वल्ली ३२ । ८ । २३ वल्ली योज्या॥ एवमग्रेऽपि एवं कृते सति तत्तत्पक्षादौ तत्तद्वारादि भवति ॥ तथा कृते जातं प्रथमपक्षस्थं वारादिकं ६ । ४९ । २४ वल्ली ४१ । ४ । ४९ द्वितीय-पक्षस्थं वारादिकं ० । ३९ । १० वल्ली १३ । १३ । ११ तृतीयपक्षस्थ वारादिकं १ । १९ । ५६ वल्ली ४९ । २० । १० एवमग्रेऽपि चतुर्विंशतिपक्षाः भवंति ॥ अधिमासश्चेत्षड्विंशतिपक्षा भवंति ॥ इति नियामकत्वादत्र एकस्थान मधिकं किमर्थमुक्तमिति चेदुच्यते ॥ इष्टवर्षादिमारभ्य द्वादशमासांते अधिमास-श्चेत् त्रयोदशमासांते वर्षसमाप्तिर्भवति॥ अस्माद्द्वितीयदिवसे अग्रिमसौरवर्षप्रवृत्ति-र्न भवति किंतु एकादशदिनांतरे भवति ॥' इति कारणादेकपक्षस्थचालनमंतरा तद्दिवसज्ञानार्थमधिकमुक्तम् ॥ अनया रीत्या प्रतिवर्षमेकादशतिथिवृद्धिः ॥ अनया रीत्या एकादशदिनवृद्ध्या तृतीये वर्षे अधिमासो भवति॥अथ तत्तत्पक्षस्थवारादौ तत्त त्पक्षचालनानि रहितानि तानि कार्याणि कुतः चालनस्य ऋणत्वात्॥तत्तत्पक्षादिस्थ-वल्लीषु वल्लीस्थचालनानि धनानि कार्याणि चालनस्य धनत्वात् ॥ तद्यथा ॥ प्रतिपक्षे पंचदशकोष्ठकाः कार्याः॥ तत्र प्रथमकोष्ठकस्थतिथिवारेषु एको योज्यः ॥ तद्यथा ॥ प्रथमकोष्ठकस्थतिथिवारौ तावेव तयोर्मध्ये एको युक्तः कार्यः द्वितीय-कोष्ठस्थतिथिवारौ भवतः ॥ एवं द्वितीयकोष्ठस्थतिथिवारमध्ये एको युक्तः तृतीय-कोष्ठस्थतिथिवारौ भवतः॥ एवमग्रेऽपि ॥ प्रथमकोष्ठस्थवारादिमध्ये अयं घट्यादि-चालनांको ० । ५७ । ३६ घटीस्थाने रहितः कार्यः तद्द्वितीयकोष्ठस्थघट्या-दिकं भवति ॥ प्रथमकोष्ठे यथास्थितमेव ॥ एवमग्रेऽपि ॥ तथा प्रथमकोष्ठ-कस्थवल्ली यथास्थितैव'॥ तन्मध्ये चालनांको २ । ८ । ३३ । ३२ योजितः॥ द्वितीयकोष्ठस्था वल्ली भवति ॥ एवमग्रेपि ॥ एवं कृते सति अंतिमकोष्ठस्थ-वारादिकं तेनैव चालकेन रहितं सत् द्वितीयपक्षस्थवारादिकतुल्यं भवति ॥

अथ जीर्णपञ्चाङ्गान्नूतनपञ्चाङ्गोत्पत्तिः ॥

गणाधीशं नमस्कृत्य जीर्णपञ्चाङ्गि नूतने ॥ पचाते सुगमोपायो नीलकण्ठेन कथ्यते ॥ १ ॥ भूत्याप्त्या १८ नवभूमयो युगमिता १९।१९।१९।१९ नागेंदवो १८ त्यष्टय १७ वसुवा धृतयो १८।१८।१८।१८।१८।१८ घटींश्च पलेष्वर्क्षमय ३५ सदव १०॥ द्विर्भूराममिता ३१।३१ च्य २ वरनमुदा ४२ स्त्रीपवो ५२ क्षीश्विनो २५ द्वी रुद्रा ११।११ धृतयो १८ नवत्रि ३९ मनव १४ साब्धि ४ स्तिथिषु सभू १ ॥-॥ अथ नक्षत्रानयनम् ॥ आदौ द्वावर्के १२।१२ सल्याश्च नवसु युतास्त्रींदवो १३।१३।१३।१३।१३ १३।१३।१३।१३ न्त्यमिके ऽर्का १२।१२।१२ नाडाष्टघ्नय ४८ सायकविशिख ५५ मिता द्वौ २ चतुर्षु ग्रहाश्च ९।९।९।९॥ त्रिर्वार षोडशैव १६।१६।१६ नव ९ शरमलो ५५ ष्टाब्ध्यश्च द्विवार ४८।४८। योज्यो भाना पलेष्वित्यवधिमनुमिता भे नयो ३ वासरे भू १॥ ३॥ अथ योगानयनम्॥ आद्य तपट्क मनवो रूण स्युर्मध्यर्निक वै तिथयश्च विश्वे १४।१४।१४।१४।१४।१४।१५।१३।१३।१४। १४।१४।१४।१४।१४॥ द्वौ २ द्वौ २ षड ६ ष्टौ ८ दस १० नाग ८ षट्का ६ वेद ४ द्वि २ वेद ४ र्वे ६ हि ८ दि १ गगनो ८ गन ८॥ ४॥ याग द्वौ २ वासरे भू १ धनमथ सहिता पूर्वनाडी भिरग्न्या हाते द्वौ तु पूर्वदिनमपि सकल स्य ज्यमन्यत्पुरावत् ॥ भे रावौ सन्नमेऽक भव ११ कृतिथि १५ कुरामा ३१ तिथौ वासराये योज्या यन्नास्ति चप मलिन इति तदा कार्यमतत्तुराघात्॥ इति जीर्णपञ्चाङ्गान्नूतनपञ्चाङ्गकरणम् । नक्षत्रसंक्रान्तिक्षेपक तिथि ११ वारादि १।१५।३१॥ पूर्व सक्रांति नक्षत्रादपरसंक्रातिभ यदि॥ द्विनिसख्य समर्थं स्यात्तुर्यपञ्चमहर्षता ॥ पष्टेलोक्ता भ्रमत्याद्य गृहीत्वा खर्पर करे ॥ एव सक्रमणार्कस्य फल मोक्ष मनोपिभि ॥ १ ॥ अथ द्वितीयप्रकार तिथ्यादिसाधने—तपस्यासितद्वादशीत क्रमेण क्षिपद्वेदसख्यातिथौ तद्वटाषु । सपादाष्टशीताशु नाडयश्च वारे तथैक नय भे धन नाडिकासु ॥ सपादत्रिभूनाडिकाश्चाथ योगे विधु तद्धटीष्वष्ट वेदान् ॥ अस्य तिथिध्रुव ४।१।१८।१५ नक्षत्रध्रु ३। ।१३।१४ योग ध्रु १११।४७।१५ ॥

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३			
वारादि क्षेपक	१ १८ ४५	१ १८ १०	१ १९ ३१	१ १९ ३१	१ १९ ४	१ १८ ४२	१ १७ ५२	१ १८ २५	१ १८ ११	१ १८ ११	१ १८ ११	१ १८ ३९	१ १८ १४			तिथिघटीषु धन०
नक्षत्रा वधय वारादि०॥	१ १२ ४८	१ १२ ५५	१ १३ २	१ १३ ९	१ १३ ९	१ १३ ९	१ १३ ९	१ १३ १६	१ १३ १६	१ १३ १६	१ १३ ९	१ १२ ५५	१ १२ ४८	१ १२ ४८		नक्षत्रघटीषु धन०
योगाधय: वारादि०॥	१ १४ २	१ १४ २	१ १४ ६	१ १४ ८	१ १४ १०	१ १४ ८	१ १४ ६	१ १४ ४	१ १४ ४	१ १४ ४	१ १४ ६	१ १४ ८	१ ४ १०	१ १४ ८	१ १४ ८	योगघटीषु धन०
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	योगेऽङ्कणम्

॥ इति मकरन्दसारिणी समाप्ता ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः॥

अथ मकरन्दसारिण्याः

उदाहरणप्रारम्भः ॥

नत्वा गजाननं देव विश्वनाथः करोत्यसौ ॥ उदाहरणमुद्रासामकरन्दस्य यत्नतः ॥ १ ॥ श्रीसूर्येति ॥ प्रज्ञा यतः प्राप्येति ॥ श्रीमच्छिवादिति ॥ पृष्ठस्थितासन्नेति ॥ स्पष्टार्थानि पद्यानि ॥ अथ पचांगसाधनम् ॥ तत्र अभीष्टवर्षादितिथिवारादिसाधनमाह ॥ इष्टशकमध्ये पुस्तकीयशकः शोध्यः ॥ स यथा ॥ पुस्तकीयशकपंक्तौ इष्टशकासन्नो यो न्यूनः शको भवति स शोध्यः यावदग्रिमपुस्तकीयशकतुल्यो भवति ॥ तदनतरं द्वयोस्तुल्ययोर्मध्ये पुस्तकीयशकापेक्षय एकाधिको भूत्वा इष्टशकः अग्रे गच्छति तदा स न शोध्यः॥यस्तुल्योजातः स शोध्यः॥ तद्यथा—इष्टशकः१९९१ एतन्मध्ये अय १९४४ पुस्तकीयशकस्तावच्छोध्यः॥यावदग्रिमपुस्तकीयशकः १९६० तुल्यो भवति ॥ तदनंतरम् इष्टशक १९६१ मध्येऽय १५६० पुस्तकीयशकः शोध्यः यावदग्रिमपुस्तकीयशकः १७७६ तुल्यो भवति ॥ एवमग्रेऽपि ॥ ननु पुस्तकीये १९६० इष्टशकयोस्तुल्यताया-मिष्टशकमध्ये १९६० पुस्तकीयशकः १९६० शुद्ध्यत्वेव ॥ इत्य सति पूर्वशक १९४४ शोध्य इति किमर्थमुक्तमिति चेदुच्यते तत्र कारणम् ॥ पुस्तकीयशकपक्तौ एकमारभ्य षोडशशेषाणि सति ॥ इति कारणात् शकद्वयतुल्य-तायामयमेव शोध्य इत्युक्तम् ॥ एव कृते षोडश शेषाणि सति॥अत एव पुस्तकीय-शकपक्तौ परस्परषोडशातर तिष्ठति यदि तुल्ययोः पुस्तकीयेष्टशकयोरंतर क्रियते तदा कापि क्षतिर्नास्ति ॥ परंतु एतावान् विशेषः ॥ यदा पुस्तकीयशकादधःस्थ तिथिवारादिक स्थाप्यं तदधःस्था वल्ली स्थाप्या द्वयोस्तुल्यशकयोरन्तरे शेषं शून्यमवशिष्यते तर्हि शेषपक्तौ शून्यकोष्ठको नास्ति इति कारणात् शकादधःस्थ मेव वर्षादौ तिथ्यादिक भवति । इद पूर्वप्रकारेण सह तुल्यम् ॥ तद्यथा—इष्ट-शकः १९६० एतन्मध्ये पुस्तकीये शके १९४४ शोधिते शेषं १६ पुस्तकीय-शकादधःस्थं तिथ्यादिक२७।९।२६।४९ वल्ली ९४ । ३६ । ३४ । शेषादधःस्थं

तिथ्यादिकम् २७ । ९ । ६ । १२ वल्ली ९ । ३० । १७ अनयोर्योगे जात वर्षादौ तिथ्यादिकं २४ । ४ । ३२ । ५७ वल्ली ० । ६ । ९१ अथवा इष्टशकः १९६० एतन्मध्ये अयं पुस्तकीयः शकः १९६० शुद्धः शेष० पुस्तकीयशकादधःस्थतिथ्यादिकं २४ । ४ । ३२ । ५७ । वल्ली० । ६ । ९१ । शेषपंक्तौ शून्यकोष्ठकस्याभावाज्जातं वर्षादौ तिथ्यादिकं पूर्वतुल्यमेव ॥ एवमिष्टशकमध्ये पुस्तकीयशके शुद्धे यच्छेषं भवति तत्प्रमितकोष्ठकादधःस्थं तिथ्यादिकं स्थाप्यं वल्ली च स्थाप्या॥एतन्मध्ये पुस्तकीयशकादधःस्थतिथ्यादिकं योज्यम् वल्ल्यां वल्ली योज्या । तद्यथा–तिथिस्थाने तिथिर्योज्या ॥ वारस्थाने वारो योज्यः ॥ घटीषु घटी योज्या पलेषु पलानि॥ततः पलस्थाने षष्टिभक्ते सति फलं घटीषु योज्यम्॥ घटीषु षष्टिभक्तासु फल वारे योज्यम्॥वारेषु सप्ततष्टेषु शेषमभितो रव्यादिवारो ज्ञेयः॥अत्र लब्धत्यागः॥ एवं वर्षादौ वारो भवति ॥अस्मिन्मकरंदे सर्वत्र वर्तमानो वारो ज्ञेयः ॥ तिथिस्त्रिंशत्तष्टा शेषा वर्षादौ तिथिर्भवति॥अस्यैव नामान्तरं शुद्धिः॥ वल्ल्या ऊर्ध्वांकः षष्ट्यधिकः षष्टितष्टः शेषा वर्षादौ वल्ली भवति ॥ तदनंतरम् अस्मिन्वारादौ देशांतरसंस्कृतिः कार्या। तद्यथा–रेखा स्वदेशांतरयोजनघ्नी गतिर्ग्रहस्याग्रगजैर्विभक्ता॥लब्धा विलिप्ताः खचरे विधेयाः स्वर्णं परे प्राक्समये विलोमम्॥इति ॥ यानि देशांतरयोजनानि रविमध्यगत्या गुणितानि कार्याणि॥पश्चादशीत्या भक्त्वा लब्धपलानि वारादिपलस्थाने-रहितसहितानि कार्याणि यदा ग्रहे ऋणानि तदा धनानि यदा धनानि तदा ऋणानि तिथिनक्षत्रयोगसंक्रांतिमहानक्षत्रेषु ग्रहापेक्षया विपरीतमित्युक्तत्वात्॥ उदाहरणम्॥ काश्यांतरदेशांतरयोजन ६४ ऋणानि सूर्यगत्या ५९ । ८ गुणितानि ३७८४ अशीत्या ८० भक्तानि लब्धपलानि ४७ ऋणानि देशांतरस्य ऋणसंज्ञकत्वात् तिथौ विपरीतमित्युक्तत्वात् जातानि धनानि॥ रेखापुरात् स्वपुरस्थप्रागपरदिगवस्थित्या ऋणधनत्वमवगंतव्यम्॥यस्मिन्वर्षे शुद्ध्यंक एकविंशतिमारभ्य त्रिंशत्पर्यंतं समायाति तस्मिन्वर्षेऽधिमासो ज्ञेयः॥ तद्यथा॥ इष्टशके १९९२॥ एतन्मध्ये पुस्तकीयशके १९४४ शोधितशेषं ८ शेषादधस्था तिथिः २८ शकादधस्था तिथिः २७ योगः ५५ त्रिंशत्तष्टे शेषम् २५ अस्मिन्वर्षेऽधिमासो ज्ञेयः॥ संक्रमणवशात् मासो ज्ञेयः ॥ यस्मिन्मासे संक्रांतिर्न भवति सः अधिमासः ॥ अथ उदाहरणक्रमो लिख्यते ॥ इष्टशकः १९९१ एतन्मध्ये पुस्तकीयशकः १९४४ शोधितः शेषं ७ पुस्तकीयशकादधस्थांकः २७ । ९ । २६ । ४५ शेषादधस्थांकः १७ । ११

२१ । ५२ अनयोर्योगे जातम् ॥ १४ । ६ । ४८ । ३७ इदं देशांतरपलैः ४७ सहित जातं वर्षादौ तिथ्यादिकम् १४ । ६ । ४९ । २४ एवं चैत्रशुद्धचतुर्दशी-शुक्रवारमारम्य वर्षप्रवृत्तिः ॥ शकादधःस्यवल्ली ५४ । ३६ । ३४ शेषादध.स्य-वल्ली ४६।२८। १० अनयोर्योगे जाता वर्षादौ वल्ली ४१ । ४ । ४४ एवं कृता इति इद वारादिक वल्लीसहित पचविंशतिधा स्थाप्यम्॥अथानुक्रमेण तत्तत्पक्षस्थ तिथिगुच्छो योज्यः । तद्यथा—प्रथमस्थाने शून्यकोष्ठकादधःस्थं वारादिक योज्यम् ॥ ० ० । ० तदधस्था वल्ली ० । ० । ० वल्लीषु योज्या ॥ एवं द्वितीयस्थाने प्रथम-कोष्ठकाध.स्य वारादिकं ० । ४५ । ३६ योज्यः तदधःस्था वल्ली ३९ । ८ । २३ वल्ली योज्या॥ एवमग्रेऽपि एव कृते सति तत्तत्पक्षादौ तत्तद्वारादि भवति ॥ तथ कृते जातं प्रथमपक्षस्थं वारादिकं ६ । ४९ । २४ वल्ली ४१ । ४ । ४९ द्वितीय-पक्षस्य वारादिक ० । ३५ । १० वल्ली १३ । १३ । १३ तृतीयपक्षस्थ वारादिक १ । १९ । ५६ वल्ली ४५ । २० । १० एवमग्रेऽपि चतुर्विंशतिपक्षाः भवंति ॥ अधिमासश्चेत्षड्विंशतिपक्षा भवंति ॥ इति नियामकत्वादन एकस्थान मधिकं किमर्थमुक्तमिति चेदुच्यते ॥ इष्टवर्षादिमारम्य द्वादशमासाते अधिमास-श्चेत् त्रयोदशमासाते वर्षसमाप्तिर्भवति॥ अस्माद्वितीयदिवसे अग्रिमसौरवर्षप्रवृत्ति-र्न भवति किंतु एकादशदिनांतरे भवति ॥ इति कारणादेकपक्षस्यचालनमंतरा तद्दिवसज्ञानार्थमधिकमुक्तम् ॥ अनया रीत्या प्रतिवर्षमेकादशतिथिवृद्धिः ॥ अनया रीत्या एकादशदिनवृद्ध्या तृतीये वर्षे अधिमासो भवति॥अथ तत्तत्पक्षस्थवारादौ तत्त त्पक्षचालनानि रहितानि तानि कार्याणि कुतः चालनस्य ऋणत्वात्॥तत्तत्पक्षादिस्थ-वल्लीषु वल्लीस्थचालनानि धनानि कार्याणि चालनस्य धनत्वात् ॥ तद्यथा ॥ प्रतिपक्षे पंचदशकोष्ठकाः कार्याः॥ तत्र प्रथमकोष्ठकस्थतिथिवारेषु एको योज्यः ॥ तद्यथा ॥ प्रथमकोष्ठकस्थतिथिवारौ तावेव तयोर्मध्ये एको युक्तः कार्यः द्वितीय-कोष्ठस्थतिथिवारौ भवतः ॥ एवं द्वितीयकोष्ठस्थतिथिवारमध्ये एको युक्त. तृतीय-कोष्ठस्थतिथिवारौ भवत ॥ एवमग्रेऽपि ॥ प्रथमकोष्ठस्थवारादिमध्ये अयं घट्यादि-चालनांको ० । ५७ । ३६ घटीस्थाने रहितः कार्यः तद्वितीयकोष्ठस्थघट्या-दिक भवति ॥ प्रथमकोष्ठे यथास्थितमेव ॥ एवमग्रेऽपि ॥ तथा प्रथमकोष्ठ-कस्थवल्ली यथास्थितैव ॥ तन्मध्ये चालनांको २ । ८ । ३३ । ३२ योजितः॥ द्वितीयकोष्ठस्या वल्ली भवति ॥ एवमग्रेपि ॥ एवं कृते सति अंतिमकोष्ठस्थ-वारादिकं तेनैव चालकेन रहितं सत् द्वितीयपक्षस्थवारादिकतुल्य भवति ॥

तदा शुद्धोऽयं क्रमः ॥ अन्यथा अशुद्ध. । एवं वल्ली ॥ उदाहरणम् ॥ प्रथमपक्षस्थवारादिकं १४ । ६ । ४९ । २४ तिथौ वारे च एको युक्तः १५ । ० वटी ४९ । ५० । २४ एतन्मध्ये चालनाको ० । ५७ । ३० रहितः जात द्वितीयकोष्ठस्थ वारादिक १५ । ० । ४८ । २६ । ५४ एव प्रथमपक्षस्थवल्ली ४१ । ४ । ४९ मध्ये चालनाको २ । ८ । ३३ । ३२ युक्तः जाता द्वितीया वल्ली ४३ । १३ । १२ । ३२ एवमग्रेऽपि ॥ तथा कृते जातम् । एवं कृते द्वितीयपक्षस्थे तिथ्यादितुल्यम् षोडशकोष्ठकस्थतिथ्यादिकं जातम् ॥ अथ वल्ल्यां य ऊर्ध्वाको भवति तत्तुल्य तिथिसौरमस्य कोष्टको ग्राह्यः वल्लीस्थोर्ध्वांकादध.स्थाया घटिका भवति तन्न्यूनंतदासन्नतिर्यक् पंक्तिस्थघटिकायातत्कोष्टकादधःस्थघटिकाभिः सहांतर कार्यम् ॥ तद्धनर्णसंज्ञक भवति ॥ यदा अधस्थघटीमध्ये शुद्धं तदा धनसज्ञकमंतर भवति ॥ अन्यथा ऋणसज्ञक भवति ॥ यदा चतुःपचाशत्तिर्यक्पक्तौ घटिकादिक फल गृहीत तदा तदधो घटिकाया अभावात् केन सह अतर कार्यमित्याह ॥ तिर्यक्पंक्तौ शून्यघटिकाया वल्लीस्थोर्ध्वांकतुल्यकोष्टकादध स्थघटिकाभिः सह अंतर कार्यमिति ॥ अत्रोदाहरणम् ॥ वल्ली । ५३ । ५६ । १०

१६	१५	१	२	३	४	५	६
६	०	१	२	३	४	५	६
४९	४८	४७	४६	४५	४४	४३	४२
२४	२६	२८	३१	३३	३६	३८	४०
०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८
४१	४३	४५	३७	४९	५१	५३	५६
४	१३	२१	३०	३१	४७	५६	४
४९	१२	५६	२९	३	३६	१०	४३
०	३२	४	३६	८	४०	१२	६४
७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
०	१	२	३	४	५	६	०
४१	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३५
१२	४५	४८	५०	५२	५५	५७	०
१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
२८	१	२	४	६	८	११	१३
१३	२१	३०	३८	४७	५६	४	१३
१७	५८	२४	५७	३१	४	३८	१२
१२	४८	२०	५२	२४	५६	३८	०

त्रिचाशादधस्थतिर्यक्पक्तौ चतुष्चाशद्घटिकाया घचादिक ८ । १२ ।
चतुष्चाशत्कोष्ठकादधस्थतिर्यक्पक्तौ शून्यघटिकाया घचादिक ९ । ९
अनयोरतर १३ । एव बुद्धिमता ज्ञेम् ॥ तदनतर तिर्यक्पक्तौ या घटिका गृहीता
ता वल्लीस्थघटिकामध्ये शोध्या शेषा या घटिका पलानि भवति तेनातरेण गुण्यानि
पश्चात् षड्भिर्भक्तौ लब्धानि एतानि पूर्वस्थापितघटीमध्ये रहितानि सहितानि
कार्याणि तद्यथा ॥ यदा धनमतर तदा सहितानि ऋण तदा रहितानि कार्याणि॥
एव कृते या घटिका पलानि च भवति ता कोष्ठकस्थघटीमध्ये योज्या स्पष्टा
घटिका भवति ॥ तिथिरेव वारमुलंघ्य अग्रिम वार गच्छति तदा पूर्वस्मिन्वारे षष्टि-
घटिका तिथिकातिथि स्थाप्या ॥ यदैकवारे तिथिद्वय भवत् तदाऽवमदिनम ॥
तदा पूर्वोना परा कार्या सा स्पष्टा भवेत् ॥ अनया रीया नक्षत्रयोगसाधनम् ॥

	१४	१५	१	२	३	४	५	६
वा०	शु०	श०	र०	च०	मं०	बु०	बृ०	शु०
घ	५२	४६	४७	४६	४७	४९	५२	५६
प	२४	२५	३३	५२	३०	३१	३५	४४
	७	७	८	९	१०	११	१२	१३
वा०	श०	र०	च०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०
घ	६०	१	६	११	१६	२०	२३	२४
प	०	३३	४६	५४	३१	३२	१	३४

अथोदाहरणम्॥ प्रथमपक्षस्य प्रथमकोष्ठस्था वल्ली ४१।४।४९ अत्र वल्ल्यामूर्ध्वांके
एकचत्वारिंशद्वर्तते इति कारणात् तिथिसौरमस्थैकचत्वारिंशकोष्ठकादध स्थवल्ल्यां
घटिकाचतुष्टय वर्तते इति कारणात् तिर्यक्पक्तौ शून्यघटिकाया घटयाकः ३।९अयम्
अध स्थघटिकामध्ये २।९८ न शुध्यति अतः अपूर्वघटिकामध्ये शोधित ७ पलायम्
ऋणसज्ञम्॥अवातरे क्रियमाणे घटिस्थाने शून्यमेवावशिष्यते वल्लीस्थघटिकाशून्येन
गुणिताः शून्यमिव जात षड्भक्ते शून्यमिति कारणात्॥घटीस्थाने शून्यत्याग क्रियते
फल पलात्मकमतर गृह्यते वल्लीस्थघटिकादिकम् ४ । ४९ ६द तिर्यक्पक्तिस्थशून्य-
घटीभी रहित जातम्४।४९इदमतरेण गुणितम्३ ३।४३ षड्भक्त लब्धानि पलानि
९ एतानि पूर्वघटीमध्ये ३ । ९ रहितानि जातानि घटीपलानि ॥ ३। ० । एतानि
पूर्वस्थापितप्रथमपक्षस्य प्रथमकोष्ठघटीपलमध्ये।४९।२४।युतानि जातानि चैत्रशुद्ध

१४भृगौ घटीपलानि९२।२४ एवमग्रेऽपि योज्यम्॥ तथा कृते जातः प्रथमः पक्षः॥ एतदुदाहरणोपरि गणकेन गणिते क्रियमाणे यत्रकुत्रापि अङ्कमध्ये अंतरं पतति तर्हि मम न दोषः अस्माभिःशुद्धपुस्तकोपरिक्तमस्ति॥अथ नक्षत्रसाधनम्॥इष्टशकमध्ये १५११पुस्तकीयशके १५४४ शोधिते शेषं ७ शकादधस्थांकः २४।९।९।२८ शेषादधःस्थांकः १६।२।६।२३ अनयोर्योगेजातं ४०।७।१६।१देशांतरपलैः ४७ सहितं ४०।७।१६।४८ ऊर्ध्वांके सप्तविंशतिभिस्तष्टे जातं १३ तदधः सप्ततष्टे जातं०।एवं जातं १३।०।१६।४८ वर्षादौ तिथ्यादिकम्॥ यस्मिन्दिने तिथ्यारम्भो भवति तस्मिन्नेव दिने नक्षत्रयोगारंभ इति व्याप्तिर्नास्तीति तद्दिनात् पूर्वापरदिने वा भवति ॥ चैत्रशुक्ल१९ शनौ हस्तनक्षत्रप्रवृत्तिः॥ शकादधःस्था वल्ली ९३।१९।२१ शेषादधस्था वल्ली ४८।५१।९ योगः ४२।०।३०जाता नक्षत्रवल्ली इदं नक्षत्रादिकं वल्लीसहितं चतुर्दशस्थाने स्थाप्यम्॥अधिमासश्चेत्पंचदशस्थाने स्थाप्यम्॥अनुक्रमेण तत्तत्पक्षस्य नक्षत्रगुच्छायोज्याः॥ तद्यथा–प्रथमस्थाने शून्यकोष्टकादधःस्थं योज्यं द्वितीये प्रथमम्॥एवमग्रेऽपि तदधस्थवल्लीषु योज्या॥ एवं कृते जातं प्रथमपक्षस्थं वारादिकम्॥०।१६।४८ द्वितीयपक्षस्थं ६।३६।९८ प्रथमवल्ली४२।०।३०। द्वितीयवल्ली ४१।३१।९७॥एवमग्रेपि॥ अथ तत्तत्पक्षादिषु वारादौ तत्तत्पक्षचालनानि सहितानि कार्याणि॥वल्लीषु चालनानि धनानि कार्याणि प्रतिपक्षसंमर्विंशति-कोष्ठकाः ॥ तत्र प्रथकोष्ठे प्रथमकोष्ठस्थनक्षत्रादिकं स्थाप्यम् ॥ तदधस्तात् तत्तत्पक्षवल्ली स्थाप्या॥ तदनंतरं प्रथमकोष्ठस्थनक्षत्रादिकं यथास्थितमेव ॥ तन्मध्ये एको युक्तः कार्यः द्वितीयकोष्ठस्थनक्षत्रवारौ भवतः ॥ एवमग्रेऽपि ॥ तथा प्रथमकोष्ठस्थघटिका यथास्थिता एव ॥ तन्मध्ये अयं घटयादिश्चालनाङ्को ०।४४।४८। युक्तः सन् द्वितीयकोष्ठस्थं घटयादिकं भवति॥ तथा प्रथमकोष्ठस्था वल्ली यथास्थितैव ॥ तन्मध्येऽयं घटयादिचालनांको २।१३।१६ योजितः सन् द्वितीयकोष्ठस्था वल्ली भवति ॥ एवमग्रेऽपि ॥ उदाहरणम्–प्रथम कोष्ठस्थनक्षत्रादिकं १३।०।१६।४८। वारेण एको युक्तः॥ नक्षत्रे एको युक्तः॥ १४ घटीफलं १६।४८।एतन्मध्ये चालनांको० ।४४।४८ युक्तः जातं द्वितीयकोष्ठस्थं नक्षत्रादिकं १४।१।१७।३२।४८ एवं प्रथम-पक्षस्थवल्ली ४२।०।३० मध्ये चालनं २।१२।१९।३३ युक्तं जाता द्वितीया वल्ली ४४।१२।४९।३३ एवमग्रेऽपि ॥प्रथमकोष्ठस्था वल्ली

४२।०।३० नक्षत्रसौरभस्य द्विचत्वारिंशत्कोष्ठकादधःस्थे शून्यघटिकाया घट्यांकः १।४७ अधस्थांकः १।४२ अंतरम् ५ ऋणम् अनेनवल्लीस्थ घटी ०।३० पलानि गुणितानि १५० षष्ट्या भक्ते फलानि २।३० षड्भिर्भक्ते फलानि ०।२५ पूर्वघटिकामध्ये १।४७ रहितानि १।४६।३५ एतानि पूर्वस्थापितप्रथमपक्षस्य प्रथमकोष्ठस्थघटीपलमध्ये १६।४८ युतानि जाता घटिका १८।३५। एवं चैत्रशुक्ल १५ शनौ हस्तनक्षत्रस्थघटिकादि ॥ एवमग्रेऽपि ॥ इति नक्षत्रसाधनम् ॥

अथ योगसाधनम् ॥ इष्टशक १६५१ मध्ये पुस्तकीयशके १५४४ शोधिते शेषं ७ शकादधस्थांकः २४।५।११।५७ शेषादधस्थांकः १६।२।५।९ शकादधस्था वल्ली ५३।५६।३८ शेषादधःस्था वल्ली ४८।२।२८ वारादिकयोगे जातं ४०।७।१७।० देशांतरपलैः सहितैः ४०।७।१७।४७ ऊर्ध्वांके सप्तविंशतितष्टे जातं १३।७।१७।४७ वारेषु सप्ततष्टे जाते पूर्णम् ॥ वल्लीयोगः ४१।५९।६। योगादिकं वल्लीसहित चतुर्दशस्थाने स्थाप्यम् ॥ अधिमासश्चेत्पंचदशस्थाने स्थाप्यम् ॥ अथानुक्रमेण तत्तत्पक्षस्थयोगगुच्छा योज्याः ॥ तद्यथा । प्रथमस्थाने शून्यकोष्ठकादधस्थं वारादिकं ।०।०।० योजिते जातं ०।१७।४७ वल्लीषु योजिता वल्ली ४१।५९।६ एवं द्वितीयकोष्ठप्रथमकोष्ठस्थं वारादिकं ४।२७।२४ योजितं ।४।४५।११ वल्ली ५५।३६।२५ वल्लीषु योजिता जाता वल्ली ३७।२६।१ एवमग्रेऽपि ॥ प्रथमस्थयोगादिकं १३।०।१७।४७ योगस्थाने एको युक्तः वारे एको युक्तः घटीपलमध्ये १७।४७ घट्यादिश्चालनांको १।२५।४६ रहितः जातं द्वितीयकोष्ठकस्थं योगादिकं १४।१।१४।२१।१५ एवं प्रथमपक्षस्थवल्लीमध्ये चालनांको २।३।१३।१८ योजितः जाता द्वितीयकोष्ठस्था वल्ली ४४।२।११।८ एवमग्रेऽपि ॥ प्रथमकोष्ठस्था वल्ली ४१।५६।६ योगसौरभस्यैकचत्वारिंशत्कोष्ठकादधःस्थचतुष्पञ्चाशद् घटिकाया घट्यांकः १।४२ अधःस्थांकः १।३७ अंतरम् ऋणेनानेन वल्लीस्थघटीपलानि ५५।६ गुणितानि षड्भक्ते लब्धपलानि ४।१५ एतानि पूर्वघटिकामध्ये १।४२। रहितानि १।३८ जातानि घटीपलानि एतानि पूर्वस्थापितघटीपलमध्ये युतानि जातानि चैत्रशुक्ल १५ शनौ व्याघातयोगघटी १९ पलानि २९ एवमग्रेऽपि । तथा कृते जातः प्रथमपक्षः। अथेष्टतिथ्यादिसाधनम् । वर्षमध्ये यस्मिन्मासे या तिथिरपेक्ष्यते तत्तिथि

पर्यंतं चैत्रादिप्रतिपदमारभ्य तिथयः स्थाप्याः॥ ताः वर्षादितिथ्या हीनाः कार्याः शेषाः सौरवर्षादेरिष्टदिनपर्यंतं तिथयो भवन्ति॥ अभीष्टनक्षत्रयोगसाधने तास्तिथयो द्विष्ठाः एकत्र षट्त्रिंशदंशेन हीनाः॥ अपरत्र द्वाविंशांशेन युताः कार्याः॥ निरवयवेनोभयत्रापि वर्षादितो नक्षत्रयोगा भवंति॥ तिथयः पंचदशभक्ताः कार्याः॥ नक्षत्रयोगौ सप्तविंशतिभक्ताः फलं निरवयव ग्राह्यं ते तिथिनक्षत्रयोगकोष्ठाः स्युः एतत्कोष्ठकादधस्थस्वस्वगुच्छस्थवारादिकं स्थाप्यम्॥ वल्ली च स्थाप्या॥ वारादिकमत्र वर्षादिस्थदेशांतरसंस्कृतं वारादिकं योज्यं वल्लीषु वल्ली योज्या॥ तदनंतरं वारस्थाने पंचदशभागावशेषास्तिथियोगयुक्ताः कार्याः। वारस्थाने सप्तविंशाचष्टं कार्यम् एवं नक्षत्रयोगौ वर्षादिस्थनक्षत्रयोगाभ्यां स हितौ कार्यौ॥ सप्तविंशत्यधिके सप्तविंशतितष्टं कार्यममीष्टनक्षत्रयोगौ भवतः॥ अभीष्टतिथिस्तु ज्ञायत एवेति न तदानयने यत्नो विधेयः॥ वारादिकमध्ये स्वस्ववर्षादिस्थादेशान्तर संस्कृतं वारादिकं योज्यं वल्लीषु वल्लीयोज्या॥ वारस्थाने शेषा नक्षत्रयोगायुताः कार्याः, वारस्थाने सप्तभिस्तष्टं कार्यम्॥तदनतरं स्वस्वचालकाः शेषतिथ्यादिना गुण्याः॥ चालकश्चेद्धनस्तदा घटिस्थाने युक्ताः कार्याः॥ ऋगे रहिताः यदा तु शुद्ध्यति तदा वारादिका ग्राह्याः॥ एवमेव वल्ली॥ एवतिथिनक्षत्रयोगानां वारादिक भवति॥ वल्लीसहितम्॥ अस्मात् प्रागवत् स्वस्वसौरभोपरि घटिकाः साध्याः अभीष्टतिथ्यादिः स्पष्टाघटिका भवंति॥ उदाहरणम्॥ शके १६९१ वैशाखकृष्ण १० घटयायपनं तत्र चैत्रशुद्ध १ प्रतिपदमारभ्यदशमीपर्यंतमिष्टतिथयः २९ वर्षादितिथ्या १४ हीना ११ पंचदशभिर्भक्ताः फल० शेषं ११ तिथिगुच्छस्थं शून्यकोष्टकादधःस्थं वारादिकम् ०।०।० वल्लीच ०।०।० इद वर्षादिकं वारादिभिः ६।४९। २४ युतं वारस्थाने शेषतिथि ११ भिर्युक्तं सप्ततष्टं जातं वारादिकं॥ ३।४९।२४ वल्लीयोजिता ४१।-४।४९ चालकः० ।२७।३६ शेषतिथिभिर्गुणितः १०।३३ इदं घटीस्थने रहितं जातं ३। ३८।५१ वल्लीस्थाने चालकः २।८।३३।:३२ शेषतिथिभिर्गुणितः-२३।३४ अनेन वल्लीयुक्ता जाता वल्ली ४।३८।५२ आभ्यां प्रागवज्जाता वैशाखकृष्ण १० बुधे घटिका १६ पलानि ३१ एताः पूर्वानीततुल्य जाताः। अस्यां तिथौ नक्षत्रयोगानयनम्॥ शेषतिथयः ११ स्वषट्त्रिंशदंशेन रहिता जाताः ११ पुनस्ता एव तिथयः स्वद्वाविंशत्यंशेन युक्ता ११ जातौ

नक्षत्रयोगौ ॥ अनयोरूर्ध्वसप्तविंशतितष्टं फलं शून्यकोष्टकः नक्षत्रगुच्छस्थं शून्यकोष्टकादधःस्थं वारादि०।०।०योगगुच्छशून्यकोष्टस्थं वारादि ०।०।० वल्ली०।०।०नक्षत्रादिकं वारादिकं वारस्थाने शेषनक्षत्रैर्युतं ११। ०। ० इदं वर्षादिस्थकोष्टस्थनक्षत्रवारादिभिः ०।१६।४८ युतं सप्ततष्टं वारादिकं ४।१६।४८ वल्लीषु वल्ली युक्ता ४२।०।३० जाता वल्ली ४२।०।३० एवमेव जातयोगवारादिकं १७।४७ वल्ली ४१।५६।६ नक्षत्रचालकः ४४। ४८ शेषनक्षत्रैर्गुणितः ८।१२ इदं घटीस्थाने युतं जातं नक्षत्रं वारादिकं४।२५।१ वल्लीचालकः २। १२।१६।३२ शेषनक्षत्रैर्गुणितः२४।१५।२।२ अनेन वल्लीयुता जाता वल्ली६। १५।३२ पूर्वानीतनक्षत्रमध्ये वर्षादिस्थनक्षत्रं १३ युतं जातं२४शततारका नक्षत्रम् ॥ एवं प्राग्जातम् ॥ वैशाखकृष्णैकादश्यां गुरौ शततारकानक्षत्रस्य घटिकाः ३ पलानि ११ ॥ अथ योगवारादिस्थचालकः २। २५। ४६ शेषैर्गुणितः ३७।४३।२६ इदं घटीस्थाने रहितं जातं ३।४०।४ वल्लीस्थचालकः २।३।१३।८ शेषयोगैर्गुणितः ३२।३५।२४।२८ अनेन वल्लीयुता जाता ४। ३४। ३० पूर्वानीतयोगमध्ये ११ वर्षादिस्थयोगे युक्ते जातः भुक्तयोगः २४. एवं जातं वैशाखकृष्णदशम्यां बुधे योगघटिकाः १२ पलानि १० कदाचिन्नक्षत्रयोगौ अग्रिमतिथौ गच्छतः तदा शेषनक्षत्रयोगयोरेको रहितः कार्यः ॥ अथ संक्रांतिमहानक्षत्रसाधनम् ॥ इष्टशक १५।५१ मध्ये पुस्तकीयशके १५४४ शोधिते शेषम् ७ शकादधःस्थं वारादिकं ॥५।४१।१७ शेषादधःस्थं वारादिकं १। ४८।४० अनयोर्योगे जातं०।२९।५७ देशांतरपलैः ४७ सहितं जातोऽब्दपः ०।३०।४४ अयं द्वादशस्थाप्यः क्रमेण मेषादिद्वादशसंक्रान्तिक्षेपैर्युतः कार्यः द्वादशसंक्रान्तयः स्युः अब्दपमध्ये मेषसंक्रान्तिक्षेपको०।०।० युक्तः जाता मेषसंक्रान्तिः ०। ३०।४४ एवं चैत्रशुक्लपौर्णमास्यां शनौ आसु घटीषु मेषसंक्रान्तिप्रवेशः॥ वृषसंक्रान्तिक्षेपकः २ ।५७। १ अब्दपमध्ये युतो जातः ३। २७। ४५ भौमवारे आसु घटीषु २७। ४५ वृषसंक्रान्तिप्रवेशः॥ एवं मिथुनादिष्वपि ॥ एवमब्दपः सप्तविंशतिस्थाने स्थाप्यः॥अश्विन्यादिसप्तविंशतिक्षेपकैर्युक्तः कार्यः तत्तन्नक्षत्रप्रवेशो भवति । अश्विनीध्रुवांकः ॥ २६ । ० । ०।० मध्ये०।३०।४४ युक्तः अश्विनीप्रवेशः एवमग्रेऽपि ॥ चैत्रशुद्ध १५ शनौ आसु घटीषु ३०। ४४ अश्विनीप्रवेशः ॥ संक्रमात्संक्रमस्त्रिंशद्दिनांते प्रायो भवति ॥ नक्षत्रान्नक्षत्रप्रवेश-

श्चतुर्दशदिनांतरे भवति ॥ अथत्रिशदिनांते चतुर्दशदिनांतरे स्वस्ववारक्रमेण राशिनक्षत्रप्रवेशौ लेख्यौ ॥ अथ सायनसंक्रमणसाधनम् ॥ यस्मिन् राशौ सायन-सङ्क्रांतिरपेक्ष्यते तद्राशावयनांशाः शोध्याः । स राश्यादिः सूर्यो भवति॥तदासन्न-पञ्चांगावधिस्थसूर्येण सहांतरं कार्यम्॥ तस्य कलाः सूर्यगत्या भाज्याः फलं दिनाद्यं ग्राह्यं तदवधिस्थवारादौ सहितं रहितं कार्यम् ॥ तद्यथा—यदावधिस्थसूर्यादूनो भवति तदा सहितम्—अधिके रहितं कार्यमिति ॥ तस्मिन्वारे सायनसंक्रांति-घटिका भवन्ति ॥ उदाहरणम् ॥ शक.१६९१ सायनवृषसंक्रांतिः साध्यते ॥ अयनांशाः २१ । ५७ एकराशिमध्ये शोधितः जात. सूर्यः०।१२।३ अस्यासन्नो वशाशकृष्ण ३ शनौ अवध्यर्क ० । १३ । २८ । ३९ अनयोरंतरं कलाभिः ५८ । १२ भक्तं फलं दिनाद्य ० । ३६ । ४९ अवधिस्थवारादिकमध्ये ० । २९ । २७ रहित जाता वैशाखकृष्ण १२ भृगौ सायनवृषसंक्रांति घटिकाः ९२ । ४२ ॥अस्याः प्रशंसा ॥ तारैव पुण्यातिशय मुनीन्द्रा वसिष्ठ-मुख्या जगदुर्महांत. ॥ सद्युक्तियुक्तं च विलोक्यतेऽदः परं न चैतद्व्यवहारयोग्यम्॥ इति दिवाकरपंथम् ॥ अथ ग्रहसाधनम् ॥ इष्टशकमध्ये पुस्तकीयशके शोधिते यच्छेषं तत्प्रमितकोष्ठकादध स्थाकमध्ये पुस्तकीयशकादध.स्थाको योजितस्तदधः-स्थवारयोर्योगः कार्यो रव्यादिवर्तमानो वारो ज्ञेय ॥ एवं कृते इष्टवर्षात् प्रथमवर्षे फाल्गुनपौर्णमास्युत्तर याऽमावास्या तस्यामागतवासरे अर्धरात्रसमये ग्रहवल्ली भवति ॥ कदाचित्पूर्वपरदिने वा भवति यस्मिन् दिने आगतवासरो भवति तस्मिन् दिने ग्रहवल्ली ज्ञेया ॥ अत्र वारस्यैव प्राधान्यम् ॥ तदनतरम् एत-द्वल्ली स्वदिनमारभ्य मेषसंक्रांतिदिनपर्यंतम् अन्तरालदिवसैर्वल्लीचतुर्थांको युतः कार्यः सा मेषसंक्रांतावर्धरात्रसमये: ग्रहवल्ली भवति ।॥ मेषसंक्रांतिवल्लीचतु-र्थांके सप्त योज्या सप्तदिनांतरे वल्ली भवति ॥ एवमग्रेऽपि ॥ अवधिस्थवल्ल्युपरि मध्या स्पष्टा ग्रहा. साध्या. ॥ अथ मेषसंक्रांतिदिवसे मध्यमा ग्रहाः साध्याः ॥ देशान्तरबीजसंस्कृताः कार्या तेषु सप्तगुणिताः स्वस्वमध्यगतिर्योज्या ॥ ते अग्रिमावधिस्था भवन्ति ॥ एवमग्रेऽपि ॥ अथात्र यस्मिन् मासे यस्मिन् पक्षे ग्रहचालनमपेक्ष्यते तत्तत्पक्षमासचालनानि प्रथमग्रहदिनवल्ल्यां योज्यानि ॥ एवं कृते तत्पक्षे मासे ग्रहवल्ली भवति॥ यस्मिन् दिने ग्रहसाधनमपेक्षते तावद्भि-र्दिनैर्वल्लीचतुर्थांको युक्तः तावद्भिर्दिनैर्वारो युक्तः सप्ततष्टः कार्यः ॥ एवं कृते

इष्टवारः स एव वल्लीस्थो वार आयाति तदाऽभीष्टदिने ग्रहवल्ली भवति ॥ यदा-ऽभीष्टवारो नायाति तदा दिनद्वयेन एकेन दिनेन वा वल्लीचतुर्थांको युक्तः कार्यः यथाऽभीष्टो वार आयाति तथैव कार्यः ॥ पक्षवल्लीसंस्कारश्चैत्रशुद्धप्रतिपद-मारभ्य वर्तते ॥ एवं ग्रहवल्ली पूर्वमेव चतुर्दश्याम् अमावास्यायां वा आयाति इति कारणात् अयं संस्कार उक्तः ॥ अथ वारानयनम् ॥ ग्रहवल्ली षष्ट्या सव-र्णिता कार्याऽहर्गणो भवति ॥ पश्चात्सप्ततष्टे यच्छेषं तत्प्रमितशुक्रवारमारभ्य वर्तमानो वारो ज्ञेयः ॥ अत्रोदाहरणम् ॥ शके १५३४ वैशाखशुक्ल १५ ग्रह-साधनं क्रियते ॥ इष्टशक १५३४ मध्ये पुस्तकीयशके १५१४ शोधिते शेषं २० शेषादधःस्थांकः ० । २ । २ । ४ वारः २ शकादधःस्थांकः ७ । ५६ ८ । ५२ वारः ५ अनयोर्योगः ७ । ५८ । १० । ५६ । वारयोर्योगः ७ सप्ततष्टः शनिवारे जाता वल्ली ७ । ५८ १० । ५६ एतन्मध्ये वैशाखशुद्ध-पौर्णमासीस्थपक्षवल्ली ० । ० । ० । ४४ युता जाता वैशाखशुद्ध १५ अर्ध-रात्रसमये ग्रहवल्ली ७ । ५८ । ११ । ४१ वारेषु वारो २ युक्तः २० जातः सोमवारः ॥ इयं ग्रहवल्ली रव्यादिसर्वग्रहसाधने उपयुक्ता ॥ अत्रेदमवधेयम् ॥ प्रथमतश्चैत्रादिनिकटग्रहादिनवल्लीतो वक्ष्यमाणरीत्या सूर्यः साध्यः स यदि अपे-क्षितार्कसमस्तदा शुद्धा अन्यथा अशुद्धा ॥ यदि चार्कः एकराशिन्यूनाधिकः तदा वल्लीतलांके खरामा योज्याः शोध्याः पेऽपि क्रमाद्द्वयं देयं हेयं वा ॥ उदाहरणम् ॥ इष्टशकः १५५८ उक्तवज्जाता वल्ली ८ । ० । ३६ । ३७ वारश्च ५ वल्लीस्थसूर्यः १० । २६ । ४५ । २२ अपेक्षितमीनार्का-दून इति वल्लीचतुर्थांके खरामा योजिता जाता वल्ली ८ । ० । ३७ । ७ द्वययोजनाद्वारश्च० एतद्वल्लीस्थसूर्यः ११ । १९ । २६ । २७ अपेक्षितार्कसम इति १५५८ अस्मिन् चैत्रादितः प्रागमायां वल्ली शनौ जाता शुद्धा एवमधि-कत्वे द्रष्टव्यम् ॥ अत एवोक्तं दिवाकरेण—" अपेक्षितार्कादिति " ॥ अथ ग्रह-साधनम् ॥ स्वस्ववाटिकायां वल्ल्यां यश्चतुर्थांकः तत्प्रमितकोष्ठकस्थाश्चत्वा-रोऽङ्काः स्थाप्याः ॥ तदनंतरं वल्लीतृतीयांकतुल्यकोष्ठकस्थप्रथमांकं विहाय चत्वारोंकाः स्थाप्याः ॥ ततो वल्लीद्वितीयांकतुल्यकोष्ठस्थोर्ध्वांकद्वयं विहाय चत्वारोंकाः स्थाप्याः ॥ ततो वल्ली प्रथमांकतुल्यकोष्ठस्थोर्ध्वांकत्रयं विहाय चत्वा-रोंकाः स्थाप्याः ॥ ऊर्ध्वांकास्त्याज्याः ॥ ततस्तेषां योगः कार्यः । ऊर्ध्वांकः

षष्ट्यधिकः षष्टितष्टः कार्यः - सा ग्रहवल्ली· षष्ट्यादिर्भवति ॥ रविचन्द्रादिवल्ली भिन्ना लेख्या ॥ अग्रे उपयुक्तत्वात् ॥ तदनंतरं ग्रहवल्ली षड्गुण्या , अंशादिकं स्यात् ॥ अंशास्त्रिशद्भक्ता राशयो भवंति ॥ एवमर्धरात्रसमये राश्यादिग्रहा भवंति ॥ चन्द्रोच्चबुधभृगुवल्लीनां विशेषः ॥ उक्तवच्चन्द्रोच्चवल्ली कार्या ॥ तस्या ऊर्ध्वांके पंचचत्वारिंशयुक्ता कार्या तदनन्तरं चन्द्रवल्लीमध्ये शोध्या तदनन्तरं षड्-गुणिता कार्या चन्द्रोच्चं भवति ॥ यदा वल्लीमध्ये वल्ली न शुद्धयति तदोर्ध्वा षष्टियुता कार्या ॥ बुधशुक्रोच्चवल्लीमध्ये शोध्या तदनंतरं षड्गुणिता कार्या बुधशुक्रयोः-शीघ्रोच्चं भवति ॥ एवं ग्रहसाधनांते " रेखा. स्वदेशांतरयोजनघ्नी " इत्यादिना देशांतरसंस्कारः कार्यः ॥ अर्धरात्रे चराभावाच्चरसंस्कारो न भवति ॥ उदाहरणम् ॥ शके १९३४ वैशाखशुक्ल १९ वल्ली ७ । ५८ । ११ । ४० रविवाटिकायां चत्वारिंशत्कोष्ठकादधःस्थांकः ६ । ३४ । १४ । २७ एका-दशकोष्ठकादधःस्थांकार्यकं विहाय चत्वारोंकाः ४८ । २४ । ९८ । ३९ अष्टपंचाशत्कोष्ठकादधःस्थांकः ३८ । ५८ । २० । ३४ सप्तमकोष्ठकादधः-स्थांकः ३१ । ५२ । ८ । १४ चतुर्णां योगे जाता रविवल्ली १२९ । ४९ । ४१ । ५४ ऊर्ध्वांके षष्टितष्टे शेषं ९ । ४९ । ४१ । ५४ इदं षड्गुणं जाता अंशाः ३४ । ५८ । ११ । २४ अंशास्त्रिशद्भक्ताः लब्धं राशयः एवं राश्याद्यो रविः १ । ४ । ५८ । ११ चंद्रवल्ली ३९ । २ । १२ । ७ चंद्रः ७ । ० । १३ । १२ चंद्रोच्चवल्ली ५७ । ४१ । ६ । ३७ ऊर्ध्वांके, शरवेद ४५ युक्ता जाता ४२ । ४१ । ६ । ३७ इदं चन्द्रवल्लीमध्ये ३९ । २ । १२ । ७ रहितं जातं ५२ । २१ । ५ । ३० उच्चः १० । १४ । ६ । ३३ भौमवल्ली ४९ । ५३ । ३६ । १८ भौमः ९ । २९ । २१ । ३८ बुधोच्च-वल्ली ६१ । ३४ । ३३ । ५४ रविवल्ली ९ । ४९ । ४१ । ५४ मध्ये शुद्धा जाता १४ । १५ ।८। ० इदं षड्गुणं त्रिशद्भक्तं जातं बुधशीघ्रोच्चं २ । २५ । ३० । ४८ गुरुवल्ली २१ । ४३ । ३१ । ५८ गुरुः ४ । १० । ३१ । १२ शुक्रोच्चवल्ली ४३ । १९ । ३० । १९ रविवल्लीमध्ये शोधिता २२ । ३० । ११ । ३५ पूर्ववज्जातं शुक्रशीघ्रोच्च ४ । १५ । ११ । ९ शनिवल्ली ५४ । १७ । ४१ । २ शनिः १० । २५ । ४६ । ६ केतुवल्ली ३७ । ३० । ४४ । ४१ केतुः ७ । १९ । ४ । २८ अयं राशिषट्कयुक्तो

जातो राहुः १ । १९ । ४ । ३८ अथवा केतुवल्ल्यामूर्ध्वांके त्रिंश ३० युक्ता राहुवल्ली भवति । काश्यां देशांतरयोजनानि६४ऋणानि॥रेखा स्वदेशांतरयोजनघ्नी गतिर्ग्रहस्याभ्रगजैर्विभक्ता ॥ लब्धा विलिप्ता खचरे विधेया प्राच्यामृणं पश्चिमतो धनं च ॥ इत्यादिना देशांतरकलाः ४७ ऋणं देशांतरसंस्कृतो रविः १ । ४ । ९७ । २४ चन्द्रः ७ । ० । २ । ४० उच्चं १० । १४ । ६ । २८ भौमः ९ । २९ । २१ । १३ बुधोच्च २ । २९ । २७ । ३१ गुरुः ४ । १० । २१ । ८ शुक्रोच्चं ४ । १४ । ९९ । ९२ शनिः १० । २९ । ४६ । ९ राहुः १ । १९ । ४ ३० इष्टशकमध्ये १९३४ नवसर्वेंदुरामाः ३१७९ योजिता जातं कलिगतं ४७१३ कलिगतस्य सहस्रांशः १००० अंशादि ४।४२ । ४६ शनिबीजधनम् ॥ एतत्त्र्यंशे १ । ३४ । १६ महित जात बुधोच्चधनं तस्य धनम् ६ । १७ । १ शनिबीजत्र्यंशेन रहितं जातं ३ । ८ । ३१ ऋणं गुरोः शनिबीजं शुक्रोच्चऋणं ४ । ४२ । ४६ बीजसंस्कृतं बुधोच्चं ३ । १ । ४४ । ३२ गुरुः ४ । ७ । १२ । ३७ शुक्रोच्चं ४ । १० । १७ । ७ शनिः ११ । ० । २८ । ९१ ॥ अथ कश्चिद्विशेष उच्यते । यदा ग्रहदिनवल्ली अङ्कचतुष्टयमध्ये शून्यमायाति तदा ग्रहसाधनं कथं कार्यम् ? यतो ग्रहवाटिकायां शून्यकोष्टको नास्ति ॥ आदौ शून्यकोष्ठकमस्तीति चेत् तत्र शून्यस्थाने षष्टिर्वर्तते इति कारणात् शून्यकोष्ठकस्याभावाच्छून्यस्थाने फलाभावः ॥ तत्र अंकत्रययोगे ग्रहवल्ली भवति ॥ वाटिकायामंकवाटिकायामकग्रहणे शून्यस्थाने एकैकम् अंक विहाय योज्यमित्यनुवर्तते । यदा शून्यस्थाने षष्टिः स्थाप्यतेः तदा शून्यकोष्ठकादधःस्थाको ग्राह्यः ॥ एवमकचतुष्टययोगे ग्रहवल्ली भवति ॥ एवं प्रकारद्वये तुल्ये भवतो वल्ल्यौ ॥ कल्पिता वल्ली ७।९८। ० । ४० रविवाटिकायां चत्वारिंशत्कोष्टकादधःस्थाकः ६ । ३४ । १४ । २७ अष्टपञ्चाशत्कोष्टकादधःस्थांकः ३८ । ९८ । २० । ३४ सप्तमकोष्ठकादधःस्थांकः ३१ । ९२ । ८ । १४ एषां योगे जाता वल्ली १७ । २४ । ४३ । १९ अथवा ग्रहदिनवल्ली ७ । ९७ । ६० । ४० चत्वारिंशत्कोष्टकादधःस्थांकः ६ । ३४ । १४ । २७ शून्यकोष्ठकादधःस्थाकः ९१ । २१ । ४१ । ४४ सप्तपंचाशत्कोष्ठकादधःस्थांकः ४७ । ३६ । ३८ । ४९ सप्तमकोष्ठकादधःस्थांकः ३१ । ९२ । ८ । १४ एषां योगे जाता सैव रविवल्ली १७ । २४ ।

४३ । १९ एवं सर्वग्रहेषु शून्यस्थाने शून्यकोष्ठकस्थफलं चेद् गृह्यते तदा इयं वल्ली सम्पद्यते ८ । ४६ । २४ । ५९ तस्मादियमशुद्धा एतदुत्पन्नखेटैर्विसंवादात् ॥ यदा वल्ल्यामंकत्रये शून्यं तदा ऊर्ध्वांकप्रमितकोष्ठकस्थ अधस्थांकमध्ये अंकत्रयं त्यक्त्वा चत्वारोंका ग्राह्याः सैव ग्रहवल्ली ॥ अथ रवींद्वोः स्पष्टीकरणम् ॥ मन्दोच्चं रविमध्यशोध्यं मन्दकेन्द्रं भवति तस्य भुजांशांशाः कार्याः ॥ भुजांशतुल्यकोष्ठकादधःस्थमागाद्यं फलं ग्राह्यम् ॥ तदग्रिम-कोष्ठकस्थफलेन सहांतरं कार्यम् । तेनांतरेण भुजांशादधःस्थं कलाद्यं गुण्यं षष्ट्या भक्तं फलं कलाद्यं ग्राह्यम् एताः कलाः पूर्वस्थापितफलमध्ये युक्ताः कार्याः ॥ अग्रिम-कोष्ठकस्याधिकत्वात् ॥ अंशाद्यमदफलं भवति ॥ मेषादिषट्केन्द्रे ऋणम् ॥ तुलादिषट्के धनम् ॥ अनेन संस्कृतो रविः स्पष्टो भवति ॥ अथ गतिसाधनम् । फलादधःस्थं कलाद्यं गतिफलं ग्राह्य तदग्रिमांतरेण भुजांशाधःस्थं कलाद्य गुण्यं षष्ट्या भाज्यं फलं कलाद्यं ग्राह्यम् ॥ एताः कलाः पूर्वस्थापितगतिकलामध्ये सहिता रहिता कार्याः अग्रिमकोष्ठकवशात् ॥ इदं स्वकीयमध्यगतौ कर्कादिकेन्द्र धनम् ॥ मकरादौ ऋणम् ॥ सा स्पष्टा गतिः ॥ अनया रीत्या चंद्रस्य स्पष्टीकरणम् ॥ अथोदाहरणम् ॥ रवेर्मंदोच्च २।१७ । १७।० रविमध्ये पात्यरविमदकेंद्रं १० । १७ । ४० २४ अस्य भुजांशाः ४२ । १९ । ३६ द्विचत्वारिंशत्कोष्ठका-दधःस्थं फलं १ । २८ । ३ अग्रिमकोष्ठकस्थं फलं ॥ १ । २९ । ४६ अन्तर १ । ४३ अनेन कलाद्यं १९ । ३६ गुणितं ३३ । ३८ षष्टिभक्त फल कलाद्यम् ० । ३३ । ३८ इदं पूर्वस्थापितफलमध्ये १ । २८ । ३ सहितं जात रवेर्मंदफलं १ । २८ । ३६ तुलादिकेंद्रत्वाद्धनमनेन संस्कृतो जातः स्पष्टः सूर्यः ॥ १। ६ । २६ । ० फलादधःस्थ गतिफलं १ । ३८ अग्रिमांतरेण विकलात्मकेन कलाद्यं १९ । ३६ गुणित ३९ । १२ षष्टिभक्त अग्रिमांकस्य न्यूनत्वात् गतिफलमध्ये १ । ३८ रहितं जातं गतिफल १ । ३७ मकरादिकेन्द्रत्वात् ऋणम् अनेन मध्यमा गतिः ५९ । ८ संस्कृता जाता स्पष्टा गतिः ५७।३१ ॥ अथ चंद्रस्पष्टीकरणम् ॥ चंद्रोच्चं चंद्रमध्ये शोधितम् उच्चं १० । १४ । ६ । २८ चंद्रः ७ । ० । २ । ४० जातं चन्द्रस्य मंदकेंद्रं ८।१५ । ५६ । १२ दृक्तवन्मंदफलं धनम् ४ । ५३।५३ अनेन संस्कृतो जातः स्पष्टश्चन्द्रः ७ । ४ । ५६ । ३३ गतिफलं १६ । ५७ धनम् अनेन संस्कृता

मध्या गतिः ७। ९०। ३९ जाता स्पष्टा चंद्रस्य गतिः ८। ०७। ३२॥
अथ भौमादीनां स्पष्टीकरणम्। तत्र गुरुभौमशनीनां शीघ्रोच्चं मध्यमो रविः॥ बुधशुक्रयोः पूर्वं साधितमस्ति॥ यो मध्यमो रविः स एव बुधशुक्रौ॥ ग्रहमध्ये हीनं शीघ्रोच्चं कार्यं शीघ्रकेन्द्रं भवति॥ षड्भाधिकं द्वादशराशिभ्यः शोध्यं षड्भान्न्यूनं यथास्थितमेव तस्यांशाः कार्याः अंशप्रमितकोष्ठकादधःस्थशीघ्रफलं भागाद्यं स्थाप्यम्॥ अग्रिमांतरेण कलाद्यं गुण्यं षष्टिभक्तं फलं कलाद्यं ग्राह्यम्॥ तत्फलं पूर्वस्थापितफलमध्ये रहितं सहितं कार्यम्। अग्रिमकोष्ठवशात्॥ तदंशाद्यं शीघ्रफलं भवति॥ मेषादौ ऋणम्॥ तुलादौ धनम्॥ अस्यार्द्धेन मध्यमः संस्कृतः कार्यः॥ शीघ्रफलार्द्धं संस्कृतो भवति॥ तदनंतरमेतन्मध्ये मंदोच्चं शोध्यं मंदकेन्द्रं भवति॥ षड्भाधिकं द्वादशराशिभ्यः शोध्यं तस्यांशाः कार्याः तत्प्रमितकोष्ठकादधःस्थमंशाद्यं मंदफलं ग्राह्यम्॥ अग्रिमांतरेण कलाद्यं गुण्यम्॥ षष्टिभक्तं कलाद्यम्॥ तत्पूर्वस्थापितफलमध्ये रहितं सहितं कार्यमग्रिमकोष्ठवशात्॥ तन्मन्दफलं भवति इदं यथागतं धनर्णं संपूर्णमध्यमग्रहे देयं समंदः स्पष्टो भवति॥ इदं मन्दफलं पूर्वशीघ्रफलमध्ये धनं चेद्धनम्॥ ऋणं चेदृणं देयम्॥ द्वितीयशीघ्रफलसाधने शीघ्रकेन्द्रं भवति॥ अथवा शीघ्रोच्चं मंदस्पष्टमध्ये शोध्यं शीघ्रकेन्द्रं भवति॥ अस्मात् पूर्ववत् शीघ्रफलं कार्यम्॥ तन्मंदस्पष्टग्रहे देयं स्पष्टग्रहो भवति॥ अथ गतिसाधनम्॥ मंदफलसाधने यन्मंदांकांतरं तेन स्वीया गतीर्गुणयेत्॥ फलं कलाद्यम्॥ तत्स्वगतौ मकरादिमन्दकेन्द्रे ऋणं कर्कादौ धनं कार्यम्॥ सा मंदस्पष्टा गतिर्भवेत्॥ अनेनोना शीघ्रोच्चगतिः शीघ्रगतिर्भवति अन्तिमशीघ्रफलसाधने यच्छीघ्रांकांतरं तेनांतरेण शीघ्रगतिर्गुण्या षष्ट्या भाज्या फलम् अग्रिमकोष्ठकवशान्मंदस्पष्टगतौ धनर्णं कार्यम् सा स्पष्टा गतिर्भवेत्॥ विपरीतशोधनेन वक्रा गतिः॥ उदाहरणम्। भौममध्ये ९। २९। २१। १३ एतस्य शीघ्रोच्चं रविः १। ४। ५७। २४ शोधितः जातं शीघ्रकेन्द्रं ८। २४ २३। ४९ षड्भाधिकं भतश्चक्रात् शोधितम् ३। ५। ३६। ११ अस्यांशाः ९५। ३६। ११ शीघ्रफलं धनं ३४। २२। ३८ अस्यार्धेन १७। ११। १९ संस्कृतो भौमः॥ १०। १६। ३२। ३२ एतन्मध्ये मंदोच्चं ४। १० शोधितं जातं मन्दकेन्द्रं ६। ६। ३२। ३२ मन्दफलं धनं १। २९। ३६ मध्यमभौमे दत्तं जातो मंदस्पष्टो भौमः॥ १०। ०। ५०। ४९। तन्मंद-

फलं प्रथमं शीघ्रकेन्द्रस्य धनं दत्तं जातं द्वितीयशीघ्रकेन्द्रं ८ । २९ । ९२ । २९ । अस्मात् शीघ्रफलं धनं ३३ । १८ । ४९ शीघ्रफलसंस्कृतोमंदफलम् स्पष्टो जातः स्पष्टो भौमः ॥ ११ । ४ । ४९ ३४ मन्दांकांतरेण १४ गतिर्गुणिता ४४० । ४ षष्टिभक्ता फलम् कर्कादिकेन्द्रत्वात् धनम् ॥ ७ । २० अनेन संस्कृता मध्यगतिः ॥ ३१ । २६ जाता मन्दस्पष्टा गतिः ३८ । ४६ अनेनोना शीघ्रोच्चगतिः ५९ । ८ जाता शीघ्रकेन्द्रगतिः २० । २२ इयं शीघ्रांकांतरेण १६ गुणिता ३२५ । ९२ षष्टिभक्ता फलम् ५ । २९ अनेन संस्कृता मन्दस्पष्टा गतिर्जाता स्पष्टा गतिः ॥ ४४ । ११ इति भौमस्पष्टीकरणम् ॥ अथ बुधस्पष्टीकरणम् ॥ शीघ्रकेन्द्रे १० । ३ । १२ । ९२ शीघ्रफलार्धम् ७ । २० । ६ संस्कृतो बुधः १ । १२ । ७ । ३० मन्दोच्चम् ७ । १० रहितं मन्दकेन्द्रं ६ । २ । ७ । ३० मन्दफलं धनं ० । १० । ३६ मध्यग्रहे दत्तं मन्दस्पष्टम् ॥ १ । ९ । ८ । ० तन्मदफलं प्रथमशीघ्रकेन्द्रे दत्तं जात द्वितीयशीघ्रकेन्द्रं १० । ३ । २३ । २८ अस्मात्पुनः शीघ्रफलं धनं १४ । १७ । ९९ मन्दस्पष्टो दत्तं जातस्पष्टो बुधः १ । १९ । २९ । ९९ मन्दांकांतरेण गतिर्गुणिताः २१ । ९ । ४० षष्टिभक्ता फलम् ४ । ९९ मकरादिकेंद्रत्वादृणं मन्दस्पष्टा गतिः ५४ । १३ अनेनोना शीघ्रोच्चगतिर्जाता शीघ्रकेन्द्रतिः १९१ । १९ इय शीघ्रांकांतरेण १३ गुणिता २४८७ । ७ षष्टिभक्ताः फलम् ४१ । २७ अनेन सस्कृता जाता स्पष्टा गतिः ९९ । ४० इति बुधस्पष्टीकरणम् ॥ अथ गुरुस्पष्टीकरणम् ॥ गुरुमध्ये ४ । ७ । १२ । ३७ सूर्यः १ । ४ । ९७ । २४ शोधितः शीघ्रकेन्द्रः ३ । २ । १९ । १३ फलार्धे ऋणं ९ । ४१ । २२ संस्कृतो गुरुः ४ । १ । ३१ । १९ मन्दोच्चेन ९ । २० हीनमन्दकेन्द्रं १० । ११ । ३१ । १९ मन्दफलं धनं ३ । ४३ । २६ । मन्दस्पष्टो गुरुः ४ । १० । ९६ । ३ मन्दफलं प्रथमशीघ्रकेन्द्रे दत्तं जातं द्वितीयं शीघ्रकेंद्रम् ३ । ९ । ९८ । ३९ तत् शीघ्रफलम् ऋणं ११ । २८ । ९८ स्पष्टो गुरुः ३ । २८ । २७ । ३९ मन्दांकांतरेण ३ गतिः ९ निघ्ना १९ षष्टिभक्ता फलं ० । १९ फलम् मकरादित्वादृणम् ४ । ४९ जाता मन्दस्पष्टा गतिः ॥ अनेनोना शीघ्रोच्चगतिः ५९ । ८ जाता शीघ्रकेंद्रगतिः ९४ । २३ इयं शीघ्रांकांतरेण गुणिता ९४ । २३ षष्टिभक्ता फलम् मन्दस्पष्टगतौ

धनं जाता स्पष्टा गतिः ५।३९॥इति गुरुस्पष्टीकरणम्॥ अथ शुक्रस्पष्टीकरणम्॥ शुक्रशीघ्रकेन्द्रं ८ । २४ । ४० । १७ फलार्धमृणं १८ । ५० । ७ संस्कृतः शुक्रः १ । २३ । ४७ । ३१ मन्दोच्चं २ । २० मन्दकेन्द्रं ११ ।३।४७।३१ मन्दफलं धनं ० । ४९ । २९ मन्दः स्पष्टः शुक्रः १ । ५ । ४६ । ४९ शीघ्रकेन्द्रं ८ । २५ । २९ । ४३ शीघ्रफलं धनं ३७ । २४ । ६ स्पष्टः शुक्रः २ । १३ । १० । ५५ मन्दांकांतरं २ मन्दस्पष्टा गतिः ५७ । १० अनेनोना शीघ्रा गतिः ९६ । ८ जाता शीघ्रकेन्द्रगतिः ३८ । ५८ शीघ्रांकांतरं २० शीघ्रगतिफलं धनं १२ । ५९ स्पष्टा गतिः ७०।९ इति शुक्रः ॥ अथ शनिस्पष्टीकरणम् ॥ शीघ्रकेन्द्रं ९ । २९ । ३१ । २७ शीघ्रफलार्धं धनं २ । ४३ । २७ संस्कृतः शनिः ११ । ३ । १२ । १८ मन्दोच्चं७ । २६ मन्दकेन्द्रं ३ । ७ । १२ । १८ मन्दफलम् ऋणं ७ । ३८ । ४६ मन्दः स्पष्टः १० । २२ । ५० । ५ शीघ्रकेन्द्रं ९ । १७ । ५२ । ४१ शीघ्रफलं धनं ५ । ४८ । २२ स्पष्टः शनिः १० । २८ । ३८ । २७ मन्दांकांतरं १ मन्दस्पष्टा गतिः २ । २ शीघ्रकेन्द्रगतिः ५७ । ६ शीघ्रांकांतरं धनं २ । ५१ स्पष्टा गतिः ४।५३ ॥ अथ सौरभोपरि किंचित् स्थूलं रव्यादिग्रहाणां स्पष्टीकरणम्॥तत्रादौ अभीष्टदिवसे उक्तवत् ग्रहवल्ली साध्या । तदुपरि स्वस्वघाटिकायां घटिकादिर्ग्रहः कार्यः॥ तस्य कंद इति संज्ञा कार्या॥तदनंतरं देशान्तरसंस्कारः कार्यः ॥ स यथा ॥ यस्य ग्रहस्य कलात्मकं देशांतरं तत्तद्भक्तं कलात्मकेन पलेन घटिकादिग्रहस्य पलस्थाने धनं चेत्सहितम् ऋणं चेत्तदा रहितं कार्यम् ॥ यस्य विकलात्मकं देशांतरं तत् षड्भक्तं विपलात्मकेन विपलस्थाने सहितरहितं कार्यम् ॥ तदनंतरमन्दबीजसंस्कारः कार्यः ॥ तद्यथा—अंशादिबीजं षड्भिर्भाज्यम् ॥ तेन घटिकादिग्रहः संस्कार्यः ॥ इति आदौ कृत्वा तत्स्पष्टीकरणम् ॥ तत्रादौ रवेस्य सूर्यकन्दस्य घटीतुल्यं रविसौरभस्थं कोष्ठकादधःस्थं घटिकादिफलं ग्राह्यम् ॥ अग्रिमान्तरेण शेषं गुणनीयम्॥षष्टिभाज्यम् । पलात्मकेन पूर्वस्थापितघटिकादिफलस्थाने युतं कार्यम् ॥ अग्रिमस्याधिकत्वात् ॥ एवं कृते घटपादिस्पष्टो रविर्भवति ॥ तदनन्तरं षड्गुणः कार्यः ॥ अंशादिर्भवति ॥ अंशास्त्रिशद्भक्ता राशयो भवन्ति ॥ उदाहरणम्—पूर्वानीते रविकन्दः ५ । ४९ । ४१ । ५४ देशांतरम् ऋणं ७ । ५० संस्कृतः ५ । ४९ । ३४ । ४

पंचकोष्ठकादधःस्थघटिकादिफलम् ९ । १६ । १२ अग्रिमांतरेण ९८ । १७ शेषं ४९ । ३४ । ४ गुणितं २८८८ षष्टिभक्तं फलं ४८ । ८ अनेन घटिकाद्यं ६ । ४ । २० युतं षड्गुणितं जातो राश्यादिस्पष्टोऽर्कः १ । ६ । २६ । ० ॥ अथ गतिसाधनम् ॥ गतगम्यकोष्ठांतरम् एकेनांतरितं कार्यम् ॥ तस्य कलाः कार्याः गतगम्यांतरापेक्षया रूपाधिकत्वे मध्यगतौ रहिता । न्यूने युताः कार्या रवेः स्पष्टा गतिर्भवति ॥ उदाहरणम्—गतगम्यांतरं ० । ९८ । १७ एकेनांतरितं ० । १ । ४२ कलीकृतं गतगम्यांतरापेक्षया रूपाधिकत्वात् ॥ अनेन हीना रविमध्यगतिः ५७ । २९ ॥ अथ चंद्रस्पष्टीकरणम् ॥ ऊर्ध्वांके पंचचत्वारिंशद्युता जाता चंद्रोच्चवल्ली तस्य लता इति संज्ञा कार्या॥तल्लतोपरि चंद्रसौरभोपरि चंद्रसौरभस्य सानुपातघटिकादिफलं ग्राह्यम् ॥ तच्चंद्रकंदेषु योज्यं तदनंतरं षड्गुणितं कार्यं स स्पष्टचन्द्रो भवति ॥ सर्वत्र अनुपाते षष्टिर्भाजकः—उदाहरणम्—लता ४२ । ४१ । ६ । ३७ देशांतरं ० । ९० संस्कृता लता ४२ । ४१ । ९ । ४७ । चंद्रसौरभस्थं द्विचत्वारिंशत्कोष्ठकादधःस्थं सानुपातं घटिकादिफलं ० । ४८ । ९ । २८ चन्द्रकेन्द्रः २९ । २ । १२ । ७ देशांतरं १ । ४१ । २० संस्कृतं ३१ । १० । २६ । ४७ फलेन युक्तः ३९ । २३ । १९ षड्गुणितः स्पष्टचद्रः ७ । ४ । ५६ । १९ ॥ अथ गतिः ॥ द्विचत्वारिंशत्कोष्ठकादधःस्थं सानुपातघटिकादिचंद्रगतेः फलं २ । १४ । २९ षड्गुणं जाताः अंशाः १३।२७।३० षष्ट्या गुणिता स्पष्टा चंद्रगतिः कालाद्या ८०७।३०॥ अथ भौमस्पष्टीकरणम् ॥ भौमकदमध्ये रविकंदः शोध्यः॥ यच्छेषं तस्य लतासंज्ञा कार्या॥ लताया घटीप्रमितकोष्टकादधःस्थं भौमसौरभस्थं सानुपातं घटिकाफलं ग्राह्यम् । तत्फलं भौमकंदेषु योज्यम्॥तदुपकंदसंज्ञकं भवति॥ उपकन्दोपरि उपकंदस्थं सानुपातं घटिकादिफलं ग्राह्यम्॥ तत्फलं भौमकंदमध्ये योज्य सुकंदो भवति ॥ लतामध्ये योज्यं सुलता भवति॥ सुलतोपरि सुलताफलं सानुपातं घट्यादिफलं ग्राह्यम् ॥ तत्फल सुकंदेषु योज्यं तदनंतरं घटिस्थाने दशभी रहितं कार्यम् ॥ तन्मकरंदसंज्ञकं भवति ॥ तदनंतरं षड्गुणितं भौमः स्पष्टो भवति ॥ अनया रीत्या गुरुशन्योः स्पष्टीकरणम् ॥ बुधशुक्रयोः साधितांकचतुष्टययोगे घटिकादिकेन्द्रवल्ली सैव लता ज्ञेया॥ रविकंद एव बुधशुक्रयोः कन्दौ॥अनयोः स्पष्टीकरणम्॥रविकंदः ५।४९।३४।४

भौमकंदः ४९ । ५३ । ३६ । १८ देशांतरं ४ । १० संस्कृतः ४९।५३ । ३२ । ८ एतन्मध्ये रविकंदशोधिता जाता लता ४४ । ३ । ५८ । ४ लतोपरि प्राप्तं सौरमस्थं घटिकादिफलं ४१ । १२ । ७ अग्रिमांतरे ८ । २८ अनुपातफलं ० । ३३ । ३९ अनेन पूर्वं फलं संस्कृतं ४१ । ११ । ३३ । २९ इदं भौमकंदमध्ये युतं जातोपकंदः ३१ । ५ ।-५ । ३३ एतदुपरिप्राप्तम् उपकंदफल सानुपात २ । १४ । ५० । ९ अनेन युक्तो भौमकन्दः जातः सुकंदः ५२ । ८ । २२ । १७ पुनः फलेन युता जाता सुलता ४६ । १८ । ४८ । १३ सुलतोपरि प्राप्तं सुवल्लीफलं १३ । २९ । ४१ । ५५ अनेन सुकन्दो युक्तः ६५ । ४८ । ४ । १२ दशभिर्हीनो जातो मकरंदः ५५ । ४८ । ४ । १२ षड्गुणितः जातो राश्यादिः स्पष्टो भौमः ११ । ४ । ४० । २९ ॥ अथ गतिसाधनम् ॥ भौमस्योपकंदफलयोर्गतगम्ययोरंतरेण गतिर्गुणनीया ॥ तन्मन्दफलं भवति ॥ इदं मध्यगतौ गम्यस्याधिकत्वे युतं न्यूनत्वे ऋणम् ॥ सा मन्दस्पष्टा गतिर्भवति ॥ अनेनोना शीघ्रकेन्द्रगतिः शीघ्रोच्चगतिर्भवति ॥ इय सुवल्ली फलांतरेण गुण्या गतेः शीघ्रफल भवति ॥ तेन फलेन गतैष्याकस्याधिकत्वे मन्दस्पष्टा गतिर्भवति ॥ अनया रीत्या बुधशुक्रशनीनां गतिसाधनं कार्यम् ॥ उदाहरणम्—उपकंदफलयोरंतरं ० । १२ २३ गतिः ३ । २६ गुणिता जात मदफलम् एष्यांकस्याधिकत्वाद्धनं ७ । ० । ४१ अनेन युता मध्यगतिः जाता मदस्पष्टा ३८ । २७ अनेन रहिता शीघ्रोचगतिः ५९ । ८ जाता शीघ्रकेन्द्रगतिः २० । ४१ इय सुवल्ली फलांतरेण ० । १६ । ५५ गुणिता जात शीघ्रगतेः फलम् एष्यांकस्यः हीनत्वाद्धनं५।१९।५२ अनेन युता मंदस्पष्टा गतिः जाता स्पष्टा ४४ । १७॥ अथ बुधस्पष्टीकरणम् ॥ लता ५१ । ३४ । ३२ । ५४ शीघ्रकेन्द्रगतिप्रमाणेन देशांतरं २।२५।२४ संस्कृता ५१ । ३२ । ८ । ३० अनेन बुधकंदः ५ । ४९ । ३४ । ४युतो जातः उपकंदः ५७ । २० । ४२ । ३४ अस्मादुपकंदफल २।१।४६।३९ अनेन कन्दो युक्तः जातः सुकंदः ७ । ५१ । २० । ४३ लतायुता जाता सुलता ५३ । २३ । ५५ । ९ सुवल्लीफलं १० । २३ । ६ । २८ अनेन सुकंदो युक्तः १८।१४।२७।११ दशभिर्हीनो जातो मकरंदः ८।१४।२७।११ षड्गुणितो जातो राश्यादिः स्पष्टो बुधः १ । १९।२६ । ४३ उपकंदफलयो-

रंतरं ० । ५ । ९ धनं मंदस्पष्टा गतिः १४।१२ शीघ्रकेन्द्रगतिः १८।१।११ सुवल्लीफलयोरंतरम् ऋणं ० । १२ । ४७ स्पष्टा गतिः १० २ । ५० ॥ अथ गुरुस्पष्टीकरणम् । रविकंदः ५ । ४९ । ३४ । ४ गुरुकंदः २१।४३। ३१ । ५८ देशांतरं ० । ४० संस्कृतः २१ । ४३ । ३१ । १८ बीजम् ऋणं ० । ३१ । २९ । १० संस्कृतः २१ । १२ । १ । ८ एतन्मध्ये रविकन्दः शोधितः जाता लता १५ । २२ । २२ । ४ सौम्योपरि फलं ३०°। २९ । ४४ । ५१ अनेन गुरुकंदो युक्तः जात उपकंदः ५१ । ४१ । ५० । ५९ उपकंदफलं २ । ३८'। १ । ४९ अनेन कंदो युक्तो जातः सुकंदः २३ । ५० । ७ । ५६ सुलता १८ । ० । ३३ । ५३ सुवल्लीफलं ६ । ५ । १६ । ४४ अनेन सुकंदो युक्तः २९ । ५५ । २४ । ४१ दशहीनो जातो मकरन्दः १९ । ५५ । २४ । ४१ षड्गुणितो राश्यादिस्पष्टो गुरुः ३'। २९ । '३२ । २८ उपकंदफलयोरंतरम् ऋणं ० । ३ । २२ मन्दस्पष्टा गतिः ४ । ४४ शीघ्रकेन्द्रगतिः ५४ । २४ सुवल्लीफलयोरंतरम ऋणं ० । २० । २९ स्पष्टा गतिः ५ । १० ॥ अथ भृगुस्पष्टीकरणम् ॥ शुक्रलता ४३ । १९।२० । १९ देशांतरं ४ । ५० संस्कृता ४३।१९।२५।२९ ॥ बीजं धनं ० । ४७ । ७ । ४० संस्कृता लता ४४ । ६ । ३२ । ९ सौरमस्य फलं ४९ । ३९ । ३३ । ८ अनेन शुक्रकंदो ५ । ४९ । ३४ । ४ युक्तो जात उपकंदः ५५ । २९ । ७ । १२ उपकंदफलं २ । ८ । १४ । २७ सुकंदः ७ । ५७ । ४८ । ३१ सुलता ४६ । १४ । ४७ । ३६ सुवल्लीफलं ४ । १३ । २७ । ५१ अनेन सुकंदो युक्तः ६४ । ४६ । २८ । ० मकरन्दः ५४ । ४६ । २८ । ० षड्गुणः स्पष्टः शनिः १० । २८ । २८ । ४८ उपकंदफलयोरंतरं धनं ० । ० । ४४ मन्दस्पष्टा गतिः ५७ । ७ सुवल्लीफलयोरंतरम् ऋणं ० । ० । २० स्पष्टा गतिः ४ । १४ ॥ अथायनांशसाधनम् ॥ इष्टशकः क्रमाब्धिहीनः कार्यः तदनंतरं स्वदशमांशेन हीनः कार्यः ॥ षष्ट्या भाज्यः ॥ अयनांशा भवन्ति॥ उदाहरणम्—इष्टशकः १५३४ अनेन ४२१ हीनः १११३ अयं द्विष्ठः अस्य दशमांशेन १११ । १८ रहितः १००१ । ४२ षष्टिभक्ता जाता अयनांशाः १६ । ४१।४२॥ अथ दिनमानसाधनम् ॥ स्पष्टः सूर्यः अयनांशयुक्तः कार्यः तस्यांशाः षड्भिर्भाज्या लब्धिकोष्ठकादधःस्थं घट्यादिफलं स्थाप्यम् ॥

तद्दिनमानरूपम् अग्रिमकोष्ठकान्तरेण शेष गुण्यम्॥षड्भक्तानि लब्धानि पलानि। एतानि पूर्वस्थापितदिनमानफलस्थाने अग्रिमकोष्ठकवशात् सहितानि रहितानि, वा कार्याणि। तद्दिनमान भवेत्। उदाहरणम्—सूर्य. १। ६। २६। ० अयनांशैर्युक्त १। २३, ७। ४२ अंशा ५३। ७। ४२ षड्भिर्भक्ता. । फल ८ एततुल्यकोष्ठकस्य दिनमान, ३२। ५४ अग्रिमांतरेण १८ शेष ५। ७। ४२ गुणित ९२। १८। ३६ षड्भिर्भक्त लब्धपलानि १५ एतानि अग्रिमस्याधिकत्वात् पूर्वस्थापितदिनमानपलमध्ये युत जात दिनमान ३३। ९॥ अथ प्रकारांतरेण रवे प्रतिराशिप्रतिराशिप्रत्यंशोपरि दिनमानसाधनम्॥ स्पष्टार्कः स्थाप्य॥ अत्रायनांशसंस्कारो नास्ति। रवेर्यावतो राशयस्तदधो यावतो भागा सन्ति तत्तुल्यराश्यंशसूर्यादध स्थ दिनमान ग्राह्यम्॥ अग्रिमांतरेण गुण्य षष्ट्या भाज्य पलात्मक लब्ध पलस्थाने अग्रिमकोष्ठकवशात् रहितसहित कार्यं तद्दिनमान स्यात्॥ उदाहरणम्—सूर्य १। ६। २६। ० एततुल्यसूर्यादध स्थ दिनमान ३३। ५ अग्रिमांतरेण ३। शेष २६। ० गुणित ७८ षष्ट्या भक्त फलम् १ अनेन संस्कृत जात स्पष्ट दिनमान३३। ६॥अथ चंद्रदर्शनम्। यस्मिन्मासे शुक्लप्रतिपदि चन्द्रदर्शनमवलोक्यते तस्मिन् मासि तद्दिने सूर्यो यद्राशावस्ति तद्राशिस्थः सूर्यस्तिर्यक्पङ्क्तौ यस्मिन् कोष्ठके भवति स कोष्ठको ग्राह्य। तदनंतर यस्मिन् राशौ राहुरस्ति तद्राशिस्थो राहु ऊर्ध्वपङ्क्तौ यस्मिन् कोष्ठके भवति तत्कोष्ठकादधस्तात् सर्वकोष्ठकाभिमुखी घटी ग्राह्या॥ तदनंतरम् अमावास्याया विद्यमानघटिकास्ता षष्टिकामध्ये शोध्या तदनंतर यच्छेष भवति तद्दिनज दिनमान तन्मध्ये योज्यम्। एव कृते या घटिका भवति ताः पूर्वस्थापितघट्य्भ्यश्चेदधिकास्तदा प्रतिपदि चंद्रो दृश्य॥ न्यूने अदृश्य॥ किंतु द्वितीयायां दृश्य॥ उदाहरणम्—सूर्य ४। २० राहु १०। २ अत्र रवि ५ सिंहे कुंभे राहु॥ अनयो प्राप्तघटी ८२ अमावास्याघटिका १। ४० षष्टिमध्ये शोधिता ५८। २० शेष दिनमानेन युक्त ३१। २४ जाता ८९।४४ एता भाग्य ८२ अधिका अतोऽत्र प्रतिपद्येव चन्द्रदर्शनम्॥ अथ भौमादीनां वक्रमार्गोदयास्तसाधनम्। अतिमशीघ्रफलसाधने यच्छीघ्रकेन्द्र तस्य धनशुद्धस्यांशा कार्या प्रोक्तांशानां इष्टांशानां च साम्ये तस्मिन्नेव दिने वक्रादिक स्यात्। न्यूनाधिके तद्दिवसानयनम्॥ प्रोक्तेष्टांशानामतरकला कार्या.

शीघ्रकेंद्रगत्या भाज्याः ॥ लब्धं दिनघटीपलाद्यं ग्राह्यं प्रोक्तांशेभ्य इष्टकेंद्रांशा अधिकास्तदा लब्धेन अवधिस्थं वारादिकं रहितं कार्यम् ॥ न्यूनेन सहितं कार्यम् ॥ तद्वारघटीपलेषु वक्राद्यं स्यात् ॥ अस्तोदयाविति दिवाकरपद्यम् ॥ अथ भौमादीनां चरणगतिसाधनम् । भपादेति दिवाकरपद्यम् ॥ वैशाखशुक्ल ९ शनाववधिस्थो भौमः ३ । २६ । १ । ३९ आश्लेषाचतुर्थचरणे भौमः ३ । २६ । ४० अनयोरंतरं कलाः ३८ । २१ अवधिस्थभौमगत्या १९। २३ भक्ताः फलं दिनादिकं १ । ५८ । ११ इदमवधिस्थ-वारादौ ० । ४६ । ३४ युतं २ । ४४ । ४५ भपादजं भौमात् अवधिस्तस्य न्यूनत्वात् ॥ एवं वैशाखशुक्लसप्तम्यां सोमे सूर्योदयाद्गतघटीषु ४४ पलेषु ४५ तदाश्लेषाचतुर्थपादे भौमः ॥ अथ चंद्रग्रहणम् ॥ पूर्णिमांते यद्विद्यमान-नक्षत्रं तस्य गतैष्यवटिकायोगः कार्यः तत्तुल्यघटिकाधःस्थं चंद्रबिंबपातबिंबं नाम भूमाबिंबं ग्राह्यम्॥ अग्रिमांतरेण शेषफलादिगुण्यानि॥ षष्ट्या भक्तेन लब्धां-गुलैरग्रिमकोष्टकवशात् सहितरहितानि कार्याणि ॥ अंगुलात्मकं चंद्रबिंबं भूमा-बिंबं च भवति ॥ अथ भूमायाः संस्कारः ॥ पौर्णमास्यां यद्राशौ सूर्यसंक्रांति-रस्ति तद्राश्यधःस्थमंगुलादिकं पातफलं स्थाप्यम् ॥ अग्रिमांतरेण सूर्यस्य भागाद्यं गुण्यम् ॥त्रिंशता भाज्यं व्यंगुलात्मकफलेन अग्रिमकोष्टकवशाद्धीनान्वितं कार्यम्॥ अनेन भूमायुता कार्या ॥ सा स्पष्टा भवति॥ पातफलं सदा धनं तदनंतरं रवि-चंद्रयोर्बिंबयोर्योगार्धं कार्यम्॥ तन्मानैक्यखंडं भवति ॥ तत् शरोन कार्यं ग्रासो भवति ॥ उदाहरणम्-शकः १९३४ वैशाखशुद्ध१५ सोमे घटी ५४। ४० अनुराधानक्षत्रस्य गतैष्ययोगः ५८ । ३६ सूर्यः १ । ६ । २० । ३७ चंद्रः ७ । ६ । ३४ । ३९ राहुः १ । १४ । १८ । ११ अष्टपंचाशद्घटिकाधःस्थं चंद्र-बिंबं ११ । १० अग्रिमांतरेण ११ शेषं गुणितं ३९६ षष्ट्या भक्तं फलेन संस्कृतं जातं चंद्रबिंबं ११ । ४ भूमाबिंबं २८ । १६ अनुपातफलेन२२संस्कृतः २७ । ५४ वृषसंक्रांत्यध:स्थं फलं० । ३१ अग्रिमांतरेण ६ । शेषं गुणितं ३४ । २७ जातं ३९ त्रिंशद्भक्तं फलेन १ संस्कृतं० । ३२ अनेन भूमायुता जाता स्पष्टा भूमा२८ । २६ अनयोर्योगार्धं जातं मानैक्यखंडं १९ । ४५ ॥ अथ शरसाधनम् ॥ पर्वांतकालीनःसपातश्चंद्रः कार्यः अथवा विराहुश्चन्द्रःकार्यः॥ षड्धिकश्चेद्भगणाद्विशोध्यः ॥ न्यूनो यथास्थित एव ॥ तस्यांशाः कार्याः षड्भि

भक्ताः कार्याः लब्धप्रमितकोष्ठकस्थः अंगुलाद्यः शरो ग्राह्यः ॥ अग्रिमांतरेण शेषं गुण्यं षड्भक्तं लब्धांगुलैः संस्कार्यः अंगुलात्मकः शरो भवति ॥ उदाहरणम् ॥ विराड्ध्रुवश्चन्द्रः तस्यांशाः १७।२। १६।२४ षड्भक्ताः फलं २८ । १८। ४३ शरः अनुपातफलेन ६ । २७ संस्कृता जाताः शरोऽङ्गुलादिः १२ । ६ अनेन रहितं मानैक्यखंडं जातो ग्रासः७।३९। अथ स्थित्यानयनम्॥ग्रासस्यांगुलप्रमित-कोष्ठकादधःस्था स्थितिः स्थाप्या अग्रिमांतरेण अंगुलानि गुण्यानि षष्टिभक्त-लब्धपलैः सहिताः कार्याः घटिकादिस्थितिः स्यात् ॥ उदाहरणम्--ग्रासः७ । ३९ स्थितिः ३ । ३९ अनुपातफलेन ७ सहिता जाता घटिकादिस्थितिः॥ ३।४२ अन्यदवशिष्टकरणोक्तरीत्या साध्यम् ॥ इति चंद्रग्रहणम् ॥ अथ सूर्यग्रहणम् ॥ शकः १९३२ मार्गशीर्षकृष्णे ३० बुधे घटी ११।१९ सूर्यः ८।९।२६।२० लग्न ११ । २।१।३४ त्रिभोनम् अमावास्या यत्संक्रांतौ भवति तत्संक्रांतिराश्यधः स्थसूर्यबिंबं स्थाप्यम् ॥ अग्रिमांतरेण सूर्यस्य भागाद्य गुण्यं त्रिंशद्भक्तं अंगुला-त्मकं फले अग्रिमकोष्ठकवशाद्धीनान्वितं कार्यम् ॥ अंगुलाद्यं सूर्यबिम्बं भवति ॥ उदाहरणम्--धनूराशौ सूर्यबिम्बं ११ । ४४ आयातत्र्यंगुलैः संस्कृतञ्जातं रवि-बिम्ब ११।२४॥ अथ लंबनम्॥ त्रिभोनलग्नक्रान्तिरंशाः ते यथा राशित्रयात्मा भवन्ति तथा कार्याः ॥ तदनंतरं षड्भिर्भाज्याः लब्धप्रमितपञ्चदशावःस्थघटि-कादिलंबन ग्राह्यम् । अग्रिमांतरेण शेषं गुण्यं षड्भिर्भाज्यं लब्धपलैः सहितं घटिकादिलंबनं स्यात् ॥ सर्वात् त्रिभोनलग्नेऽधिके सति धनं न्यूने ऋणं ज्ञेयम्॥ उदाहरणम्--त्रिभोनलग्नक्रांतरंशाः ॥ ३ । २० । ४६ । षड्भिर्लब्धं शून्य, शून्यादधःस्थ घटिकादिल बनं ०।०।० अग्रिमांतरेण २४।२९ शेषं३।२०।४६ गुणित ८१ । ४२ । ३ षड्भिर्भक्तलब्धं पलादिकैः १३ । ९८ सहितं जातं घटिकादिलबनं ०।१४ अन्यदवशिष्टं पूर्ववत्॥ एतत्पंचदशकोष्ठकस्थलंबनस्थांको-परि ग्रहणं स्थूलं क्रान्तिसाधनमाह ॥ सायनग्रहस्य भुजांशाः कार्याः ॥ षड्भि-र्भाज्याः लब्धप्रमितकोष्ठकस्या घटिकाद्या क्रान्तिः स्थाप्या । लम्बनवदनुपातः कार्यः॥तदनंतरं षड्गुणिताः कार्याः भागादिक्रान्तिः स्यात् ॥ उदाहरणम्॥ सूर्यः ८। ९। २६।२० अयनांशाः १६ । ३९। ९४ सायनः सूर्यः ८।२२ । ६। अस्य भुजांशाः८२ ।६ । १४ षड्भक्ताः लब्धं १३ घटिकादिक्रान्तिः३।९४।२६ पलात्मकेनानुपातेन २ । ९४ सहिता ३।९७।२० षड्गुणिता जाता भागाद्या क्रान्तिः २३। ४४ ग्रन्थकर्त्रा एते पंचदशकोष्ठकस्या लंबनस्थांकाः अन्ये पंचदश

कोष्ठेषु विपरीताः स्थापिताः ॥ एवं त्रिंशत्कोष्टेषु क्रान्त्यंका जाताः ॥ अस्यो परि क्रान्तिसाधनम् ॥ सायनग्रहः षड्भाधिकश्चेच्चक्राद्विशोध्यः। तस्यांशाः कार्याः षड्भिर्भाज्याः लब्धकोष्ठकस्था घटिकादिक्रान्तिः ॥ पूर्ववत्सानुपातात् ग्राह्याः अत्रानुपातफलम् अग्रिमकोष्ठवशाद्धीनान्वितङ्कार्यम् । इयं क्रान्तिः पूर्वेण सह तुल्या॥ उदाहरणम्–सायनसूर्यः ८। २२। ६। १४ भगण १२ च्युता ३।७। ५३।४६ अंशाः ९७।५३।४६ षड्भक्ताः फलं १६ क्रान्तिः २। ५८।३६ अनुपातफलेन १।१६ रहिता षड्गुणिता सैव क्रान्तिः २३।४४॥ अथ सूक्ष्मक्रान्तिसाधनम्॥ सायनग्रहस्य भुजांशप्रमितकोष्ठकस्था भागाद्या क्रान्तिः स्थाप्या ॥ अग्रिमांतरेण कलाद्यं गुण्यं षष्ट्या भागेन कलात्मकेन फलेन सहितं कार्यं भागाद्या क्रांतिः स्यात् २३। ४४। ५८ ॥ अथ शरसाधनम् ॥ सपात-चन्द्रस्य अथवा विराहुचन्द्रस्य भुजांशप्रमितकोष्ठकस्थः कलादिः शरो ग्राह्यः । अग्रिमांतरेण शेषं गुण्यं षष्ट्या भाज्यं विकलात्मकेन फलेन सहितं कार्यं कलादिवाणः स्यात् । त्रिभिर्भाज्योंगुलादिः स्यात् ॥ उदाहरणम्–विराहु-चन्द्रस्य भुजांशाः ७। ४३। ४६ शरः ३३। ५२ अनुपातफलेन ३। २४ सहितो जातः कलादिः शरः ३६। १६ त्रिभिर्भक्तो जातोंगुलाद्यः शरः १२। ५ ॥ अथोन्नतांशोपरि द्वादशांगुलशंकोश्छायासाधनम् ॥ उन्नतांशप्रमित-कोष्ठाधःस्थांङ्काः स्थाप्या अग्रिमांतरेण शेषं गुण्यं षष्ट्या भाज्यं फलेनाग्रिमकोष्ठक-वशात्सहितं रहितं कार्यम् ॥ छाया भवति ॥ अथाश्विन्यादीनां नक्षत्राणाम् उदय मध्यास्तलग्नज्ञानम् ॥ अश्विन्युदये मेषलग्नराश्यादि०।१।२६।५ रवेर्मध्यस्थितकर्क-लग्नं रव्यादि ॥ ३।१४। ३६ अस्तमये तुलालग्नं राश्यादि ६। १२। ५८ एवं भरण्यादिषु ज्ञेयम् ॥ इति विश्वनाथविरचितं मकरन्दस्योदाहरणम् ॥

अथ संवत्सराद्यानयनम् । तत्रादौ संवत्सरानयनमाह—

शकाक्षेन्दु १५१४ वियुक् शको नग ७ गुणः शून्यांबरांगोद्धृतो ६००
भाग्यं लब्धमिताब्दवेददहनाढ्यं ३४ सांब्दभूपेन्दुतः ॥
दिग्भागाः सकलाः युतं प्रभवतोऽब्दाः षष्टिशेषाः स्मृताः
शेषांशा रविभिर्हता दिनमुखे मेषार्कतः प्राग्भवेत् ॥ १ ॥

उदाहरणम्–शकः १५५६ अनेन १५१४ रहितः जाता गताब्दाः ४२ सप्तभिर्गुणिताः २९४ शून्यांबरांगो ६०० हृतः फलं राश्यादि ०।१४।४२।०

राशिस्थाने गताब्दः ४२वेददहनाभ्यां युतः ७६ । १४ । ४२ । ०.गताब्दयुतभूपे द्रुतः १६८ दिग्भागाः १० सकला १६।४८ युतं ७९ । १४ । ९७ । ४८ ऊर्ध्वांकः षष्ट्या तष्टः शेषांकः १६ गतवत्सरो ज्ञेयः वर्तमानः सुभानुसंवत्सरः शेषं १४ । ९७ । ४८ द्वादशभिर्गुणितं जातं दिनादिकं १७९ ।३३ । ३६ दिनस्थाने त्रिंशद्भक्तं जातं मासादिकं ५ । २९ । ३३ । ३६ एभिर्मासादिकैर्वर्तमानवर्षस्थमेषसंक्रांतिसकाशात् पूर्वप्रवृत्तः। सुभानुवत्सरः इदं द्वादशामध्ये शोधिते शेष ६ । ० । २६ । २४ एवं वर्तमानतुलांशकः ०।२६ । २४ यावत्सुभानुवत्सरः । तदनन्तरं तारणाख्यः॥ एवं वर्षमध्ये द्वयोः फलं लेख्यम्॥ दाक्षिणात्याः नर्मदायाः दक्षिणे भागे मनुमानेन संवत्सरप्रवृत्तिमाहुः ॥ उक्तं च—नर्मदोत्तरभागे स्याद्गुरुमानेन वत्सरः ॥ नर्मदायाम्यभागे तु मनुमानाद् बुधैः स्मृतः ॥ तदानयनम्—शालिवाहनशाकोऽर्कसंयुतः ,षष्टिहृत् प्रभवपूर्ववत्सरानुमानेन ॥ अथ गुरूदयात् गुरुवर्षज्ञानमाह । स्यादूर्जादिषु मासेषु वह्निमादि द्वयं द्वयम् । उपांत्यपंचमांत्येषु नक्षत्राणां त्रयं त्रयम् ॥ यस्मिन्नभ्युदितो जीवस्तन्नक्षत्राख्यवत्सरः ॥ तद्यथा—यस्मिन्समये गुरोरुदयः तस्मिन् समये यस्मिन् नक्षत्रे गुरुस्तिष्ठति तन्नक्षत्रस्य यो मासः स गुरुवर्षसंज्ञको ज्ञेयः॥कृत्तिकारोहिणीस्थितो गुरुः सूर्यसान्निध्यादुदयं प्राप्तस्तदा कार्त्तिकसंज्ञकं गुरुवर्षं ज्ञेयम्॥ मृगार्द्रयोः मार्गशीर्ष० ॥ पुनर्वसुपुष्ययोः पौष० ॥ आश्लेषामघयोर्माघा० ॥ पूर्वोत्तराहस्तेषु फाल्गुन० ॥ चित्रास्वात्योश्चैत्र० ॥ विशाखानुराधयोर्वैशाखं० ॥ ज्येष्ठामूलयोर्ज्येष्ठसंज्ञं० ॥ पूर्वोत्तराषाढयोराषाढं० ॥ हरिवासवयोः श्रावण० ॥ शततारकापूर्वाभाद्रपदोत्तराभाद्रपदासु भाद्र० ॥ अन्त्यदास्रयमानामाश्विनसं० ॥ तत्र पंचमः फाल्गुनः, अंत्य आश्विनः, उपांत्यो भाद्रपदस्तेषु प्रत्येकं नक्षत्रत्रययोगो ज्ञातव्यः ॥ सूर्यसिद्धांतवचनादस्तमयनक्षत्रादपि गुरुवर्षं ज्ञेयमिति ॥ अत्रास्तमयोदयनक्षत्रमेकमेव बाहुल्यो न भवति । तथापि कदाचिद्विसंवादे उदयास्तभादिति उभयनक्षत्रोपादानादुभययुतानि मिश्रीभावेन वक्तव्यानि ॥ गुरूदयदिनमारभ्योप क्रम इत्यहर्गणः ॥ प्रशंसति सहर्क्षेण सहितो युगपद्गुरुः ॥ तस्मात्कालादहस्यः स्यात्पूर्वश्चाब्दः प्रवर्तते ॥ ऋक्षपूर्व इति वचनात् । कार्त्तिकादयो गुरूदयादब्दा उदितदिवसात् ॥ प्रभवादयस्तु मध्यमगुरुराशिभोगादिति विवेकः। बहुसंमतत्वात्॥ गुरूदयाद्गुरोरब्दविचारणात् कर्तव्येत्यर्थः ॥ गुर्वब्दफलं गुरूदयादग्रिमगुरूदय-

पर्यन्तं ज्ञेयम् । यस्मिन्वर्षे गुरूदयं पुनर्वसुनक्षत्रे गुरुस्तिष्ठति इतिकारणात् इदं पौषसंज्ञकं गुरुवर्षम् । तस्यफलं लेख्यम् ॥ अथ राजादिनिर्णयः ॥ चैत्रादिमेषादि-कुलीरतौलिमृगाख्यमार्द्राधनुरादि वाराः । राजा चमू सस्यरसाधिपाश्च स्युर्नीरसे-शाम्बुधिधान्यनाथाः ॥ १ ॥ प्रतिपदि यदि चैत्रे शुक्लपक्षे भवेतां कथमपि यदि वारौ द्वौ तदा भूपतिः कः । प्रथमदिवसवारः कीर्तितो गर्गमुख्यैर्गुणवति सति डिंभे राज्यभाग् ज्येष्ठ एव ॥ २ ॥ डिंभो बालः ॥ "पोतः पाकोऽर्भको डिंभः" इत्यभिधानात् ॥ कांबोजादिदेशेषु विशेष उक्तः ॥ कांबोजखार्जूरकिरातसिंधु-देशेषु विल्वेष्वपि दर्दुरेषु । किंत्वग्रमध्याह्नगतोऽब्दपः स्यादन्येषु सूर्योदयगो दिनेशः ॥ अन्यच्च—प्रतिपद्दर्शसंधिश्च मध्याह्नात्पूर्वतो यदि ॥ तदा तद्दिनपो राजा परतश्चेत्परो भवेत् ॥ अत्र केचिच्चांद्रवर्षस्य प्रतिपदादितो दक्षिणे वर्षे प्रवेशात् तत्रत्य एव वारो वर्षेश इत्याहुः । पठंति च—फाल्गुनांते कुहू राजेति ॥ तदे-तद्गुर्जरदेशे प्राचुर्येण वर्तते ॥ दाक्षिणात्या औदयिकप्रतिपद्वारमेव राजान-माहुः ॥ कश्यपः—चैत्रशुक्लाद्यदिवसे किंस्तुघ्ने बवकेऽथवा ॥ अर्कोदये तु यो वारः सोऽब्दपः परिकीर्तितः ॥ चैत्रशुक्लप्रतिपद्दिवसे यो वारः स राजा ॥ मेष-संक्रांतिदिवसे यो वारः स मंत्री ॥ कर्कसंक्रांतिदिवसे यो वारः स सस्या-धिप. ॥ तुलासंक्रांतिदिवसे यो वारः स रसाधिपः ॥ मृगसक्रांतिदिवसे यो वारः स नीरसाधिपः॥ आर्द्राप्रवेशदिवसे यो वारः स मेघाधिपः॥ धनुःसंक्रांति-दिवसे यो वारः स पश्चिमधान्याधिपः ॥ एतेषां फलानि क्रमतो लेख्यानि ॥ तदनंतरं यस्यां तिथौ यस्मिन्वारे यस्मिन्नक्षत्रे यस्मिन्योगे आर्द्राप्रवेशस्तत्फलानि लेख्यानि ॥ दिवारात्रौ वा प्रवेशात्तत्फलं लेख्यम् ॥ अथ नवमेघानयनम् ॥ गताब्दा नवभिस्तष्टाः शेषं हाराद्विशोधयेत् । ततश्चावर्तसंवर्तद्रोणपुष्करकीलकाः । नीलश्च वरुणो वायुस्तमो मेघाः स्मृता नव ॥ अत्र गताब्दानयनम् ॥ युग्म-चन्द्रशरचद्रविहीनाः शालिवाहनशकात् गताः समाः ॥ उदाहरणम्—शकः १९९६ अनेन १५१२ रहिता जाता गताब्दाः ४४ नवभिस्तष्टाः शेष ८ हारात् शोधितं १ आवर्तसंज्ञको मेघः । तत्फलं लेख्यम् ॥ केचित्तु मेघचतुष्टयमाहुः— तदानयनं च । त्रिभिर्गताब्दाः सहिताश्चतुर्भिः शेषं भवेदंबुपतिः क्रमेण। आवर्तसंवर्तक पुष्कराश्च द्रोणश्चतुर्थो मुनिभिः प्रदिष्टः । अत्रापि पूर्ववद्गताब्दानयनम् ॥ आवर्ते छिन्नवृष्टिः स्यात्संवर्ते जलपूरिता । पुष्करे मन्दवृष्टिः स्यात् द्रोणो वर्षति सर्वदा ॥

अथ द्वादशनागानयनम् ॥ गताब्दा द्वियुताः सूर्यभक्तास्तत्रावशेषिताः। सबुद्धो नंदसारी च कर्कोटकः पृथुश्रवाः ॥ वासुकिस्तक्षकश्चैव कंबलाश्वतरावुभौ ॥ हेममाली नरेन्द्रश्च वज्रदंष्ट्रो वृषस्तथा॥ अत्रापि पूर्ववद्गताब्दा ज्ञेयाः॥ उदाहरणम्—गताब्दाः ४४ द्वियुता ४६ द्वादशभिस्तष्टाः शेषं १० नरेन्द्रसंज्ञको नागः। तत्फलम्॥ केचित्तु नागाष्टकमाहुः तदानयनम्—शाको रसाद्रिसंयुक्तो वसुभिर्भाग-शेषतः ॥ अनन्तादिक्रमेणैव अष्टौ नागाः प्रकीर्तिताः ॥ अनन्तो वासुकिः पद्मो महापद्मः सुतक्षकः। कुलीरः कर्कटः शङ्खश्चाष्टौ नागाः प्रकीर्तिताः ॥ अथ सप्तवातानयनम् ॥ शाकः शशांकसंयुक्तो मुनिभिर्भागहारितः। आवहादि-क्रमेणैव सप्त वाताः प्रकीर्तिताः ॥ आवहः प्रवहश्चैव संवहो विवहस्तथा। उद्वहोऽतिवहश्चैव सप्त वाताः प्रकीर्तिताः॥ अथ वर्षादीनामानयनम् ॥ महादेवः—शाकस्त्रिगुण्यो नगभाजितश्च शेषं द्विनिघ्नं शरसंयुतं च। लब्धं च शाकश्च पुनः प्रकल्प्य पूर्वोक्तवत्स्युः खलु विश्वकाख्याः ॥ वर्षा च धान्यं तृणशीततेजो-वायुश्च वृद्धिक्षयविग्रहाश्च ॥ एवं नवाभिहितानि ॥ उदाहरणम्—शाकः १९९६ त्रिगुणः ५९८८ सप्तभक्तः लब्धं ८५५ शेषं ३ द्विगुणं ६ शर ५ संयुतः ११ एते जाता विश्वकाख्या वर्षा ११ लब्धं ८५५ त्रिभिर्गुणितं २५६५ सप्तभक्तं ३६६ शेषं ३ द्विनिघ्नं ६ शर ५ युत जात धान्यं ११ एवं लब्धोपरि सर्वत्र ज्ञेयम्॥ तृण ७ शीतं ९ तेज. ९ वायुः ११ वृद्धिः १७ क्षयः ९ विग्रहः ११ ॥ शाकश्च वेदगुणित सप्तभिर्भागमाहरेत्। शेषं द्वित्र निभि-र्युक्तं प्रोक्तं विश्वाख्यसंज्ञकम्॥ क्षुधा तृषा तथा निद्रा चालस्य चोद्यमस्तथा॥ शान्तिः क्रोधस्तथा दम्भो लोभो मैथुनमेव च ॥ ततस्तु रसनिष्पत्तिः फल निष्पत्तिरेव च ॥ उत्साहः सर्वलोकाना ज्ञातव्य निश्चित बुधैः ॥ त्रयोदशोदा-हरणम्—शाकः १९९६ चतुर्गुणिताः ७९८४। सप्तभक्ताः लब्ध ११४०

शेष ४ द्विघ्न ८ त्रियुतं ११ जाता क्षुधा ॥ पुनर्लब्ध ११४० चतुर्गुणं ४५६० सप्त ७ भक्त लब्धं ६५१ शेष३ त्रियुत तृषा९ ॥ एव लब्धोपरि सर्वत्र ज्ञेयम्। निद्रा ७, आलस्य १३ उद्यमः ७, शांतिः १३, क्रोधः ७ दम्भः ९ लोभः१३ मैथुनं १९ रसोत्पत्तिः १९ फलानि ९ उत्साहः ११ ॥ शकाब्दं वसुभि-र्निघ्नं नवभिर्भागमाहरेत्। शेषं तु द्विगुणीकृत्य रूपमत्रापि योजयेत् ॥ उग्रं पापं च पुण्यं च व्याधिं व्याधिविनाशनम्। आचारश्चाप्यनाचारो मरणं जनिरेव

च ॥ देशस्योपद्रवः स्वास्थ्यं चौराकुलमयं तथा ॥ अथैषां पञ्चदशानामुदाहरणम्—शकः १५९६ अष्टगुणः १२४४८ नवभिर्भक्तः लब्धं १३८३ शेषं १ द्विनिघ्नं २ रूपं १ योज्यं ३ जातम् उग्रं ३ एवं लब्धोपरि सर्वत्र ज्ञेयम् ॥ उग्रं पापमित्यादिना अग्निनाशपर्यंतं पंचदश ज्ञेयाः ॥ शकः पञ्चभिः सप्तभिर्गोभिरीशैश्चतुर्धा हतः सप्तभक्तावशिष्टः । द्विनिघ्नं त्रिभिर्युक्तमुद्भिज्जराय्व ण्डजस्वेदजानां हि विंशोपकाः स्युः ॥ उदाहरणम्—शकः १५९६ चतुर्धा स्थाप्यः १५९६ क्रमेण गुणकैर्गुणितः ७७८० । १०८९२ । १४००४ । १७११६ सर्वत्र सप्तभक्ते शेषाणि ३ । ० । ४ । १ द्विगुणितानि ६ । ० ८ । २ त्रिभिर्युक्तानि जाता विंशोपकाः । ९ । ३ । ११ । ५ उद्भिज्जाः ९ जरायुजाः ३ अडजाः ११ स्वेदजाः ५ । एतत्स्वरूपं अमरसिंहेनोक्तम्—"उद्भिज्जास्तरुगुल्माद्याः पक्षिसर्पाद्योऽण्डजाः । स्वेदजाः क्रमिदंशाद्या नृगवाद्या जरायुजाः " ॥ अथ रोहिणीचक्रम् । मेषार्कदिनमाॠक्षद्वयमब्धौ द्वयं तटे । एकं गिरौ द्वय सधौ चतुर्दिक्षु तथा न्यसेत् ॥ साभिजिच्च क्रमेणैव फल यत्र तु रोहिणी ॥ अतिवृष्टिः समुद्रे स्यात् तटे वृष्टेरवर्षणम् ॥ गिरौ सधौ खंडवृष्टिरित्याहुः पूर्वसूरयः ॥ अथाब्दपानयनम् । भूनदतिथ्यूनशका हता भू १ स्तिथ्यः १५ कुरामा ३१ कुगुणा ३१ श्च सिद्धाः २४ ॥ भुवा १ खबाणै५० स्त्रिशरै ५३ श्च युक्तास्तष्टा नगीरर्कमुखोऽब्दपः स्यात् ॥ १ ॥ अथ ग्रहाणामायव्ययाः ॥ षट्सूर्ये तियथश्चंद्रे छष्टौ भूमिजके तथा । सप्त दशेंदुबुधे च दश भास्कर-नन्दने ॥ एकोनविंशतिर्जीवे राहौ द्वादशकं भवेत् ॥ एकविंशतिराख्यास्याच्छुक्र स्यापि तथैव च ॥ अथायव्ययानयनम् ॥ स्वस्वामिवर्षाधिपवत्सरैक्यं त्रिघ्नं शराढ्य तिथिभक्तशेषम् । आयोऽथ लब्धिस्त्रिगुणा शराढ्या तिथ्युद्धृता शेषमितो व्ययः स्यात् ॥ स्वस्वामिशब्देन द्वादशराशिस्वामिनः । वर्षाधिपशब्देन राजा अनयोर्वर्षमिति ॥ उदाहरणम्—मेषस्वामी भौमः तस्य वर्षाणि ८ । राजा बुधः तस्य वर्षाणि १७ अनयोर्योगः २५ त्रिभिर्गुणितः ७५ पंचभिर्युक्तः ८० तिथि १५ भक्तः शेष ५ एतन्मितौ मेषराशौ भवतः लब्धं ५ त्रिगुणं १५ पंचयुक्त २० तिथिभक्तं शेषं ५ मेषराशौ व्ययः ५ एवं वृषादीनामायव्ययाः ॥ प्रतिवर्षं यो राजा भवति तस्यैवायव्ययौ ज्ञेयौ सिद्धिवत् ॥

इति श्रीदिवाकरदैवज्ञात्मजविश्वनाथदैवज्ञविरचिता
मकरन्दोदाहृतिः समाप्तिमगमत् ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

मकरन्दसारिणी-भाषा ।

सोपपत्ति सोदाहरण ।

श्रीमकरन्दसारिणीकी उपपत्तिसहित क्रम और उदाहरण भाषामें क्षेपक सहित सरलतापूर्वक इस ग्रन्थमें लिखा जानेसे प्रथम मकरन्दसारिणीके कर्ता श्रीमान् पं० विश्वनाथ दैवज्ञजीकी बुद्धिको कोटिशः धन्यवाद देता हूं। क्योंकि, इसकी उपपत्ति जाननेपर ऐसा प्रत्यक्ष ज्ञात होजावेगा कि मध्यमादि ग्रहोंके शीघ्र बनानेमें इससे और सरलता करना बहुतही कठिन असम्भवसा है, मध्यग्रह बनानेमें जो वाटिका बनाई है वह बहुतही सरल और सदैवके लिये शुद्धगणित रूपमें सिद्ध होती है जो कि वाटिकाकी उपपत्तिमे पाठकगण जानकर खुश होंगे।

मकरन्दसारिणीका आरम्भ कलियुगके आरम्भसे वैशाख शु. १ भृगुवारसे होता है। क्योंकि, वैशाख कृ० १३ भौमे सूर्यकी संक्रांति हुई है और उस वर्ष जेष्ठमास अधिक हुवा था जो कि गणितसे जाचकर लिखा है इसीलिये मकरन्दके अहर्गण (ग्रह दिनवल्लीके दिनों) की गणना शुक्रवारसे होती है।

अब मकरन्दसारिणीका क्रम समयोचित लिखा जाता है—

प्रथम तिथि नक्षत्र योग करण मध्यम तथा स्पष्ट करनेका क्रम लिखते है-यह समझना चाहिये तिथि नक्षत्र व योग क्या है? (उत्तर-) सूर्य चन्द्रमाका जो अन्तर है वह ही तिथि है अमावस्याके अंतमें सूर्य चन्द्रमाकी राश्यादिमें समानता होती है फिर शुक्र प्रतिपदासे चन्द्रमा सूर्य १२ अंश प्रतितिथि आगे होता जाता है. तिथिके अंत समयमें जानना और पूर्णिमाके अन्तमें ६ राशि अधिक चन्द्रमा हो जाया

करता है यह तिथिका सिद्धांत है। अब चन्द्रमा जो है वहही नक्षत्र है और सूर्य चन्द्रमाकी राश्यादिका योग है वहही योग है और १ तिथिमें २ करण भोग करते हैं कृष्णपक्षकी चतुर्दशी १४ के उत्तरार्द्धसे शुक्लपक्षकी प्रतिपदाके पूर्वार्द्धतक ४ करण शकुनी चतुष्पद नाग किंस्तुघ्न क्रमानुसार भोग करते हैं। फिर शुक्ल प्रतिपदाके उत्तरार्द्धसे क्रमानुसार तिथ्यार्द्ध प्रति १ भोग करता है। नाम यह है–१ बव २ बालव ३ कौलव ४ तैतल ५ गर ६ वणिज्य ७ विष्टी (भद्रा) यह सातों करण भोग किया करते हैं, जो विष्टी करण है वहही भद्रा मकरन्दसारिणीमें जो तिथि नक्षत्र योग बनाये गये हैं वह मध्यम है सूर्यचन्द्रसे बनाकर फिर केन्द्रांशोद्वारा फल (सौरभ) बनाकर तिथ्यादि स्पष्ट की गई हैं। तिथिसौरभ इत्यादिमें फल सदैव धन करते हैं लेकिन सूर्य चन्द्र स्पष्ट करनेपर केन्द्र भुजांशोद्वारा मेषादौ तुलादौ वशात् धन ऋण दोनों संस्कार किये जाते हैं यह शंका उत्पन्न होती है। जिसका समाधान यह है कि, मध्यम सूर्य व मध्यम चन्द्रसे मध्यम तिथि बनाकर उसमें कुछ घटी १४ या १५ के निकट घटाकर सारिणीमें मध्यम तिथिकी घटिकादि रक्खी हैं जो बनाकर देखनेसे मालूम हो जावेगा इसी कारण ऋण धन दोनों संस्कारमें धन करनेसे वही स्पष्ट होजाती है यह तिथि नक्षत्र योगकी उपपत्ति समझनी चाहिये॥

अब तिथि नक्षत्र योग स्पष्ट करनेका क्रम लिखते हैं–जिस शालिवाहनीय शाकेकी तिथि स्पष्ट करना हो उस अभीष्ट शाकेको तिथिसारिणी चक्र नं. १ के शाकेमें घटावे (जो अभीष्ट शाके तुल्यही सारिणीका शाका होवे तो घटानेकी आवश्यकता नहीं और न शेषाब्दही होगा) जो शेष रहे उसके तुल्य शाके विशेष सारिणी चक्र नं. २ की तिथिकन्द वारादि और वल्लीकन्द (केन्द्र)के और पुस्तकीय शाकेके कोष्ठकके तिथि वार घटी पल और वल्ली (केन्द्र) को परस्पर जोड लेवे और तिथि जो ३० से अधिक होवे तो ३० के भागसे शेषित करलेवे और वार जो ७ से अधिक होवे तो ७ के भागसे शेषित करलेवे और वल्ली (केन्द्र) के ऊपरके अंक यदि ६० से

अधिक होवे तो ६० के भागसे शेषित करलेवे, वही ग्रहण करै जो तिथि प्राप्त होवे उसीकी गणना चैत्र शुक्लादिसे जाने और उक्त तिथि २० से लेकर ३० अर्थात् ० तक होवे तो उसी वर्ष अधिक मास जाने अन्यथा अधिकमास नहीं होता है । इसका ध्यान रखना चाहिये, क्योंकि अधिकमासवाले वर्षमें बजाय २४ पक्षके २६ पक्ष (१३ मास) होते हैं । पूर्वोक्त तिथि १९ होनेपर भी जब आगेके वर्षमें क्षय मास होनेका योग होता है तब १९ तिथिवाले वर्षमें भी अधिक मास होना सम्भव होता है अन्यथा नहीं अधिक मास जब होता है कि जिस वर्ष शुक्ल प्रतिपदासे कृष्ण अमावस्यातक सूर्यकी सक्रांति नहीं होवे तो शुक्ल पक्ष जिस मासका हो उसी नामसे २ मास होते हैं और क्षयमास जब होता है जब शुक्ल प्रतिपदासे कृष्ण अमावस्यांतक २ संक्रांति होवे तो वहही मास क्षयमास होता है, उसमें अधिक मास १ विशेष होता है यह अधिक मास कार्तिकसे फाल्गुनतक भी होजाता है । पूर्वोक्त योगफल तिथि वारादि वहही वर्षादाको वारादि होता है यह सूर्यके मेष संक्रांतिके निकटवर्ती होता है । इसी प्रकार नक्षत्र और योगकाभी वर्षादो वार बना लेवे यह भी तिथिके निकटवर्ती होता है नक्षत्र या योग २७ से अधिक होनेपर २७ का भागसे शेषितको ग्रहण करना चाहिये (गणित करनेपर सारिणीकी शुद्धि अवश्य करलेनी चाहिये । क्योंकि छापेमें बहुतसी अशुद्धिका रहना सम्भव है जैसे १४ के २४ छपगये इत्यादि ।) इसकी जांच करनेका यह क्रम है–कोष्ठ प्रति कोष्ठ धन अथवा ऋण जो होता चला गयाहो उसी प्रकार कोष्ठ प्रति धन वा ऋण जैसा हो जांच करके शुद्ध करलेवे और सारिणीके शाकेसे पहले या आगेके ध्रुवांक बनाना चाहे तो उसका भी पूर्वोक्त क्रम है जोडकर या घटाकर जहां जैसा उचित हो चाहे सारिणीके शाकेसे आगे पीछेकी सारिणी बना सकता है इस बातका ध्यान अवश्य रखना चाहिये ॥

अब देशान्तर संस्कार क्रम लिखते हैं–लंकासे कुरुक्षेत्र होकर जो दक्षिण रेखा है उसको मध्यरेखा कहते हैं और उसमें जो जो

नगर हैं वह सब मध्य रेखाके नगर होते हैं सो मध्यरेखा अभीष्ट नगरसे पूर्व वा पश्चिम जितने योजन होवे उसको प्रत्येक ग्रहकी कालादि मध्यम गतिसे अलग २ गुणा कर गुणन फलमें८० का भाग देनेसे जो विकलादि फल प्राप्त हो, वह प्रत्येक मध्यम ग्रहमें यदि अभीष्ट नगर मध्य रेखासे पूर्व हो तो ऋण और पश्चिम हो तो धन संस्कार करनेसे देशान्तर संस्कृत ग्रह होता है और तिथ्यादिके देशान्तर संस्कारके लिये सूर्यकी मध्यमगति कलादि ५९। ८ को देशान्तर देशान्तरसे गुणाकर ८० का भाग देनेसे जो विकलादि लब्धि हो उसको पलादि मानकर इसका विपरीत संस्कार तिथ्यादिकी घटिकादिमें करनेसे देशान्तर संस्कृत घटिकादि होवेंगे अर्थात् अभीष्ट नगर मध्य रेखासे पूर्व हो तो धन पश्चिम होवे तो ऋण करे, यह विपरीत संस्कार हुवा। ऐसा करनेसे देशान्तर संस्कृत मध्यम तिथ्यादि होती है। देशान्तरकी उपपात्ति इस प्रकार जानना चाहिये कि, मध्यरेखासे जो पूर्वापर रेखा जितने योजन दूर पूर्व वा पश्चिम है उस स्थानमें जब कि सूर्यादि ग्रह मध्य रेखापर ठीक मस्तकपर होगा उससे पूर्व या पश्चिम पूर्वोक्त स्थानप-उस समय मस्तकपर नहीं होगा, वहांपर पूर्वापर नतकाल होगा। क्योंकि भचक्र (नक्षत्रोंका चक्र ग्रहको अपनी कक्षामें चलते हुए साथ लेकर) पूर्वसे पश्चिमको भ्रमण करताहै जिसके कारण दिन रात्रि होती है ॥

पृथ्वीके बीचकी पूर्वापररेखाकी वृति (परिधि) बडी होतीहै। उसके दक्षिणोत्तर जितनी अधिक दूरता होगी वहांपरकी भूवृति (परिधि) उसी भांति छोटी होगी, परंतु इसका सिद्धांत यह है कि, स्वदेशीय भूपरिधिके पूर्ण घेरेमें सूर्य सर्वत्र होकर ६० घडीमें पुनः उसी स्थानमें दिखाई देताहै और सूर्यकी मध्यम गति कलादि ५९।८। (६० घटीकी चाल है) है इसीलिये सामान्य गणित अर्थात् सरलता बनानेमें भूपरिधि (स्वदेशीय भूपरिधिके स्थानमें ऐसा मानकर) को

---

१ टिप्पणी-स्वदेशीय भूपरिधि स्पष्ट करनेका क्रम मैने अपनी बनाई गङ्गाधर बृहत्सारिणी भाषा सोदाहरणमें बतलाया है ॥

४८०० योजन मानकर त्रैराशिकद्वारा अर्थात् ४८०० योजनमें कलादि ५९।८ तो अमुक योजनमें कितनी ? इसलिये अमुक योजनको ५९।८ से गुना करके ४८०० का भाग देनेसे जो कलादि लब्धि होवे वहही देशांतर हुवा इस प्रकार प्रत्येक ग्रहका चाहिये और इस गणितमें और सरलता करनेके कारण ४८०० योजनको ६० से भाग देनेसे लब्धि ८० हुए अर्थात् देशान्तर योजनको ग्रहकी मध्यम गतिसे गुणा करके ८० का भाग देनेसे, जो लब्धि होय उसे विकलादि जाने। दोनों प्रकारसे फल एकही होताहै परंतु यह स्थूलक्रम है। यदि स्वदेशीय भूपरिधिका भाग अर्थात् पूर्वोक्त क्रिया की जावे तो वह शुद्ध देशान्तर होताहै।

अब वर्षमध्ये तिथि नक्षत्र योग स्पष्टकरनेकी रीति लिखते हैं-वर्षादी तिथिका वारादि वल्ली सहित पूर्वोक्त जो आया है यह शून्य गुच्छा (पक्ष) का हुवा (गुच्छाको पक्ष जाने) फिर इसी तिथिका वारादि व वल्लीमें तिथि गुच्छा सारिणी चक्र नं. ३ के कोष्ठक १ के क्षेपक जोडनेसे १ पक्षका और पूर्वोक्तहीमें २··३ इत्यादि कोष्ठकका क्षेपक जोडनेसे २···३ आदि पक्षका वारादि होजावेगा इसी प्रकार पक्ष० शून्यादि २४ पक्ष बनालेवे और जिस वर्ष अधिकमास हो उस वर्ष २६ पक्ष बनालेवे। और इसीप्रकार नक्षत्र व योगके गुच्छा अर्थात् आवृत्ति १४ या १५ बनालेवे। इतना ध्यान रखे कि, वार ७ से अधिक होनेपर ७ के भागसे शेषितको ग्रहण करे और तिथि आधिक होनेसे तिथिमें ३० के भागसे शेषितको ग्रहण करै और नक्षत्र योग अधिक होनेसे नक्षत्र तथा योगमें २७ का भाग देनेसे जो शेष रहे उसे ग्रहण करै-और वल्लीका ऊपरका अंक ६० से अधिक होनेपर ६० का भागसे शेषितको ग्रहण करे, फिर तिथिके शून्यपक्षका वारादि सहितवल्लीके लिखकर उस तिथिके आगे १ तिथि बढाकर बराबर १ पक्ष तक १६ कोष्ठमें फिर पुनः वहही तिथि दूसरे पक्षकी आजावेगी और १ तिथि प्रति १ वार भी बढाना चाहिये० पक्षसे १ पक्षतकका कोष्ठक रूप लिखकर (जो उदाहरणमें समझावेंगे) फिर तिथि गुच्छा सारिणीमें लिखे हुए चालन घट्यादि (एक पक्षसे दूसरे पक्ष १५ दिन तकमें जितना घटा बढा हो उसका १५ वां भाग) ऋणको ऋण संस्कार

प्रतिदिन करके १५ दिनकी तिथिके मध्यम वारादि बनालेवे। जब शून्य ० पक्षसे १ पक्षतक संस्कार करके ठीक २ मिलजावे तौ शुद्ध जाने, यही-जांच है इसीप्रकार वल्ली (केन्द्र) का चालन धन करके पक्षभरकी वल्ली बनालेवे। इसकी जांचभी उसी प्रकार जाने फिर तिथिसौरभ (केन्द्रफल सारिणी) चक्र नं. ४ सारिणीसे वल्लीद्वारा सानुपात घटिकादि फल लाकर तिथिके वारादिमें धन संस्कार करनेसे तिथिका वारादि स्पष्ट हो जाता है। वल्ली ६। ८ सानुपात फल लानेका यह क्रम है कि, वल्लीके ऊपरके अंक तुल्य कोष्ठकमें वल्लीके दूसरे अंक तुल्य तिर्यक् कोष्ठकमें जो फल होय यदि तिर्यक् कोष्ठकके अंकसे वह द्वितीय अंक न्यूनाधिक हो तो कोष्ठकके अंकको घटानेसे जो अंक शेष रहै उसे वल्लीके तीसरे अंक सहितको उस कोष्ठकके फल और उससे आगेके कोष्ठके फल और उससे आगेके कोष्ठ फलका अन्तर जो पल होय उनसे गुण करके ६ का भाग (क्योंकि ६ अंकवाद प्रति कोष्ठ है) देवे जो पल लब्धि होय उसको अग्रिम कोष्ठवशात् अर्थात् आगेका कोष्ठ अधिक होवे तो कोष्ठकी घटिकादिमें जोड देवे जो आगेका कोष्ठ न्यून होवे तो घटाय देवे जो घटिकादि प्राप्त होवें वही केन्द्रोपरि सानुपात फल होता है। इसी प्रकार नक्षत्र योगकी वल्लीद्वारा नक्षत्र योगका सानुपात फल लाना चाहिये ॥

सानुपात फल लानेका एक उदाहरण भी यहां दिखाते हैं- जैसे केन्द्र वल्ली ८।१९।३० है इसके द्वारा तिथि फल लाना है तो तिथि सौरभसारणि चक्र नं. ४ में ऊपरके अंक ८ के कोठेके नीचे द्वितीय अंक १९ होनेसे तिर्यक् कोष्ठ १८ में फल घटिकादि ४५।८ है तो द्वितीय अंक १९ में १८ को घटाया तो शेष १ और तीसरा अंक ३० मिलकर १।३० हुए इसको प्रथम कोष्ठ फल ४५।८ और अग्रिमकोष्ठ फल घटिकादि ४५।१७ के अन्तर ९ पलसे गुणा करके १३।३० इसमें ६ का भाग देनेसे २ पल लब्ध हुए, इसको अग्रिम कोष्ठ अधिक होनेसे प्रथम कोष्ठकी घटिकादि ४५।८ में जोडा तो ४५।१० यह सानुपात तिथिफल हुवा. इसी प्रकार सानुपात क्रम नक्षत्रयोगोंमें भी जाने-जिस प्रकार तिथि स्पष्ट की जाती है उसी प्रकार नक्षत्र योग भी स्पष्ट करना चाहिये। नक्षत्र और योग स्पष्ट

करनेमें २८ कोष्ठ बनाना चाहिये। क्योंकि आवृत्तिसे दूसरी आवृत्तितक वही नक्षत्र पुनः आजावेगा और तिथिवत् नक्षत्र प्रतिकोष्ठ बढालेवे उसीके साथ तिथिवत् १ वार भी प्रतिदिन बढा लेना चाहिये और नक्षत्रका घट्यादि चालन प्रतिदिनका धन है और योगका घट्यादि चालन प्रतिदिन ऋण है और वल्ली चालन दोनोंका प्रतिदिनका धन है जो सारिणीसे स्पष्ट ज्ञात होजावेगा। पूर्वोक्त केन्द्र वल्लीका सानुपातफल नक्षत्र तथा योगोंके मध्यम वारादिमें जोडनेसे नक्षत्र तथा योग स्पष्ट होजाता है। इसी प्रकार तमाम वर्ष भरके २४ पक्ष या २६ पक्ष और नक्षत्र तथा योगके १४ या १५ आवृत्तियां स्पष्ट-करलेवे। सानुपातफल बनानेमें विना गणित किये देखकर अनुमानसे भी बना सकते है ऐसा करनेसे शीघ्रता होती है।

अब करण स्पष्ट करनेका चक्र लिखते है क्रम उपर लिख चुके है। चक्रको उदाहरणमें जानो—

तिथि	पूर्वार्द्ध	उत्तरार्द्ध	तिथि	पूर्वार्द्ध	उत्तरार्द्ध
कृ० १	बालव	कौलव	शु० १	किंस्तुघ्न	वव
२	तैतल	गर	२	बालव	कौलव
३	वणिज	विष्टि	३	तैतल	गर
४	वव	बालव	४	वणिज	विष्टि
५	कौलव	तैतल	५	वव	बालव
६	गर	वणिज	६	कौलव	तैतल
७	विष्टि	वव	७	गर	वणिज
८	बालव	कौलव	८	विष्टि	वव
९	तैतल	गर	९	बालव	कौलव
१०	वणिज	विष्टि	१०	तैतल	गर
११	वव	बालव	११	वणिज	विष्टि
१२	कौलव	तैतल	१२	वव	बालव
१३	गर	वणिज	१३	कौलव	तैतल
१४	विष्टि	शकुनी	१४	गर	वणिज
३०	चतुष्पद	नाग	१५	विष्टि	वव

अब तिथि नक्षत्र योग स्पष्ट करनेका उदाहरण लिखते हैं प्रथम तिथि स्पष्ट करते हैं; प्राचीन राजधानी देहली (इन्द्रप्रस्थ) है इसलिये देहली नगरको अभीष्ट देश मानकर देहलीके तिथ्यादि बनावेंगे। देहली नगर मध्यरेखासे अनुमान १७ योजन[1] पूर्व है और वहांके पलभा अंगुलादि ० । ६ । ३२ हैं। अभीष्ट सम्वत् १९८४ शाके १८४९ का उदाहरण दिखलाते हैं। अभीष्ट शाके १८४९ को चक्र नं. १ सारिणीमें अभ्यास करनेके लिये दिखाया, देखो-

(च. नं. १) तिथि		वार	घ. प.	केन्द्रवल्ली
शाके १८४८ में	००	२	२४।३३	३९।११।५७
चक्र नं. २ शेष १ में	११	१	११।४२	१५।१२।३६
चैत्र शु०	११	३	३६।१५	५४।२४।३३
			१२	देशान्तर धं०
	११	३	३६।२७	५४।२४।३३

देशान्तर संस्कार करनेके लिये सूर्यकी मध्यमगति कलादि ५९।८ को देशान्तर पूर्व योजन १७ से गुणा किया तो १००५।१६ गुणनफल हुवा. इसमें ८० का भाग दिया तो लब्धि विकलादि १२ । ३४ हुई अर्थात् १२ विकलाको पल मानकर मध्यरेखासे अभीष्ट नगर पूर्व होनेपर ग्रहोंके विपरीत तिथिमें धन संस्कार किया तो मध्यमतिथि चै० शु० ११ वारादि ३ । ३६ । २७ फेन्द्र वल्ली ५४ । २४ । ३३ हुई, यहही वर्षादी हुवा । शून्य० पक्षका जाने।

अब वर्ष भरके २४ पक्ष बनानेके निमित्त चक्र नं० ३ तिथिगुच्छा सारिणी द्वारा प्रत्येक पक्षको ध्रुवा जोडकर यथा-प्रथम पक्षका ध्रुवा वारादि ०० । ४९ । ४३ वल्ली ३२ । ८ । २३ क्रमसे जोडनसे वैशाख कृ० ११ का वारादि ४ । २२ । १० वल्ली २६ । ३२ । ५६ हुई। इसी प्रकार प्रत्येक गुच्छा पक्षका ध्रुवा जोडकर २४ पक्ष बनावे, जो नीचे चक्रमें लिखते हैं-

---

[1] योजनका मानादि अपनी बनाई गगाधर बृहत्सारिणीमें दिया है.

पक्ष-संख्या	पक्ष	वार	घटी	पल	केन्द्र वल्ली		
०	चै.शु. ११	३	३६	२७	५४	२४	३२
१	वै, कृ. ११	४	२२	१०	२६	३२	५६
२	वै. शु. ११	५	६	५९	५८	३९	५४
३	ज्य.कृ. ११	५	५१	२३	३०	४५	४१
४	ज्य.शु. ११	६	३५	१०	२	५९	५
५	आ.कृ. ११	०	१८	४१	२४	५३	५६
६	आ.शु. ११	१	२	५१	६	५७	१
७	श्रा.कृ. ११	१	४५	३	३९	००	१३
८	श्रा.शु. ११	२	२८	२५	११	३	४४
९	भा.कृ. ११	३	१२	७	४३	७	५९
१०	भा.शु. ११	३	५६	१४	१५	१३	९
११	आ.कृ. ११	४	४०	५६	४७	१९	३४
१२	आ.शु. ११	५	२६	१५	१९	२७	२१
१३	का.कृ. ११	६	१२	१४	५१	३६	३४
१४	का.शु. ११	६	५८	५२	२३	४७	४
१५	मा.कृ. ११	०	४६	०४	५५	५९	०६
१६	मा.शु. ११	१	३३	५१	२८	१२	१९
१७	पौ.कृ. ११	२	३२	१७	००	२६	४८
१८	पौ.शु. ११	३	१०	३७	३२	४१	७
१९	माघकृ. ११	३	५९	२१	४	५६	२२
२०	मा.शु. ११	४	४७	५५	३७	११	१३
२१	फा.कृ. ११	५	२८	१६	९	२५	३४
२२	फा.शु. ११	६	२४	१०	४१	३८	५७
२३	चै.कृ. ११	०	११	३२	१३	५१	११

अब केवल २ पक्षोंका चालन देकर स्पष्ट करके दिखाते हैं अर्थात् प्रत्येक तिथिको प्रथम मध्यम बनाकर फिर स्पष्ट करके दिखलाते हैं–चक्र नं. ३ का चालन देकर चक्र नं. ४ तिथि सौरभसे तिथि फल जानकर उसको संस्कार करके तिथि स्पष्ट करके चक्रोंद्वारा दिखलाते हैं। प्रतितिथिमें १ वार बढालिया गया है फिर प्रथम पक्षका चालन संस्कार किया। इसीका दूसरा पक्षभी चालनके आधार बनाया गया।

तिथि	चै.शु.११	१२	१३	१४	१५	वै.कृ.१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
वार	३	४	५	६	०	१	२	३	४	५	६	०	१	२	३	४
घटी पल	३६ २७	१५ ३०	३४ ३३	३३ ३६	३२ ३९	३१ ४२	३० ४५	२९ ४७	२८ ५०	२७ ५३	२६ ५६	२५ ५९	२५ २	२४ ५	२३ ८	२२ १०
केन्द्र वली	५४ २४ ३३	५६ ३३ ७	५८ ४१ ४०	०० ५० १४	२ ५८ ४७	५ ७ २१	७ १५ ५४	९ २४ २८	११ ३३ १	१३ ४१ ३५	१५ ५० ८	१७ ५८ ४२	२० ७ १५	२२ १५ ४९	२४ २४ २२	२६ ३२ ५६
फल धन	९ ५९	१५ १५	२१ १०	२७ २२	३३ २३	३८ ४९	४४ २३	४६ ४६	४९ ००	४९ ५२	४९ ३३	४७ ५६	४५ २१	४१ ५५	३७ ४६	३३ ५
तिथिका स्पष्ट वारादि	मं. ४६ २६	बु. ५० ४५	बृ. ५५ ४३	शु. श. ६० ० ०० ५८	र. ६ २	च. १० ३१	म. १५ ८	बु. १६ ३३	बृ. १७ ५०	शु. १७ ४५	श. १६ २९	र. १३ ५०	च. १० २३	मं. ६ ००	बु. ०० ५४	बु. ५५ १५

दूसरा पक्ष।

तिथि	वै.कृ. ११	१२	१३	१४	३०	वै.शु. १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
वार	४	५	६	०	१	२	३	४	५	६	०	१	२	३	४	५
घटी	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	६
पल	१०	९	८	७	७	६	५	५	४	३	३	२	१	०	०	५९
केन्द्र	२६	२८	३०	३२	३५	३७	३९	४१	४३	४५	४७	५०	५२	५४	५६	५८
वल्ली	३२	४१	४९	५८	६	१५	२३	३२	४०	४८	५७	५	१४	२२	३१	३९
	५६	१४	४२	१०	३८	६	३४	१	२९	५७	२५	५३	२१	४९	१७	४४
फल	३३	२८	२२	१७	११	८	५	२	०	०	०	२	२	९	१५	२१
धन	५	५	५६	५६	११	५५	१६	२८,	४०	१	३४	२७	३८	५५	११	५
तिथिका	बु.	बृ.	शु.	श.	र.	चं.	म.	बु.	बृ.	शु.	श.	र.	च.	म.	बु.	बृ.
स्पष्ट	५५	४९	४३	३७	३१	२६	२१	१७	१४	१३	१२	१३	१५	१८	२३	२८
वारादि	१५	१४	४	३	१८	१	२१	३३	४४	४	३७	२९	३९	५५	११	४

इस प्रकार सम्पूर्ण वर्षकी तिथि स्पष्ट करलेवे

अब नक्षत्र स्पष्ट करते हैं–अभीष्ट शाके १८४९ है सो चक्र नं० ५ नक्षत्र सारिणीमें शाके १८३२ शेषाब्द शाके १७ चक्र नं० ६ से नक्षत्र वारादि तथा वल्ली जोडकर दिखलाते हैं और पूर्वोक्त देशान्तर १२ पल धन करके बनाया तो मघा नक्षत्रका वारादि ३।४७।२ वल्ली (केन्द्र) ५४।४४।०० यह हुवा. यह भी सूर्यकी मेषकी संक्रांति तथा तिथिके ध्रुवाके निकटवर्ती होता है वारको मुख्य जाने।

(च–नं ५) शाके १८३२ में	नक्षत्र ३	वार. ३	घ. प. ४०।३८	वल्ली. ३४।२६।३३
(च–नं ६) शेषाब्द १७ में	७	०	६।१२	२०।१७।२७
शाके १८४९ में हुवा	१०	३	४६।५० १२	५४।४४।०० देशान्तर
मघा	१०	३	४७।२	५४।४४।००

अब वर्ष भरकी १४ आवृत्तियां बनाकर चक्र नं० ७ सारिणी द्वारा चक्रमें बनाकर दिखाते हैं।

आवृत्ति	००	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
नक्षत्र	मघा १०	मघा १०	मघा १०	१० मघा	१० मघा	१० मघा	१० मघा	१० मघा	१० मघा	१० मघा	१० मघा	१० मघा	१० मघा	१० मघा
वार	३	३	२	१	१	०	६	६	५	४	३	३	२	१
घटी	४७	७	२७	४६	६	२४	४३	१	२०	३८	५७	१७	३७	५७
पल	२	१२	२०	५१	२	४६	५	३९	२	३०	४९	२६	२६	३५
केन्द्र वल्ली	५४ ४० ००	५४ १५ २७	५३ ४६ ५१	५३ १६ ५४	५२ ४६ १२	५२ १४ ३३	५१ ४३ ००	५१ १० ०	५० ३७ ३०	५० ५ २५	४९ ३४ ५२	४९ ५ ७	४८ ३६ १४	४८ ७ २७

१४ आवृत्तियां इस प्रकार हुई।

अब चक्र नं. ७ सारिणी द्वारा केवल १ आवृत्तिको तिथिवत् चालन देकर स्पष्ट करके चक्र द्वारा दिखलाते हैं–तथा चक्र नं० ८ नक्षत्रसौरभ द्वारा फल लेकर प्रत्येक नक्षत्र स्पष्ट करके दिखलाते हैं प्रतिदिन चालन पलादि ४४।४८ धन और प्रतिदिन वल्ली चालन २।१२।१६।३२ धन है।

नक्षत्र	म.	पू.	उ.	ह.	चि	स्वा	वि.	ऽनु	ज्ये	मू.	पू.	उ.	श्र.	ध.
वार	३	४	५	६	०	१	२	३	४	५	६	०	१	२
घटी	४७	४७	४८	४९	५०	५०	५१	५२	५३	५३	५४	५५	५६	५६
पल	२	४७	३२	१७	२	४७	३१	१६	१	४६	३१	१५	०	४५
केन्द्र घटी	५४	५६	५९	१	३	५	७	१०	१२	१४	१६	१८	२१	२३
	४४	५६	८	२०	३३	४५	५७	०९	२२	३४	४६	५९	११	२३
	००	१७	३३	५०	६	२३	४०	५६	१३	२९	४६	२	३९	३६
फल	९	१५	२०	२६	३२	३७	४१	४४	४५	४६	४५	४३	४०	३६
	५८	६	४७	३९	१४	९	१०	५	४५	५	१६	१८	३३	५२
नक्षत्र	मघा.	पू. फा.	उत्तरा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशा०	ऽनु.	ज्ये.	मू.	पू.	उ.	श्र.	ध.
नक्षत्रका स्पष्ट वारादि	मं.	बु. बृ.	शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	र.	चं.	मं.
	५७	६० २	९	१५	२२	२७	३२	३६	३८	३९	३९	३८	३६	३३
	००	० ३	१२	५६	१६	५६	४१	२१	४६	५१	४७	३३	३३	३७

नक्षत्र	श.	पू.	उ.	रे.	अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आ	पु.	पु.	श्ले.	म
वार	३	४	५	६	१	२	३	४	५	६	०	१	२	३
घटी	५७	५८	५८	५९	००	१	१	२	३	४	४	५	६	७
पल	३०	१५	५९	४४	२९	१४	५९	४६	२८	१३	५८	४३	२७	१२
केन्द्र घटी	२५	२७	३०	३२	३४	३६	३८	४१	४३	४५	४७	४९	५२	५४
	३५	४८	०	१२	२४	३७	४९	१	१४	२६	३८	५०	३	१५
	५२	९	२५	४२	५९	१५	३२	४८	५	२१	३८	५४	११	२७
फल	३२	२७	२३	१८	१३	९	५	२	०	०	०	२	४	९
	३५	५५	१	११	१९	१५	३५	४९	५१	२	२३	४	५९	०
नक्षत्र	श.	पू.	उ.	रे.	अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पु.	पु.	श्ले.	मघा.
नक्षत्रका स्पष्ट वारादि	बु.	बृ.	शु.	श.	र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	र.	चं.	मं.
	३०	२६	२२	१७	१३	१०	७	५	४	४	५	७	११	१६
	०५	१०	०	५५	५८	२९	३४	३५	१९	१५	२१	४७	२६	१२

इसीप्रकार पूर्णवर्षभरकी आवृत्तियाँ बनाकर नक्षत्र स्पष्ट करलेवे ।

अब अभीष्ट शाके १८४९ के योग स्पष्ट करते हैं। चक्र नं० ९ और १० योगसारिणीसे अभीष्ट शाके १८४९ तुल्य तथा १२ पल देशान्तर धन करके बनाया तो गंड योग १० का वारादि ३ । ५० । २९ वल्ली केन्द्र ५४ । ४७ । ५८ हुवा.

(च. नं. ९) से शके १८३२ में	३	३	४२।५१	३४।२७।५०
शेषाब्द १७ मे (च. नं. १०)	७	०	७।२६	२०।२०।८
शके १८४९ में गंड योग	१०	३	५०।१७	५४।४७।५८
			१२	पल देशान्तर
गंड	१०	३	५०।२९	५४।४७।५८

यह भी तिथिके ध्रुवाके निकटवर्ती होता है वारको मुख्य जाने।

अब पूर्ण वर्ष भरकी १५ आवृत्तियां चक्र नं० ११ सारिणीसे बनाकर चक्र द्वारा दिखलाते हैं-

आवृत्ति	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
योग	गंड १०	गंड १०	गंड १०	गंड १०	गंड १०	गंड १०	गंड १०	गंड १०	गंड १०	गंड १०	गंड १०	गंड १०	गंड १०	गंड १०	गंड १०
वार	३	१	५	३	०	५	२	०	४	१	६	३	०	५	२
घटी	५०	१७	४६	१६	४५	१३	४०	५	२८	४९	१०	३२	५४	१७	४३
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
केन्द्र वल्ली	४७ ५८	१४ ५३	४३ २२	१३ ५०	४३ ३५	११ १०	३५ २५	५५ ४९	१२ २	२५ ४२	३७ ४८	५० १२	४ ४२	२३ ४५	४३ ६

अब चक्र नं० ११ सारिणीसे प्रतिदिनका चालन देकर एक आवृत्तिका योग (नक्षत्रवत्) स्पष्ट करते हैं। प्रथम आवृत्तिका चालन घटिकादि ३ । ३९ । ४७ ऋण और प्रतिदिन वल्ली चालन २ । ३ । १३ । ८ धन है-

योग	गंड	वृ.	ध्रु	व्या	ह	व	सि	व्य	व	प	शि	सि	सा	शु
वार	३	४	५	६	०	१	२	३	४	५	६	०	१	२
घटी	५०	४७	४३	४०	३६	३३	२९	२६	२३	१९	१६	१२	९	५
पल	२९	४	३८	१२	४६	२०	५५	२९	३	३७	१२	४६	२०	५४
केन्द्र वही	५४	५६	५८	००	०३	५	७	९	११	१३	१५	१७	१९	२१
	४७	५१	५४	५५	०	४	७	१०	१३	१६	२०	२३	२६	२९
	५८	११	२४	३७	५०	३	१७	२०	४३	५६	९	२२	३५	४९
फल	९	१३	१८	२३	२८	३३	३६	३९	४१	४२	४२	४१	३९	३७
	३०	५४	४६	४८	४१	८	५५	४८	४९	४८	४५	४५	५३	११
योग स्पष्टका वारादि	मं.	बु. बृ.	शु	श	र	चं	मं	बु	बृ	शु	शु	श	र	चं
	५९	६० ०	२	४	५	६	६	६	४	२	५८	५४	४९	४३
	५९	० ५८	२४	०	२७	२८	५०	१७	५२	२५	५७	३१	१३	१३

योग	शु	ब्र	ऐं	वै	वि	प्री	आ	सौ	शो	ऽग	सु	धृ	शू	ग
वार	३	३	४	५	६	०	१	२	३	४	५	६	०	१
घटी	२	५९	५५	५२	४८	४५	४१	३८	३५	३१	२८	२४	२१	१७
पल	२८	३	३७	११	४५	२०	५४	२८	२	३६	११	४५	१९	५२
केन्द्र वही	२३	२५	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४२	४४	४६	४८	५०
	३२	३६	३९	४२	४५	४९	५२	५५	५८	२	५	८	११	१४
	२	१५	२८	४१	५४	७	२१	३४	४७	०	१३	२६	३९	५३
फल	३४	३०	२६	२२	१७	१३	९	६	३	१	०	०	०	२
	५	२२	१८	४	४८	४०	५०	२७	४०	३९	२०	१	४२	३०
योग स्पष्टका वारादि	मं	बु	बृ	शु	श	श	र	चं	मं	बु	बृ	शु	श	र
	३६	२९	२१	१४	६	५९	५१	४४	३८	३३	२८	२४	२२	३०
	२३	२५	५५	१५	३३	००	४४	५५	४२	१५	३१	४६	१	२३

'इस प्रकार पूर्ण वर्षकी आवृत्तियोंको स्पष्ट करके योग स्पष्ट करलेना चाहिये और करण स्पष्ट करनेका उदाहरण करणचक्रमें लिख चुके हैं, सो आगे चक्रमें स्पष्ट करके दिखलावेंगे। और जब जब विष्टी करण आवे तब तब उसीके माफिक पंचांगमें भद्रा लिख देवे और नक्षत्रके चरण अनुसार चन्द्रमाकी राशि चार करके पंचांगमें लिख देना चाहिये और दिनमानकी घटिकादि तथा अंग्रेजी फारसी तारीखें मास लिख देना चाहिये। फारसीकी तारीख विशेषतया अमावस्याको २८ तारीख आजाया करती हैं। चन्द्रोदयके दूसरे दिन १ तारीख होती है।

अब पञ्चांग लिखनेका क्रम समझाते हैं—

	ति	वा	घ प	न	घ प	यो	घ प	क	घ प	क	घ प	ता. अं.	फा ता.	चन्द्रमा.	दिन मान	
चैत्र शु	११	मं	४६।२५	म	५७।००	ग	५९।५९	व	१४।१३	वि	४६।२५	१२	९			भ १४।१३ उ.४६।२५ या.
	१२	बु	५०।४५	पू	६०।००	वृ	६०।००	व	१८।३१	बा	५०।४५	१३	१०			
	१३	बृ	५५।४३	पू	२।५३	वृ	०।५८	कौ	२३।१४	तै	५५।४३	१४	११	क. १९/२९		भ ००।५ उ. २३।३० या.
	१४	शु	६०।००	उ	९।१९	ध्रु	०२।१४	ग	२८।२१	व	६०।००	१५	१२			
	१४	श	००।५८	ह	१५।५६	व्या	४।००	वि	००।५८	वि	३३।३०	१६	१३	तु. ४९/६		
.	१५	र	६।२	चि	२२।१६	ह	५।२७	व	६।२	बा	३८।१६	१७	१४			

ति	वा	घ. प.	न.	घ. प.	यो	घ. प.	क	घ. प.	क	घ. प.	ता. इं.	ता. फा.	चन्द्रमा.	दिनमान	
१	च	१०।३१	स्वा	२७।२६	व	६।२८	कौ	१०।३१	तै	४२।४९	१८	१५	पु. $\frac{१६}{३०}$	दिनमानका क्रम सूर्य स्पष्टाधिकारमें समझा जायगा।	म. ५५।५० उ.
२	म	१५। ८	वि	२२।४१	सि	६।५०	ग	१५।८	व	४५।५०	१९	१६			म. १६।२२ या.
३	बु	१६।३३	ऽनु	२६।२१	व्य	६।१७	वि	१६।३३	व	४७।११	२०	१७	ध. $\frac{३८}{४६}$		
४	बृ	१७।५०	ज्ये	२८।४६	व	४।५२	वा	१७।५०	कौ	४७।४८	२१	१८			
५	शु	१७।५५	मू	३९।५१	प	३।२५ / ५८।५७	तै	१७।४५	ग	४७।७	२२	१९	म. $\frac{५४}{२८}$		म. $\frac{१६}{२९}$उ. $\frac{४५}{१२}$या
६	श	१६।२९	पू	३९।४७	सि	५४।३१	व	१६।२९	वि	४५।१२	२३	२०			
७	र	१३।५५	उ	३८।३३	सा	४९।१३	व	१३।५५	वा	४२।९	२४	२१			
८	च	१०।२३	अ	३६।३३	शु	४३।१२	कौ	१०।२३	तै	३८।११	२५	२२	कुं. $\frac{५}{५}$		म. ३३।२७ उ.
९	म	६।००	ध	३३।३७	शु	३६।२३	ग	६।०	व	३३।२७	२६	२३			
१०	बु	००।५४ / ५८।१५	श	३०।५	ब्र	२९।२५	वि	२०।५४ / ८।४	वा	५५।१५	२७	२४	मी. $\frac{१२}{८}$		म. ००।५४ या.
१२	बृ	४९।१४	पू	२६।१०	ऐ	२१।५५	कौ	२२।१४	तै	४९।१४	२८	२५			
१३	शु	४३।४	उ	२२।१०	वै	१४।१५	ग	१६।९	व	४३।४	२९	२६	मे. $\frac{१७}{५५}$		म. ४३।४ उ.
१४	श	३७।३	रे	१७।५५	वि	६।३३ / ५९।००	वि	१०।३	श	३७।३	३०	२७			म. १०।३ या.
३०	र	३१।१८	भ	१३।५८	भा	५१।४४	च	४।१०	ना	३१।१८ / ५८।३९	१	२८			

इस प्रकार पञ्चाङ्गमें लिखना चाहिये । पक्ष २ अलग अलग लिखे । अब तिथ्यादि प्रकरण उदाहरण सहित पूर्ण होगया । (दिन मानका क्रम सूर्यस्पष्टाधिकारमें समझाया जावेगा ।)

अब तारीखका क्रम तथा उदाहरण लिखते हैं। अब मुसलमानी सन् हिजरी तथा महीना बनानेका क्रम लिखते हैं। हिजरी सन् बनानेकी स्पष्टरीति सम्वत् १९५९ विक्रमीसे चैत्र शु. से मोहरम मास आरम्भ है। इससे आगे या पीछे जितने वर्षका जानना हो उन वर्षोंमें (यदि ३३ से अधिक हो तो)। ३३ का भाग देवे। जो वर्ष लब्ध होय वह और जो शेष रहे (यानी ३३ से कम हो) उसमें ११ का भाग देनेसे जो लब्ध होय उसे ४ से गुणा करनेपर जो शेष मास होय वह और शेषको १२ से गुणा करके ३३ का भाग देनेसे जो मास लब्ध हो वह पूर्वोक्त वर्ष मासमें जोड लेवे (यदि १२ से अधिक हो तो १२ के भागसे वर्ष बनालेवे) जो वर्षादि योग फल होय उसमें १९५९ और अभीष्ट वर्षके अन्तरको जोडकर जो योग फल होय उसको क्षेपक वर्षादि १३२०। १ में यदि आगेका बनाना होवे तो जोड देवे। यदि पीछेका बनाना होवे तो घटाय देवे। जो वर्षादि हो वही सन् और महीना चैत्र शु० चन्द्रोदयके दूसरे दिनसे आरम्भ होगा।

बारह महीनोंके नाम यह हैं-मोहरम १, सफर २, रविउलअव्वल ३, रविउलाखर ४, जमादि उलअव्वल ५, जमादि उलाखर ६, रज्जब, शाबान ८, रमजान ९, शव्वाल १०, जिल्कादि ११ जिलिहज १२।

उदाहरण-अभीष्ट शाके १८४९ सम्वत् १९८४ में चैत्र शुक्लसे यह जानना है कि, हिजरी सन् क्या और कौन महीना लिखना चाहिये तो पूर्वोक्त क्रमानुसार सम्वत् १९८४ में १९५९ घटाये तो शेष २५ रहे ३३ से कम होनेसे ३३ का भाग नहीं दिया गया, इस लिये ११ का भागदिया गया लब्ध २ हुए इसको ४ अंकसे गुणा किया गया तो ८ मास हुए। फिर शेष ३ को १२से गुणा किया तो ३६ हुए इसमें ३३ का भाग दिया तो लब्ध १ मास हुवा इसको पूर्वोक्त वर्षादि ०।८ में जोडा तो वर्षादि ०।९ हुवा। २५ में ३३ का भाग न लगनेसे शून्य ० वर्ष हुवा। इसमें अन्तर वर्ष २५ को जोडा तो योगफल २५।९ हुवा। इसको क्षेपक वर्षादि १३२०।०१ में जोडा

तो १३४९।१० हुवा अर्थात् सन् हिजरी १३४५ और १० मास शव्वाल हुवा इसी प्रकार स्पष्ट कर लेना चाहिये ॥

शाकेमें ७८ जोडनेसे अंग्रेजी ईस्वी सन् चैत्र शु० में होताहै, जिसका महीना मार्च या अप्रिलका होताहै। मेषकी संक्रांति सूर्य्यकी तारीख १३ अप्रेलके निकटस्थ होती है। जैसे शाके १८४९ में ७८ जोडनेसे सन् १९२७ ईस्वी चैत्र शुक्लमें हुए।

अब ग्रहवल्ली (अहर्गण) बनानेका क्रम तथा मध्यम ग्रह बनानेका क्रम लिखा जाता है—ग्रह दिन वल्ली सारिणी चक्र नंबर २५ में जो शाकोंके नीचे (५७ वर्षवाद) चार अंक वल्लीरूप लिखे हैं और नीचे वार हैं और शेषांक चक्र नंबर २६ में जो ५७ कोष्ठक हैं उनके नीचे चार अंक लिखे हैं और नीचे वारांक लिखे हैं। जिसका क्रम यह है कि, अभीष्ट शाकेके तुल्य अथवा कुछ अधिक पुस्तकीय शाका जिस कोष्ठमें होवे उस कोष्ठके चारों अंक वल्लीके और वारांक लिखे फिर पुस्तकीय शाकेमें अभीष्ट शाका घटाकर जो शेष रहे उसके तुल्य चक्र नंबर २६ से वल्लीके चारों अंक और वारांक लेकर पूर्वोक्तमें जोड लेवें और वारोंके योगको यदि ७ से अधिक होय तो ७ के भागसे शेषितको ग्रहण करे और वल्लीके अंक जोडनेमें ६० से अधिक होनेपर ऊपरका १ अंक बढाता जावे वल्लीके सब अंकोंका प्रमाण ६० ही जाने और सबसे ऊपरका अंक जो ६० से अधिक हो तो ६० का भाग देकर लब्ध छोड देवे शेषको ग्रहण करै और वारांकको इतवारसे जाने परंतु वल्लीको दिन बनानेसे अर्थात् ऊपरक अंकको ६० गुणा करके नीचेका अंक जोडकर फिर ६० गुणा करके नीचेका अंक जोडकर इसी प्रकार क्रिया करनेसे जब अंतका नीचेका अंक जोडा जावे तब गुणा नहीं करे ऐसा करनेसे यह अहर्गण दिन होते हैं। इनको ७ से भाग करके जो शेष रहै उसको शुक्रसे गिननेपर अभीष्टवार स्पष्ट होताहै (यह दिन कलिगताब्दके जाने जैसा पहले बता चुके हैं) यह पूर्वोक्त ग्रह दिन वल्ली चैत्र शुक्ल प्रतिपदा या १ दिन पूर्व अमावस्याकी होती है फिर

वर्षके भीतर जिस मास तिथिका बनाना हो तो वल्ली पाक्षिक चालन सारिणी चक्र नंबर २७ के कोष्ठक अभीष्ट मासकी अमावस्या या पूर्णमासी जबकी दिन वल्ली बनाना हो उस कोठेके चारों अंक पूर्वोक्त वल्लीमें जोड लेवे और वारांक जो नीचे दिये हैं वह वारोंमें जोड लेवे फिर जितनी तिथि आगेकी बनाना हो उतनाही अंक वल्लीके नीचेवाले चौथे अंकमें जोड लेवे और उतनेवार। (७ से अधिक होवे तो ७ के भागसे शेषितको) वारोंमें जोड लेवे तो अभीष्ट तिथिकी ग्रह दिनवल्ली होती है और वार जो हो वह ऐतवारादिसे जाने। यदि वारमें १ न्यूनाधिक हो तो १ घटाय बढाय लेवे और उसी प्रकार १ वल्लीके चतुर्थांकमें भी घटाय बढाय लेवे तब ग्रहदिन वल्ली स्पष्ट होती है क्योंकि वारही मुख्य है वार ठीक २ मिलजानेपर उक्त वल्लीको शुद्ध जाने और जब अधिक मास पड चुका हो और शेषांक सारिणी चक्र नंबर २६ में नहीं जुडा हो तो वल्लीमें ३० दिन (वारोंमें २ का अंतर होनेके कारण वल्लीके चतुर्थांकमें ३०) और वारमें २ और जोडे लेवे अथवा अधिक मासका वर्ष सारिणीमें जुड चुका हो और अभीष्ट समयतक अधिकमास नहीं पडा हो तो वल्लीके चतुर्थांकमें ३० वारमें २ घटाय देवे तब वार मिलाकर वल्ली शुद्ध करलेवे। वारको सदैव मुख्य जाने। अब यह बतलाते हैं कि, किस प्रकार जाना जावे कि, सारिणीमें अधिक मास जुडा या नहीं जुडा जिस वर्ष अधिकमास होता है उस वर्ष ३८४ दिन होते हैं इसको ६० से गुणाकर वल्ली बनानेपर ०।०। ६।२४ होती है और साधारण वर्षमें ३५४ दिन होते हैं जिसकी वल्ली ०।०।५।५४ होती है सो चक्र नं० २६ शेषांक सारिणीम कोष्ठका अन्तर देखनेसे ज्ञात होजावेगा। जिस कोष्ठमें ०।०।६।२४ जुडा हो तो अधिकमास जुडा है ऐसा जाने। पूर्वोक्त ग्रहदिन वल्ली मध्यरेखाकी अर्द्ध रात्रिकी होती है।

अब अहगर्ण अर्थात् ग्रह दिनवल्लीकी उपपत्ति लिखते हैं- मकरन्दका अहर्गण (ग्रहदिनवल्ली) कलियुगके आरम्भ वर्ष वैशाख शु० १ भृगुवारसे हुवा है। इसमें यह शंका होती है कि चैत्र शु० १ से

शाकेका आरम्भ होता है, वैशाख शु० १ से क्यों किया गया ? इसका उत्तर यह है कि, उस वर्ष ज्येष्ठ मास२ हुए हे, अधिक मास वर्ष है और वैशाख कृष्ण १३ भौमार्क हुई है इसलिये वैशाख शु० १ मेषकी संक्रान्तिके निकटवर्ती होनेसे रखा गया है। पूर्वोक्त वल्लीको६०से गुणा करके नीचेका अंक जोडकर जैसे अहर्गण दिन बनाये उसी प्रकार अहर्गणको६०से भाग करनेपर वल्लीरूप पुनः बन सकती है। जैसे पहले कहा है। यह दिनवल्ली चक्र नं २५ में प्रतिकोष्ठ५७वर्ष रखा गया है। सो ५७ वर्षके दिन २०८१९वार १(२०८१९इनको७से भाग करनेपर शेष १ वार रहता है) होते है जिसको ६० से भाग करनेपर पूर्वोक्त क्रमसे वल्ली बनाई गई तो ० । ५ । ४६ । ५९ वार १ यह वल्ली हुई, सो यह क्षेपक प्रतिकोष्ठमें जोडकर सारिणी बनाई गई है, वल्लीरूप गणितकी सरलताके कारण बनाई गई जो कि ग्रह वाटिका (मध्यम ग्रह साधनमे) की उपपत्तिमें बतलाई जावेगी ।

अब प्रथम ग्रह वाटिकाकी उपपत्ति बतलाकर फिर वाटिकाद्वारा मध्यग्रह (ग्रहवल्ली) बनानेका क्रम लिखेंगे-कलियुग आरम्भ वर्षमें वैशाख कृष्ण अमावास्या गुरुवारको अर्द्धरात्र समयमें मध्यम सूर्य्य मध्यम चन्द्र, मंगल, बुधकेन्द्र, बृहस्पति, शुक्रकेन्द्र, शनि, केतु यह समस्त ग्रहराश्यादि शून्य ० । ० । ० । ० के थे और चन्द्रोच्च राश्यादि ३ । ० । ० । ० में था और मध्यमगति प्रत्येककी कलादि यथा सूर्य्यकी ५९ । ८ चन्द्रकी ७९० । ३५ मंगलकी ३१ । २६ इत्यादि जो प्रत्येक ग्रहकी वाटिकाके ६ कोष्ठकसे जान लेवे। क्योंकि छठा भाग प्रथम कोष्ठसे प्रत्येक कोष्ठमें जोडा गया है, यह मध्यमगति दैनिक होती है, इसके दूसरे दिन वैशाख शु० १ भृगुवारसे अहर्गण आरम्भ हुवा है, अहर्गणको प्रत्येक ग्रहकी मध्यमगतिसे गुणा करनेपर जो कलादि होय उसकी राश्यादि बनालेवे (राशि १२ से अधिक होनेपर १२ के भागसे शेषितको ग्रहण करे) तब मध्यमग्रह होते हे, इस बडे गणितकी सरलता करनेके निमित्त ग्रह वाटिकायें बनाई गई हैं, जिसके वास्ते सारिणी कर्ता पं. विश्वनाथजीको विशेष धन्यवाद है।

बुधकेन्द्र शुद्ध होता है। कलिगताब्दमें १५०० का भाग देनेसे जो लब्ध हो वह मध्यमगुरुमें ऋण करदेवे तब मध्य गुरु शुद्ध होगा। और कलिगताब्दमें १००० का भाग देनेसे जो अंशादि लब्ध होय वह शुक्रकेन्द्रमें ऋण और शनिमें धन करनेसे शुद्ध शुक्रकेन्द्र और मध्यम शनि होता है। यह समस्त मध्यम ग्रह मध्यरेखाके देशके अर्धरात्रि समयके होते हैं, १००० का भागसे जो अंशादि लब्ध होय उसका $\frac{1}{3}$ तिहाई भाग उसमें जोडनेसे ७५० के भागका लब्ध होजाता है और तिहाई भाग उसीमें घटा देनेसे १५०० के भागका होता है। शाकेमें ३१७९ जोडनेसे कलियुगगताब्द होता है, मध्यम ग्रह बनानेके बाद फिर उसमें देशान्तर संस्कार करना चाहिये तब स्वदेशीय ग्रह होता है। यथा अपना नगर मध्यरेखासे पूर्व या पश्चिम जितने योजन हो उससे प्रत्येक ग्रहकी कलादि मध्यमगतिसे गुणा करके ८० का भाग देनेसे जो विकलादि लब्धि होय उससे यदि अपना नगर मध्य रेखासे पूर्व होवे तो ऋण, पश्चिम होवे तो धन इसका संस्कार मध्यग्रहमें करनेसे स्वदेशी देशान्तर संस्कृत मध्यमग्रह अर्द्ध-रात्रिके होते हैं। यदि अगले दिन प्रातः ६ बजेके बनाना हो तो प्रत्येक ग्रहकी कलादि मध्यमगतिका चतुर्थ भाग प्रत्येक ग्रहमें जोड देवे और वक्रगति होनेसे राहुमें घटाय देवे तो प्रत्येक ग्रह अगले दिन प्रातः ६ बजेके होजावेंगे, अथवा अगले दिन मध्याह्नके बनाना हो तो अर्द्ध भाग जोड देनेसे दूसरे दिनके मध्याह्नकालीन मध्यम ग्रह होजावेंगे। इसी प्रकार जिस समयके चाहे अर्द्धरात्रके चालनके अनुसार अभीष्टकालीन ग्रह बना सकता है, परन्तु उदय या अस्त-कालीन ग्रह बनानेमें चर संस्कार करना चाहिये। सूर्य्य कभी ६ बजे पहले कभी ६ बजे बाद उदय होता है सो ६ बजेका और सूर्य्योदय कालका जो अन्तर है वही चरकाल है और जितने दिन आगेके ग्रह बनाने हों चालन देकर बनालेवे। यदि वर्षभरके साप्ताहिक बनाना हो तो सारिणी चक्र नं. ५२ में प्रत्येक ग्रहकी मध्यमगति दिन १३-१४-१५-१६-१७ की दिखलाई है। यदि ७-८-९ दिनकी गति

जानना हो तो प्रत्येक ग्रह वाटिकाके छठे कोष्ठकी अंशादि गतिको अभीष्ट दिनसे गुणा करके अभीष्ट दिनकी गति बनालेवे. फिर ग्रहमें चालन देता हुवा वर्षभरकी अवधिके मध्यम ग्रह बनालेवे, वर्षके आदि और मध्य और अंतमें वल्लीसे मध्यम ग्रह बनालेवे फिर चालन देकर बनावे जब ठीक२ मिलजावे तब शुद्ध जाने नहीं तो फिर जांच करके शुद्ध करलेवे, इस प्रकार अहर्गणाधिकार तथा मध्यमाधिकारका क्रम होगया।

अब इसका उदाहरण लिखते हैं–अभीष्ट शाके १८४९ में मार्ग शु० १५ बृहस्पति वारके प्रातःकालीन ६ बजेके मध्यम ग्रह बनाने हैं इसलिये सारिणीचक्र नं. २५ व २६ तथा पक्षचालन सारिणी चक्र नं. २७ से मार्ग शु० १५ का चालन देकर ग्रह सब जोडकर तथा वारोंको अलग जोडकर वारोंमें ७ का भाग देकर वार बृहस्पति और ग्रहदिन वल्ली ८।३०।१२।३८ यह हुई जो अभ्यासमें बनाकर दिखलाया है–

च. नं. २५ शा० १७९९ में	८	२५	३	४७	३
च. नं. २६ शेषाब्द ५० में	०	५	४	४०	३
च. नं. २७ मार्ग शु० १५ में	०	०	४	११	६
	८	३०	१२	३८	५
					बृहस्पति

अब वल्ली ८।३०।१२।३८ इसके दिन बनानेके निमित्त ६० से प्रत्येकको गुणा करके जोडते हुए अंतके अंकको जोडकर क्रिया बन्द करके सर्वदिन १८३६७५८ हुए, वार जाननेके लिये ७का भाग दिया तो शेष०शून्य रहा शुक्रादि होनेसे बृहस्पतिवार हुवा. पूर्वोक्त दिन १८३६७५८ यह कलियुगके आरम्भसे लेकर अभीष्ट समयतकके दिन है, फिर १८३६७५८ को विपरीत क्रिया अर्थात् ६०.से भाग देकर ऊपरके अंक वल्लीरूप बनानेसे पूर्वोक्त वल्ली ८।३०।१२।३८ होगई।अब वल्ली बनी रहे और वारकी जांच होजावे इसका क्रम यह है कि, पहले सब अंकोंको अलग२

७ से भाग करके शेषितको रखे फिर गुणक अंक क्रमानुसार १।२।४।१ यह जो है इनसे क्रमानुसार गुणकर फिर सबको जोडकर ७ का भाग देनेसे जो शेष रहै उसे भृगु आदिसे वार जाने। यह इसकी जांच है जैसे वल्ली ८।३०।१२।३८ के प्रत्येक अंकको ७ के भागसे शेषित करनेपर १।२।५।३ यह रहै इनको गुणक १।२।४।१ से गुणाकर १।४।२०।३ हुए इनका योग २८ हुवा इसमें ७ का भाग देनेसे शून्य रहा शुक्र आदि गणनासे बृहस्पति वार हुवा सो ठीक है। यदि वल्लीके ४ अंकसे बढकर और अधिक होजावे तबभी गुणक उलटे क्रमसे अर्थात् नीचेसे क्रमानुसार १।४।२।१ पुनः १।४।२।१ इसी प्रकार जाने इत्यादि और वल्लीके सर्व दिन अहर्गणमें १६८७८५१ दिन घटानेसे अथवा वल्लीमें ७।४८।५०।५१ घटानेसे ग्रहलाघवीय अहर्गण तथा वल्ली होती है। जिसका वार भौमादि जाने और ग्रहलाघवीके अहर्गणमें १२३११४ दिन जोडनेसे करणकुतूहलका अहर्गण होता है। जिसका वार बृहस्पति आदिसे होता है और ग्रहलाघवके अहर्गणमें ४४०३९८४४७८ दिन जोडनेसे सूर्यसिद्धांतीय अहर्गण होता है। जिसका वार शनिवार आदि देकर गिना जाता है यह अहर्गण व ग्रह दिनवल्लीका उदाहरण होगया।

अब ग्रहादिनवल्ली ८।३०।१२।३८ द्वारा ग्रहवाटिकासे मध्यम ग्रह बनाकर अभ्याससहित दिखलाते हैं। यथा-पूर्वोक्त वल्ली ८।३०।१२।३८ है। पूर्वोक्त क्रमानुसार अभ्यासमें देखना चाहिये, जैसे वल्लीके नीचेके चतुर्थांकतुल्य सूर्यवाटिका चक्र नं १६ से अंशादि ६।१४।३१।४४ हुए और वल्लीके उससे ऊपरके अंक १२ तुल्य कोष्ठसे अंशका अंक छोड कर कलादि ५८।१६।२०।२० हुए इनको भी अंशादि जाने फिर वल्लीके उससे ऊपरके अंक ३० तुल्य कोष्ठसे ऊपरके २ अंक छोडकर ४०।५०।५२।१ हुए फिर उससे ऊंचेके अंक ८ तुल्य कोष्ठसे ऊपरके ३ अंक छोड-कर ५३।३३।५२।१६ हुए। इन सबको अंशादि मानकर जोडा तो योगफल ३८।५५।३६।२१ हुवा। इसको ६ से

गुणा करके राश्यादि बनाई तो ७ । २३ । ३३ । ३८ यह मध्य रेखाका मध्यम सूर्य हुवा । इसीप्रकार अभ्यासमें लिखते हैं—

चक्र नं. १६ से

सूर्य.	६।१४।३१।४४
	५८।१६।२०।२०
	४०।५०।५२। १
	५३।३३।५२।१६
	३८।५५।३६।२१
	६ गुण.
	७।२३।३३।३८
देशान्तर	०।१२ ऋण.
निशि.	७।२३।३३।२६
चालन क्र. प्रात: ६ बजेसे अर्द्धरात्रिका	४४।२१ ऋण.
प्रात: ६ बजेका मध्यम रवि.	७।२२।४९। ५

चक्र नं. १७

चन्द्र.	२३।२७। ०।३९
	२१। ९।४४। ७
	५४।२०।१९। ५
	२९।२५। ५।२५
	८।२२। ९।२६
	६ गुण.
	१।२०।१२।५६
देशान्तर	२।४८ ऋण.
निशि	१।२०।१०। ८
चालन	९।५२।५६ ऋण
	१।१०।१७।१२
प्रात: ६ बजेका म० चन्द्र	

चक्र नं. १८

चन्द्रकेन्द्र	२२।४४।४१।१९
	७।४७।४७। ६
	२९।२७।४५।३८
	५१।२४।२०।१३
	५१।२४। ४।१६
	६ गुण.
	१०।०८।२४।२५
देशान्तर	२।४६ ऋण.
निशि	१०। ८।२१।३९
चन्द्रकेन्द्र	९।४७।५५ क्र.चा०
	९।२८।३३।४४
प्रात: ६ बजेका चन्द्रकेन्द्र.	

नोट:—६ से गुणा करनेपर विकलाको छोडकर लिखा गया है।

चक्र नं. १९		चक्र नं. २०	
मंगल	३।११।७।३८	बुधकेन्द्र	४०।१९।२६।५३
	२।५२।५६।२२		४७।११।३८।५७
	११।२०।५५।४४		५९। ७।२२।४४
	१७।३४।५१।५५		४५।५८। ३।५४
	३६। ७।५१।३९		१२।३६।३२।२८
	६गु०		६ गुण
	७। ६।४७।१०		२।१५।१९।१५
		बीजं	६।४२।१४ धनं
			२।२२।२१।२९
देशान्तर	०।७ ऋण	देशान्तर	०।२९
निशीथे	७। ६।४७। ३	निशीथे	२।२२।२२। ८
चालन	२३।३५ऋण	चालन	२।१९।४८वक्र गति होनेसे धन
	७। ६।२३।२८		२।२४।४१।५६
प्रातः ६ बजेका मध्यम भौम		प्रातः ६ बजेका बुधकेन्द्र	

चक्र नं. २१		चक्र न. २२	
वृहस्पति	००।३१।३४।३५	शुक्रकेन्द्र	५६। ५।४२।४८
	९।५८।१७।३७		४६।०। ५३। ६
	५५।४४। २।५८		२।१२।४५।३६
	५१।४४।४७।४३		३५।२४। ९।४६
	५७।५८।४२।५३		१९।४३।३१।१६
	६ गु०		६ गु०
	११।१७।५२।१७		३।२८।११। ६
बीजं	३।२१। ७ ऋ.	बीज	५।१ ।४० ऋण
	११।१४।३१		३।२३।१९।२६
देशान्तर	०।१ऋण	देशान्तर	०। ७ विप. ध
निशिथे	११।१४।३१।९	निशि	३।२३।१९।३३
चालन	३।४५ ऋण	चालन	२७।४५वि.धनम्
	११।१४।२७।२४		३।२३।४७।१८
प्रातः ६ बजेके मध्यम गुरु		प्रातः ६ बजेके शुक्रकेन्द्र	

चक्र नं. २३

शनि. ०।१२।४२।२४
४।००।४५।४६
१।५४।२७।८
३०।३१।१४।२२

शनिमें देशान्तरकी विकला मात्र १५८

३६।३९।९।४०
६ गु०

७।९।५४।५८
बीज ५।१।४० धनम्

निशीथे ७।१४।५६।३८
चालन १।३० ऋणं

७।१४।५५।८

प्रातः ६ बजेका मध्यम शनि

चक्र नं. २४

केतु ५९।३९।५१।५५
५३।३८।३०।१०
६।१५।२५।१
४०।६।४०।२३

३९।४०।२७।२९
६ गुण

७।२८।२।४५
६ राशि जोडा

निशि केतु राहू १।२८।२।४५
चालन २।२३वि. धनम्

१।२८।५।८

प्रातः ६ बजेका राहू

यह संस्कार प्रातः ६ बजेके मध्यम ग्रह हुए।—

बीज संस्कार करनेके निमित्त शाके १८४९ में ३१७९ जोडनेसे ५०२८ यह कलिगताब्द हुए। इनमें १००० का भाग देनेसे लब्धि अंशादि ५।१।४० हुए। इनको शुक्र केन्द्रमें ऋण और शनिमें धन किया गया है और कलिगताब्द ५०२८ में ७५०का भाग देनेसे लब्ध अंशादि ६।४२।१४ हुए इनको बुधकेन्द्रमें धन किया गया है। और कलिगताब्द ५०२८ में १५०० का भाग देनेसे अंशादि ३ २१।७ हुए इनको बृहस्पतिमें ऋण किया गया है फिर देशान्तर संस्कार अर्थात् अभीष्ट नगर देहली जो अनुमान मध्यरेखासे १७ योजन पूर्वहै, इसलिये देशान्तर योजन १७ से प्रत्येक ग्रहकी कलादि मध्यम गतिको अलग २ गुणने। यथा—सूर्यकी मध्यमगति ५९।८ चन्द्र ७९०।३५ चन्द्रकेन्द्र ७८३।५३ मंगल ३१।२६ बुध केन्द्र १८६।२४ ऋण बृहस्पति ५।० शुक्रकेन्द्र ३७।०० ऋण शनि ०।२।० राहु या केतु ३।११ ऋण वक्रको गुणा करके ६० का भाग देनेसे अलग २

लब्धि विकलादि इस प्रकार हुई यथा सूर्यकी फलादि ० । १२ चन्द्रकी २ । ४८ चन्द्रकेन्द्र क. २ । ४६ मंगल ० । ७ बुधकेन्द्र ० । ३९ बृहस्पति ० । १ शुक्रकेन्द्र ० । ७ शनि ० । ० राहु ० । ०० इनका देशान्तर संस्कार प्रत्येकका ऊपर किया गया है । जिनकी गति ऋण है जैसे बुध केन्द्र शुक्रकेन्द्र उनमें विपरीत ऋणके स्थान धन संस्कार किया गया है । बीजसंस्कृत तथा देशान्तरसंस्कृत ग्रह अर्द्धरात्रि (निशीथ) समयके हुए, इनको प्रातः ६ बजे बनानेके निमित प्रत्येक ग्रहकी ३ । ४ पौना मार्गी ग्रहोंमें ऋण और वक्रीमें धन संस्कार किया तो प्रातः ६ बजेके मध्यम ग्रह होगये । जैसा अभ्यासमें ऊपर किया है । यथा चक्रमें लिख दिये हैं-

सू.	च.	चं. उ.	म.	बुकेद्र.	बृ.	शुक्रकेन्द्र.	शनि.	रा.
७	१	६	७	२	११	३	७	१
२२	१०	११	६	२४	१४	२३	१४	२८
४९	१७	४३	२३	४१	२७	४७	५५	५
५	१२	२८	२८	५६	२४	१८	८	८

यह मध्यमग्रह शाके १८४९ मार्ग शु १५ गुरौ प्रातः ६ बजेके हुए। यदि वर्ष भरकी अवधियोंके मध्यम ग्रह बनाना हो तो चालन देकर सब अवधियोंके बनालेवे फिर स्पष्ट करे ।

अब ग्रहोंको स्पष्ट करनेका क्रम लिखते हैं । प्रथम सूर्य चन्द्र स्पष्ट करनेका क्रम लिखते हैं-मध्यम रविमें रविका मन्दोच्च राश्यादि चक्र नं. २९ के ऊपर जो लिखा है भगणादि करके लिखा है सो भगणको छोडकर राश्यादि २।१७।१७।२१ केवल ४ अंक लेवे सो मध्यम रविमें घटावे । जो राश्यादि शेष रहे सो रविका मन्द केन्द्र होता है । और चन्द्रोच्च पहले मध्यमाधिकारमें कह चुके हैं, सो मध्यम चन्द्रमें चन्द्रोच्च घटानेसे शेष रहै सो राश्यादि चन्द्रका मध्य केन्द्र

१ चन्द्रोच्चक्रम-चन्द्रकेन्द्र ९ । २८ । ३३ । ४४ को चन्द्र १ । १० । १७ । १२ मे घटानेसे शेष रहा ३ । ११ । ४३ । २८ उसमे ३ राशि जोडनेमे राश्यादि ६ । ११ । ४३ । २८ यह चन्द्रोच्च हुआ ।

होता है। रवि तथा चन्द्रकेके मन्दकेन्द्र (भुंजाश भुजांश क्रम यह है कि यदि राश्यादि ३ से कम हो तो उसीके अंशादि करलेवे वह स्वयम् भुज है यदि ३ राशिसे अधिक हो और ६ राशिसे कम हो तो उसे ६ राशिमें घटानेसे शेष रहै वह भुज है। यदि ६ राशिसे अधिक और ९ राशिसे कम हो तो उसमें ६ राशि घटानेसे शेष रहे वह भुज है। यदि ९ राशिसे अधिक और १२ से कम हो तो १२ राशिमें घटानेसे जो शेष रहै वह भुज होता है) जो भुजमें राशि होवे उसकेभी अंश करके अंशोंमें जोड लेवे। और अंशादि बनालेवे पूर्वोक्त रविकेन्द्र भुजांश तुल्य कोष्ठ रविफल सारिणी चक्रनं २९ से और चन्द्रके मंदकेन्द्र भुजांशतुल्य कोष्ठसे चन्द्रफल सारिणी चक्रनं ३० से सानुपात अंशादि फल लाकर यदि मंदकेन्द्र मेषादौ हो तो फल ऋण और तुलादौ हो तो फल धन। इसका संस्कार मध्यम सूर्य्य तथा मध्यम चन्द्रमें करनेसे स्पष्ट सूर्य्य तथा चन्द्रमा स्पष्ट होता है।

(सानुपात फल लानेका यह क्रम है कि, भुजांश तुल्य कोष्ठमें जो अंशादि हो वह और १ कोष्ठ आगेमें जो अंशादि होय उसका परस्पर अन्तर करके उस अन्तरसे भुजांशकी शेष कलादिसे गुणा करके ६०का भाग देनेसे जो फलादि लब्ध होय वह यदि अग्रिम कोष्ठ अधिक हो तो पूर्व कोष्ठके अंशादिमें जोड देवे। यदि (ऋण) कम हो तो पूर्व कोष्ठमें ऋण करे घटावे तब जो प्राप्त हो वह अंशादि सानुपातफल होता है इसी प्रकार सर्व जाने।)

अब सूर्यचन्द्रकी गतिस्पष्ट करनेका क्रम लिखते हैं–पूर्वोक्त भुजांश परिमित चन्द्रफल सारिणीसे सानुपात कलादि गतिफल लाकर और चन्द्रके मन्दकेन्द्र पूर्वोक्त भुजांश परिमित चन्द्रफल सारिणीसे सानुपात फलादि गतिफल लाकर यदि केन्द्र कर्कादौ होय तो फल

---

१ यदि मन्दोच्चमें मध्यम सूर्य्य चन्द्र घटाकर उस केन्द्रनिफललावे तो केन्द्र मेषादौ होनेसे धन तुलादौ होनेसे ऋण करे तबभी ग्रह स्पष्ट होता है दोनों प्रकार समानता होती है।

धन और केन्द्र मकरादी हो तो गति फल ऋण जानकर सूर्यकी मध्यम गति कलादि ५९। ८ तथा चन्द्रकी मध्यम गति कलादि ७९०। ३५ में संस्कार करनेसे सूर्य्य तथा चन्द्रकी कलादि गति स्पष्ट होती है।

अब पहले सूर्यचन्द्रको स्पष्ट करनेका उदाहरण दिखलाकर फिर पंचतारा स्पष्ट क्रम लिखेंगे। उदाहरण-पूर्वोक्त मध्यमरवि ७।२२। ४९। ५ है। इसमें रविका मन्दोच्च राश्यादि २। १७। १७। २१ को घटाया तो ५। ५। ३१। ४४ यह रविका मन्दकेन्द्र हुवा। इसके भुजांश २४। २८। १६ तुल्य चक्र नं २९ अंशादि रविफल सारिणीसे सानुपात अंशादिफल ०।५४। ५१ हुवा (सानुपात इस प्रकार हुवा कोष्ठ २४ में फल अंशादि ०। ५३। ५३ है और आगेके कोष्ठमें इससे अधिक कलादि २। ५ (अन्तर) है इससे शेष कलादि २८। १६ को गुणाकरके ६० का भाग देनेसे विकलादि ५७। ५३ हुई इसको ५८ विकला मानकर पूर्वकोष्ठ फल अंशादि ०। ५३। ५३ में आग्रिम कोष्ठ अधिक होनेसे जोडा तो अंशादि ०। ५४। ५१ यह सानुपात फल हुवा) अंशादि सानुपातफल ०। ५४। ५१ को मन्दकेन्द्र मेषादौ होनेसे मध्यम सूर्य्य ७। २२। ४९। ५ में ऋण अर्थात् घटाया तो ७।२१।५४।१४ यह स्पष्ट सूर्य्य हुवा।

अब गतिस्पष्ट करते हैं-पूर्वोक्त भुजांश २४। २८। १६ पूर्वोक्त (चक्र नं. २९) से सानुपात कलादि २। ३ गतिफल हुवा। इसको मन्दकेन्द्र कर्कादौ होनेसे रविकी मध्यमगति कलादि ५९।८ में जोडा तो ६१। ११ यह सूर्य्यकी स्पष्टगति हुई।

अब चन्द्र स्पष्ट करते हैं-पूर्वोक्त मध्यम चन्द्र १। १०। १७। १२ है। इसमें पूर्वोक्त चन्द्रोच्च ६। ११। ४३। २८ को घटाया तो ६। २८। ३३। ४४ यह चन्द्रका मन्दकेन्द्र हुवा। इसके भुजांश २८। ३३। ४४ परिमित चक्र नं. ३० अंशादि चन्द्रफल सारणी द्वारा सानुपात अंशादि २। २५। २३ फल हुवा। इसको मन्दकेन्द्र

तुलादौ होनेसे धन अर्थात् मध्यम चन्द्र १ । १० । १७ । १९ में जोडा तो राश्यादि १ । ११ । ४२ । ३९ यह चन्द्र स्पष्ट हुवा ।

अब गति स्पष्ट करते हैं–पूर्वोक्त भुजांश २८ । ३३ । ४४ तुल्य पूर्वोक्त चक्र नं. ३० से सानुपात कलादि ६० । ४७ गतिफल हुवा, इसको चन्द्रका मन्दकेन्द्र कर्कादौ होनेसे चन्द्रकी मध्यमगति ७९० । ३५ में जोडा तो ८५१ । २२ यह कलादि चन्द्रकी स्पष्ट गति हुई । यह प्रातः ६ बजेके सूर्य्य चन्द्र स्पष्ट हुए । यदि उदयकालीन बनाना हो तो पहिले दिनमान जाननेपर सूर्य्योदयकाल जानकर चर पलका चालन देकर अर्थात् चर संस्कार करके उदयकालीन ग्रह बना लेवे । प्रातः ६ बजेका और उदयका जो अन्तर है वहही चालन है । – –

अब प्रथम अयनांश साधन क्रम उदाहरण-सहित लिखते हैं–शाकेमें ४२१ घटाकर शेषमें शेषका दशवां भाग घटाकर शेष जो रहै वह अयनांश कलादि होती हैं । सो ६० के भागसे अंशादि बना लेवे । अर्थात् प्रतिवर्ष ५४ विकला अयनांश बढता है इस सिद्धान्तका परमायनांश २७ अंशतक क्रमोत्क्रमसे होता है । और दूसरे पक्ष (ग्रहलाघवीय) में परमायनांश ३० अंशतक क्रम उत्क्रमसे होता है अर्थात् इस पक्षमें प्रतिवर्ष १ कला बढता है । जिसका क्रम यह है कि, शाकेमें ४४४ घटाकर शेष कला होती है । कलाओंमें ६० का भाग करके अंशादि बनालेवे । उदाहरण–मकरन्दीय क्रमका अयनांश बनाते हैं, अभीष्ट शाके १८४९ में ४२१ घटाया तो शेष १४२८ हुए। इसके १० वें भाग १४२ । ४८ को १४२८ । ० में घटाया तो शेष कलादि १२८५ । १२ हुई । इसके अंशादि बनाये अंशादि २१ । २५। १२ यह अयनांश आरम्भ वर्षका हुवा । प्रतिमास विकलादि ४ । ३० बढता है इसलिये वृश्चिकके सूर्यमें ८ मासका विकलादि ३६ । ० हुवा । इसको पूर्वोक्त २१ । २५ । १२ में जोडा तो २१ । २५ । ४८ यह अंशादि तात्कालिक अयनांश हुवा । ग्रहलाघवीय अयनांश उदाहरण–शाकेमें ४४४ घटाये तो शेष कला १४०५ हुई इसके अंशादि २३ । २५ यह वर्षारम्भमें अयनांश हुवा । इसमें प्रतिमास

५ विकला बढती हैं (अथवा ग्रहलाघवीय) अयनांशका दशवाँ भाग उसीमें घटाकर उसमें कलादि २० । ४२ जोडनेसे अयनांश होता है अयनांशकी उपपत्ति नीचे लिखते हैं ।

अब दिनमान साधन क्रम लिखते हैं–स्पष्ट सूर्यमें अयनांश जोडकर सायनरवि राश्यादिके अंशादि बनाकर उसके अंशोंमें ६ का भाग देकर जो लब्धि होय सो दिनमान सारिणी चक्र नं० २८ लब्ध अंशादि तुल्य सानुपात घटिकादि जो प्राप्त होय वही दिनमान जाने एक कोष्ठ प्रति ६ दिनका जाने । सो एक कोष्ठसे जो दूसरे कोष्ठका अन्तर होय उसका छठा भाग चालन देकर प्रति दिनका बनालेवे ।

उदाहरण–सूर्य स्पष्ट ७ । २१ । ५४ । १४ में अयनांश २१ । २५ । ४८ को जोडा तो ८ । १३ । २० । २ यह सायनार्क हुवा । इसके अंशादि २५३ । २० । २२ (केवल अंशों) में ६ का भाग दिया तो लब्ध ४२ हुए और शेष अंशादि १ । २० । २ रहे । लब्ध ४२ परिमित कोष्ठ चक्र नं० २८ में कान्यकुब्ज देशके कोष्ठ (क्योंकि देहली और कान्यकुब्जका काशिकी अपेक्षा थोडा अन्तर है) में २५ । ५८ है । और अग्रिम कोष्ठमें ८ पल कम है । इस अन्तर

---

१ मकरन्दीय अयनांशका नवां भाग जोडकर फिर २२ कला जोडनेसे ग्रहलाघवीय अयनांश होता है । और ग्रहलाघवीय अयनांशमें २३ कला घटाकर फिर शेषका दशवां भाग घटानेसे मकरन्दीय होता है । परंतु जब उक्त क्रमानुसार अयनांश घटता हो तो इसके विपरीत २३ कला घटानेका बजाय जोडना चाहिये ।

२ उपपत्ति–यहां युगके ४३२०००० वर्षमें ६०० बार भूचक्र पूर्वको परिलंबमान होता है । ६०० भगण होते हैं । इसी लिये युगगताब्दको ६०० से गुणा करके ४३२०००० का भाग देनेसे लब्ध भगणादि होते हैं । भगण छोडकर राश्यादिको भुज बनाकर भुजांशको ३ से गुणा करके १० का भाग देनेसे लब्ध अंशादि अयनांश होता है । जिसका सिद्धान्त यह है कि, प्रतिवर्ष भुजांश ३ कला बढता है इसको ३ से गुणाकर १० का भाग देनेसे ५४ विकला प्रतिवर्ष बढता है ॥ ९० भुजांशमें २७ परमायनांश है ।

८ पलसे शेष अंशादि १।२०।२ को गुणा किया तो १०।४०।१६ हुवा। इसमें ६ का भाग दिया तो २ पल लब्ध हुए। अग्रिम कोष्ठ न्यून होनेसे २९।५८ में ०।०२ घटाया तो २९।५६ घटिकादि यह सानुपात दिनमान हुवा।

अब स्वदेशी दिनमान जाननेके लिये पलभा तथा दिनमानकी उपपत्ति तथा क्रम उदाहरणसहित लिखते हैं—जिस दिन सायन रवि राश्यादि ०।०।०।० के होय उस दिन (तारीख २० या २१ मार्चके निकट (अथवा मेषकी संक्रान्तिसे अयनांश दिन कम करनेसे यह समय होता है) सामान्य की भूमिपर १२ अंगुलके तिनकेके स्थान १२ हाथका बांस मध्याह्न कालमें खड़ा करे। उसकी छाया जितने हाथ होय उतने अंगुल जानकर और अंगुलसे नीचेका दरजा व्यंगुल जाने (६० व्यंगुल १ अंगुल) यह छायाही अंगुलात्मक पलभा (अक्षभा) होती है। यदि बांसकी छाया उत्तर होय तो अपना देश लंका (पूर्वापर रेखा) से उत्तर जाने यदि छाया दक्षिण हो तो अपना देश दक्षिण जाने।

अब चरखंड बनानेका क्रम लिखते हैं—पलभा अंगुलादिको तीन स्थानमें रखकर १ स्थानमें १० से गुणा करे जो गुणन फल होय वह पलात्मक प्रथम चरखंड होता है। फिर दूसरे स्थानमें ८ से गुणा करे जो प्राप्त हो वह पलात्मक द्वितीय चरखंड होता है। फिर तीसरे स्थानमें १० से गुणा करके ३ का भाग देवे जो प्राप्त हो वह पलात्मक तृतीय चरखंड होता है। इन तीनों चरखण्डोंके योगफलको १५ घटीमें जोडकर दूना करनेसे जो होय उस देशमें अधिकसे अधिक उतना दिनमान हो सकता है उसे ६० घटिमें घटानेसे जो होय कमसे कम उतना दिनमान होसकता है।

अब प्रत्येक दिनका दिनमान जाननेका यह क्रम है कि, सायन रवि मेषके ० शून्य अंशके दिनसे वृषके शून्य० अंशतक (३०दिनतक) प्रथम चरखंड पलात्मकका ३० वां भागका दूना (१५ वां भाग) प्रतिदिन बढाते हुए ३० घटीमें जोडते जानेपर १ मासतकका

दिनमान बनजावेगा। फिर सायनार्क वृषके शून्य अंशके दिनसे मिथुनके शून्य अंशतक ३० दिनमें दूसरे चरखंडका १५ वां भाग उसीमें क्रमानुसार प्रतिदिन जोडनेसे दूसरे मासकाभी मिथुनके शून्य अंश तकका बनजावेगा। फिर तीसरे चरखंडका १५ वां भाग (चरखंड दूनेका ३० वां भाग) क्रमानुसार प्रतिदिन १ मासतक यानी मिथुनके शून्य अंशसे कर्कके शून्य अंश दिनतक पूर्वोक्त दिनमानमें जोडनेसे कर्कके शून्यांशतक तीन मासका दिनमान बनजावेगा। फिर आगेके ३ मासमें चरखंड उलटे क्रमसे अर्थात् तीसरे चरखंडका फिर दूसरे चरखंडका फिर प्रथम चरखंडका १५ वां भाग प्रत्येक प्रत्येक दिन क्रमानुसार घटता हुवा तुलाके शून्यांश दिनके १ दिन पूर्वतक ६ मासका बनजावेगा। अर्थात् घटिकादि ३० का रह जावेगा, जितना (तीनों चरखंडोंका दूना मान) तीन मासतक बढा था उतनाही घटता जावेगा। फिर प्रथम चरखंड द्वितीय तृतीय चरखंडका क्रमानुसार १५ वां भाग प्रतिदिन ३० घटिसे मकर सायनार्क तक बना लेवे। शून्य अंशतक फिर चरखंड उलटे क्रमसे अर्थात् तृतीय द्वितीय प्रथम चरखंडका क्रमानुसार १५ वां भाग प्रतिदिन बढाता हुवा मेष सायनार्कके शून्य अंश दिन पूर्ण ३०।०० का दिन मान बनजावेगा। इस प्रकार पूर्ण वर्षका दिनमान बनालेवे। जो सदैवके लिये काम आवेगा और इसी प्रकार दिनमान सारिणीभी बनाना चाहिये। पञ्चाङ्ग बनानेवालोंको चाहिये सूर्य्यस्पष्ट करते समय प्रत्येक अवधिमें चरपल बनाकर प्रत्येक अवधिका दिनमान प्रथम बनाकर नोट करते जावें फिर एक अवधिसे दूसरी अवधिका जो दिनान्तर होय और जो दोनोंके दिनमानका अन्तर होय प्रत्येक दिनमें विभाजित करके घटा बढाकर ठीक करलिया करे यह शुद्ध और शीघ्र बनेगा। चरपलको १५ घटिमें यदि सायनार्क मेषादो होय तो धन तुलादो होय तो ऋण करके दूना करनेसे दिनमान होता है।

अभीष्ट दिनका दिनमान जाननेका उदाहरण–पूर्वोक्त अयनांश २१। २५। ४८ को स्पष्ट सूर्य ७। २१। ५४। १४ में

जोडा तो ८ । १३ । २० । २ यह सायनार्क हुवा. इसके भुजांश ७३ । २० । २ हुए (राश्यादि भुज २ । १३ । २० । २ है)।

अब चर साधनके निमित्त चरखण्ड बनाते हैं–अभीष्ट देश देहलीके पलभा अंगुलादि ६ । ३३ हैं इसका १० गुणा पलात्मक ६५ । ३० यह प्रथम चरखंड हुवा और पलभाका ८ गुणा पलात्मक ५२ । २४ यह द्वितीय चरखंड हुवा और पलभाको १० गुणा करके ६५ । ३० इसका तृतीयांश (प्रथम चरखंड ६५ । ३० का तृतीयांश) पलात्मक २१ । ५० यह तृतीय चरखंड हुवा अर्थात् प्र० ६५ । ३० द्वि० ५२ । २४ तृ० २१ । ५०.यह तीनों चरखंड हुए. पूर्वोक्त भुज राश्यादि २। १३ ।२० । २ है। भुजमें २ राशि है। सो प्रथम चरखंड पलादि ६५ । ३० और द्वितीय ५२ । २४ इनका योग किया तो ११७ । ५४ पलादि हुए और भुजके शेष अंशादि १३ । २० । २ रहे सो तीसरी राशि अथवा तृतीय चरखंड २१ । ५० का भुक्त भाग है (३० अंशमें पलादि २१ । ५० तो अंशादि १३ । २० । २ में कितना ?) इसलिये शेष अंशादि १३ । २०।२ को चरखंड २१।५० से गुणा किया तो २९१ । ७ । २३ । ४२ हुए । इसमें ३० का भाग दिया तो लब्ध पलादि ९ । ४२ हुए । इनको पूर्वोक्त योग ११७ । ५४ में युक्त किया तो पलादि १२७।३६ यह चर हुवा, अर्थात् १२८ पल चर हुवा । इसकी घटिकादि २ । ८ हुई इसको सायनार्क तुलादी होनेसे १५ घटिमें घटाया तो १२ । ५२ यह दिनार्द्ध हुवा । इसको दूना किया तो २५ । ४४ यह दिनमान हुवा और सारिणी चक्र नं. २८ सेभी दिनमान होनेका उदाहरण दिखलाते है–सायनार्क राश्यादि ८ । १३ । २० । २ इसके सर्वांश २५३ में ६ का भाग दिया तो लब्धि ४२ हुई सो चक्र नं. २८ के कोष्ठ ४२ में (कान्यकुब्जके कोष्ठमें) (क्यों कि काशीकी अपेक्षा) देहलीसे कान्य कुब्जका थोड़ाही अंतर है कोष्ठ ४२ में घटिकादि २५ । ५८ है और अग्रिम कोष्ठमें ८ पल कम है इस ८ पलांतरसे शेष अंशादि १ । २० । २ को गुणा किया

तो १० । ४० । १६ हुये इसमें ६ का भाग दिया तो २ पल लब्ध हुये अग्रिमकोष्ठ न्यून होनेसे २५ । ५८ में ० । २ को घटायातो २९ । ५६ यह घटिकादि दिनमान सानुपात हुआ इसप्रकार दिनमान लाना चाहिये । दिनमान जानकर उदय-अस्तमें घंटा मिनट जाननेका यह क्रम है कि, दिनमानको ६० घटीमें घटानेसे रात्रिमान होता है और रात्रिमानमें ५ का भाग देनेसे जो लब्ध घंटादि हो वह उदयकालके घंटा मिनट होते हैं और उदयकालको १२ घंटेमें घटानेसे अस्तके घण्टा मिनट होते हैं । उदाहरण-जैसे पूर्वोक्त दिनमान घटिकादि २९ । ४४ है, इसको ६० में घटाया तो ३४ । १६ रहा इसमें ५ का भाग दिया तो घंटा ६ । मि. ५१ हुए अर्थात् ६ बजकर ५१ मिनटपर सूर्य उदय होना चाहिये और १२ में घटाया तो घं. ५ मि. ९ पर अस्त होना चाहिये ।

अब उदयकालीन सूर्य्य बनाते हैं-प्रातः ६ बजेके पूर्वोक्त स्पष्ट रवि ७।२१।५४।१४ गति ६१।११ और स्पष्ट चन्द्र १।१२।४२।३९ गति ८५१।२२ है और सूर्य्योदयकाल ६ बजकर ५१ मिनटपर है अर्थात् घटिकादि २ । ८ (चरपल १२८) यही धन चालन है । सूर्य्यकी स्पष्टगति ६१। ११ से चरचालन घटिकादि २ । ८ को गुणा करके ६० का भाग देनेसे २ । १० लब्धि हुई । इसको चालन धन होनेसे स्पष्ट सूर्य्य ७ । २१ । ५४ । १४ में जोडा तो ७ । २१ । ५६ । २४ गति ६१ । ११ यह उदयकालीन सूर्य्य स्पष्ट हुवा । और इसीप्रकार चन्द्रगति कलादि ८५१ । २२ को चालन धनघटिकादि २ । ८ में गुणाकरके ६० का भाग देनेसे कलादि ३० । १६ लब्ध हुई इसको चालन धन होनेसे स्पष्ट चन्द्र १ । १२ । ४२ । ३९ में जोडा तो १ । १३ । १२ । ५१ गति ८५१ । २२ यह उदयकालीन चन्द्र-स्पष्ट हुवा. इसी प्रकार उदयकालीन ग्रह बनाने चाहिये ।

अब क्षेपकरूपमें प्रसंगवश स्पष्ट सूर्यचन्द्रसे तिथि नक्षत्र और योग बनानेका क्रम तथा उदाहरण लिखते हैं-क्रम स्पष्ट चन्द्रगति सहितमें स्पष्ट सूर्यगति सहित घटावे जो राश्यादि शेष रहे-राशिके अंश

बनाकर अंशोंमें जोडकर अंशोंमें १२ का भाग देवे जो लब्ध होय वह शुक्लादि गत तिथि जाने और जो अंशादि शेष रहै वह वर्तमान तिथिका गत भाग जाने उसे १२ अंशोंमें घटायदेवे जो शेष रहै वह तिथिका भोग्य भाग जाने फिर भोग अंशादिकी विकला बनाकर ६० से गुणा करके उसमें चन्द्र सूर्य्यकी गतिके अन्तरकी विकलाओंका भाग देवे जो घटिकादि लब्धि होय वह वर्तमान तिथिकी भोग्य घटिकादि जाने अर्थात् उस दिन वह तिथि उतनी घटिकादि जाने । और नक्षत्र साधनमें स्पष्ट चन्द्रके राश्यादिकी कलादि बनाकर उसमें ८०० का भाग देवे जो लब्धि होय वह अश्विन्यादि गत नक्षत्र जाने और जो शेष कलादि रहैं वह वर्तमान नक्षत्रकी भुक्त कलादि (भुक्तभाग) जाने. उनको ८०० कलामें घटाकर जो शेष कलादि रहै वह नक्षत्रकी भोग्यकलादि जाने. भोग्य कलादिको विकला बनाकर उसको ६० गुणाकरके उसमें चन्द्रमाकी स्पष्टगतिकी विकलाओंका भाग देनेसे जो घटिकादि लब्धि होय वह नक्षत्रकी भोग्य घटिकादि होती हैं। और योगसाधनमें (पूर्वोक्त उदयकालीन) स्पष्ट सूर्यगति सहित और स्पष्टचन्द्रगति सहित इन दोनोंके योगकी राश्यादिकी कलादि बनालेवे कलाओंमें ८०० का भाग (८०० कला १३ अंश २० कला) देवे जो लब्धि होवे वह गत योग जाने। और जो कलादि शेष रहैं वह वर्तमान योगकी भुक्त कलादि जाने । भुक्तकलादिको ८०० कलामें घटानेसे जो शेष रहै वह योगकी भोग्य कलादि होती है। उनकी विकला बनाकर उसे ६० से गुणा करके फिर उसमें सूर्यचन्द्रकी गतिके योगकी विकलाओंका भाग देवे जो घटिकादि लब्धि होय वह वर्तमान योगकी भोग्य घटिकादि होती हैं । पूर्वोक्त क्रम उदयकालीन स्पष्ट सूर्यचन्द्रसे बनानेपर वही घटिकादि उस दिन सूर्योदयसे जानना चाहिये।

अब पूर्वोक्त क्रमानुसार तिथि नक्षत्र और योग बनानेका उदाहरण अभ्यास बनाकर दिखलाते हैं-शाके १८४९ मार्ग शु० १५ गुरौ

सूर्य्योदयकालीन पूर्वोक्त स्पष्ट सूर्य ७ । २१ । ५६ । २४ गति ६१ । ११ और स्पष्ट चन्द्र १ । १३ । १२ । ५१ । गति ८५१ । २२ है।

तिथिसाधनम् ।

स्पष्टचन्द्र १।१३।१२।५१ | ८५१।२२
स्पष्टरवि ७।२१।५६।२४ | ६१।११
५।२१।१६।२७ | १९।११
| ६०

अंश बनाये ३०   ४७४००वि.
१५०   ११
२१   ४७४११वि.
१२)१७१(१४   भाजक
१२   शुक्लादि गततिथि
५१
४८
३।१६।२७
१२।० ।०
गतभाग ३।१६।२७
अंशादि भोग्य ८।४३।३३   पूर्णमासीकी
६०   भोग्यघटिकादि
४८०   ३९।४५हुई
४३
५२३
६०
३१३८०
३३
विकला. ३१४१३
६०
४७४११)१८८४७८०(३९ घटि
१४२२३३
४६२४५०
४२६६९९
३५७५१

-४७४११)२११४५०६०(४५ पल
१८९६४४
२४८६२०
२३७०५५
११५६५

नक्षत्रसाधनम्।

स्पष्ट चन्द्र
१।१२।१२।५१
३०
३०
१२
४२
६०
कला २५८० गतनक्षत्र
१२
८००)२५९२(३
२४००
चतुर्थ नक्ष° १९२।५१
अंका गतभाग

८५।१२२ ८००।००
६० १९२।५१ गतभाग
५१०६० ६०७।९ भोग्यभाग
२२ ६०
५१०८२विकला ३६४२० ९
भाजक ३६४२९ विकला
६०
५१०८२)२१८५७४०(४२ घटी
२०४३२८
१४२४६०
१५५७४४
४०९९६
६०
५१०८२)२४५७७६०(४७ पल
२०४३२८
३७४४८०
३५५५७४
१६९०६
घ. प.
रोहिणी नक्षत्र४२।४७

योगसाधनम् ।

स्पष्ट सूर्य्य ७।२१।५६।२४। ६१।११
व चन्द्रमा १।१३।१२।५१।८५१।२२

```
        ९।५।९।१५  |९१२।३३
        ३०        | ६०
       २७०         ५४७२०
         ५           ३३
       २७५         ५४७५३ विकला भाजक
        ६०
   कला १६५००
         ९
 ८०० ) १६५०९ ( २० गतयोग           ८००। ०
       १६०००                     ५०९।१५ भोगका भुक्तभाग
         ५०९।१५                  २९०।४५ भोग्य
५४७५३) १०४६७०० ( १९ घटी           ६०
       ५४७५३                    १७४००
        ४९९१७०                     ४५
        ४९२७७७                  १७४४५विकला
        ६३९३                       ६०
          ६०                    १०४६७००
५४७५३ ) ३८३५८० ( ७ पल  ×२१ वां सिद्ध योग घटिकादि
        ३८३२७१                            १९।७ हुआ.
          ३०९
```

इसी प्रकार तिथि नक्षत्र योग स्पष्ट करना चाहिये । विशेषतया सूर्य चन्द्र ग्रहणमें अमावास्यां तथा पूर्णिमा इसी प्रकार सूर्य चन्द्र द्वारा अवश्य सदैव स्पष्ट करना चाहिये ।

अब भौमादि पंचतारा स्पष्ट करनेका क्रम लिखते हैं--
राश्यादि × मध्यम सूर्यके तुल्य मध्यम बुध तथा मध्यम शुक्रको जानें

×नोट--यदि विपरीत साधन अर्थात् मध्यम रविमें प्रत्येक ग्रह घटाकर क्रिया करे तो फल मेषादौ धन तुलादौ ऋण करे दोनों क्रियाओंसे स्पष्ट हो सकता है ऋणका धन और धनका ऋण भी होजाता है, परन्तु परिणाम एकसा ही होना है।

और बुधकेन्द्र व शुक्रकेन्द्रको पहले बतला चुके हैं मध्यम मंगल तथा मध्यम गुरु व मध्यम शनिमें अलग २ मध्यम रविको घटानेसे जो शेप रहे वह प्रत्येक ग्रहका अलग अलग शीघ्र केन्द्र होता है बुध शुक्रका शीघ्रकेन्द्र पहले बनाचुके हैं। यदि शीघ्रकेन्द्र ६ राशितक होवे तो उसीके अंशादि करलेवे। यदि ६ राशिसे अधिक होवे तो उसें १२ राशिमें घटाकर जो शेप रहै उसके अंशादि बनालेवे फिर अंशादि तुल्य ग्रहफल सारिणीद्वारा (चक्र नं. ३१ से ३९ तक) सानुपात अंशादि फल जो प्राप्त होय (सानुपात क्रमका फल पहले बतला चुके हैं सर्वत्र उसी क्रमसे जाने) उसका आधा करके मध्यम ग्रहमें यदि शीघ्रकेन्द्र मेपादौ हो तो ऋण और तुलादौ होवे तो धन करदेवे, तब शीघ्र फलार्द्ध संस्कृत ग्रह होता है। फिर शीघ्र फलार्द्ध संस्कृत ग्रहमें ग्रहका मन्दोच्च राश्यादि जो प्रत्येक ग्रहफल सारिणीके ऊपर मन्दोच्च भगणादि लिखे हैं उसमें भगण छोडकर राश्यादि चार अंक लेवे वह घटा देवे जो शेप रहै वह ग्रहका मन्दकेन्द्र होता है। यदि मन्दकेन्द्र ६ राशिसे अधिक होवे तो पूर्ववत् १२ राशिमें घटा-कर केन्द्रके पूर्वोक्त अंशादि बनालेवे फिर अंशादि परिमित सारिणी द्वारा सानुपात अंशादि मंदफल लावे। इस सम्पूर्ण मन्दफलको यदि मन्दकेन्द्र मकरादौ हो तो ऋण और कर्कादौ पट् होय तो धन इसका संस्कार मध्यम ग्रहमें करनेसे मन्द स्पष्ट ग्रह होता है। और इसी मन्दफल अंशादिको ग्रहवत् ऋण तथा धन इसका संस्कार शीघ्रकेन्द्रमें करनेसे द्वितीय शीघ्रकेन्द्र होता है। पुनः इसी द्वितीय शीघ्रकेन्द्रके (यदि ६ राशिसे अधिक होवे तो १२ राशिमें घटाकर पूर्ववत् अंश करलेवे.) अंशादि परिमित सारिणीसे (ग्रहफल सारि-णीसे) सानुपात द्वितीयशीघ्र फल लावे। इसको सम्पूर्ण मन्दस्पष्टग्रहमें यदि द्वितीय शीघ्रकेन्द्र मेपादौ होय तो ऋण और तुलादौ होयतो धन करै। तब राश्यादि स्पष्ट ग्रह होता है ×।

नोट–×द्वितीय शीघ्रकेन्द्रके अंशादि अलग २ प्रत्येक ग्रहके नोट करलेवें: क्योंकि इसीके द्वारा ग्रहोंका वक्रमार्ग तथा उदय अस्त काल जानाजाना है।

अब भौमादि पंच ताराकी गतिस्पष्ट करनेका क्रम लिखते हैं—मन्द फलसाधन समय कोष्ठका जो अन्तर है उससे ग्रहकी कलादि मध्यम गतिको गुणा करके ६० का भाग देकर जो कलादिफल होवे उसे यदि मन्दकेन्द्र कर्कादी होय तो धन मकरादी हो तो ऋण इसका संस्कार ग्रहकी मध्यमगति कलादिमें करनेसे मन्दस्पष्टगति होती है। फिर मन्दस्पष्टगतिको शीघ्रोच्चगति (मंगल बृहस्पति शनिकी शीघ्रोच्च गति ५९।८ बुधकी २४५। ३२ शुक्रकी ९६। ८ होती है) में घटानेसे शेष शीघ्र केन्द्रगति होती है। इसको द्वितीय शीघ्रफल साधनमें जो कोष्ठांतर होय उससे गुणा करके ६० का भाग देकर जो कलादि फल होय इसको यदि अग्रिम कोष्ठ अधिक होय तो मन्द स्पष्ट गतिमें जोड देवे और जो अग्रिम कोष्ठ न्यून होय तो मन्द स्पष्ट गतिमें इस फलको घटाय देवे तब ग्रहकी कलादि स्पष्ट गति होती है। यदि फल ऋण होनेपर मन्दस्पष्ट गतिमें नहीं घट सके तो फलमें मन्दस्पष्टगतिको घटानेसे जो शेष रहै वह ग्रहकी वक्रगति स्पष्ट होती है। अर्थात् ग्रह वक्री होता है।

अब पांच तारा (भौमादि पंच तारा) स्पष्ट करनेका उदाहरण-लिखते हैं—पूर्वोक्त लाये हुए प्रातः ६ बजेके मध्यम ग्रह इस प्रकार हैं।

प्रातः ६ बजेके राश्यादि पूर्वोक्त मध्यमग्रहाः

रवि.	७	२२	४९	०५
बुध.	२	२४	४१	५६
शुक्र.	३	२३	४७	१८
म.	७	६	२३	२८
बृ.	११	१४	२७	२४
शनि.	७	१४	५५	८
राहु.	१	२८	५	८
केतु.	७	२८	५	८

अब मंगलस्पष्ट करते हैं। मध्यममंगल ७। ६। २३। २८ में मध्यमसूर्य्य ७। २२। ४९। ५ घटाया तो ११। १३। ३४। २३ यह मंगलका शीघ्र केन्द्र हुवा ६ राशिसे आधिक होने पर १२ राशिमें घटाकर शेषके अंशादि १६।२५।३७ परिमित सानुपात अंशादि ६।२३।४८ (चक्र नं ३१ से) हुआ इसका आधा अंशादि ३।११।५४ को केन्द्र तुलादी होनेसे धन अर्थात् मध्यम मंगल ७।६।२३।२८ में जोडा तो ७।९।३५। २२ यह शीघ्र फलार्द्ध संस्कृत भौम हुवा। इसका मन्दोच्च राश्यादि ४। १०।२।३५ को घटाया तो शेष २।२९। ३२।४७ यह भौमका मन्द केन्द्र हुवा।

६ राशि कम होनेसे इसीके अंशादि ८९। ३२। ४७ परिमित सानुपात अंशादि ११। २८। ५ यह मन्दफल हुवा इसको मन्दकेन्द्र मकरादौ होनेसे ऋण अर्थात् मध्यममंगल ७। ६। २३। २८ में घटाया तो ६। २४। ५५। २३ यह मन्दस्पष्ट भौम हुवा। और मन्दफल अंशादि ११। २८। ५ को शीघ्रकेन्द्र ११। १३। ३४। २३ में घटाया तो ११। २। ६। १८ यह द्वितीय शीघ्र केन्द्र हुवा १२ राशिमें घटाकर इसके अंशादि २७। ५३। ४२ परिमित सानुपात अंशादि १०। ५५। ३५ धन (तुलादौ केन्द्र धनम्) इसको मन्द स्पष्ट भौम ६। २४। ५५। २३ में धन किया तो ७। ५। ५०। ५८ यह भौम स्पष्ट हुवा। इसी प्रकार ग्रह स्पष्ट करना चाहिये।

अब उदाहरणको अभ्यासकरके ग्रहस्पष्ट गतिस्पष्ट करके दिखाते है. जिससे शीघ्र समझमें आवे–

मध्यम मंगल ७। ६।२३।२८ चक्र नं. ३१ भौमफलसारिणीमें
मध्यम रवि ७।२२।४९। ५ १६ अंशके कोष्ठमें अंशादि ६।११। ०

शीघ्र केन्द्र तुलादौ धनम् ११।१३।३४।२३ शीघ्रफलम् ०।१२।४८
शीघ्रकेन्द्र ६ राशिसे १२। ०। ०। ० सानुपात शीघ्रफलम् २)६।२३।४८(
अधिक होनेपर १२ ११।१३।३४।२३ ३।११।५४
राशिमे घटाया– १६।२५।३७
प्रथम शीघ्रकेन्द्र –१८।३०
१२।३०
अग्रिमकोष्ठान्तर ०।३० धन
शेषकलादि २५।३७ से गु०– ६०)१२।४८।३०(०।१२।४८

मध्यम मंगल ७।६।२३।२८
३।११।५४ धन
७। ९।३५।२२ प्र० शीघ्रफलार्ध संस्कृत भौम.
४।१०। २।३५ मन्दोच्चराश्यादिको घटाया.
२।२९।३२।४७ मंदकेन्द्र मकरादौ होनेसे ऋण
८९।३२।४७ अंशादि.

शेष ३२।४७
कोष्ठान्तर ०।२ से गुणा
६०) १।५।३४ (०।१।५

चक्र नं. ३१ कोष्ठ ८९ में
मन्द फल अंशादि ११।२७।०
को धन. १।५
मन्दफल सानुपातऋण ११।२८।५

गतिसाधनम्.

मध्यमगति ३१।२६
मन्दकोष्ठान्तर २
६०) ६२।५२ (१।३
६०
२।५२

५९। ८ शीघ्रोच्चगति
३०।२३ मन्दस्पष्टगति
२८।४५ शीघ्रकेन्द्रगति
२३ द्वि. शीघ्रकोष्ठान्तर धनम्
६०)६६१।१५(११।१
६६०
१

मध्यमगति ३१।२६
मन्दकेन्द्र १। ३ मकरादौ ऋणं
३०।२३ मन्दस्पष्टगति

३०।२३ मन्दस्पष्टगति
११। १ धनम्
४१।२४ स्पष्टगति

शीघ्रकेन्द्र ११।१३।३४।२३
मन्दफल ११।२८। ५ऋणं
द्वि० शीघ्रकेन्द्र११। २। ६।१८
धनम् १२।०।०।० ६ रा-
११। २। ६।१८ शिसे
०।२७।५३।४२ अधिक

होनेपर १२ राशिमे घटाया-
मध्यम मं. ७। ६।२३।२८
मन्दफल ११।२८। ५ ऋणं
मंदस्पष्ट मं.६।२४।५५।२३
द्वि. शीघ्रफल २०।५५।३५ धनं
भौमस्पष्ट. ७। ५।५०।५८गति४१।२४

चक्र नं. ३१ कोष्ठ २७ में-
शेष कलादि ५३।४२
कोष्ठान्तर ०।२३ धनसे गुणा
६०)१२३५।६(२०।३५
१२०
३५

द्वितीय शीघ्र फल १०।३५।०
अंशादि २०।३५
द्वि. शीघ्र १०।५५।३५
फलसानुपात १०।५५।३५

अब गति स्पष्ट करते हैं–मंगलकी मध्यम गति ३१। २६ को मन्दफल साधनमें कोष्ठान्तर २ है इससे गुणा करके ६० का भाग देनेसे लब्धि कलादि १। ३ हुई। मन्दकेन्द्र मकरादी ऋण होनेसे मध्यम गति ३१। २६ में घटाया तो ३०। २३ यह मन्द स्पष्ट गति हुई। इसको शीघ्रोच्च गति ५९। ८ में घटाया तो २८। ४५ यह शीघ्रकेन्द्र गति हुई। इसको द्वितीय शीघ्र केन्द्रके कोष्ठान्तर २३ धनसे गुणाकर ६० का भाग देनेसे लब्ध कलादि ११। १ हुई। इसको मन्द स्पष्ट गति ३०। २३ में कोष्ठवशात् धन किया तो ४१। २४ यह भौमकी गति स्पष्ट हुई। इसी प्रकार स्पष्ट करना चाहिये। अभ्यास गतिसाधन ऊपर दिखाया है॥

अब च. नं. ३२ द्वारा बुध स्पष्ट करते हैं–

मध्यम सूर्यवत् मध्यम
बुध. ७।२२।४९। ५
बुधकेन्द्र मेषादी ऋ. २।२४।४१।५६
अंशादि ८४।४१।५६
मन्दफल ०।१३।३५ ऋणं
द्वितीय शीघ्रकेन्द्र ८४।२८।२१
मेषादी ऋणम् अंशादि

चक्र नं. ३२ बुधसारिणीमें
८४कोष्ठमें अंशादिफ. १९।२०। ०शी.फ.
६।१७.धन
सानुपात शीघ्रफल २)१९।२६।१७(
इसका आधा ९।४३। ८

शेषकलादि '४१।५६
अभिमकोष्ठान्तर ०। ९ से-गुण धन
६०)३७७।३४(६।१७
३६०
१७

मध्यम बुध ७।२२।४९। ५
९।४३। ८ शीघ्रकेन्द्रमेषादी ऋणं
७।१३। ५।५७ प्र० शीघ्र फलार्ध संस्कृत बुध
७।१०।१२। ८ मन्दोच्च घटाया
०।२।५३।४९ मन्दकेन्द्र मकरादौ ऋणम्
२।५३।४९ अंशादि

शेषकलादि ५३।४९
कोष्ठान्तर धन ४
६०) २१५।१६ (३।३५
१८०
३५

चक्र नं ३२ में २ कोष्ठमें मंद फल अंशादि ०।१०। ०
धन ३।३५
सानुपात मंदफल. ०।१३।३५

चक्र नं. ३२ के कोष्ठ ८४ में द्वितीय शीघ्रफल
शेषकलादि २८।२१
कोष्ठान्तर ९
६०)२५५। ९ (४।१५
२४०
१५

अंशादि १९।२०।
धन ४।१५
१९।२४।१५
द्वितीय शीघ्रफल सानुपात हुवा।

मध्यम बुध ७।२२।४९। ५
मन्दफलऋण ०।१३।३५
मन्दस्पष्ट बुध७।२२।३५।३०
द्वि. शीघ्रफलं १९।२४।१५ ऋणं
स्पष्टो बुधः ७।३।११।१५गति८३।४५

गतिसाधन.

५९।८ मध्यमगति
४ मन्दान्तर
६०)२३६।३२(३।५६
१८०
५६
५९। ८
३।५६ मन्दकेन्द्रमकारादौ ऋणं
५५।१२ मन्दस्पष्टगति
२८।३३ कोष्ठान्तर धन होनेसे धन किया
८३।४५ स्पष्टगति

२४५।३२ शीघ्रोच्चगति
५५।१२ मन्दस्पष्टगति
१९०।२० शीघ्रकेन्द्रगति
कोष्ठान्तर ९ द्वि० शीघ्र धन
६०)१७१३(२८।३३
१२०
५१
४८
३३

द्वितीय शीघ्रफल ऋण होकर यदि मन्द स्पष्ट गतिमें न घट सके तो जो फल प्राप्त हुवा उसीमें मन्द स्पष्ट गति घटावे जो शेष रहे वह ग्रहकी वक्र गति होती है।

अब चक्र नं. ३३ से गुरु स्पष्ट करते हैं—

मध्यम गुरु ११।१४।२७।२४
मध्यम गुरु ७।२२।४९। ५
शीघ्रकेन्द्रमेषादी ऋणम् ३।२१।३८।१९
११।३८।१९
मन्दफल धन १।१०।५४
द्वि० शीघ्रकेन्द्र
अंशादि मेषादो ऋणम् } ११२।४९।१३

चक्र नं. ३३ गुरुफलसारिणीमें कोष्ठ १११ मे
शीघ्रफल अंशादि ११।२२। ०
ऋणं ०।१।५५
सानुपात शीघ्रफल २)११।२०। ५(इसका आधा-
५।४०। २ -किया

शेषकलादि ३८।१९
आग्रिमकोष्ठान्तर ०। ३ ऋणं
६०)११४।५७(१।५४
६०
५४

मध्यम गुरु ११।१४।२७।२४
५।४०। २ केन्द्रमेषादी ऋणम्
११। ८।४७।२२ प्र० शीघ्रफलार्ध संस्कृत
५।२१।२२। ४ मन्दोच्च घटाया.
५।१७।२५।१८ मन्दकेन्द्रकर्कादी धन
१६७।२५।१८ अंशादि

शेषकलादि २५।१८
कोष्ठान्तर ऋणं ०। ५
६०)१२६।३०(२।६
१२०
६

चक्र नं ३३ कोष्ठ १६७ में मन्दफल
अंशादि १।१३।०
२।६ ऋणं
सानुपातमंदफल हुआ. १।१०।५४

चक्र नं. ३३ कोष्ठ ११२ में द्वितीय शीघ्रफल-

शेषकलादि ४९।१३
३ कोष्ठान्तर ऋणं.
६०) १४७।३९ (२।२७
१२०
२७

-अंशादि ११।१९। ०
२।२७ ऋ.
११।१६।३३
सानुपात द्वि. शीघ्रफलम्

मध्यमगुरु ११।१४।२७।२४
मन्दफल धन १।१०।५४
मन्दस्पष्टगुरु ११।१५।३८।१८
द्वि० शीघ्रफ० ११।१६।३३ ऋणं
गुरुस्पष्टः ११। ४।२१।४५ गति २।४४

गतिसाधन.

५।० मध्यमगति
५ मन्दान्तर कोष्ठ
६०) २५। ० (०।२५
५। ० मध्यमगति
०।२५ मन्दकेन्द्रकर्कादौ धन.
५।२५ मन्दस्पष्टगति
२।४१ ऋण कोष्ठवशात्
२।४४ स्पष्टगति-

-५९। ८ शीघ्रोच्चगति
५।२५ मन्दस्पष्टगति
५३।४३
३ द्वि. शी. अन्तर कोष्ट
६०)१६१। ९ (२।४१ [ऋणं
१२०
४१

अब चक्र नं. ३४ द्वारा शुक्रस्पष्ट करते हैं—

मध्यम शुक्र सूर्यवत् ७।२२।४९। ५
शुक्र केन्द्र मेषादौ ऋणं अंशादि३।२३।४७।१८
अंशादि ११३।४७।१८
मन्द फल धन १।२१।३५
द्वि० शीघ्रकेन्द्र मेषादौ ऋणं ११५। ८।५३

शेषकलादि ४७।१८
अग्रिम कोष्ठान्तर ०।१७ गुणा
६०) ८०४।६ (१३।२४
६०
२०४
१८०
२४

चक्र नं ३४ शुक्रफल सारिणीमें
कोष्ठ,११३ में शीघ्रफल अंशादि४२।५१।-०
धन १३।२४
सानुपात शीघ्रफल २) ४३। ४।२४
२१।३२।१२

मध्यम शुक्र ७।२२।४९। ५
२१।३२।१२ मेषादौ केन्द्र ऋणं
७। १।१६।५३ प्र०शी०केन्द्रफलार्ध संस्कृत भृगुः
२।१९।५२। ७ मन्दोच्च घटाया
४।११।२४।४६ मन्दकेन्द्रकर्कादौ धनम्
१३१।२४।४६ अंशादि

शेष कलादि २४।४६
कोष्ठान्तर ऋण ०। १
६०) २४।४६(०।२५

चक्र नं. ३४ में मन्द
फल अं० १।२२।०
ऋण ०।२५
१।२१।३५
सानुपातमंद फलम्

चक्र नं. ३४ से कोष्ठ ११५ में द्वितीय शीघ्र फल-
-अंशादि ४३।२१।०
२।४
४३।२३। ४ अंशादि
१।१३।२३। ४ राश्यादि
सानुपातद्वितीयशीघ्र फलम्

शेष कलादि ८।५३
× कोष्ठान्तर धन ०।१४
६०) १२४।२२ (२।४
१२०
४

मध्यम भृगु ७।२२।४९। ५
मन्द फल धन १।२१।३५
७।२४।१०।४०
द्वि. शीघ्र फल १।१३।२३। ४ ऋण
भृगु स्पष्ट ६।१०।४७।३६ गति ६८।३१

गतिसाधनम्
५९।८ मध्यमगति
१ मन्दान्तर
६०) ५९। ८ (०।५९
५९। ८ मध्यमगति
०।५९ मन्दकेन्द्र कर्कादौ धन
६०।७ मन्द स्पष्टगति
८।२४ धन
६८।३१ स्पष्टगति
९६।८ शीघ्रोच्चगति
६०।७ मन्दस्पष्ट गति
३६।१ शीघ्र केन्द्र गति
१४ कोष्ठान्तर धन
६०)५०४।१४ (८।३४
४८०
३४

अब चक्र नं ३५ द्वारा शनिस्पष्ट करते हैं--

मध्यमशनि ७।१४।५५।८
मध्यमरवि ७।२२।४९।५
प्र० शीघ्र केन्द्र११।२२। ६। ३
तुलादौ धन१२।० । ०। ०
६ राशिसे- ११।२२। ६। ३
-अधिक होनेपर १२ राशिमें घटाया-
अंशादि ७।५३।७
शीघ्रकेन्द्र ११।२२। ६। ३
मन्दफल १।२५।३३ऋण
द्वि०शीघ्र केन्द्र११।२०।४०।३०
तुलादौ धन १२। ०। ०। ०
११।२०।४०।३०
अंशादि ९।१९।३०=

नोट-×यदि अन्तरकोष्ठ धन हो तो धन ऋण हो तो ऋण.

=चक्र नं.३५ शनिफल सारिणीमे कोष्ट ७ में शीघ्रफलअंशादि ०।४१। ०
५।२३
सानुपात शीघ्र फ० २) ०।४६।२३(
इसका आधा ०।२३।११

शेषकलादि ५३।५७
अग्निमें कोष्टान्तर धन ६
६०) ३२३।४२ (५।२३
३००
२३

मध्यम शनि ७।१४।५५। ८
०।२३।११ केन्द्रतुलादौ धन
७।१५।१८।१९ प्र. शी. फलार्थ संस्कृत शनि
७।२६।३७।३३ मन्दोच्च घटाया
११।१८।४०।४६ मन्दकेन्द्र मकरादौ ऋणं
१२। राशिमे घटाया
११।१८।४०।४६
अंशादि ०।११।१९।१४
चक्र नं ३५ के कोष्ठ ११ मे मन्दफलअंशादि१।२३। ०
२।३३
सानुपात मंद फल १।२५।३३

शेषकलादि १९।१४
कोष्टान्तर धन ८
६०) १५३।५२ (२।३३
१२०
३३

चक्र नं ३५ कोष्ठ ९ में द्वि० शीघ्रफल ०।५३। ०
०। १।५७
सानुपात ०।५४।५७ द्वितीय शीघ्रफल

शेषकलादि १९।३०
कोष्टान्तर धन ६
६०) ११७। ९ (१।५७
६०
५७

मध्यम शनि ७।१४।५५।८
मन्दफल ऋण १।२५।३३
मन्दस्पष्ट शनि ७।१३।२९।३५
द्वितीय शीघ्रफल ०।५४।५७ धन
स्पष्ट शनि ७।१४।२४।३२
गति ७।२८

गतिसाधन.

२। ० मध्यमगति	५९। ८ शीघ्रोच्चगति
८ मन्दान्तर कोष्ठमें	१।४४ मन्दस्पष्टगति
६०) १६। ० (०।१६	५७।२४ शीघ्रकेन्द्रगति
०२। ० मध्यमगति	६ कोष्ठान्तरधन
०।१६ मन्दकेन्द्रमकरादौ ऋ.	६०) ३४४।२४ (५।४४
१।४४ मन्दस्पष्टगति	३००
५।४४ धनकोष्ठवशात्	४४
७।२८ स्पष्टगति	

इस प्रकार सहित गतिके ग्रह स्पष्ट करना चाहिये अब ग्रह स्पष्टाधिकार उदाहरणसहित होगया और राहुकेतुका ६ राशिका अन्तर सदैव जानै (राहु मध्यमहीको स्पष्ट जानै)

अथ सौरभ सारिणी द्वारा (चक्र नं. ६१ से ६७ तकसे) किंचित् **स्थूल सूर्यादिक ग्रह स्पष्ट करनेका क्रम** लिखते हैं-पूर्वोक्त मध्यमाधिकारमें जो ग्रहवल्ली बनाई गई है उनकी कंदसंज्ञा जानना और बीज फल अंशादिका छठा भाग (मध्यम ग्रहको ६ भाग करके अंशादि करलेनेसे भी ग्रहवल्ली होजाती है) ग्रहवल्ली अंशादिमें धन होय तो जोड लेवे, बीज ऋण होय तो घटालेवे. फिर देशान्तर कला विकला जो होय उसका भी छठा भाग ग्रहवल्ली अंशादिमें धन होय तो धन ऋण होय तो ऋण करदेवे तब देशान्तर संस्कृत कन्द (ग्रहवल्ली) होती है. अथवा मध्यमाधिकारमें कहे हुए क्रमसे बीज और देशान्तर संस्कृत राश्यादि मध्यम ग्रह लाकर उसका छठा भाग करके अंशादि चार अंक करलेवे (राशियोंके भी अंश करके अंशोंमें जोड लेवे) तौ भी कंद ग्रहवल्ली बन जावेगी ।

प्रथम कन्द बनाकर फिर स्पष्ट करना चाहिये. सूर्य कन्दके अंशादि तुल्य रवि सौरभ सारिणी चक्र नं. ६१ से सानुपात जो अंशादि फल प्राप्त हो उसको ६ से गुणा करनेसे अंशादि होवेंगे ३० अंशसे अंश अधिक होनेपर राश्यादि बनाय लेवे, जो राश्यादि हों वही सूर्यस्पष्ट जाने ।

सूर्यगति साधन क्रम-पूर्वोक्त सौरभ सारिणी चक्र नं. ६१ द्वारा फल साधनेमें जो कोष्ठका अंशादि अन्तर आया हो उसको १ अंशमें घटाकर जो शेष रहै उसकी कलादिको मध्यमगतिमें ऋण करनेसे सूर्यकी गति स्पष्ट होती है। यदि अन्तर १ अंशसे अधिक होय तो उसमेंसे १ अंश घटाकर शेषको सूर्यकी मध्यमगति कलादि ५९। ८ में धन करदेवे तो सूर्यकी कलादि स्पष्टगति होती है। अन्यथा १ अंशसे कम होनेपर ऋण करनेसे गति स्पष्ट होती है।

अथ चन्द्र स्पष्ट करनेका क्रम-चन्द्रकेन्द्र वल्ली देशान्तर संस्कृतके ऊपरके अंकमें ४५ अंश जोड देवे जो वल्ली प्राप्ति होय उसकी लता संज्ञा जानना। लतातुल्य कोष्ठकसे चन्द्र सौरभसारिणी चक्र नं. ६२ द्वारा सानुपात अंशादि फल लाकर चन्द्रकन्द (चन्द्रवल्ली) में जोडकर ६ गुणा करके अंशोंकी राश्यादि बनालेवे। यही चन्द्र स्पष्ट होजावेगा और गति साधनमें उसी कोष्ठके नीचे भुक्तिफल सानुपात लाकर ६ से गुणा करदेवे और अंशोंकी कला बनाकर कलादि जो हो वह चन्द्रकी कलादि स्पष्टगति होती है।

अब **भौमादि पंच ग्रह स्पष्ट करनेका क्रम** लिखते हैं-भौम कंद (भौमवल्ली) में रविकन्द घटानेसे जो शेष रहै जिसकी संज्ञा लता (केन्द्र) है इसी प्रकार बृहस्पति तथा शनिकेन्द्रमें रविकन्द घटानेसे जो शेष रहै वह उसी ग्रहकी लता केन्द्र जाने और रवि कन्दके तुल्य बुध कन्द तथा शुक्र कंद कल्पित करलेवे और बुधकी लता जो बुध केन्द्र हैं और शुक्रकी लता शुक्रकंद है वही है जो पूर्वोक्त बनाई गई है। फिर ग्रह लताके तुल्य भौमादि अभीष्ट ग्रहकी सौरभ सारिणी द्वारा सानुपात अंशादि फल वल्ली कोष्ठसे लाकर ग्रहके मन्दकन्दमें जोड देवे तब वह उपकन्द होता है फिर उपकंदके अंशादि तुल्य उपकंद फल सानुपात अंशादि लावे वह ग्रहके कन्दमें जोडनेसे अंशादि सुकन्द होवेगा। और ग्रहकी लतामें जोडनेसे सुलता होवेगी फिर सुलताके अंशादि तुल्य ग्रह सौरभसे अंशादि सानुपात सुवल्ली फल लाकर सुकन्दमें जोड देवे। (अंश कोष्ठ ६० से अधिक होनेपर

६० से शेषित ग्रहण करे) फिर अंशके स्थान दश घटादेवे तव उसकी मकरन्द संज्ञा होती है। फिर उसे ६ से गुणाकरके राश्यादि वनालेवे वही स्पष्ट ग्रह होजावेगा।

अव **गतिसाधन क्रम** लिखते हैं–ग्रहके उपकन्दद्वारा फल साधनेमें जो अग्रिम कोष्ठका अन्तर होय उस ग्रहकी मध्यमगति फलादिसे गुणा करके ६० का भाग देवे जो कलादि फल मिले उसे यदि आग्रिमकोष्ठ अधिक होय तो धन और न्यून होवे तो ऋण कोष्ठकवशात् इसका संस्कार ग्रहकी मध्यमगतिमें करनेसे ग्रहकी मन्दस्पष्टगति होती है, फिर मन्दस्पष्टगतिको शीघ्रोच्च गतिमें घटानेसे शीघ्रकेन्द्र गति होती है। उसको सुवल्ली (सुलता) द्वारा फलसाधनमें जो कोष्ठका अन्तर होय उससे गुणा करके ६० का भाग देनेसे जो कलादि फल होय वह यदि अग्रिमकोष्ठ अधिक होय तो ऋण और न्यून होय तो धन कोष्ठकवशात् विपरीत इसका संस्कार मंद स्पष्ट गतिमें करनेसे ग्रहकी स्पष्ट गति होती है। यदि फल ऋण होनेपर फल अधिक होनेसे मंद स्पष्टगतिमें नहीं घट सके तो (विपरीत) फलमें मंदस्पष्ट गति घटानेसे जो शेष रहै वह ग्रहकी वक्रगति स्पष्ट होती है।

अव **सौरभोपरि ग्रह स्पष्ट करनेका उदाहरण** लिखते हैं–पूर्वोक्त प्रातः ६ बजेके राश्यादि मध्यमग्रह इस प्रकार हैं–सूर्य ७ । २२ । ४९ । ९ चन्द्र १ । १० । १७ । १२ चन्द्रकेन्द्र ६ । २८ । ३३ । ४४ चन्द्र १ । १० । १७ । १२ में चन्द्रोच्च ६ । ११ । ४३ । २८ घटानेसे अथवा पूर्वोक्त चन्द्रकेन्द्रमें ९ राशि (४९ अंश) जोडनेसे वही चन्द्रकेन्द्र होगया (४९ अंश ९ राशिका ६ छठा भाग है क्योंकि वल्लीको ६ से गुणा करना होता है) मंगल ७ । ६ । २३ । २८ बुध केन्द्र २ । २४ । ४१ । ५६ बृहस्पति ११ । १४ । २७ । २४ शुक्र-केन्द्र ३ । २३ । ४७ । १८ शनि ७ । १४ । ५९ । ८ यह ग्रह बीज तथा देशान्तर संस्कृत पूर्वोक्त ही हैं इन्हें प्रत्येकको प्रथम ६ से भाग देकर ग्रहवल्ली अर्थात् कन्द बनाया तो सूर्यकन्द (वल्ली) ३८ । ४८ । १० । ५० चन्द्रकंद ६ । ४२ । ५२ । ० चन्द्रलता (केन्द्र)

३४ । ४९ । ३७ । २० मंगल कन्द ३६ । ३ । ५४ । ४० बुधलता (केन्द्र) १४।६। ५९ । २० गुरुकंद ५७ । २४ । ३४ । ०० शुक्र लता (केन्द्र) १८ । ५७ । ५३ । ०० शनि कंद ३७ । २९ । ११ । २० यह इस प्रकार हुए।

अब प्रथम सूर्य चन्द्र स्पष्ट करते हैं-सूर्यकंद अंशादि ३८ । ४८ । १० । ५० इसके तुल्य चक्र नं० ६१ सूर्यसौरभ सारिणीसे सानुपात अंशादि ३८ । ३९ । ५ हुए (अन्तर कोष्ठ और कन्दकी शेष कलादिको गुणा करके ६० का भाग देकर लब्धको अंशवाले कोष्ठके फलमें जोडकर सानुपात हुवा) ३८ । ३९ । ५ अंशादिको ६ से गुणा किया तो अंशादि २३१ । ५४ ३० हुए इसकी राश्यादि बनाई तो राश्यादि ७ । ३१ । ५४ । ३० । यह सूर्यस्पष्ट हुआ । अब गतिस्पष्ट करते हैं-पूर्वोक्त चक्र नं० ६१ से पूर्वोक्त फल साधनमें कोष्ठान्तर अंशादि १ । १ । ५३ है इसमें १ अंशसे अधिक कलादि १ । ५३ है इसको सूर्यकी मध्यमगति ५९ । ८ में जोडा तो ६१ । १ यह सूर्यकी स्पष्टगति हुई।

अब चन्द्रस्पष्ट करते हैं-चन्द्रकन्द (चन्द्रवल्ली) ६ । ४२ । ५२ । ० चन्द्रलता ३४ । ४९ । ३७ । २० है लताके अंशादि । ३४ । ४९ । ३७ । २० से चक्र नं० ६२ चन्द्रसौरभ सारिणीद्वारा सानुपात अंशादि ० । २८ । २६ । ४८ फल हुवा इसको चन्द्रकंद ६ । ४२ । ५२ । ० में जोडा तो अंशादि ७ । ११ । १८ । ४८ हुए इसको ६ से गुणा किया तो १ । १३ । ७ । ५२ यह चन्द्रस्पष्ट हुवा । अब गति स्पष्ट करते हैं-पूर्वोक्त चन्द्रलता ३४ । ४९ । ३७ । २० परिमित चक्र नं० ६२ से सानुपात अंशादि २ । २१ । ५२ भुक्तिफल हुवा इसको ६ से गुणा किया तो अंशादि १४ । ११ । १२ यह हुवा. इसकी कलादि ८५१ । १२ यह चन्द्रकी स्पष्ट गति हुई।

अब भौमादि पंच तारा स्पष्ट करते हैं-प्रथम मंगलस्पष्ट करते हैं भौमकन्द ३६ । ३ । ५४ । ४० में रविकन्द ३८ । ४८ ।१०।५० को घटाया तो ५७।१५।४३।५० यह भौमलता हुई इस परिमित चक्र नं० ६३

भौमसौरभ सारिणीसे अंशादि सानुपात ३८।५१। ५९। १० यह वल्ली लता (फल) हुवा. इसको भौम कंद ३६।३।५४।४० में जोडा तो १४।५९।४९।५० यह उपकंद हुवा इस परिमित चक्र नं० ६३ से सानुपात उपकन्द फल ०।५।१७।३६ हुवा. इसको भौमकंद ३६।३।५४।५० में जोडा तो ३६।९।१२।१६ यह सुकंद हुवा. और पुनः इसी फल ०।५।१७। ३६ को लता ५७।१५। ४३।५० में जोडा तो ५७।२१।१ । २६ यह सुलता हुई (सुवल्ली हुई)। इस परिमित चक्र नं० ६३ से सानुपात सुलता (सुवल्ली) फल ९। ४९ । २४ । ३६ हुवा इसको सुकंद ३६।९।१२ । १६ में जोडा तो ४५।५८।३६।५२ यह हुवा इसमें १० अंश घटाये तो ३५।५८।३६।५२ यह मकरन्द संज्ञक हुवा. इसको ६ से गुणा करके राश्यादि बनाई तो राश्यादि ७।५। ५१।४१ यह भौम स्पष्ट हुवा। अब गति स्पष्ट करते हैं–उपकन्दोपरि फल साधनमें कोष्ठान्तर १।४७ ऋण था इसको भौमकी मध्यम गति ३१।२६ से गुणा करके ६० का भाग देनेसे कलादिफल ०।५६ हुवा इसको अग्रिम कोष्ठ न्यून होनेसे मध्यमगति कलादि ३१।२६ में घटाया तो ३०। ३० यह मन्दस्पष्ट गति हुई । इसको शीघ्रोच्च गति ५९।८ में घटाया तो २८। ३८ यह शीघ्रकेन्द्र गति हुई। इसको सुवल्ली (सुलता) से फल साधनमें जो कोष्ठान्तर २३। ३१ ऋण था इससे गुणाकरके ६० का भाग देनेसे कलादि ११। १३ फल हुआ कोष्ठ ऋणके विपरीत धन अर्थात् ११। १३ इसको मन्द स्पष्टगति ३०।३० में जोडा तो ४१।१३ यह भौमकी स्पष्ट गति हुई।

अब बुध स्पष्ट करतें हैं–सूर्यवत् बुध कंद ३८।४८।१०।५० बुधलता (बुध केन्द्र) १४।६। ५९ । २० हैं लतापरिमित चक्र नं० ६४ बुध सौरभ सारिणी द्वारा सानुपात अशांदि २१।४२ २।५९ वल्ली फल हुवा इसको बुध कंद ३८।४८।१०।५० में जोडा तो ०।३०।१३।४९ यह उपकंद हुवा इस परिमित चक्र

नं० ६४ से सानुपात उपकंद फल अंशादि १। ५७। ३६। २५ हुवा इसको बुध कंद ३८। ४८। १०। ५० में जोडा तो ४०।४५।४७।१५ यह सुकंद हुवा और बुध लता १४। ६। ५९।२० में भी जोडा तो १६। ४। ३५। ४५ यह सुलता हुई इस परिमित चक्र नं ६४ से सानुपात सुवल्ली फल ४। ४६। २। ०० हुवा इसको सुकंद ४०। ४५। ४७। १५ में जोडा तो ४५। ३१ ४९। १५ यह हुवा इसमें १० अंश घटाये तो ३५। ३१। ४९।१५ यह मकरन्द संज्ञक हुवा इसको ६ से गुणा किया तो राश्यादि ७। ३। १०। ५५ यह बुध स्पष्ट हुवा। अब गति स्पष्ट करते हैं-उपकन्दोपरि फल साधनमें जो कोष्ठान्तर ४। ४५ ऋण था इससे बुधकी मध्यमगति कलादि ५९। ८ को गुणा करके ६० का भाग देनेसे कलादि ४। ४१ फल हुवा इसको अग्रिमकोष्ठ न्यून होनेसे मध्यमगति ५९।८ में घटाया तो ५४।२७ यह मन्दस्पष्ट गति हुई ×। इसको सुवल्ली फल साधनेमें जो कोष्ठान्तर ७। ३७ ऋण था इससे गुणा करके ६० का भाग देनेसे कलादि २४। १५ फल हुवा इसको ऋण कोष्ठका विपरीत धन अर्थात् मन्दस्पष्टगति ५४। २७ में जोडा तो ७८। ४२ यह बुधकी स्पष्ट गति हुई।

अब गुरु स्पष्ट करते हैं-गुरु कंद ५७। २४। ३४। ०० में रविकंद ३८। ४८। १०। ५० को घटाया तो शेष १८। ३६। २३। १० यह गुरुलता हुई इस परिमित चक्र नं० ६५ गुरु सौरभ सारिणीद्वारा सानुपात अंशादि ३०। ३०। ४। १४ फल हुवा इसको गुरुकन्द ५७। २४। ३४। ०० में जोडा तो २७। ५४। ३८। १४ यह उपकंद हुवा इस परिमित चक्र नं. ६५ से सानुपात अंशादि १। ४८। १०। ५७ उपकंद फल हुवा. इसको गुरुकंद ५७। २४। ३४। ० में जोडा तो ५९। १२। ४४। ५७ यह सुकन्द हुवा और लता १८। ३६। २३। १० में भी जोडा तो २०। २४।

× इसको बुधकी शीघ्रोच्च गति २४५। ३० मे घटाया तो २९१। ५ यह शीघ्रकेन्द्र गति हुई.

३४ । ७ यह सुलता हुई। इस परिमित चक्र नं. ६९ से सानुपात सुवल्ली फल ६ । ६ । ३३ । १७ हुवा. इसको सुकन्द ५९।१२।४४।५७ में जोडा तो ५ । १९ । १८ । १४ यह हुवा इसमें १० अंश घटाये (ऊपरके अंक ५ में न घटनेसे ६० और जोडकर घटाये) तो ५५।१९। १८। १४ यह मकरन्द संज्ञक हुवा. इसको ६ से गुणाकरके अंशोंकी राश्यादि बनानेसे ११ । १ । ५५ । ४९ यह स्पष्ट गुरु हुवा. अब **गुरुगतिस्पष्ट** करते हैं–उपकन्दोपरि फल साधनमें जो कोष्ठान्तर ५ । २९ था इससे गुरुकी मध्यमगति कलादि ५ । ० को गुणाकरके ६० का भाग देनेसे फल कलादि ० । २७ हुआ इसको अग्रिमकोष्ठ धन होनेसे मध्यमगति ५ । ० में जोडा तो ५ ।। २७ यह मन्दस्पष्टगति हुई । फिर इसको शीघ्रोच्चगति ५९ । ८ में घटाया तो ५३ । ४१ यह शीघ्रकेन्द्रगति हुई । इसको सुवल्ली कोष्ठान्तर २ । १९ धनसे गुणाकरके ६० का भाग देनेसे कलादि २ । १ हुवा अग्रिम कोष्ठके विपरीत इसको मन्दस्पष्टगति ५। २७ में घटाया तो शेष ३ । २६ यह गुरुकी स्पष्ट गति हुई ।

अब **शुक्रस्पष्ट** करते हैं—सूर्यकंदवत् शुक्रकंद ३८ । ४८ । १०।५० और शुक्रलता (केन्द्र) १८ । ५७ । ५३ । ० है लतापरिमित चक्र नं. ६६ शुक्र सौरभ सारिणी द्वारा सानुपात वल्लीफल अंशादि ४२ । ५६ । १३ । ५८ हुवा. इसको शुक्रकंद ३८।४८। १० । ५० में जोडा तो २१ । ४४ । २४ । ४८ यह उपकंद हुवा. इस परिमित चक्र नं० ६६ से सानुपात उपकंदफल १ । ४६ । ९ । ४९ हुवा, इसको शुक्रकंद ३८ । ४८ । १० । ५० में जोडा तो ४० । ३४ । २० । ३९ यह सुकन्द हुवा और लता १८ । ५७ । ५३ । ० में भी जोडा तो २० । ४४ । २ । ४५ यह सुलता हुई । इस परिमित चक्र नं० ६६ से सानुपातसुवल्ली फल ० । ५२ । ९ । ५३ हुवा । इसको सुकंद ४० । ३४ । २० । ३९ में जोडा तो ४१।२६।३० ।२८ यह हुवा इसमें १० अंश घटाये तो ३१ । २६ । ३० । २८ यह मकरन्द संज्ञक हुवा । इसको ६ से गुणा करके राश्यादि बनाई तो

६।८।३९।२ यह शुक्र स्पष्ट हुवा। अब गतिस्पष्ट करते हैं-उपकन्दोपरि फल साधनमें जो कोष्ठान्तर ०।५१ था इससे मध्यम गति ५९।८ से गुणाकरके ६० का भाग देनेसे कलादि ०।५० हुआ. अग्रिम कोष्ठ अधिक होनेसे मध्यमगति ५९।८ में जोडा तो ५९।५८ यह मन्दस्पष्टगति हुई। इसको शीघ्रोच्चगति ९६। ८ में घटाया तो शेष ३६।१० यह शीघ्रकेन्द्र गति हुई। इसको सुवल्ली फलके कोष्ठान्तर ५।१९।५१ ऋणसे गुणाकरके ६० का भाग देनेसे लब्धि कलादि ९।३३ हुई इसको कोष्ठऋणके विपरीत धन अर्थात् फल ९।३३ को मंदस्पष्टगति ५९।५८ में जोडा तो ६९। ३१ यह शुक्रकी गति स्पष्ट हुई।

अब शनिस्पष्ट करते हैं-शनिकन्द ३७।२९।११।२० में रविकंद ३८।४८।१०।५० को घटाया तो ५८।४१।०।३० यह शनि लता हुई. इस परिमित चक्र नं० ६७ शनि सौरभ सारिणीसे सानुपात वल्लीफल २०।३७।३२।१८ हुवा इसको शनिकंद ३७।२९।११।२० में जोडा तो ५८।६।४३।३८ यह उपकंद हुवा. इस परिमित चक्र नं० ६७ से सानुपात उपकंद फल २।१४। २० ३३ हुवा. सको शनिकंद ३७।२९।११।२० में जोडा तो ३९।४३।३१।५३ यह सुकन्द हुवा और लता ५८।४१। ०।३० मे भी जोडा तो ०।५५।२१।३ यह सुलता हुई। इस परिमित चक्र नं० ६७ से सानुपात सुवल्ली फल ८।६।९।५४ हुवा. इसको सुकंद ३९।४३।३१।५३ में जोडा तो ४७।४९। ४१।४७ यह हुवा इसमें १० अंश घटाये तो ३७।४९।४१।४७ यह मकरन्द संज्ञक हुवा इसको ६ से गुणा करके राश्यादि बनाई तो ७।१९।५८।१० यह शनिस्पष्ट हुवा। अब गतिस्पष्ट करते हैं-उपकन्दोपरि फल साधनमें जो कोष्ठान्तर ७।३० ऋण था उससे शनिकी मध्यमगति कलादि २।० को गुणा करके ६० का भाग देनेसे कलादि ०।१५ लब्धि हुई इसको अग्रिम कोष्ठवशात् ऋण मध्यम गति २।० में घटाया तो १।४५ यह मन्दस्पष्टगति हुई।

इसको शीघ्रोच्च गति, ५९ । ८ में घटाया तो शेप ५७ । २३ यह शीघ्रकेन्द्रगति हुई इसको सुवल्ली फल साधनके कोष्ठान्तर ६ । १ ऋणसे गुणा करके ६० का भाग देनेसे फलादि ५ । ४५ यह फल प्राप्त हुवा । इसको कोष्ठान्तर ऋणके विपरीत धन अर्थात् मन्दस्पष्ट गति १ । ४५ में जोडा तो ७ । ३० फलादि शनिकी स्पष्ट गति हुई । इसी प्रकार सौरभद्वारा ग्रह स्पष्ट करना चाहिये । यह स्थूल क्रम है इसमें अंशादिमें सूक्ष्मान्तर होजाया करता है । इति ।

अब **अक्षांश बनानेका क्रम उदाहरण सहित** लिखते हैं- पलभा बनानेका क्रम पहले बतला चुके हैं । पूर्वोक्त पलभा अंगुलादिको ५ से गुणा करके उसे अंशात्मक मान उसमें पलभाके वर्ग (समानीकको परस्पर गुणनेसे वर्ग होता है) का दशवां भाग अंशात्मक घटाकर जो अंशादि शेप रहै वह अंशादि अक्षांश होते हैं अपने नगरसे लंकाकी पूर्वापर रेखा दक्षिण होय तो अक्षांश दक्षिण और नगरसे लंका उत्तर होय तो अक्षांश उत्तर होते हैं (और कोई इसको विपरीत मानते हैं लंकाकी पूर्वापर रेखासे अपना नगर उत्तर होय तो अक्षांश उत्तर, दक्षिण होय तो अक्षांश दक्षिण मानते हैं) ।

उदाहरण-अभीष्ट देश देहलीके पूर्वोक्तपलभा अंगुलादि ६।३३ है इनको ५ से गुणा किया तो गुणन फल अंशादि ३२ । ४५ हुए । इसमें पलभाके वर्ग (६ । ३३) × (६ । ३३) = ४२ । ५४ का दशवां भाग अंशात्मक ४ । १७ । २४ को घटाया तो शेप अंशादि २८ । २७ । ३६ यह अक्षांश हुवा. अभीष्ट नगरसे लंका दक्षिण है इसलिये अक्षांश दक्षिण हुए ।

अब **स्वदेशीय लग्न प्रमाण बनानेका क्रम उदाहरण** सहित लिखते हैं-पूर्वोक्त तीनों चरखण्डोंको लाकर (जो सूर्य चन्द्र स्पष्ट करनेमें दिनमान साधनेमें चरखण्ड बनाये थे) उनको पलात्मक मान (विपल छोडदे या १ पल बढालेवे) फिर लंकोदय लग्न प्रमाणके मेप वृप मिथुनके लग्न प्रमाणमें क्रमानुसार तीनों चरखण्डोंको घटानेसे शेप क्रमानुसार मेप वृप मिथुन लग्नका स्वदेशीय प्रमाण पल होते हैं ।

फिर उक्त तीनों चरखण्डोंको उलटे क्रमसे अर्थात् पहले तीसरा फिर दूसरा फिर पहला चरखण्ड इनको लंकोदय मान कर्क सिंह कन्यामें क्रमानुसार जोडदेवे तो कर्क सिंह कन्याका स्वदेशीय लग्न प्रमाण होजावेगा । फिर कन्या लग्न प्रमाणसे उलटे क्रमसे मेष पर्यन्तके लग्न प्रमाणको तुलादि मीनपर्यन्तका लग्न प्रमाण जाने. इस प्रकार मेषादि मीन पर्यन्त स्वदेशीय लग्न प्रमाण बनायलेवे । परन्तु इसका ध्यान रखे कि, लंकासे दक्षिण जहां अक्षांश उत्तर हैं इससे विपरीत होता है. जब इस देशमें जाडा है तब वहां गरमी होती है इत्यादि ।

अब लंकोदयमान तथा स्वदेशीय लग्नप्रमाण तथा

उदाहरण लिखते हैं—

अथ लंकोदय लग्नप्रमाण.

लग्न	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
घटी	४	४	५	५	४	४	४	४	५	५	४	४
पल	३८	५९	२३	२३	५९	३८	३८	५९	२३	२३	५९	३८
केवल पल	२७८	२९९	३२३	३२३	२९९	२७८	२७८	२९९	३२३	३२३	२९९	२७८

अथ स्वदेशीय लग्नप्रमाण.

लग्न	मे	वृ	मि	कं	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
घटी	३	४	५	५	५	५	५	५	५	५	४	३
पल	३३	७	१	४५	५१	४३	४३	५१	४५	१	७	३३
केवल पलभा	२१३	२४७	३०१	३४५	३५१	३४३	३४३	३५१	३४५	३०१	२४७	२१३

उदाहरण-पूर्वोक्त स्वदेशीय चरखण्ड प्रथम चरखण्ड पलादि ६५ । ३० द्वि० ५२ । २४ तृ० २२ । ५० हैं उनके केवल पल ग्रहण करनेसे प्र० ६५ द्वि० ५२ तृ० २२ इस प्रकार ग्रहण किये इनको क्रमानुसार लंकोदय लग्न प्रमाण मेष पल २७८ वृ० २९९ मि० ३२३ में घटानेसे मेष पल २१३ वृष २४७ मिथुन ३०१ यह मेषादि मिथुन पर्यन्त लग्नप्रमाण हुवा. फिर उलटे क्रमसे तीनों चरखण्डोंको यथा

२२।५२।६५ इनको लंकोदयमान कर्कके पल ३२३ सिं० २९९ कन्या २७८ पल ये क्रमानुसार जोडा तो कर्क ३४५ सिंह ३५१ कन्या ३४३ यह कन्यापर्यन्त स्वदेशीय लग्नप्रमाण हुवा। फिर कन्या लग्न प्रमाणसे उलटे क्रमसे मेषपर्यन्तके प्रमाणको तुलादि मीन पर्यन्त लिखा तो तुला ३४३ वृ० ३५१ धन ३४५ मकर ३०१ कुम्भ २४७ मीन २१३ इस प्रकार द्वादश लग्न प्रमाण स्वदेशीय बनगया। और पलोंको घटिकादि बना लेवे और सर्व लग्नोंके प्रमाणको जोडनेसे ६० घटि होजावेगी यह सिद्धान्त है चक्रमें लिखा है देखो।

तात्कालिक लग्नस्पष्ट करनेकी यह रीति है कि, तात्कालिक स्पष्टसूर्यमें अयनांशा जोडकर सायनरवि जिस राशिके जितने अंशादि भुक्त होय उनको ३० अंशोंमें घटाकर शेष अंशादि हों वह उस लग्नका भोग्य (बाकी बीतनेवाला) काल जाने फिर उसी लग्न प्रमाणके पलोंसे भोग्य अंशादिको गुणाकर ३० का भाग अंशादिमें देनेसे जो लब्ध पलादि होय वह उसी लग्नके भोगपल जाने (जैसे ३० अंशोंमें इतने पल हैं तो इतने अंशोंमें कितने पल ?) फिर इष्टकालके पल बनाकर प्रथम उसमें उस लग्नके पलादिको घटावे फिर उससे आगेकी लग्न प्रमाण पलको घटावे अर्थात् जितनी लग्नोंके पल प्रमाण घट सकें घटाता चलाजावे जो पलादि शेष रहें वह उस लग्नसे आगेवाली लग्नके भुक्त-पल जाने फिर त्रैराशिक द्वारा अर्थात् भुक्त पलोंको ३० से गुणा करके उसी लग्नप्रमाण पलका भाग देनेसे लब्ध अंशादि उस लग्नके भुक्त जाने. फिर राश्यादि चार अंक लिखकर अयनांश घटादेवे शेष रहै वह राश्यादिक तात्कालिक लग्न स्पष्ट होता है। लग्न स्पष्ट करनेका उदाहरण सूर्यग्रहणके उदाहरणमें आवेगा वहांपर देखकर समझ लेना चाहिये। और साधारण लग्नसारिणी जो पंचांगमें लगाते हैं उसको क्रम यह है कि, अयनांशके केवल अंशमात्रको मेषलग्नके शून्य० अंशमें घटानेसे जो राशि अंश प्राप्त हो उसी राशिके उतने अंशके कोठेमें (१२ कोष्ठ नीचे १२ राशियोंके और ऊपरके कोष्ठ अंशोंके शून्यादि २९ अंश पर्यंत ३० कोष्ठ बनावे) घटिकादि ०।० रखकर

फिर उसी कोठेसे प्रथम मेषलग्न प्रमाणके ३० वे भागको प्रतिकोष्ठमें जोडता जावे फिर वृषके लग्न प्रमाणका तीसवां भाग प्रत्येक कोष्ठमें जोड देवै । इसी क्रमानुसार १२ राशियोंके लग्नप्रमाणके ३० वें भागको जोडकर सब कोष्ठ भर जावेंगे और लग्न सारिणी बनजावेगी। यह सामान्य बात होनेसे उदाहरण नहीं दिया है केवल क्रमही बतलादिया। अथवा मेषादि १२ राशियोंके कोष्ठ बनाकर ३० अंशके ३० कोष्ठ बनाकर मेषके शून्यांशमें शून्य रखकर फिर मेषका ३० वां भाग प्रत्येक कोष्ठमें जोडकर फिर इसीप्रकार वृषादि सब राशियोंके अंशोंमें प्रत्येक कोष्ठमें जोडकर ६० घटीतक जोड लेवे यह निरयन सारिणी बनजावेगी। फिर सायन रवि (तात्कालिक) के राशि अंश तुल्यकोष्ठमें कलादिसे सानुपात करके घटिकादि भुक्त बना लेवे फिर उस लग्न प्रमाणमें भुक्तभाग घटाकर और जो २ राशियोंका प्रमाण घट सके उसे घटाकर जो शेष बच रहै वह वर्तमान लग्नका भुक्त भाग जानकर वह घटिकादि जो हों उनमें मेषादि गत लग्नोंका प्रमाण सब जोडकर जिस राशिके जितने सानुपात अंशादिकोष्ठमें त्रैराशिक क्रमसे जो राश्यादि प्राप्त होंय उसमें अयनांश घटादेवे। जो राश्यादि प्राप्त हो वह लग्न स्पष्ट होता है।

शुक्लप्रतिपदा या चन्द्रदर्शनज्ञानक्रम–जिस मासमें शुक्ल प्रतिपदाको चन्द्रदर्शन होगा या नहीं होगा ऐसा जानना हो तो उस समय सूर्य जिस राशिका हो और राहु जिस राशिके होंय सो चक्र नं० ४८ चन्द्रदर्शन सारिणीमें सूर्यराशिके सामने राहु राशिके नीचे कोष्ठमें जो अंक होय वह अलग रक्खै फिर अमावस्याकी घटीपलोंको ६० घटीमें घटाकर जो शेष रहै उसमें दिनमानको जोडदेवे जो अंक (घटिका अंक) प्राप्त होय वह अंक यदि सारिणीके कोष्ठांक (जो पूर्व अंक अलग रक्खा है) से अधिक होंय तो प्रतिपदाको चन्द्रदर्शन होगा। यदि न्यून हो तो प्रतिपदाको चन्द्रदर्शन न होगा ऐसा जाने।

शुक्ल प्रतिपदा चन्द्रदर्शन उदाहरण–जैसे संवत् १९८२ भाद्र शुक्ल प्रतिपदा १ गुरौको चन्द्रदर्शन होगा या नहीं ? यह जानना है

तो सूर्य सिंह राशिके हैं और राहु कर्क राशिके हैं तो चक्र नं. ४८ चन्द्रदर्शन सारिणीमें सूर्य सिंहके सामने और राहु कर्कके नीचेके कोष्ठमें अंक ६४ है और अमावस्या घटिकादि २९। ४४ को ६० घटिमें घटानेसे ३०।१६ रहा उसमें दिनमान घटिकादि ३२।२० को जोडा तो ६२। ३६ हुवा. पूर्वोक्त कोष्ठांक ६४ से न्यून है इसलिये चन्द्रदर्शन प्रतिपदाको नहीं होगा द्वितीयाको होगा । इसी प्रकार सदैव जानै ।

अब **भौमादि पंच ताराओंका उदयास्त तथा मार्गी वक्री आरम्भ होनेका समय जाननेका क्रम** लिखते हैं–चक्र नं. ५० सारिणीमें भौमादि पंच ताराओंके वक्रमार्ग उदयास्त होनेके द्वितीय शीघ्र केन्द्रके अंश प्रगट किये हैं उसी अनुकूल द्वितीय शीघ्रकेन्द्रके अंश जिस समय होंगे तब उदयास्त, या वक्रमार्ग गतिका आरम्भ होगा जिसका क्रम यह है कि, प्रत्येक अवधिके ग्रह स्पष्ट करनेमें जो अंतिम द्वितीय शीघ्रकेन्द्रके अंशादि हों उनको बराबर लिखता रहै. द्वितीय शीघ्रकेन्द्रके अंशोंको ३६० अंशोंमें घटाकर शेष अंशादिका ग्रहण करै. उदयास्त-वक्र-मार्गके अंशके निकटवर्ती जो अंश हो उनका परस्पर अन्तर करके उसकी कलादि करके अभीष्ट ग्रहकी शीघ्र केन्द्र-गति जो चक्र नं. ३६ वक्र ग्रह चरण प्रवेश सारिणीपर दी है. गतिकी कलादिका भाग (पूर्वोक्त अन्तरमें) देनेसे जो दिनादि लब्ध होय सो यदि अवधिके केंद्रांशसे वक्रादिका केन्द्रांश अधिक होय तो अवधिके वारादिकमें दिनादि ऋण करनेसे और न्यून होनेसे धन करनेसे वक्र आदिका वारादि स्पष्ट होता है क्योंकि केन्द्रगति वक्र है ।

उदाहरण–चक्र नं. ५० में देखनेसे मालूम हुवा कि, द्वितीय शीघ्र-केन्द्रके अंश २८ होनेपर भौम पूर्वमें उदय होता है तो भौम स्पष्ट करनेमें भौमके द्वितीय शीघ्रकेन्द्रके अंशादि २७।५३।४२ हैं इनका और पूर्वोक्त २८ अंशोंका परस्पर अन्तर किया तो अंशादि ०।६।१८ यह हुवा. इसकी कलादि ६। १८ में भौमकेन्द्रकी गति कलादि ३७।४२ ऋण (मध्यमगति ३१।२६ शीघ्रोच्चगति ५९। ८=

केन्द्रगति ३७४२) का (अर्थात् दोनोंका विकला बनाकर समराशि करके) ३७८÷ २२६२ भाग दिया तो लब्ध दिनादि ० । १० । १ हुवा. उदयांश २८ से केन्द्रांश न्यून होनेसे मार्ग शु० १५ बृहस्पति प्रातः ६ बजे (अवधिके समय) में ऋण करनेसे पूर्वदिने (बुधे) रात्रौ ५ बजकर ५६ मिनटपर मंगलका पूर्वोदय हुवा. अथवा उसदिन सूर्य्योदय ६ बजकर ५१ मिनटपर पूर्वोक्त है और भौम प्रातः बजेका (शीघ्रकेन्द्रांश) स्पष्ट है इसलिये ५१ मिनट और १० पलकी मिनट यह जोडकर ५५ मिनटकी घटिकादि २ । १८ हुई इनको ६० घटिमें घटानेसे घटिकादि ५७ । ४२ हुई अर्थात् पूर्वदिने मार्ग० शु० १४ बुधे कल० ५७ । ४२ भौमोदय पूर्व होगा. इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह (पंच तारा) का वक्री मार्गी तथा उदयास्त होनेका समय बनाना चाहिये ।

अब राशिचार तथा नक्षत्रचरण प्रवेश समय जाननेका क्रम उदाहरण सहित लिखते हैं–अवधिके स्पष्ट ग्रहोंके अंशादि राश्यादि देखनेसे और चक्र नं० ३६ और ३७ वक्री तथा मार्गी ग्रहके नक्षत्रचरण प्रवेशसारिणीके अंशादिको देखकर अवधिके ग्रहके अंशादिका अन्तरकी कलादि बनाकर उसी ग्रहकी स्पष्टगति कलादिका भाग देनेसे लब्ध दिनादिको यदि अवधिके अंशादि कम होवे तो दिनादिको अवधिके वारादिमें जोडदेवे यदि अवधि (जो १ पक्षमें अवधिपंक्ति रखते ") के अंशादि अधिक होवे तो उक्त फलको अवधिके वारादिमें घटाय देवे और यदि ग्रह वक्री होवे तो विपरीत संस्कार करे अर्थात् जोडनेके स्थान घटावे और घटानेके स्थान जोड-देवे जो वारादि होय (अवधिके जितने दिन आगे या पीछे) उसी समय अभीष्ट ग्रह अभीष्ट नक्षत्र चरण तथा अभीष्ट राशिमें प्रवेश करेगा । परंतु इतना ध्यान अवश्य चाहिये जैसे (सारिणीमें) राश्यादि ०।०।०।० में मार्गी ग्रहप्रवेश करनेमें अश्विनीनक्षत्रे प्रथमचरणे मेषे प्रवेश होगा । और यदि वक्री ग्रह है सो रेवती नक्षत्रे चतुर्थचरणे वक्र गत्या मीने प्रवेश होगा इसी प्रकार सर्वत्र जानना चाहिये । (मार्गीके क्रमसे १ चरण पीछे करनेसे वक्रीका क्रमजाने) इत्यादि ।

उदाहरण-जैसे मार्ग शुक्ल १९ गुरुमें स्पष्ट भौम राश्यादि ७।९। ५०।५८ है और चक्र नं० ३७ सारिणीमें राश्यादि ७।६।४०।० इस परिमित अनुराधानक्षत्रका प्रथमचरण समाप्त होकर द्वितीय चरण आरम्भ होता है इसलिये उनका परस्पर अन्तर किया तो कलादि ४९।२ यह अन्तर हुवा इसमें भौमकी स्पष्टगति कलादि ४१।२४ का भाग देनेके लिये दोनोंकी विकला बनाकर (४९४२ ÷ २४८४) भाग दिया तो लब्ध दिनादि १।११।३ हुए इसको अवधिका ग्रह स्पष्ट सारिणीसे राश्यादिसे न्यून होनेसे धन अर्थात् मार्ग शु० १९ गुरौ प्रातः ६ बजेमें धन अर्थात् सूर्योदय ६ बजकर ५१ मिनटपर है इसलिये प्रातः ६ बजेका समय बुधेष्ट ५७। ५३ यह है अतः इसहीमें पूर्वोक्त फल दिनादि १।११।३ (४।५७। ५३ × १।११।३) को धन किया तो=६ । ८ । ५६ वारादि पौषकृष्ण १ प्रतिपदा शुक्रे घटिकादि ८।५६ पर अनुराधा नक्षत्रके द्वितीय चरणमें भौमका प्रवेश होना जाने यही पञ्चांगमें लिख देवे। इसी प्रकार ग्रहोंका राशिचार नक्षत्रचार आदि बनाना चाहिये यह। मार्गी ग्रहका हुवा. यदि यहही वक्री ग्रह हो तो धनके स्थान फल ऋण किया जाता है और १ चरण घटाकर अर्थात् अनुराधाप्रथमचरणे वक्र लिखाजाता है।

अश्विन्यादिनक्षत्रोंका उदय मध्य क्रम होनेपर लग्न ज्ञान क्रम उदाहरण सहित लिखते हैं-चक्र नं० ५३ सारिणीमें उदय मध्य अस्त परिमित लग्न राश्यादि लिखी हैं वही जाने। उदाहरण-जैसे हस्तनक्षत्रका उदयराश्यादि ५।२४।५४।० और मध्य (जब नक्षत्र शिरपर हो) राश्यादि ८।१९।५४।० और अस्त राश्यादि ११।१२।४४।० पर हुवा यह चक्र नं. ५३ से जाने। इस प्रकार सब नक्षत्रोंका सारिणीके अनुकूल जाने।

अब चन्द्रसूर्य्यके ग्रहणके गणितका क्रम तथा उदाहरण लिखनेके पहले प्रथम ग्रहण सम्भव ज्ञान लिखते हैं-ग्रहण सम्भवज्ञानमें अपनी बनाई पंचांगरत्नावली पुस्तक जो सन् १९०५ लखनऊ प्रिंटिंग प्रेसमें

छपी थी लिख चुका हूं वह यह है कि, सूर्य अथवा चन्द्रमा ग्रहण होनेके १५ दिन बाद अथवा ५½ या ६ या ६½ महीना बाद पुनः ग्रहण पडनेका सम्भव होता है और पर्वांतकालीन स्पष्ट रविमें राहु घटानेसे जो शेष रहे वह व्यग्वर्क होता है व्यग्वर्क मेषादौ हो तो उत्तर और तुलादौ हो तो दक्षिण होता है इस व्यग्वर्कके भुजांश करलेवे यह भुजांश १५ अंश होवे तो सूर्यचन्द्र ग्रहणका सम्भव होता है परंतु सूर्य ग्रहणमें विशेषता यह है कि व्यग्वर्क दक्षिण होय तो व्यग्वर्क भुजांशके अंश ८ अंशतक होवे तब एतद्देशमें सूर्य ग्रहण होता है और यदि व्यग्वर्क उत्तर होय तो व्यग्वर्कके भुजांश ८ अंशसे अधिक होय तबही सूर्य ग्रहण एतद्देशमें होता है अन्यथा नहीं और ग्रहण सम्भव होनेपरभी यदि अमावस्याका अंत दिनमें होय तब सूर्यग्रहण दिखलाता है और पूर्णिमाका अंत रात्रिमें हो तब चन्द्रग्रहण दिखलाता है। ग्रहलाघवमें सूर्य ग्रहणके सम्भवमें केवल इतनाही लिखा है कि व्यग्वर्क दक्षिणमें होयँ तो भुजांश ८ अंशतक होवे तब सूर्य ग्रहण होता है इसका पूरा भावार्थ स्पष्ट नहीं करनेसे यह त्रुटि समझी जाती है परंतु ऐसे विद्वान्के कार्यमें त्रुटिका होना उचित नहीं जानकर मैं इस विषयमें यह लिखता हूं कि उनका भावार्थ इस प्रकार है कि व्यग्गु दक्षिणके भुजांश ८ से कम होनेपर जब सूर्य ग्रहणका सम्भव है तो इसके विपरीत उत्तरमें व्यग्गु होनेपर ८ अंशसे अधिक होनेपर सूर्य ग्रहणका सम्भव जाने। जैसे कोई फल मेषादौ ऋण कहनेसे यह भावार्थ होता है कि तुला-दौमें धन होना चाहिये इत्यादि। (व्यग्गु दक्षिणके भुजांश ८ तक और व्यग्गु उत्तरके भुजांश ८ से १५ तकमें सूर्य ग्रहणका सम्भव जाने) यह इसीलिये रक्खे गये हैं कि चन्द्रकक्षासे सूर्यकक्षा ऊपर है और सूर्य ग्रहणमें सूर्यको चन्द्रमा ढकलेता है चन्द्रशर दक्षिणोत्तरवशात् सूर्यके दक्षिणोत्तर चन्द्रमा पश्चिमसे पूर्वको जाता है इसलिये सूर्य ग्रहण पश्चिमसे स्पर्श और पूर्वकी तरफ मोक्ष होता है और चन्द्रशरके अनुसार दक्षिण वा उत्तरकी तरफसे होकर जाता है–और सूर्यके ठीक नीचे जब चन्द्रमा होता है ग्रहणके समयमें उत्तर या दक्षिणको हटाहुवा उस समय

पृथ्वीके बीच अर्थात् लंकादेशके पूर्वापर सूत्रदेशमें ठीक ऊपर सूर्य होनेसे ग्रहण ठीक मालूम होता है और चन्द्रशर दक्षिण अर्थात् चन्द्र दक्षिणको हटा हुवा हो और लंकासे उत्तर जितने अधिक दूरवाले देशोंमें तिरछा पडनेसे सूर्य साफ दिखलाताहै लंकासे दक्षिणवाले देशोंमें अधिक ढकाहुवा दिखलाता है इसका विपरीत उत्तरशर होनेसे जाने जैसे लंकाके पूर्वापरसूत्रके देशमें सूर्यग्रहण २ अंगुल ग्रास है और चन्द्रशर दक्षिण है तो लंकाके मध्य सूत्रसे जितनी दूर उत्तर जानेपर सूर्य बिल्कुल साफ दिखलावेगा (२ अंगुल संस्कार ऋण होगया) तथा लंकाके मध्यसूत्रसे दक्षिण उतनीही दूर जानेसे (संस्कार धन होनेसे) २ अंगुलग्रासके स्थान वहांपर ४ अंगुल ग्रास दिखलावेगा जैसे आकृतिमें सूर्यके नीचे चन्द्र दिखलाया है इसको जामेट्री रेखा गणित जाननेवाले कोण समकोण बनाकर भले प्रकार समझ सकेंगे और इस बातकाभी ध्यान रखना चाहिये कि सूर्य

पूर्व

उत्तर सूर्य चन्द्र दक्षिण

पश्चिम

ग्रहण १ अंगुल या अंगुलसे कमका ग्रास होनेसे नहीं दिखलाता है. क्योंकि, तीव्रप्रभाके कारण नहीं मालूम होता और स्पर्शकालके समयके कुछ कालबाद स्पर्श दिखलाता है और मोक्षकालसे कुछ समय पहलेहीसे मोक्ष मालूम होता है यहभी तीव्रप्रभाका कारण है.

अब सूर्य चन्द्र-ग्रहण स्पष्ट करनेका ग्रहलाघवीयक्रम लिखते हैं.

चन्द्र ग्रहणक्रम–पूर्णिमांत कालके स्पष्टसूर्यमें राहुको घटानेसे शेष व्यगर्वक होता है व्यगर्वकके भुजांश करलेवे (व्यगर्वक मेषादी

---

१ नोट–गंगाधर बृहत्सारिणीमें–सूर्यग्रहणके विषयमें भलेप्रकार ग्रहणभागी (आकृति) बनाकर स्पष्ट समझाया है।

उत्तर तुलादौ दक्षिण होता है) यदि भुजांश १५ अंशसे कम होय तो ग्रहणका सम्भव होता है जैसे पूर्व कहचुके है. संभव होनेपरभी यदि पूर्णिमाका अंत रात्रिमें होय तो चन्द्रग्रहण दिखलाता है, और अमांत दिनमें होय तो सूर्य ग्रहण दिखलाता है अन्यथा नहीं, व्यग्वर्कके भुजांशोंको ११ से गुणाकर ७ का भाग- देनेसे जो अंगुलादि लब्ध होय वह चन्द्रशर होता है। व्यग्वर्क मेपादौ हो तो शर उत्तर तुलादौ हो तो शर दक्षिण होता है। सूर्यकी स्पष्ट गतिको २ से गुणा करके ११ का भाग देनेसे जो अंगुलादि लब्ध होय वह सूर्यबिंब होता है और चन्द्रकी स्पष्टगतिमें ७४ का भाग देनेसे जो अंगुलादि लब्ध होय वह चन्द्र बिंब होता है और चन्द्रकी स्पष्ट गतिमें ७१६ घटाकर जो शेष रहै उसमें २२ का भाग दे तब जो लब्ध होय उसमें ३२ युक्त करदे जो अंक योग होय उसमें सूर्यकी स्पष्टगतिका सप्तमांश घटाय दे जो शेष रहै वह अंगुलादि भूभाबिंब (राहुबिंब) होता है।

सूर्यग्रहणमें सूर्यको चन्द्रमा आच्छादन करता है (ढकलेता है) और चन्द्रग्रहणमें चन्द्रमाको पृथ्वीकी छाया (राहु) आच्छादन करता है अर्थात् सूर्य ग्रहणमें सूर्य छाद्य और चन्द्रमा छादक और चन्द्र ग्रहणमें चन्द्र छाद्य राहु छादक होता है, छाद्य और छादक इन दोनोंके बिंबोंके योगका आधा मानैक्य खंड होता है मानैक्यखंडमें चन्द्रशरको घटानेसे (चन्द्रग्रहणका ग्रास) ग्रास होता है। यदि मानैक्य खण्डके प्रमाणसे शर अधिक होय तो ग्रहण नहीं होता यथा (शराधिक्यात् ग्रहणं न स्यात्) और छाद्यके बिंबमें ग्रास घटानेसे शेष बिंब होता है। यदि छाद्य बिंब प्रमाणसे ग्रास बिंब अधिक होय तो ग्रासमें छाद्य बिंब घटानेसे शेष खग्रास होता है। यह सब अंगुलादि जाने।

अब ग्रहणकी मध्यस्थिति तथा खग्रासकी मर्दस्थिति[1] लानेका क्रम लिखते है–मानैक्य खंडमें शरयुक्त करके १० से गुणाकरके फिर गुणनफलको ग्रासमे गुणाकरके जो गुणनफल

---

१ सम्पूर्ण ग्रहणे सम्मीलनोन्मीलनकालयोरन्तरकालो मर्दः ।

होय उसका वर्गमूल निकालकर उसको ९ से गुणाकरके ६ का भागदे तब जो लब्धि होय उसमें चन्द्र बिंबके प्रमाणका भाग दे जो घटिकादि लब्धि होय वह मध्य स्थिति होती है । और मन्दस्थिति लानेका क्रम यह है कि, छाद्य और छादक इन दोनोंके बिंबोंके अन्तरका आधा उसमें शरयुक्त करके पूर्ववत् क्रिया करे परंतु इसमें ग्रासकी जगह खग्राससे गुणा करके और सम्पूर्ण क्रिया पूर्ववत् करे (मध्यस्थितिवत् करे) तब जो लब्धि होय वह घटिकादि मंद स्थिति होती है ।

अब स्पर्शस्थिति मोक्षस्थिति तथा स्पर्श मर्द मोक्ष मर्द बनानेका क्रम लिखते हैं–व्यग्वकके भुजांश द्विगुण मान तुल्य पलात्मकको यदि व्यग्वर्क ५ राशि १६ अंशसे ६ राशितक होय तथा ११ राशि १६ अंशसे १२ राशितक होय तो पूर्वोक्त पलात्मक मध्य स्थितिमें और मर्द स्थितिमें घटानेसे स्पर्शस्थिति और स्पर्श मर्द होता है और जोडनेसे मोक्ष स्थिति और मोक्ष मर्द होता है, यदि व्यग्वर्क शून्य राशिसे १४ अंशतक तथा ६ राशिसे ६ राशि १४ अंशतक होय तो जोडनेसे स्पर्शस्थिति और स्पर्शमर्द होता है और घटानेसे मोक्षस्थिति और मोक्षमर्द होता है ।

अब स्पर्शकाल और मोक्षकाल जाननेका क्रम लिखते हैं– पूर्णिमा तिथिका जो अंत है वह चन्द्र ग्रहणका मध्यमकाल होता है । मध्यमकालमें स्पर्शस्थितिको घटानेसे स्पर्शकाल और मध्यमकालमें मोक्षस्थितिको जोडनेसे मोक्षकाल होता है, मोक्षकालमें स्पर्शकाल घटानेसे पर्वकाल घटिकादि होती हैं । और मोक्षकालमें स्पर्शमर्द घटानेसे सम्मीलनकाल और मोक्षमर्द जोडनेसे उन्मीलनकाल होता है तथा उन्मीलनकालमेंसम्मीलनकाल घटानेसे खग्रासकापर्वकाल होता है ।

अब अयनवलन साधनकी रीति लिखते हैं–सूर्यग्रहणके विषय स्पष्ट रविमें ३ राशि मिलावे और चन्द्रग्रहणके विषयमें स्पष्ट रविमें ३ राशि घटावे तिसके बाद उस रविमें अयनांश जोडकर सायन

भुजांश करे फिर तीन खण्डोंसे यथा प्रथम खण्ड ७ द्वितीय खण्ड ५ तृतीय खण्ड १इन तीन खण्डोंद्वारा दिनमान चर साधनकी समान साधन करे तब अंगुलादि वलन होता है। सायन् रवि मेषादी हो तो उत्तर और तुलादी हो तो वलन दक्षिण होता है, इसको अयनवलन कहते हैं।

मध्यनत जाननेका क्रम–चन्द्रग्रहणके मध्यकालमें दिनमानको घटाकर जो शेष रहे उसका और राज्यर्द्धका अंतर करे तब मध्यनत होता है वह यदि चन्द्रग्रहणका मध्यकाल पूर्व रात्रिके विषय हो तो नत पूर्व और उत्तर रात्रिमें होय तो मध्यनत पश्चिम होता है। इसी प्रकार सूर्यकालका मध्यमकाल और दिनार्द्धका अन्तर करे तब जो शेष हो वह मध्यनत होता है। यदि सूर्यग्रहणका मध्यमकाल मध्याह्न पहले होय तो मध्यनत पूर्व औरमध्याह्नके बाद होय तो मध्यनत पश्चिम होता है-अर्थात् राज्यर्द्ध तथा दिनार्द्ध और ग्रहण मध्यकालका अन्तर जाने।

अक्षवलन साधनकी रीति–मध्यनतमें ५ का भाग देकर जो राश्यादि लब्धि होय उसमें अयनांश न मिलाकर तिससे तीनों चरखंड (७।५।१) इन खंडोंको मानकर पूर्वोक्त क्रमानुसार वलन साधे और उसको पलभासे गुणा करके जो गुणन फल होय उसमें ५ का भाग देय तब जो लब्धि होय वह अंगुलादि अक्षवलन होता है, यदि मध्याह्न पूर्व हो तो अक्षवलन उत्तर और मध्यनत पश्चिम होय तो अक्षवलन दक्षिण होता है। पूर्वोक्त अयनवलन और अक्षवलन इन दोनोंकी एक दिशा होय तो दोनोंका योग करले यदि दोनोंकी भिन्न दिशा होय तो दोनोंका परस्पर अन्तर करलेवे तिसके बाद उसमें ६ का भाग दे तब जो अंगुलादि लब्ध होय वह वलनांघ्रि होते हैं उनकी दिशा पूर्वोक्त अंक योग या अन्तरकी जो दिशा हो वही दिशा होती है।

अब ग्रासांघ्रि तथा खग्रासांघ्रि जाननेका क्रम लिखते हैं– ग्रासको ६० से गुणा करके जो गुणन फल हो उसमें मानैक्य खंडका भाग देवे तब जो लब्धि होय उसका वर्गमूल निकाले वह अंगुलादि

ग्रासांघ्रि होते हैं और खग्रासमें १ अंगुल ३० प्रति अंगुल युक्त कर देय तब अंगुलादि खग्रासांघ्रि होते हैं।

अब **सूर्यग्रहणके गणितका** क्रम लिखते हैं-अमावस्याके *अंतकी लग्न करके उसमें ३ राशि घटाय दे तब त्रिभोन लग्न होती है।*

अब पहले **सूक्ष्म क्रांति साधन** क्रम लिखते हैं-सायनार्क रविके भुजांश करके भुजांशों (९० अंशों भुज) में २४० अंशका दशवा भाग २४ अंश होते हैं-२४ अंश प्रति १ कोष्ठ जाने, १० का भाग देवे जो लब्ध होय उस कोष्ठ तकके सब अंक जोड लेवे या नीचेके कोष्ठके योगांक लेलेवे (चक्र आगे यहांही है) फिर शेषसे

१	२	३	४	५	६	७	८	९	लब्धांश
४०	४०	३७	३४	३०	२५	१८	१२	४	अंशाक सूक्ष्म क्रांति.
४०	८०	११७	१५१	१८१	२०६	२२४	२३६	२४०	अंशके योगांक.

आग्रिम कोष्ठांकको गुणा करके १० का भाग देनेसे जो लब्ध अंशादि होय वह पूर्वोक्त योगांकमें मिलाकर सानुपात बनालेवे फिर उसमें १० का भाग देनेसे जो अंशादि लब्ध होय वह सूक्ष्म क्रांति होती है। यदि सायन रवि मेषादौ होय तो उत्तर और तुलादौ हो तो क्रांति दक्षिण होती है यदि सायनार्क रवि मेषादौ होय तो उत्तर और तुलादौ हो तो क्रांति दक्षिण होती है। अब पूर्वोक्त त्रिभोन लग्नमें अयनांश मिलाकरे भुजकरके भुजांशोपरिपूर्वोक्त क्रमसे सूक्ष्म क्रांति लावे, यदि त्रिभोन लग्न सायन मेषादौ होय तो उत्तर और तुलादौ होय तो क्रांति दक्षिण जाने, इस क्रांति और स्वदेशीय अक्षांशोंका परस्पर संस्कार करे। (अर्थात् एक दिशाके होनेपर योग और भिन्न दिशाके होनेपर वियोग) तब उसी संस्कार दिशावत् नतांश होते हैं। नतांशोंमें २२ का भाग देय जो लब्ध होय उसका वर्ग करे वर्ग यदि २से अधिक होवे तो उसमें २ घटाकर उसका आधा करके पूर्वोक्त वर्गमें जोड देवे और १२ अंश और जोड देवे तब हार होता है। स्पष्टरवि और त्रिभोन लग्न इन दोनोंका अन्तर करके जो अंश हो उनमें १० का भाग देवे जो लब्ध होय उसको १४ में घटाकर जो शेष रहे उसको पूर्वोक्त लब्धसे परस्पर

गुणाकरे जो गुणनफल होय उसमें हारका भाग देवे जो लब्धि होय वह घटिकादि लंबन होता है । इसको, यदि त्रिभोन लग्न सूर्यसे अधिक होय तो धन और न्यून होय तो ऋण जाने । इसका संस्कार अमावस्यांत घटिकादिमें करनेसे लंबन संस्कृत अमांत होता है। यहही सूर्य ग्रहणका मध्यकाल है । सूर्य ग्रहणमें पूर्वोक्त लंबनको १३ से गुणाकरके गुणनफलको कला मानकर व्यग्वर्कमें लंबनकी समान धन ऋण करे तब लंबन संस्कृत व्यग्वर्क होता है । सूर्य ग्रहणमें इसही व्यग्वर्कसे चन्द्रशर चन्द्रग्रहणमें कही हुई रीतिसे लावे । लंबनको ६से गुणाकरके गुणनफलको अंशादि जानकर त्रिभोन लग्नमें लंबनकी समान धन ऋण करे तब लंबन संस्कृत त्रिभोन लग्न होता है ·लंबन संस्कृत त्रिभोन लग्नमें अयनांश जोडकर सायन भुजांशसे पूर्वोक्त क्रमानुसार सूक्ष्मक्रांति लावे उस क्रांतिका और स्वदेशीय अक्षांशोंका परस्पर संस्कार करे तब लंबन संस्कृत त्रिभोन लग्नोत्पन्न नतांश होतेहै लंबन संस्कृत त्रिभोन लग्नोत्पन्न नतांशोंमें १० का भाग दे जो कलादि लब्धि होय उसको १८ कलामें घटावे जो शेष रहै उसको पूर्वोक्त लब्धसे परस्पर गुणाकरे तब जो गुणनफल होय उसको. ६ अंश १८ कलामें घटावे जो शेष रहै उसको कलात्मक मानकर गुणन फल कलादिमें भाग दे तब जो लब्ध होय वह अंगुलादि नति होती है पूर्वोक्त नतांशकी दिशावत् होती है, फिर इस नतिका और पूर्वोक्त चन्द्रशरका परस्पर संस्कार करे तो स्पष्टशर होता है इस स्पष्ट शरसे ही सूर्यग्रहण विषय चन्द्रग्रहणमें कही हुई रीतिसे सूर्यचन्द्र बिंब मानैक्य खंड ग्रास मध्यस्थितिको साधे ।

अब स्पर्श मोक्षकाल जाननेका क्रम लिखते हैं–मध्यम स्थितिको ६ से गुणा करे जो अंशादि लब्ध होय उसको त्रिभोन लग्नमें घटावे तब स्पर्शकालीन त्रिभोन लग्न होती है फिर उसमें अयनांश जोडकर पूर्वोक्त क्रमानुसार क्रांति लाकर अक्षांशोंका संस्कार करके नतांश साधे तिन नतांशोंसे पूर्ववत् हार लावे । और मध्यस्थिति घटिकादिका

चालन ऋण जानकर दर्शांतकालीन सूर्यमें चालन ऋण देकर स्पर्श-कालीन सूर्य स्पष्ट करे फिर स्पष्ट कालीन सूर्य और स्पष्ट त्रिभोन लग्न और हार इनसे पूर्वोक्त रीतिके अनुसार लंबन साधे वह स्पर्श-कालीन लंबन होता है ।

इसी प्रकार मध्यस्थितिको ६ से गुणाकरके जो अंशादि होय उसे त्रिभोन लग्नमें धन करे तब वह मोक्षकालीन त्रिभोन लग्न होती है तिससे पूर्वोक्त रीतिके अनुसार हार लावे और दर्शांतकालीन सूर्यमें मध्यस्थिति घटिकादिका धन चालन करके मोक्षकालीन सूर्यस्पष्ट करे फिर मोक्षकालीन सूर्य और मोक्षकालीन त्रिभोन लग्न और हार इनसे पूर्ववत् लंबन साधे तब वह मोक्षकालीन लंबन होता है फिर दर्शांतकी घटिकाओंमेंसे मध्यस्थितिकी घटिकाओंको घटावे जो शेष रहे उसमें स्पर्शकालीन लंबन धन होय तो जोडदेवे लंबन ऋण होय तो घटाय दे तब जो होय वह घाटिकादि सूर्य ग्रहणका स्पर्शकाल होता है इसी प्रकार दर्शांत घटिकाओंमें मध्यस्थितिको जोड देवे तब जो होय उसमें मोक्षकालीन लंबन धन होय तो जोड देवे यदि ऋण होवे तो घटाय देवे तब घटिकादि सूर्य ग्रहणका मोक्षकाल होता है ।

खग्रासक्रम-यदि सूर्यग्रहण खग्रास होय तो खग्रास और बिंबां-तर इनमें मर्दस्थिति (पूर्वोक्तक्रमसे) लावे फिर मर्दस्थितिको ६ से-गुणाकरके जो अंशादि होय उसको त्रिभोन लग्नमें घटावे तब स्पर्श त्रिभोन लग्न होती है । और जोडनेसे खमोक्ष त्रिभोन लग्न होती है । फिर ऊपर कहे हुए क्रमसे खस्पर्शकालीन लंबन और खमोक्षकालीन लंबन लावे फिर दर्शांत घटिकाओंमें मर्द स्थितिको घटाकर खस्पर्श लंबनका संस्कार करे तब सम्मीलन काल होता है । और दर्शांतकी घटिकाओंमें मर्दस्थितिको जोडकर खमोक्ष लंबनका संस्कार करे तब घटिकादि उन्मीलनकाल होता है । उन्मीलनकालमें सम्मीलनकाल घटानेसे खग्रासका पर्वकाल होता है । एक अंगुलसे कम होनेपर सूर्य ग्रहण नहीं दिखाता है ।

सूर्यग्रहणमें सूर्यग्रास जाननेकी अन्य सरल रीति– पर्वांत कालीन नतघटिकाओंमें ४ का भाग देनेसे जो राश्यादि लब्ध होय अथवा नत घटिकाओंको ७ ३/२ से गुणाकरे गुणनफल अंशादि जाने। अंशोंकी राश्यादि बना लेवे दोनों क्रियाओंका फल एकही है। दिनार्द्ध और अमांतका जो अन्तर है वही नत है अमात दिनार्द्धसे पूर्व होय या पूर्व पश्चिम होय तो नत पश्चिम जाने। पूर्वोक्त राश्यादिको यदि नत पूर्व होय स्पष्टसूर्यमें घटाय देवे। यदि नत पश्चिम होय तो उक्त राश्यादिको स्पष्ट सूर्यमें जोड देवे फिर उसमें अयनांश मिलाकर सूक्ष्मक्रांति साधकर उस सूक्ष्मक्रांति और स्वदेशीय अक्षांशका परस्पर संस्कार करें तब नतांश (संस्कारदिशावत्के) होते हैं। तिन नतांशोंमें ६ का भाग देकर जो लब्ध हो उसको नतांशकी दिशाका जाने। फिर व्यग्वर्क जिस गोलमें उत्तर या दक्षिण हो लंबन संस्कृत व्यग्वर्कके भुजांश और पूर्वोक्त भाग लब्धका परस्पर संस्कार करे (एक दिशा होनेसे योग, भिन्न दिशामें वियोग यह संस्कार होता है) तब स्पष्ट नतांश होते है यदि स्पष्ट नतांश ७ से अधिक होवे तो सूर्य ग्रहण नहीं होता है। इसका ध्यान रखे (मेरी सम्मति यह है कि यदि स्पष्ट नतांश ६ से अधिक होय तो ग्रहण नहीं होगा और स्पष्ट नतांशोंको ६ अंशमें घटाकर कही हुई क्रिया करे) स्पष्ट नतांशोंको ७ अंशमें घटाकर जो शेष रहे उसका ड्योढा अर्थात् ३ से गुणा करके २ का भाग देवे जो अंगुलादि लब्ध होय वह सूर्य ग्रहणका अंगुलादि ग्रास होता है।

अब सूर्य चंद्र ग्रहणकी स्पर्शदिशा मध्यदिशा मोक्षदिशा जाननेका क्रम–छायबिंब प्रमाणके अर्द्ध परिमित सूत्र (व्यासार्द्ध) से एक वर्तुल खेंचकर उस वर्तुलके मध्य दिशाओंकी रेखा काढकर एकसे ३२ भाग करे फिर शरकी जो दिशा होय उत्तर अथवा दक्षिण उस दिशाके बिंदुसे यदि वलनांग्रि उत्तर होय तो उलटे क्रमसे द्वारकी दिशा देय अर्थात् बांय हाथकी ओरसे दाहिने हाथकी ओरको देय और यदि वलनांग्रि दक्षिण होय तो क्रमसे अर्थात् दाहिने हाथकी ओरसे

वाम हाथकी ओरको देय तो उस दिशामें ग्रहणका मध्य होता है । और उससे अन्य दिशा (सामनेकी दिशा) में खग्रासक अथवा शेष बिंबका मध्य होता है ग्रहणके मध्य चिह्नके पाससे ग्रासांघ्रि पूर्वकी ओरको देय तहां चन्द्रग्रहणका स्पर्श होता है और पश्चिमकी ओरको देय तहां चन्द्रग्रहणका मोक्ष होता है सूर्य ग्रहणका इससे विपरीत होता है अर्थात् मध्य चिह्नके पाससे ग्रासांघ्रि पश्चिमकी ओरको देय तहां सूर्य ग्रहणका स्पर्श होता है और पूर्वकी ओरको देय तहां सूर्य ग्रहणका मोक्ष होता है । इसी प्रकार खग्रासके मध्य चिह्नके पाससे खग्रासांघ्रि पश्चिमकी ओरको देय तहां चन्द्रग्रहण खग्रासका स्पर्श होता है । और पूर्वकी ओरको देय तहां चन्द्रग्रहण खग्रासका मोक्ष होता है और सूर्य ग्रहण खग्रासका इससे विपरीत होता है अर्थात् खग्रासके मध्य चिह्नसे खग्रासांघ्रि पूर्वकी ओरको देय तहां सूर्यग्रहण खग्रासका स्पर्श होता है और पश्चिमकी ओरको देय तहां सूर्यग्रहण खग्रासका मोक्ष होता है । इति ग्रहलाघवीयक्षेपक ॥

अब मकरन्दीय ग्रहण गणित लिखते हैं ।

चन्द्रग्रहण गणितक्रम–पूर्णिमांते जो नक्षत्र होवे उस नक्षत्रकी सर्वर्क्ष मान जो घटिकादि होय उस घटिकादि परिमित चक्र नं ४५ सारिणीद्वारा सानुपात अंगुलादि चन्द्रबिंब और राहुबिंब लावे फिर पूर्णिमांते स्पष्ट सूर्य जिस राशिके होय उस राशितुल्य चक्र नं ४६ सारिणीसे जो प्रतिबिंब फल गतांशोंके अनुसार सानुपात जो अंगुलादि फल प्राप्त होय वह पूर्वोक्त राहुबिंबमें जोडनेसे जो प्राप्त होय वह स्पष्ट भूभाबिंब (राहु बिंब) अंगुलादि होता है (पूर्वोक्त-राहुका बिंबफल सदा धन जाने) फिर छादकबिंब (राहुबिंब) और छाद्यबिंब (चन्द्रबिंब) इन दोनोंके योगका आधा कर लेवे । उसे मानैक्यखंड कहते हैं फिर मानैक्यखण्डमें चन्द्रशरको घटानेसे शेष चन्द्रग्रास होता है यदि मानैक्य खंडकी अपेक्षा चन्द्रशर अधिक होनेसे नहीं घटसके तो ग्रहण नहीं होता है ।

अब चन्द्रशर साधन क्रम लिखते हैं-पूर्णिमान्तकालीन स्पष्ट चन्द्रमें स्पष्ट राहु घटाकर जो शेष रहे वह सपात चन्द्र होता है उसके अंशादि करलेवे जो ६ राशिसे कम हो तो उसीके अंशादि करलेवे जो ६ राशिसे अधिक हो तो १२ राशिमें घटाकर जो रहे इसके अंशादि परिमित चक्र नं ४२ सारिणीसे सानुपात जो प्राप्त हो उसमें ६ का भाग देनेसे लब्ध अंगुलादि चन्द्रशर होता है। सपातचन्द्र तुलादी हो तो चन्द्रशर उत्तर और मेषादी हो तो दक्षिण जाने।

अब मध्यस्थिति साधन क्रम लिखते हैं-ग्रासके अंगुल परिमित चक्र नं. ५७ सारिणी द्वारा सानुपात घटिकादि मध्यस्थिति लावे। इति चन्द्रग्रहणम्॥

अब सूर्यग्रहण साधनक्रम लिखते हैं।

अमावस्यान्तमें स्पष्ट सूर्य जिस राशिके होय तत्तुल्य चक्र नं. ४६ -सारिणी- द्वारा अंशोंसे अनुपात करके सानुपात अंगुलादि सूर्यबिंब लावे और चक्र नं ४५से सर्वर्क्ष द्वारा सानुपात चन्द्रबिंब लावे।

अब लंबन साधन क्रम लिखते हैं-त्रिभोन लग्न और सूर्यका अन्तर करे ३ राशिसे कम होनेपर ९० अंश होते हैं उन अंशोंमें ६ का भाग देवे जो लब्ध होय उस परिमित चक्र नं ४३ सारिणीसे सानुपात घटिकादि लंबनसाधे, सूर्यसे त्रिभोन लग्न अधिक होवे तो लंबन धन और न्यून होवे तो लंबन ऋण जाने।

पूर्वोक्त चक्र नं ४३ सारिणीसे सानुपात स्थूल क्रांति साधन क्रम-सायन सूर्य (सायनग्रहके भुजांश) के भुजांश करके, ६ का भागदेवे लब्ध परिमित चक्र नं. ४३ सारिणी द्वारा सानुपात घटिकादि स्थूल क्रांति लावे फिर उसे ६ से गुणा करे तव स्थूल क्रांति होती है। अथवा चक्र नं. ४३ में कोष्ठ ३० हैं जिसके ६ गुणा १८० अंश अर्थात् ६ राशि हुई सो सायन ग्रह यदि ६ राशिसे अधिक होय तो १२ राशिमें घटाकर शेष राश्यादिके अंशादि बनाकर अंशोंमें ६ का भाग

देकर लब्ध परिमित चक्र नं. ४३ से सानुपात घटिकादि स्थूल क्रांति लावे दोनों साधनोंका परिणाम एकही है ।

अथ सूक्ष्म क्रांति साधन क्रम–सायन लग्न अथवा सायन ग्रहके भुजांशकरके अंशोपरि चक्र नं० ३९ सारिणीसे सानुपात घटिकादि सूक्ष्म क्रांति साधन करे ।

अथ शर साधन क्रम–स्पष्ट चन्द्रमें राहु घटानेसे सायन चन्द्र होता है जिसके भुजांश परिमित चक्र नं. ४० सारिणी द्वारा सानुपात कलादि शर लावे फिर उसमें ३ का भाग देनेसे अंगुलादि शर होता है सायनचन्द्र मेषादी होय तो शर दक्षिण, तुलादी होय तो शर उत्तर होता है उन्नतांशोपरि द्वादश अंगुल शंकु छाया साधन उन्नतांशोपरि चक्र नं. ५५ सारिणीद्वारा सानुपात अंगुलादि छाया साधे ।

इति ग्रहणाधिकार समाप्त ।

अथ सूर्य चन्द्र ग्रहणका उदाहरण दिखलाते हैं । तहां प्रथम चन्द्र ग्रहणका गणित करते हैं–सम्वत् १९८४ शाके १८४९ मार्ग शुद्ध १५ गुरौ इसदिन चन्द्रग्रहण होगा जिसका गणित करते हैं । पूर्वोक्त मार्ग शु० १५ गुरौका उदयकालीनस्पष्टसूर्य ७ । २१ । ५६ २४ । गति ६१ । ११ और स्पष्टचन्द्र १ । १३ । १३ । ५१ गति ८५१ । २२ है । और प्रातः ६ बजेके राहु (१ । २८ । ५ । ८)में चरचालन ५१ मिनटका चर १२८ पल यानी घटिकादि २।८ धन चालन वक्री ग्रह होनेसे ऋण करके उदयकालीन राहु १ । २८।५।१ हुवा और स्पष्ट सूर्य चन्द्रसे लाई हुई पूर्णिमा तिथि घटिकादि ३९ । ४५ हैं । यह पर्वान्त कालही चन्द्रग्रहणका मध्यकाल है । अब दर्शांत घटिकादि ३९ । ४५ का चालन देकर पर्वान्तकालीन स्पष्ट सूर्य चन्द्र और राहु बनाते हैं । सूर्यगति ६१ । ११ से ३९ । ४५ चालनको गुणाकरके ६० का भाग देनेसे लब्धि ४० । ३२ फल हुवा धन चालन होनेसे उदयकालीन स्पष्ट रवि ७ । २१ ।५६।२४ में

जोडनेसे ७ । २२ । ३६ । ५६ । गति ६१ । ११ यह पर्वांतकालीन स्पष्ट रवि हुवा और चन्द्रगति ८५१।२२ को घटिकादि चालन३९।४५ से गुणा करके ६० का भाग देनेसे अंशादि ९ । २४ । २ (कलाके अंश बना लिये) फल हुवा इसको उदय कालीन स्पष्ट चन्द्र १।१३ १२ । ५१ में जोडा तो १ । २२ । ३६ । ५३ यह स्पष्ट चन्द्र हुवा परंतु सूर्यसे ठीक ६ राशि अधिक होनेके कारण तीन विकला बढादी अथवा सूर्यस्पष्टमें ६ राशि जोडदी तो १ । २२ ३६ । ५६ गति ५८१ । २२ यह पर्वांतकालीन चन्द्र स्पष्ट हुवा और राहुकी वक्र कलादि गति ३ । ११ । को चालन ३९।४५ में गुणा करके ६० का भाग देनेसे लब्धि कलादि २ । ६ फल हुवा इसको उदय कालीन राहु १। २८ । ५ । १ में घटाया तो १ । २८ । २ । ५५ यह पर्वान्तकालीन राहु हुवा. अर्थात् पर्वांतकालीन स्पष्ट सूर्य ७ । २२ । ३६ । ५६ गति ६१ । ११ और चन्द्र १ । २२ । ३६ । ५६ गति ८५१ । २२ और राहु १ । २८ । २ । ५५ गति ३ । ११ वक्र हुए।

अब ग्रहण गणित आरम्भ करते हैं-स्पष्ट सूर्य ७ । २२ ३६ । ५६ में राहु १ । २८ । २ । ५५ को घटाया तो ५ । २४ । ३४ । १ यह व्यग्वर्क हुवा. मेषादी होनेसे उत्तर है इसके भुजांश ५ । २५ । ५९ हुए। (१५ अंशसे कम होनेपर ग्रहण सम्भव है) भुजांश ५ । २५ । ५९ को ११ से गुणा किया तो ५९ । ४५ । ४९ हुए इसमें ७ का भाग दिया तो लब्ध अंगुलादि ८ । ३२ हुवा यह चन्द्रशर हुवा. व्यग्वर्ग मेषादी होनेसे उत्तर है । अब सूर्यकी स्पष्टगति ६१ । ११ को २ से गुणा करके १२२।२२ हुए इसमें ११ का भाग देनेसे अंगुलादि ११ । ७ यह सूर्यबिंब हुवा और चन्द्रकी स्पष्टगति ८५१ । २२ में ७४ का भाग देनेसे लब्ध अंगुलादि ११ । ३५ यह चन्द्रबिंब हुवा. और चन्द्रकी स्पष्टगति

१ नोट-महलाघवीय राहुसे चन्द्रशर ९ । २९ होता है। जिसका मान १५ । ९ होता है।

कलादि ८५१ । २२ में ७१६ कला घटाकर शेष १३५ । २२ में २२ का भाग दिया तो लब्ध अंगुलादि ६ । ९ हुए इसमें ३२ अंगुल युक्त किये तो अंगुलादि ३८ । ९ हुए इसमें सूर्यकी गति ६१।११ का सप्तमांश ८ । ४४ को घटाया तो २९ । २५ अंगुलादि यह राहु-बिंब (भूभाबिंब) हुवा । चन्द्रग्रहण होनेसे छाद्य चन्द्र और छादक राहु इन दोनोंके बिंबोंको यथा चन्द्रबिंब अंगुलादि ११ । ३५ और राहुबिंब अंगुलादि २९ । २५ को जोडा तो ४१ । ० मानैक्य हुवा. इसको आधा किया तो २० । ३० यह मानैक्य खंड हुवा. इसमें चन्द्रशर ८ । ३२ को घटाया तो ११ । ५८ यह ग्रास हुवा. यह चन्द्रबिंब ११ । ३५से अधिक होनेसे (विपरीत) ग्रास ११ । ५८में चन्द्रबिंब ११ । ३५ घटाया तो ० । २३ यह खग्रास हुवा.

अब मध्यस्थिति तथा खग्रासकी मर्दस्थिति लातेहै–मानैक्यखंड २० । ३० में शर ८ । ३२ युक्त किया तो २८ । ५२ हुवा इसको १० से गुणा किया तो २८८ । ४० हुवा. इसको खग्रास ११ । ५८ से गुणा किया तो ३४५४ । २२ यह हुवा. इसका वर्गमूल लिया तो ५८ । ४६ हुवा. इसको ५ से गुणा करके २९३ । ५० इसमें ६ का भाग दिया तो ४८ । ५८ हुवा. इसमें चन्द्रबिंब मान ११ । ३५ का भाग दिया तो लब्धि घटिकादि ४ । १३ यह मध्यस्थिति हुई।

अब खग्रासकी मर्दस्थिति लाते है–चन्द्रबिंब ११ । ३५ और राहुबिंब २९ । २५ इन दोनोंका अन्तर १७ । ५० का आधा ८ ।५५ इसमें शर ८ । ३२ जोडा तो १७ । २७ हुवा. इसको १० से गुणा-किया तो १७४ । ३० हुवा इसको खग्रास ० । २३ से गुणा किया तो ६६ । ५३ हुवा इसका वर्गमूल लिया तो ८ । ११ हुवा. इसको ५ से गुणा करके ४० । ५५ इसमें ६ का भाग दिया तो लब्ध६।४९ हुवा। इसमें चन्द्रबिंब मान ११ । ३५ का भाग दिया तो घटि-कादि ० । ३५ लब्धि हुई यह मर्दस्थिति हुई।

अब स्पर्शस्थिति तथा मोक्षस्थिति और स्पर्शमर्द तथा मोक्षमर्द लाते हैं–व्यग्वर्कके भुजांश ९।२९।९९ के द्विगुणमान ११ पलको व्यग्वर्के ९ राशि १६ अंशसे ६ राशितक हैं इस लिये पूर्वोक्त ११ पलको मध्यस्थिति ४।१३ में घटाया तो ४।२ यह स्पर्शस्थिति हुई। और पूर्वोक्त ११ पलको मर्दस्थिति ०।३९ में घटाया तो ०।२४ यह स्पर्शमर्द हुवा और पूर्वोक्त ११ पलको मध्यस्थिति ४।१३ में जोडा तो ४।२४ यह मोक्षस्थिति हुई और मर्दस्थिति ०।३९ में जोडा तो ०।४६ यह मोक्षमर्द हुवा.

अब चन्द्रग्रहणका स्पर्शकाल और मोक्षकाल लाते हैं और सम्मीलन तथा उन्मीलन काल लाते हैं–

पूर्णिमाका अंत जो घटिकादि ३९।४५ यह पर्व काल है, यह ही चंद्र ग्रहणका मध्यकाल है मध्यकाल ३९।४५ में स्पर्श स्थिति ४।२ को घटाया तो ३५।४३। यह स्पर्श काल हुवा. और मध्यकाल पूर्वांत ३९।४५ में मोक्षस्थिति ४।२४ को जोडा तो ४४।९ यह मोक्षकाल हुवा और मध्यकाल ३९।४५ में स्पर्शमर्द ०।२४ घटानेसे शेष ३९।२१ यह सम्मीलन काल हुवा और पर्वांत ३९।४५ में मोक्षमर्द ०।४६ जोडनेसे ४०।३१ यह सम्मीलनकाल हुवा मोक्षकाल ४४।९ में स्पर्शकाल ३५।४३ को घटाया तो शेष ८।२६ यह ग्रहणाका पर्वकाल हुवा और उन्मीलनकाल ४०।३१ में सम्मीलन काल ३९।२१ को घटाया तो शेष ०१।१०यह खग्रासका पर्वकाल हुवा। इसी प्रकार साधन करना चाहिये।

अब अयनवलन साधते हैं–पर्वांतकालीन स्पष्ट रवि ९।२२।७। ३६।९६ में (चन्द्र ग्रहण होनेसे) ३ राशि घटाई तो शेष ४।२२।३६।९६ हुए इसमें अयनांश २२।१।१२ को जोडकर ९।१४।३८।८ हुए इसकी भुज राश्यादि ०।१९।२१।९२ (इसके भुजांश १९।२१।९२ हुए) राशि शून्य होनेसे प्रथम-खंड ७ से भुजके अंशादिको गुणा किया तो १०७।३३।४ हुए।

इसमें ३० का भाग दिया तो लब्ध अंगुलादि ३ । ३१ यह अयन वलन हुए सायनरवि मेषादौ होनेसे अयन वलन ३।३१ । उत्तर हुए।

अब मध्यनत लाते हैं-चन्द्र ग्रहणका मध्यकाल ३९ । ४५ हुए इसमें दिनमान १९ । ४४ को घटाया तो १४ । १ रहा । इसका और रात्र्यार्द्ध २७ । ८ का अन्तर किया तो ३ । ७ मध्यनत हुवा अथवा (निशीथ) अर्द्धरात्रौ ४२ । ५२ और मध्यकाल ३९।४५ का अन्तर ३ । ७ यह मध्यनत हुवा अर्द्धरात्रिसे मध्य काल पूर्व है इसलिये मध्यनत पूर्व है।

अब अक्षवलन साधते हैं-मध्यनत पूर्व ३ । ७ में ५ का भाग दिया (अथवा ६ से गुणा करके अंशादिकी राश्यादि बनाई) तो लब्धि राश्यादि ० । १९ । १२।० हुई । इसमें अयनांश न मिलाकर वलन साधते हैं । राशि स्थानमें शून्य है इसीलिये प्रथमखंड ७ से अंशादि १९ । १२ । ० को गुणा करके १३४ । २४ में ३० का भाग दिया तो लब्ध अंगुलादि ४।३० वलन हुए । इसको पलभा ६ । ३३से गुणा करके २९ । २८ । ३० में ५ का भाग दिया तो लब्ध अंगुलादि ५ । ५३ यह अक्षवलन हुवा. मध्यनत पूर्व है । इसलिये अक्षवलन उत्तर है।

अब वलनांग्रि साधते हैं-पूर्वोक्त अयनवलन अंगुलादि३।३१उत्तर और अक्षवलन अंगुलादि५।५३उत्तर है इन दोनोंकी एकही दिशा होनेसे परस्पर दोनोंका योग किया तो ९ । २४ यह हुवा. इसमें ६ का भाग दिया तो लब्ध अंगुलादि १ । ३४ यह वलनांग्रि हुए दोनोंके योगकी दिशा उत्तर है इसलिये वलनांग्रि उत्तर है।

अब ग्रासांग्रि तथा खग्रासांग्रि साधते हैं-ग्रास ११ । ५८ को ६० से गुणा किया तो ७१८ हुए इसमें मानैक्य खंड २० । २३ का भाग दिया (दोनोंकी एक राशि बनानेको दोनोंको ६० से गुणा करके नीचेका दरजा बनाकर भागदिया) तो ४३०८० ÷ १२२३= लब्ध ३५ । १३ हुवा. इसका वर्गमूल लिया तो ५।५६ यह अंगुलादि

ग्रासांग्रि हुए। और खग्रास ०।२३ में अंगुलादि १।३० को जोडा तो १।५३ यह खग्रासांग्रि हुए।

अब ग्रहणकी दिशा जाननेके लिये आकृति बनाकर स्पर्शादिकी दिशाको स्पष्ट दिखलाते हैं—
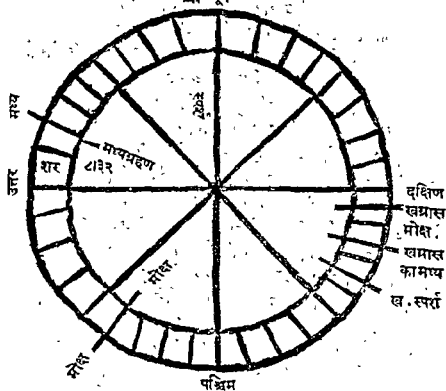
चन्द्रग्रहणाकृति	अंगुलादि	
चन्द्रबिंब	११।३५	
राहुबिंब	२९।२५	
चन्द्रशर	८।३२	दक्षिण
ग्रास	११।५८	
खग्रास	०।२३	
वलनांग्रि	१।१४	उत्तर
ग्रासांग्रि	५।५६	
खग्रासांग्रि	१।५३	

शर ८।३२ उत्तर है, शरकी दिशासे वलनांग्रि १।३४ उत्तर होनेसे उलटे क्रमसे अर्थात् बायँ हस्तसे दक्षिण हाथकी ओरको शरकी दिशा उत्तरसे पूर्वकी तरफ अंगुलादि १।३४पर चन्द्रग्रहणका मध्यचिह्न दिया है मध्य ग्रहणके सामने खग्रासके मध्यका चिह्न दिया है। फिर ग्रहणके मध्य चिह्नसे ग्रासांघ्रि ५।५६ पूर्वकी ओरको दिया तहां चन्द्रग्रहणका स्पर्शचिह्न दिया और पश्चिमकी तरफको दिया तहां मोक्षका चिह्न दिया और खग्रासके मध्यचिह्नसे खग्रासांघ्रि १।५३ पश्चिमकी ओरको दिये तहां खग्रासका स्पर्श और पूर्वकी ओरको दिये तहां खग्रासका मोक्ष चिह्न दिया है जो आकृतिमें स्पष्ट दिखलाया है इसको समझ लेना चाहिये। यह क्रम ग्रहलाघवीय क्षेपकरूपसे लिखा गया है।

अब मकरन्दके अनुसार चन्द्रग्रहणके गणितका उदाहरण पुनः दिखलाते हैं। तहां प्रथम नक्षत्रमान अर्थात् सर्वर्क्ष जानना है तो पहले सूर्यचन्द्रकी स्पष्टगतिसे तिथि नक्षत्र और योगका मान जाननेका उदाहरण सहित लिखते हैं—स्पष्टचन्द्रकी गतिमें सूर्यकी स्पष्टगति कलादिको घटाकर शेष कलादि गतिको विकला बनाकर फिर १२ अंशोंकी विकलाओं ७२० को ६० से गुणा करके अर्थात् २५९२००० में(पूर्वोक्त विकलाओंका)भाग देनेसे जो घटिकादि लब्धि होय वह उस तिथिका मान जाने और ८०० फलाओंकी विकला ४८००० को ६० से गुणा करके अर्थात् २८८०००० में चन्द्रकी स्पष्टगतिकी विकलाओंका भाग देनेसे जो लब्धि घटिकादि होय वह नक्षत्रमान सर्वर्क्ष होता है और सूर्यचन्द्रकी स्पष्टगतिके योगकी विकलाओंका भाग २८८०००० में देनेसे जो लब्धि घटिकादि होय वह योगमान होता है।

उदाहरण-चन्द्रकी स्पष्टगति कलादि ८५१। २२ में सूर्यकी स्पष्टगति ६१। ११ को घटानेसे शेष ७९०। ११ रही। इनकी विकला ४७४११ हुई इसका भाग २५९२००० में दिया तो लब्धि घटिकादि ५४ ।- ४० यह तिथि मान हुवा। और पूर्वोक्त २८८०००० में चन्द्रकी स्पष्टगति ८५१।२२की विकलाओं ५१०८२का

भाग देनेसे लब्धि घटिकादि ५६। २३ यह नक्षत्रमान हुवा. और पूर्वोक्त २८८००० में सूर्यचन्द्रकी स्पष्टगतिके योग ९१२। ३३ की विकलाओं ५४७५३ का भाग देनेसे लब्धि घटिकादि ५२। ३६ यह योगमान हुवा।

अब ग्रहण गणितका उदाहरण आरम्भ करते हैं—रोहिणी नक्षत्रका मान सर्वर्क्ष घटिकादि ५६।२३ है इस परिमित चक्र नं४५ मे सानुपात अंगुलादि ११। ३० चन्द्रबिंब और अंगुलादि २९। १९ राहुबिंब हुवा. अब सूर्य ७। २२। ३६। ५६ वृश्चिक राशिके है सो चक्र नं. ४६ से सूर्य राश्यादि तुल्य सानुपात अंगुलादि०। २ प्रतिबिंब फलको राहुबिंब २९। १९ में जोडा तो २९। २१ यह स्पष्ट राहुबिंब हुवा। चन्द्रबिंब ११। ३० और राहुबिंब २९। २१ को जोडकर ४०।५१ इसका आधा २० । २५ यह मानैक्य खंड हुवा।

अब चन्द्रशर लाते है—पर्वांत कालीन स्पष्ट चन्द्र १।२२।३६।५६ में राहु १। २८। २। ५५ को घटाया तो ११। २४ ।३४। १ यह विराहुचन्द्र हुवा (अथवा राहुमें चन्द्र जोडनेसे सपात चन्द्र होता है) उसे १२ राशिमें घटानेसे फल एकही होताहै। विराहुचन्द्र ६ राशिसे अधिक होनेपर १२ राशिमें घटानेसे शेष ०। ५। २५। ५९ यह हुवा इसके अंशादि ५। २५। ५९ से चक्र नं. ४२ सारिणी द्वारा सानुपात ४८। २९ हुए इसमें ६ का भाग दिया तो अंगुलादि ८। ४ यह चन्द्र शर हुवा। विराहुचन्द्र तुलादी होनेसे उत्तर है। मानैक्य खंड २०। २५ में शर ८। ४ को घटाया तो शेष १२। २१ यह ग्रास हुवा इस परिमित चक्र नं. ५७ सारिणी द्वारा सानुपात घटिकादि ३। ५८ यह मध्यस्थिति हुई दर्शांतकाल पूर्णिमांत ३९। ४५ में मध्यस्थिति ३। ५८ को घटाया तो ३५। ४७ स्पर्शकाल हुवा और मध्यकाल पूर्णिमांत ३९। ४५ में मध्यस्थिति ३। ५८ को जोडा तो ४३। ४३ यह मोक्षकाल हुवा, मोक्षकाल ४३। ४३ में स्पर्शकाल ३५। ४७ को घटानेसे ७। ५६ यह ग्रहणका पर्वकाल हुवा. १२। २१ ग्रास (ग्रास अधिक होनेसे) में चन्द्रबिंब

११।३० को घटाया तो शेष ०।५१ यह खग्रास हुवा। शेष क्रिया पूर्ववत्करना चाहिये। इति चन्द्रग्रहणगणितस्यो दाहरणम्।

अब सूर्यग्रहणका उदाहरण लिखते हैं–संवत् १९८२ शके १८४७ माघ कृष्ण ३० गुरौ १३। १८ इस दिन सूर्यग्रहण होनेका संभव मकरन्द और ग्रहलाघव दोनोंसे आता है परंतु एतद्देशमें सूर्यग्रहण नहीं हुवा। जैसा कि, मैं ग्रहण सम्भवज्ञानमें स्पष्टरूपसे बतलाचुका हूं(क्योंकि व्यग्वर्कके भुजांश ८ अंशसे कम होनेपर जब कि व्यग्वर्क उत्तर गोलमें हो तो सूर्यग्रहण एतद्देशमें नहीं होताहै वहही योग यहांपर है) ग्रहण नहीं हुवा-परतुं मैं इस ग्रहणका उदाहरण दिखलाताहूं क्योंकि गणित क्रमका उदाहरण दिखलाना है।

उदाहरण–पहले अर्हगण दिन वल्ली बनाकर सूर्यचन्द्र राहु स्पष्ट करते हैं–पूर्वोक्त क्रमानुसार बृहस्पतिको अर्द्धरात्रिकालीन ग्रहदिन वल्ली ८।३०।१।९ हुई। अभ्याससे स्पष्ट समझ लेना चाहिये।

अभ्यास.		वार.
चक्र नं. २५ से शा० १७९९ में	८।२५।३।४७	३
चक्र नं. २६ से शेषाब्द ४८ में	०।४।५२।२२	०
चक्र नं. २७ से माघ कृ. १५ में	०।०।४।२५	१
बृहस्पति होनेसे १ दिन अधिक किया	०।०।०।१	१
शा. १५४७ मा. कृ. ३० वृ. दिन म. वल्ली	८।३०।१।५५	

इससे मध्यम सूर्य चन्द्र तथा चन्द्रकेन्द्र तथा केतु लाकर राहु बनाते हैं और प्रत्येकमें देशान्तर संस्कार करके फिर प्रातः ६ बजेके बानते हैं क्योंकि, अर्द्धरात्रिके होते हैं इसका उदाहरण पहले दिखला चुके हैं, अब यहां भी अभ्यास दिखलाते हैं। ग्रहदिन वल्ली ८।३०।१।९(पूर्वोक्त देहलीका देशान्तर दिया गया)।

---

१ टिप्पणी–इस ग्रहणका उदाहरण गंगाधर बृहत्सारिणीमें दिखलाया है कि सूर्यग्रहण एतद्देशमें नहीं हो सकता।

ग्रह दिनवल्ली ८।३०।१।१५ द्वारा ।

मध्यम सूर्य

०।४९।१६।१८
९।५१।२१।४१
४०।५०।५२। १
५३।३३।५२।१६
४५। ५।२२।४६
६
९। ० ।३२।१६
देशान्तर ०।१२ ऋण
निशि ९ । ० ।३२। ४
१८ घंटका चा. ४४।२१ ऋ.
प्रा. ६ बजे ८।२९।४७।४३

मध्यम चन्द्र

१०।५८।४९। ३
११।४५।४८।४०
५४।२०।१९। ५
२९।२५ ।५।२५
४६।३० ।२।१३
६
९। ९।० ।१३
देशान्तर २ ।४८ ऋण
निशि ९। ८।५७।२५
१८ घंटे चालन ९।५२।५६ ऋण
प्रातः ६ बजे ८।२९। ४।२९

चन्द्रकेन्द्र

१०।५३।१४।५४
१०।३८।५८।५५
२९।२७।२५।३८
५१।१४।१०।१३
४२।२३।४९।४०
६
८।१४।२२।५८
देशान्तर २।४६ ऋण
निशि ८।१४।२०।१२
१८ घटेका चा. ९।४७।५५
प्रातः६ बजे.८। ४।३२।१७

चन्द्रकेन्द्र

८ ।२९। ४।२९
८ । ४।३२।१७
० ।२४।३२।१२
३ ।
चं. उ. ३ ।२४।३२।१२
केतु ५९।५७।२१। २
५९।२८।१२।३०
६।१९।२५। १
४०। ६।४०।२३
४५।४७।३८।५६
केतु ९। ४।४५।५३
६
राहु ३। ४।४५।५३
देशान्तर । ०
निशि ३ ।४ ।४५।५३
१८ घटेका चालन २।२३ धन
प्रातः ६ बजे ३।४ ।४८।१६

अब प्रातः ६ बजेके मध्यम सूर्यचन्द्र चन्द्रोच्च राहु बनादिये
अब सूर्य स्पष्ट करते हैं।

मध्यम रवि	८।२९।४७।४३	मध्यमसूर्य	८।२९।४७।४३
केन्द्रफल धन	०।२८।४८	मन्दोच्च	२।१७।१७।२१
स्पष्टोरविः	९।०।१६।३१	म. के. तुला. धन	६।१२।३०।२२
मध्यमगति	५९। ८	भुजांश	१२।३०।२२
गति फलकेन्द्रकर्कादौ धन	२।१३	अस्योपरि सानुपात	
स्पष्टगति	६१।२१	केन्द्रफल अंशादि	०।२८।४८
		तथा गतिफल	२।१३

अर्थात् राश्यादि ९।०।१६।३१ गति ६१।२१ यह सूर्य स्पष्ट हुवा।

अब प्रातः ६ बजेका चन्द्र स्पष्ट करते हैं। अभ्यास देखो-

मध्यमचन्द्र	८।२९। ४।२९	मध्यमगति	७९०।३५
फल ऋणं	२।१०।४४	गतिफलकर्कादौ धन	६२।३८
स्पष्टचन्द्र	८।२६।५३।४५	स्पष्टगति	८५३।१३

भुजांशोपरि केन्द्र फलं		मध्यचन्द्र	८।२९।४।२९
सानुपात अंशादि	२।१०।४४	चन्द्रोच्च	३।२४।३२।१२
गतिफल सानुपात कलादि		केन्द्रमेषादौ ऋ.	५। ४।३२।१७
	६२।३८ हुआ	भुजांश	२५।२७।४३

अर्थात् राश्यादि ८।२६।५३।४५ गति ८५३।१३ यह चन्द्र स्पष्ट हुआ।

अब उदयकालीन ग्रह बनानेके लिये प्रथम पूर्वोक्त क्रमानुसार चरपल तथा दिनमान बनाकर चर संस्कार करके उदयकालीन बनाते हैं-शाके १८४७ में ४२१ घटाकर शेष १४२६ रहे इसका दशमांश १४२।३६ घटाया तो १२८३।२४ कलादि हुए, इसके अंशादि २१। २३। २४ हुए, फिर विकलादि ४। ३० प्रतिमासके हिसाबसे ९ मासकी ४० विकला और जोडदी तो अंशादि २१। २४। ४ यह अयनांश हुवा, अब इसको स्पष्ट सूर्य ९। ०। १६। ३१ में जोडा तो ९। २१। ४०। ३५ यह सायनार्क हुवा. इसको १२ राशिमें

घटाकर शेष २। ८। १९। २९ यह भुज हुवा. भुजमें २ राशि हैं तो पूर्वोक्त प्रथमचरखंड पलादि ६५। ३०, और द्वितीयचरखंड पलादि ५२। २४ को योग किया तो पलादि ११७। ५४ यह योगफल हुवा. और इसके शेष अंशादि ८। १९। २९ को तृतीय चरखंड पलादि २१।५० से गुणा किया तो १८१। ४५। ४३ हुए। इसमें ३० का भाग दिया तो लब्ध पलादि ६। ३ हुए इनको पूर्वोक्त योगफल पलादि ११७। ५४ में जोडा तो पलादि १२३। ५७ अर्थात् १२४ पल हुए यहही चर पल १२४ है, इनकी घटिकादि २। ४ में सायनार्क तुलादौ होनेसे १५ घटिमें घटाया तो १२।५८ यह दिनार्द्ध हुवा. द्विगुण करनेसे २५।५६ यह दिनमान हुवा, दिनमान २५।५६ को ६० में घटानेसे ३४। ४ रात्रिमान हुवा इसमें ५ का भाग देनेसे लब्ध घंटादि ६ घण्टा ४९ मिनट हुवा, यह उदयकाल हुवा। अब चर पलभी घटिकादि २।४ का धन चालन करके सूर्यकी स्पष्ट गति६१।२१ से फल कलादि २। ७ सूर्य ९। ०। १६। ३१ में जोडनेसे ९। ०। १८। ३८ यह उदयकालीन स्पष्ट सूर्य हुवा. और चन्द्रगति कलादि ८५३। १३ चालनोपरि फल २९। २३ हुवा यह चन्द्र ८।२६।५३। ४५ में जोडनेसे ८। २७। २३। ८ यह उदयकालीन स्पष्ट चन्द्र हुवा. और राहुकी वक्रगति ३। ११ से फल ६ विकला हुवा। इनको राहु ३। ४। ४६। १६ में ऋण करनेसे ३। ४। ४८। १० यह उदयकालीन राहु हुवा।

अब सूर्यचन्द्रसे तिथि स्पष्ट करते है, क्योंकि ग्रहण गणितमें सूर्य चन्द्र स्पष्टसेही तिथि स्पष्ट करना चाहिये। अब अमावस्याकी भोग्य घटिकादि बनाकर पर्वातकालीन सूर्य चंद्र बनाकर गणित आरम्भ करना चाहिये।

		गति
स्पष्ट चन्द्र	८।२७।२३। ८	८५३।१३
स्पष्ट रवि	९। ०।१८।३८	६१।२१
इसके अंश बनाये	११।२७। ४।३०	७९१।५२

१२) ३५७।४।३० (२९ गततिथि ६०

२४ ४७५१२ वि०

११७

१०८

९। ४।३०

१२। ०। ०

९। ४।३०

२।५५।३० भोग

२।५५।३० भोगकी विकला

६०

१७५

६०

१०५३० विकला

६०

४७५१२) ६३१८०० (१३

४७५१२

१५६६८०

१४२५३६

१४१४४

६०

४७५१२) ८४८६४० (१८ पल

४७५१२

३७३५२०

३८००९६

अर्थात् अमावस्याकी भोग्य घटिकादि १३।१८ हुई।

अब अमान्त घटिकादि १३। १८ का चालन धन देकर पर्वांत कालीन सूर्यचन्द्र और राहु बनाया तो पर्वांतकालीन सूर्य ९। ०। ३२। १४ गति ६१। २१ चन्द्र ९। ०। ३२।१४ गति ८५३।१३ राहु ३। ४। ४७। ३२ हुए और स्पष्ट सूर्यमें राहु घटानेसे ५। २५। ४४। ४२ यह व्यग्वर्क हुवा। और पर्वांतकालीन इष्ट घटिकादि १३। १८ परिमित स्वदेशीय (देहलीकी) लग्न स्पष्ट हुई, राश्यादि ०। १३। ५८। ९ यथा सूर्य तात्कालिक ९। ०। ३२। १४ में अयनांश २१। २४। ४ जोडकर सायनरवि ९। २१। ५६। १८ हुए, मकर लग्नके भुक्त अंशादि २१। ५६। १८ को ३० अंशमें घटानेसे ८। ३। ४२ यह मकरका भोग्य भाग हुवा। इसको पूर्वोक्त स्वदेशीय मकर लग्न प्रमाण ३०१ पलसे गुणा किया तो २४२३। ४५। ४२ हुवा इसमें ३० का भाग देनेसे लब्धि पलादि ८०। ४७ यह मकर लग्नका भोग्य हुवा। अब घटिकादि १३। १८ के पलों ७९८ में मकरका भोग्य पलादि ८०। ४७ और कुम्भ लग्न प्रमाण पल २४७ और मीन प्रमाण पल २१३ मेष प्रमाण २१३ को घटाया तो शेष पलादि ४४। १३ यह वृष लग्नका भुक्त भाग हुवा. इसको ३० से गुणा किया तो १३२६। ३० हुवा, इसमें वृषप्रमाण पल २४७ से भाग दिया तो लब्धि अंशादि ५। २२। १३ हुए। इसमें वृषराशि जोडकर राश्यादि १। ५। २२। १३ यह सायन लग्न हुई। इसमें अयनांश २१। २४। ४ को घटाया तो राश्यादि ०। १३। ५८। ९ यह लग्न स्पष्ट हुई। यह पर्वांतकालीन लग्नहुई। पर्वांतकालीन लग्नमें ३ राशि घटाकर शेष ९। १३। ५८। ९ यह त्रिभोग लग्न हुई। इसमें अयनांश २१। २४। ४ को जोडा तो १०।५।२२।१३ यह सायन त्रिभोग लग्न हुई। इसके भुजांश ५४।३७।४७ हुए इसके अंशोंमें १० का भाग देनेसे लब्धि ५ हुए। सूक्ष्म क्रांति सायनके कोष्ठ ५ (जो सूर्यग्रहण गणितमें चक्र सूक्ष्मक्रांति लानेका दिया है उसमें) तक योगांक १८१ हुए और छठे कोष्ठका अंक २५ है इससे शेष अंशादि ४।३७।४७ को गुणा करके ११५।४४।३५ में १० का भाग दिया तो

अंशादि ११।३४।२७ लब्ध हुए। इनको योगांक १८१ अंशमें जोडा तो अंशादि १९२।३४।२७ हुए, इसमें १० का भाग देनेसे लब्ध अंशादि १९ । १५ । २७ यह सूक्ष्म क्रांति हुई. सायन त्रिभोन लग्न तुलादौ होनेसे दक्षिण है इसका और पूर्वोक्त अक्षांश २८।२७।३६ दक्षिणका परस्पर संस्कार एक दिशाके होनेसे योग किया तो ४७ । ४३ । ३ यह दक्षिण नतांश हुए। नतांशों ४७ । ४३ । ३ में २२ का भाग दिया तो लब्धि २ । १० । ८ हुए। इसका वर्ग किया तो ४।४२।१४ हुए २ से अधिक होनेपर इसमें २ घटाकार शेष २ । ४२ । १४ इसका आधा १ । २१ । ७ इसको पूर्वोक्त वर्ग ४ । ४२ । १४ में जोडा तो ६ । ३ । २१ हुए। इसमें १२ अंश और जोडे तो १८ । ३ । २१ यह हार हुवा, स्पष्टरवि ९ । ० । ३२ । १४ और त्रिभोन लग्न ९ । १३ । ५८ । ९ इन दोनोंका अन्तर ० । १३ । २५ । ५५ इसके अंशादि १३ । २५ । ५५ में १० का भाग दिया तो लब्ध १।२०।३५ हुए, इसको १४ अंशमें घटाया तो शेष १२ । ३९ । २५ रहा इसको पूर्वोक्त लब्ध १ । २० । ३५ से गुणा किया तो १६ । ५९ । ५६ हुए (६११९६ वि०) इसमें हार १८ । ३ । २१ (६५००१ वि०) का भाग दिया तो लब्ध घटिकादि ०।५६ यह लंबन हुवा. सूर्यसे त्रिभोनलग्न अधिक होनेसे लंबन धन है. इसका संस्कार अमावस्यांतकी घटिकादि १३ । १८ में (धन किया तो १४ । १४ यह लंबन संस्कृत अमांत हुवा । यह सूर्य ग्रहणका मध्यकाल है। लंबन ० । ५६ को १३ से गुणा किया तो कलादि १२ । ८ हुवा इसको लंबन धन होनेसे व्यगर्वके ९ । २५ । ४४ । ४२ में धन किया तो ९ । २५।५६।५० यह लंबन संस्कृत व्यगवर्क हुवा। इसके भुजांश ४।३।१० हुए (१५ अंशसे कम होनेसे ग्रहण सम्भव है परंतु व्यगवर्क उत्तर है और भुजांश) (८ अंशसे कम होनेपर सूर्यग्रहण एतद्देशमें नहीं होगा यहां केवल गणित क्रम दिखलाना है) भुजांश ४ । ३ । १० को ११ से गुणा करके ४४ । ३४ । ५० इसमें ७ का भाग दिया तो लब्ध अंगुलादि ६ । २१ यह चन्द्रशर हुवा, व्यगवर्क

मेषादौ होनेसे उत्तर है। लंबन ०।५६ को ६ से गुणा किया तो अंशादि ०।५।३६।० हुवा इसको त्रिभोन लग्न ९।१३।५८।९ में लंबनकी समान धन किया तो ९।१९।३४।९ यह लंबन संस्कृत त्रिभोन लग्न हुई। इसमें अयनांश २१।२४।४ को जोडा तो १०।१०।५८।१३ यह सायन त्रिभोन लग्न हुई, इसके भुजांश ४९।१।४७ परिमित पूर्वोक्त क्रमानुसार अंशादि १७।४८।३२ यह सूक्ष्म क्रांति हुई, सायन लग्न तुलादौ होनेसे दक्षिण हुई इसका और स्वदेशीय दक्षिण अक्षांश २८।२७।३६ का परस्पर संस्कार एक दिशामें होनेसे योग किया तो ४६।१६।८ यह लंबन संस्कृत त्रिभोन लग्नोत्पन्न नतांश हुए। इसमें १० का भाग दिया तो लब्धि कलादि ४।३७ हुई इसको १८ कलामें घटाकर शेष कलादि १३।२३ रही इसको पूर्वोक्त लब्धि ४।३७ से परस्पर गुणा किया तो कलादि ६१।४३ हुवा इसको ६ अंश १८ कलामें घटाया तो अंशादि ५।१६।१७ यह शेष रहा। इसको कलात्मक मानकर इसका गुणनफल कलादि ६१।४३।० में भाग दिया तो लब्ध अंगुलादि ११।४२ यह नति हुई। पूर्वोक्त नतांशकी दिशावत् दक्षिण हुई। इसका और पूर्वोक्त चन्द्रशर अंगुलादि ६।२२ उत्तरका परस्पर संस्कार भिन्न दिशा होनेसे परस्पर अन्तर किया तो शेष ५।२० दक्षिण यह स्पष्ट शर हुवा। सूर्यकी स्पष्ट गति ६१।२१ को २ से गुणाकरके १२२।४२ इसमें ११ का भाग दिया तो लब्ध अंगुलादि ११।९ यह सूर्य बिंब हुवा और चन्द्रकी स्पष्ट गति ८५३।१३ में ७४ का भाग दिया तो अंगुलादि ११।३२ यह चन्द्रबिंब हुवा, इन दोनोंके योग २२।४१ का आधा ११।२० यह मानैक्य खंड हुवा इसमें स्पष्ट शर ५।२० को घटाया तो शेष ६।० यह अंगुलादि ग्रास हुवा। रविबिंब ११।९ में ग्रास ०।६।० को घटाया तो शेष ५।९ यह शेष बिंब हुवा।

अब मध्यस्थिति लाते हैं—मानैक्य खंड ११।२० में स्पष्ट शर ५।२० को जोडा तो १६।४० हुवा इसको १० से गुणा किया

तो १६६ । ४० हुवा इसको ग्रास ६ । ० से गुणा किया तो १००० । ०० हुवा । इसका वर्गमूल ३१ । ३७ हुवा इसको ५से गुणा करके १५८।५ इसमें ६ का भाग दिया तो २६ । २१ लब्ध हुए इसमें चन्द्रबिंब मान ११ । ३२ का भाग दिया तो लब्धि घटिकादि २ । १७ यह मध्यास्थिति हुई । मध्यास्थिति २ । १७ को ६ से गुणा करके अंगुलादि १३ । १२ गुणनफलको त्रिभोन लग्न ९ । १३।५८।९ में घटाया तो ९।०।१६।९ यह स्पर्श त्रिभोन लग्न हुई । इसमें अयनांश २१ ।२४।४ जोडकर सायन लग्न ९।२१।४०।१३ इसके भुजांश ६८ । १९ । ४७ परिमित पूर्वोक्त (चक्रद्वारा) क्रमानुसार अंशादि २२ । ५ । ५७ यह सूक्ष्म क्रांति हुई । सायन लग्न तुलादी होनेसे दक्षिण हुई । इसका और दक्षिण अक्षांश २८ । २७ । ३६ का एक दिशामें होनेसे परस्पर योग किया तो ५० । ३३ । ३३ यह अंशादि दक्षिण नतांश हुए । नतांश ५० । ३३ । ३३ में २२ का भाग दिया तो २ । १७ । ५३ यह लब्ध हुवा इसका वर्ग किया तो ५ । १७ । १ हुवा इसमें २ से अधिक होनेपर २ अंश घटाकर शेष ३ । १७ । १ का आधा १।३८।३० को पूर्वोक्त वर्ग ५ । १७ । १ में जोडा तो ६ । ५५ । ३१ हुवा । इसमें १२ अंश और जोडे तो १८ । ५५ ३१ यह हार हुवा ।

अब सूर्यकोभी स्पर्शकालीन बनाते हैं–दर्शांतकालीन स्पष्टरवि ९ । ० । ३२ । १४ है । गति ६१ । २१ को मध्यस्थिति २ । १७ से गुणा करके ६० का भाग देनेसे फल कलादि २ । २० दर्शान्तकालीन रविमें घटाया तो ९ । ० । २९ । ५४ यह स्पष्टकालीन सूर्य हुवा । इसका और स्पर्शत्रिभोन लग्न ९ । ० । १६ । ९ का अन्तर किया तो ० । ० । १३ । ४५ यह हुवा. इसके अंशादि १३ । ४५ में १०का भाग दिया तो ० । १ । २२ लब्ध हुवा । इसको १४ अंशमें घटाकर शेष १३ । ५८ । ३८ से परस्पर गुणन किया तो ० । १९ । ६ यह गुणनफल हुवा इसमें हार १८ । ५५ । ३१ का भाग दिया तो लब्धि घटिकादि ० । १ यह स्पर्श लंबन हुवा । स्पर्शकालीन सूर्यसे स्पर्शत्रिभोन लग्न कम है । इसलिये लंबन ऋण है । पुनः मध्यस्थिति

२।१७ को ६ से गुणा करके अंशादि १३।४२ गुणनफलको त्रिभोन लग्न ९।१३।५८।९ में जोडा तो ९।२७।४०।९ यह मोक्ष कालीन त्रिभोन लग्न हुई, इसमें अयनांश २१।२४।४ को जोडा तो १०।१९।४।१३ यह सायन लग्न हुई। इसके भुजांश ४०।५९।४७ परिमित पूर्वोक्त क्रमानुसार अंशादि १६।३८।१६ यह सूक्ष्म क्रांति हुई। सायन लग्न तुलादौ होनेसे क्रांति दक्षिण हुई। इसका और दक्षिण अक्षांश २८।२७।३६ का एक दिशामें होनेसे परस्पर योग संस्कार किया तो ४५।५।५२ यह दक्षिण नतांश हुए। इसमें २२ का भाग दिया तो लब्ध २।२।५९ हुए इसका वर्ग किया तो ४।१२।५ हुए। इसमें २ से अधिक होनेसे २ घटाकर शेष २।१२।५ का आधा १।६।२ को पूर्वोक्त वर्ग ४।१२।५ में जोडा तो ५।१८।७ यह हुवा. इसमें १२ अंश और जोडे तो १७।१८।७ यह हार हुवा।

अब सूर्यको मोक्षकालीन बनानेके निमित्त दर्शांतकालीन रवि ९।०।३२।१४ में मध्यस्थिति घटिकादि २।१७ का चालन-गति ६१।२१ के अनुसार फल कलादि २।२० को पर्वांतकालीन रविमें जोडा तो ९।०।३४।३४ यह मोक्ष कालीन रवि हुवा. इसका और मोक्षकालीन त्रिभोन लग्न ०९।२७।४०।९ का अन्तर किया तो ०।२७।५।३५ यह हुवा. इसके अंशादि २७।५।३ में १० का भाग दिया तो २।४२।३३ यह लब्ध हुवा. इसको १४ अंशमें घटाया तो शेष ११।१७।२७ से परस्पर गुणा किया तो ३०।३५।१९ यह गुणनफल हुवा। इसमें हार १७।१८।७ का भाग दिया तो लब्धि घटिकादि १।४६ यह मोक्षलंबन हुवा. सूर्यसे त्रिभोन लग्न अधिक होनेसे लंबन धन है।

अब स्पर्शकाल और मोक्षकाल दिखलाते हैं-(अमांत) दर्शांत घटिकादि १३।१८ में मध्यस्थिति २।१७ को घटाया तो शेष ११।१ रहा इसमें स्पर्शलंबन ०।१ ऋणको घटाया तो

११ । ० यह स्पर्शकाल हुवा । फिर अमान्त १३ । १८ में मध्यम स्थिति २ । १७ को जोडा तो १५ । ३५ हुवा । इसमें मोक्ष लंबन १ । ४६ धनको जोडा तो १७ । २१ यह मोक्षकाल हुवा. मोक्षकाल १७ । २१ में स्पर्शकाल ११ । ० को घटाया तो ६ । २१ ग्रहणका पर्वकाल हुवा । इस प्रकार ग्रहण गणित ग्रहलाघवोक्त हुवा । परंतु राहु सूर्य मकरन्दीय हैं ।

अब मकरन्द सारिणीद्वारा सूर्यग्रहणका उदाहरण दिखाते हैं– अमातकाल १३ । १८ में स्पष्टरवि ९ । ० । ३२ । १४ है इस परिमित चक्र नं. ४६ से सानुपात अंगुलादि सूर्यबिंब ११ । १५ हुवा और चन्द्रमाकी स्पष्ट गति ८५३ । १३ से सर्वर्क्ष ५६ । १९ हुवा (अर्थात् २८८०००० में गति विकला ५११९३ का भाग दिया तो लब्धि घटिकादि ५६ । १९ सर्वर्क्ष हुवा) सर्वर्क्ष परिमित चक्र नं० ४५ से सानुपात अंगुलादि ११ । ३१ चन्द्रबिंब हुवा. त्रिभोन लग्न ९ । १३ । ५८ । ९ और स्पष्ट रवि ९ । ० । ३२ । १४ इनका अन्तर ० । १३ । २५ । ५५ इसके अंशादि १३ । २५ । ५५ में ६ का भाग दिया तो लब्ध २ हुए। शेष अंशादि १।२५।५५ को (२ व ३ के चक्र नं० ४३ से कोष्ठान्तर) कोष्ठान्तर २३ । ४० से गुणा करके ३३ । ५३ हुए इसमें ६ का भाग देनेसे लब्ध ५ । ३९ हुवा अर्थात् ० । ५ । ३९ इस अनुपातको २ कोष्ठके ० । ४८ । ३२ में अग्रिम कोष्ठ अधिक होनेसे धन किया तो ०।५४।११.यह सानुपात घटिकादि ० । ५४ यह लंबन हुवा । सूर्यसे *त्रिभोन लग्न अधिक होनेसे लबंन धन है ।*

स्थूल क्रांति लानेका उदाहरण–सायन भुजांश ३९।१३।४७ (तुलादिक हैं) इनमें ६ का भाग दिया तो लब्धि ६ हुए शेष ३ । १३ । ४७ रहे सो चक्र नं. ४३ से सानुपात पूर्वोक्त लंबनवत् घटिकादि २ । २८ । ५२ हुई। इसको ६ से गुणा किया तो अंशादि १४ । ५३ । १२ यह स्थूल क्रांति हुई । तुलादी होनेसे दक्षिण हुई ।

सूक्ष्म क्रांतिका उदाहरण-पूर्वोक्त तुलादिके सायन भुजांश ३९१३।४७ परिमित चक्र नं. ३९ से सानुपात अंशादि१४।४८। ४५ सूक्ष्म क्रांति तुलादि होनेसे दक्षिण हुई । ❀

अब सम्वत् १९८२ माघकृ. ३० गुरौमें जो सूर्यग्रहण नहीं हुवा था (क्योंकि व्यग्वर्क भुजांश ८ अंशसे कम और व्यग्वर्क उत्तर होनेसे एतद्देशमें सूर्य ग्रहण नहीं होता है) परंतु ग्रहलाघवके गणित द्वारा ग्रहण आता है जिसका ग्रहलाघवीय गणित करके दिखाता हूं। सम्वत् १९८२ शाके १८४७ माघकृ ३० गुरौ १३ । ३१ इस दिन ग्रहलाघवीय गणित द्वारा अहर्गण वल्ली ० । ४१ । १० । १४ तथा देशान्तर संस्कृत (देहली) मध्यमसूर्य ८ । २९ । ४७ । ३२ त्रिफलचंद्र (उदयकालीनमध्यमचन्द्र) ८ । २९ । २२ । १० और राहु ३ । २ । ४९ ।५७ प्रातः ६ बजेके स्पष्ट सूर्य ९ । ० । १४ ।३६ गति ६१ । १६ उदय स्पष्ट चन्द्र ८ । २७ । १७ । ५८ गति

❀ आवश्यकीय नोट टिप्पणी ।

मकरन्दीय राहुसे ग्रहलाघवीय राहु शुद्ध है अत मेरी सम्मति यह है कि, ग्रहलाघवीय राहु बनाकर ग्रहण गणित करना चाहिये (मकरन्द और ग्रहलाघवके राहुकी अन्तरकी सारिणी आगे बनाकर ग्रहलाघवीय राहुके बनानेका उदाहरण दिखलावेंगे) क्योंकि सम्वत् १९६९ शाके १८३३ कार्तिक शु० १५ चन्द्रे इसदिन मकरन्दानुसार राहु ० । ९ । २३ । २३ था इससे चन्द्रशरलायातो अगुलादि १७।३ था और चन्द्रबिंब अगुलादि ११।७ और राहुबिंब २८।१६ मानैक्यखड १९ । ४१ हुवा, इसमें चन्द्रशर १७ । ३ घटाया तो शेष अगुलादि २ । ३८ यह चन्द्रग्रास हुवा. अर्थात् पूर्वोक्त दिन चन्द्रग्रहण होना चाहिये था, परतु ग्रहलाघवके अनुसार पूर्वोक्त समयके राहु ० । ७ । ३० ।४६ और सूर्य ६ । २० । १४ । २९ होनेसे (व्यगर्ग ६ । १२ । ४३ । ३९ दक्षिण) चन्द्रशर अगुलादि २० । २ हुवा यह मानैक्यखड १९ । ४१ में नहीं घट सकता इसलिये ग्रहण नहीं होना चाहिये सो वास्तवमें उस समय ग्रहण नहीं हुवा था इसी लिये यह सम्मति देता हू जो उचित है ।

८४९ । ४३ चरपल ११९ दिनमान २६।४ (सूर्योदयकाल ६ घटी ४७ मिनन्ट) चर घटिकादि १ । ५९ का चालन देकर उदयकालीन स्पष्ट रवि ९ । ० । १५ । ३७ गति ६१ । १६ स्पष्टचन्द्र ८ । ३७ । १७ । ५८ गति ८४९ । ४३ उदय राहु ३ । २ । ४९ । ५१ गति ३ । ११ वक्र इसप्रकार ग्रह स्पष्ट हुए, स्पष्ट चन्द्र सूर्यसे तिथिकी भोग्य घटिकादि बनाई तो घटिकादि १३ । ३१ हुई ।

अब अमान्त घटिका १३ । ३१ का चालन देकर बनाये तो पर्वांतकालीन स्पष्ट सूर्य ९ । ० । २९ । २९ । गति ६१ । १६ तथा सूर्य तुल्य राश्यादिचन्द्र ९ । ० । २९ । २९ गति ८४९ । ४३ और राहु ३ । २ । ४९ । १४ और रविमें राहुको घटानेसे व्यग्वर्क ५ । २७ । ४० । ११ मेपादौ होनेसे उत्तर है यह इस प्रकार हुवे ।

अब अमांत कालीन लग्न स्पष्ट करते हैं । तहां प्रथम अयनांश साधते हैं–शाके १८४७ में ४४४ घटाकर शेष १४०३ कलाके अंशादि २३।२३।० और ९ मासकी ४९ विकला जोडकर तात्कालिक अयनांश २३ । २३ । ४५ हुवा । अयनांश २३ । २३ । ४५ को स्पष्ट रवि ९ । ० । २९ । २९ में जोडा तो सायन रवि ९ । २३ । ५३ । १० हुवा इससे लग्न स्पष्ट की तो ० ।१५।५२। ३१ यह लग्न स्पष्ट हुई इसमें ३ राशि घटाई तो राश्यादि ९ । १५ । ५२ । ३१ यह त्रिभोन लग्न हुई इसका गणित ग्रहलाघव सारिणीसे करते हैं (जो मेरी बनाई ग्रहलाघव सारिणी खेमराज श्रीकृष्णदासजीके प्रेस बम्बईमें छपी है) त्रिभोन लग्न ९ । १५ । ५२ । ३१ में अयनांश २३ । २३ । ४५ जोडकर १० ।९ । १६ । १६ यह हुवा इसके भुजांश ५० । ४३ ।४४ ग्र. ला. सा. चक्र नं. ६२ से सानुपात अंशादि १८ । ७१ । २८ यह सूक्ष्म क्रांति हुई, सायन लग्न तुलादौ होनेसे दक्षिण है । इसका और पूर्वोक्त दक्षिण अक्षांश २८ । २७ । ३६ का संस्कार एक दिशामें होनेसे योग किया तो अंशादि ४६ । ४५ । ४ यह दक्षिण नतांश हुए (नतांशोंको ९० अंशमें घटानेसे शेष उन्नतांश होते हैं) इनमें २२ का भाग दिया तो लब्ध २ । ७ । ३० हुवा । इसका वर्ग किया

तो ४ । ३० । ५६ हुवा २ अंशसे अधिक होनेपर २ अंश घटाकर २ । ३० । ५६ का आधा १।१५। २८ को पूर्वोक्त वर्ग ४।३०।५६ में जोडा तो ५ । ४६ । २४ हुवा । इसमें १२ अंश और जोडे तो १७ । ४६ । २४ यह हार हुवा. स्पष्ट रवि ९ । ० । २९ । २९ में और त्रिभोनलग्न ९ । १५ । ५२ । ३१ इन दोनोंका अन्तर ०।१५। २३ । ६ हुवा, इसके अंशादि १५ । २३ ।६ में १० का भाग दिया तो १ । ३२ । १८ यह लब्ध हुवा इसको १४ अंशमें घटाकर शेष १२ । २७ । ४२ से परस्पर गुणा किया तो १९ । १० । १८ हुवा इसमें पूर्वोक्त हार १७ । ४६ । २४ का भाग दिया तो लब्ध घटिकादि ० । ५९ यह लंबन हुवा । सूर्यसे त्रिभोनलग्न अधिकहोनेसे लंबन धन है । जब दर्शांत ठीक मध्यदिन होता है तब लंबन और नत दोनोका अभाव होता है, लंबन धन घटिकादि ० । ५९ को अमावस्याकी घटिकादि १३ । ३१ में धन किया तो १४ । २६ यह लंबन संस्कृत दर्शांत अथवा सूर्य ग्रहणका मध्यकाल हुवा, लंबन ० । ५९को १३ से गुणा करा गुणन फल कलादि ११ । ५९ हुवा इसको लंबन धनकी समान व्यगवर्के ५।२७।४०।११ में भी धन किया तो ५।२७। ५२ । ६ यह लम्बन संस्कृत व्यगवर्ग हुवा । इसके भुजांश २ । ७ । ५४ तुल्य (ग्र. ला. सा. चक्र नं. ६३ से) सानुपात अंगुलादि ३ । २० यह चन्द्रशर हुवा व्यगवर्के मेषादौ होनेसे उत्तर है । लंबन ० । ५९ को ६ से गुणा करा तो ५ । ३० यह अंशादि हुए इसको त्रिभोन लग्न ९ । १५ । ५२ । ३१ मे लंबन धन होनेसे धन किया तो ९ । २१ । २२ । ३१ यह लंबन संस्कृत त्रिभोन लग्न हुई, इसमें अयनांश २३ । २३ । ४५ जोडकर १०।१४।४५।१६ इसके भुजांश ४५ । १४ । ४४ से (ग्र. ला. सा. चक्र नं. ६२) से सानुपात अंशादि १६ । ४० । २९ यह सूक्ष्म क्रांति हुई । सायनलग्न तुलादौ होनेसे दक्षिण हुई । इसका और दक्षिण अक्षांश २८ । २७ । ३६ का संस्कार एक दिशाके होनेसे परस्पर योग किया तो ४५ । ८ । १ यह लंबन संस्कृत त्रिभोनलग्नोत्पन्न नतांश दक्षिण हुए । इसमें १० का भाग दिया तो

कलादि ४ । ३० । ३८ लब्धि हुई, इसको १८ कलामें घटाया तो १३ २९ । २२ शेष रहा, इसको और पूर्वोक्त लब्धि ४ । ३० । ३८ को परस्पर गुणा किया तो कलादि ६० । ५० । ४१ यह गुणनफल हुवा. इसको ६ अंश १८ कलामें घटाया तो ५ । १७ । ९ यह अंशादि शेष रहा, इसको कलात्मक ५। १७ । ९ मानकर इसका पूर्वोक्त गुणनफल ६० । ५० । ४१ में भाग दिया तो लब्ध अंगुलादि ११ । ३० नति हुई, पूर्वोक्त नतांश दक्षिण होनेसे नति ११ । ३० दक्षिण है, इसका और पूर्वोक्त चन्द्रशर अंगुलादि ३ । २० उत्तर परस्पर संस्कार भिन्न दिशाके होनेसे अन्तर किया तो ८ । १० यह स्पष्ट शर दक्षिण हुवा।

अब इसी स्पष्टशर ८ । १० से ही चन्द्रग्रहणवत् सूर्यचन्द्र बिंब **मध्यस्थिति** आदि लाते हैं–सूर्यगति ६१ । १६ से (ग्र. ला. सा. च० नं० ६७ से) सानुपात अंगुलादि ११।९ यह सूर्यबिम्ब हुवा और चन्द्रगति ८४९ । ४३ से सानुपात अंगुलादि ११ । ३० यह चन्द्र-बिंब हुवा. इन दोनोंके योग २२ । ३९ का आधा ११ । २० यह मानैक्यखंड हुवा. इसमें स्पष्टशर ८ । १० को घटाया तो शेष अंगु-लादि ३ । १० यह ग्रास हुवा। इसको सूर्यबिंब ११ । ९ में घटाया तो शेष ७। ५९ यह शेषबिंब हुवा।

अब मध्यस्थिति लाते हैं–मानैक्यखंड ११ । २० में स्पष्ट शर ८ । १० को जोडा तो १९ ।३० हुवा इसको १० से गुणा किया तो १९५ । ०० हुवा। इसको ग्रास ३।१० से गुणा किया तो ६१७।३० यह लब्ध हुवा इसके वर्गमूल २४। ५२ को ५ से गुणा करके १२४।२० इसमें ६ का भाग दिया तो २० । ४३ । २० यह लब्ध हुवा, इसमें चन्द्रबिंब मान ११ । ३० का भाग दिया तो लब्ध घटिकादि १ । ४८ मध्यस्थिति हुई। मध्यस्थिति १ । ४८ को ६ से गुणा करके अंशादि १० । ४८ । ० गुणनफलको त्रिभोनलग्न ९।१५।५२। ३१ में घटाया तो ९ । ५ । ४ । ३१ यह स्पर्श त्रिभोनलग्न हुई। इसमें अयनांश २३ । २३ । ४५ को जोडकर ९ । २८ । २८।१६ के

भुजांश ६१ । ३१ । ४४ से (ग्र. ला. सा. चक्रन० ६२ से) सानुपात अंशादि २० । ५२ । ३१ यह सूक्ष्मक्रांति हुई, तुलादि होनेसे दक्षिण हुई। इसका और दक्षिण अक्षांश २८ । २७ । ३६ का संस्कार एक दिशा होनेसे योग किया तो ४९ । २० । ७ यह दक्षिण नतांश हुए। इनमें २२ का भाग दिया तो २ । १४ । ३३ यह लब्ध हुवा. इसका वर्ग किया तो ५ । १ । ४२ हुवा. इसमें २ अंशसे अधिक होनेसे २ अंश घटाये तो ३।१।४२ रहा, इसका आधा १ । ३०।५२ इसको पूर्वोक्त वर्ग ५ । १ । ४२ में जोडा तो ६ । ३२ । ३४ हुवा। इसमें १२ अंश और जोडे तो १८।३२।३४ यह हार हुवा ॥

अब दर्शांतकालीन स्पष्टरवि ९ । ० । २९।२९ गति ६१ । १६ में मध्यस्थिति घटिकादि १।४८ का चालन ऋण फलकलादि १।५० को सूर्यमें ऋण करा तो ९ । ० । २७ । ३९ यह स्पर्शकालीन सूर्य हुवा इसको और स्पर्श त्रिभोन लग्न ९ । ५ । ४ । ३१ का अन्तर किया तो ० । ४ । ३६ । ५६ यह हुवा। इसके अंशादि ४ । ३६ । ५६ में १० का भाग दिया तो ० । २७ । ४१ लब्ध हुवा. इसको १४ अंशमें घटाकर १३ । ३२ । १९ से परस्पर गुणा किया तो ६ । १४ । ४८ यह गुणन फल हुवा. इसमें हार १८ । ३२ । ३४ का भाग दिया तो घटिकादि ० । २० यह स्पर्शलंबन हुवा, स्पर्शकालीन सूर्यसे स्पर्श त्रिभोन लग्न अधिक होनेसे लंबन धन है । पुनः मध्यस्थिति १ । ४८ को ६ से गुणा करके अंशादि १० । ४८ को त्रिभोनलग्न ९ । १९ । ५२ । ३१ में धन किया तो ९ । २६ । ४० । ३१ यह मोक्षकालीन त्रिभोनलग्न हुई। इसमें अयनांश २३।२३।४५ जोडकर १०।२०।४।१६ इसके भुजांश ३९।५५।४४ द्वारा (ग्र, ला. सा. चक्र ६२ से) सानुपात अंशादि १९ । ३ । ४३ यह सूक्ष्मक्रांति हुई। तुलादी होनेसे दक्षिण है । इसको और दक्षिण अक्षांश २८ । २७ । ३६ का संस्कार एक दिशामें होनेसे योग किया तो ४३ । ३१ । १९ यह दक्षिण नतांश हुए, इनमें २२ का भाग दिया तो १ । ५८ । ४१ लब्धि हुई। इसका वर्ग किया तो

३ ।५४।४५ हुवा. इसमें २ अंशसे अधिक होनेसे २ अंश घटाकर शेष १।५४।४५ का आधा ० । ५७ । २३ इसको पूर्वोक्त वर्ग ३।५४।४५ में जोडा तो ४।५२।८ यह हुवा इसमें १२ अंश और जोडे तो १६।५२।८ यह हार हुवा।

अब दर्शांतकालीनस्पष्टरवि ९।०।२९।२९ गति ६१।१६ में मध्यस्थिति १।४८ का चालन धनसे फलकलादि १।५० को सूर्यमें धन किया तो ९।०।३१ । १९ यह मोक्षकालीन रवि हुवा. इसका और मोक्षकालीन त्रिभोनलग्न ९।२६।१०।३१ का अन्तर किया तो ० । २५ । ४१ । ६ यह हुवा इसके अंशादि २५।४१।६में १० का भाग दिया तो लब्ध २ । ३४ । ६ हुए इसको १४ अंशोंमें घटाकर शेष ११।२५।५४ से परस्पर गुणा किया तो २९।२१।३७ यह गुणन फल हुवा। इसमें हार १६।५२।८ का भाग दिया तो लब्धि घटिकादि १।४४ यह मोक्षलंबन हुवा, सूर्यसे त्रिभोन लग्न अधिक होनेसे लंबन धन है।

अब स्पर्श और मोक्ष काल दिखाते हैं-दर्शांत १३ । ३१ में मध्यस्थिति १।४८ को घटाया तो शेष ११ ।४३ रहा इसमें स्पर्श लंबन ०।२० धनको जोडा तो १२ । ३ यह स्पर्शकाल हुवा। फिर दर्शांत घटिकाओं १३।३१ में मध्यस्थिति १।४८ को जोडा तो १५।१९ हुवा इसमें मोक्षलंबन १।४४ धनको जोडा तो १७।३ यह मोक्षकाल हुवा. मोक्षकाल १७।३ में स्पर्शकाल १२ । ३ को घटाया तो ५।० यह ग्रहणका पर्वकाल हुवा॥

अब अयनवलन साधते हैं-पर्वांत कालीन स्पष्टरवि ९ । ० । २९।२९ में ३ राशि (सूर्य ग्रहण होनेसे) जोडी तो ०।०। २९।२९ हुए इसमें अयनांश २३ । २३ । ४५ को जोडा तो ०।२३।५३।१० हुवा, इसकी भुज राश्यादि ०।२३।५३।१० है तथा भुजांश २३।५३।१० हुए, राशि शून्य होनेसे १ प्रथम खंड ७ से अंशादिको गुणा किया तो १६७।१२।१० हुए, इसमें ३० का

भाग दिया तो लब्ध अंगुलादि १ । ३४ यह अयनवलन हुए, सायन-रवि मेषादौ होनेसे उत्तर है ।

अब **मध्यनत** लाते हैं–सूर्य ग्रहणके मध्यकाल १४ । २६ और दिनार्द्ध १३ । २ (पूर्वोक्त) का अन्तर किया तो १ । २४ नत पश्चिम हुवा (दिनार्द्धके बाद मध्य काल है इससे नत पश्चिम है) ।

अब **अक्षवलन** साधते हैं–मध्यनत १ । २४ पश्चिममें ९ का भाग दिया तो लब्धि राश्यादि ०० । ८ । २४ । ०० हुई (अथवा १ । २४ नतमें ६ से गुणा किया तो भी अंशादि ८ । २४ । ०० हुए) इसमें अयनांश नहीं मिलाकर इसीसे वलन साधते हैं–राशिस्थान शून्य है इसलिये प्रथमखंड ७ से अंशादि ८ ।२४ । ० को गुणा करके ५८ । ४८ । ० इसमें ३० का भाग दिया तो लब्ध अंगुलादि १ । ५७ यह वलन हुए। इसको पलभा ६ । ३३ से गुणा करके १२ । ४६ । २१ इसमें ५ का भाग दिया तो लब्ध अंगुलादि २ । ३३ यह अक्ष वलन हुवा, मध्यनत पश्चिम है इससे अक्षवलन दक्षिण है ।

अब **वलनांग्रि** साधते हैं–पूर्वोक्त अयन वलन अंगुलादि ५ । ३४ उत्तर और अक्षवलन अंगुलादि २ । ३३ दक्षिण है, भिन्न दिशाके होनेसे परस्पर अन्तर किया तो अंगुलादि ३ । १ उत्तर हुवा इसमें ६ का भाग दिया तो लब्ध अंगुलादि ०।३० उत्तर यह वलनांग्रि हुवा।

अब **ग्रासांग्रि** लाते हैं–ग्रास ३ । २० को ६० से गुणा किया तो २०० । ०० हुए इसमें मानैक्य खंड ११।२० का भाग दिया तो लब्ध १७ । ३८ हुवा. इसका वर्ग मूल लिया तो अंगुलादि ४ । १२ यह ग्रासांग्रि हुवा ।

इसीप्रकार ग्रहणोंका गणित करना चाहिये, मकरन्द और ग्रह-लाघवीय गणितसे अन्तर पडता है क्योंकि मकरन्दानुसार ग्रास अंगुलादि ६ । ३० है (पूर्वोक्त गणितमें देखो) और ग्रहलाघवा-नुसार ग्रास ३ । १० है अर्थात् अंगुलादि ३ । २० का अन्तर है, यह बडा अन्तर है क्योंकि नवग्रहण अंगुलादि ३ । २० मकरन्दसे हो तो ग्रहलाघवसे अभाव जाने इत्यादि । इसका कारण केवल राहु है इस-लिये ग्रहलाघवीय राहुद्वारा ग्रहण गणितकरना चाहिये ।

अब प्रथम ग्रहणकी आकृतिद्वारा स्पर्श मध्य मोक्ष दिखलाकर फिर राहुके अन्तर की जाननेकी सारिणी तथा क्रम लिखेंगे.

अब ग्रहणकी दिशा जाननेके लिये आकृति बनाकर स्पर्शादिकी दिशाको स्पष्ट दिखलाते हैं-

सूर्यग्रहणकी आकृति।
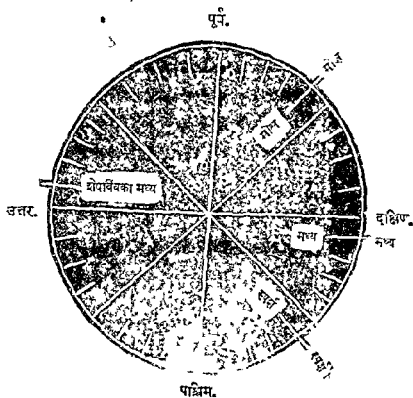
अंगुलादि

सूर्यबिंब	११ । ९	
चन्द्रबिंब	११ । ३०	
ग्रास	३ । १०	
स्पष्टशर	८ । १०	दक्षिण
वलनाग्र	० । ३०	उत्तर
ग्रासाग्र	४ । १२	

स्पष्ट शर ८।१० दक्षिण है इसलिये दक्षिणके बिन्दुसे वलनांग्रि ०।३० उत्तर होनेसे उत्क्रमसे अर्थात् वाम हाथसे दक्षिणहाथकी तरफको चिह्न दिया तहां ग्रहणका मध्य होगा, इसके ठीक सामने चिह्न दिया वहां शेष बिंबका मध्य होगा। अब मध्य चिह्नसे ग्रासांग्रि ४।१२ को पश्चिमकी ओरको दिया तहां ग्रहणका स्पर्श होगा और पूर्वकी ओरको दिया तहां ग्रहणका मोक्ष होगा। इसी प्रकार त्रिज्या (व्यासार्द्ध) से आकृति बनाकर स्पर्श मोक्ष आदिका स्थान जानना चाहिये।

यह सूर्य ग्रहण नहीं हुवा था कारण कि उत्तरके व्यग्वर्कके ८ अंशसे कम अंश. परंतु मकरन्द और ग्रहलाघवसे ग्रहण होना पाया गया इसी कारण इसी ग्रहणका उदाहरण दिखाया गया.

इति ग्रहणाधिकार समाप्त।

अब यह जानना चाहिये कि, ग्रहलाघवीय राहु किसप्रकार जाना जावे इसलिये ग्रहलाघवीय और मकरन्दीय राहुका अन्तर बतलाकर १ चक्र (सारिणी) बनाते हैं जो सदैवको काम आवेगी। मकरन्दके अनुसार राहु १ दिनमें जितना चलता है ऋणको १२ राशिमें घटानेसे धनगति होजाती है अर्थात् १ दिनमें धनगति अंशादि ५९।५६।४९।१५।५।०।१७।३६।०।०।० इतना चलता है और ग्रहलाघवीय अंशादि ५९।५६।४९।१२।४७। १९।५०।२६।१७।४१।२१।१८ इतना चलताहै इसका अन्तर करनेसे अंशादि ०।०।०।२।१७।४०।२७।९। ४२।१८।३८।४२ इतना हुवा अर्थात् प्रत्येक दिनमें इतना ग्रहलाघवीयानुसार कम चलता है जिसके अन्तरका चक्र नीचे बनाया है—

१ मेरी बनाई गंगाधर बृहत्सारिणीमें यह विषय मछे प्रकार समझाया गया है नवीन ग्रहगणिताधारसे चन्द्रमें तिथिकेन्द्र फलच्युति केन्द्रफल तथा पार्वीण केन्द्रफलका संस्कार किया गया है जो प्राचीन ग्रन्थोंमें नहीं है। व्यग्वर्ग यहां उत्तर है और ८ अंशसे कम है इस कारण ग्रहण नहीं हुआ है जैसा कि मेरी बनी पचांग रत्नावली पुस्तमें लिखा है।

क्षेपक कलादि २३।२१ युक्त करके फिर मकरन्दीय राहुमें घटानेसे ग्रहलाघवीय राहु होता है.

मकरन्द ग्रहलाघवीय अंतर सारिणी.

अंशादि पटलंब.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
	००	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	००	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	००	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	२२	००	०	१	१	१	२	३	३	२	३	४	४	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११
	५६	२२	४५	८	२१	५४	१७	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१५	३८	१	२४	४७	१०	३३	५६	१९	४२	५
	४८	५६	५३	५०	४६	४३	४०	३७	३३	३०	२७	२४	२०	१७	१४	११	७	४	१	५८	५४	५१	४८	४५	४१	३८	३५	३२	२८	२५
	३१	४४	२९	१३	५८	४२	२७	११	५६	४०	२५	९	५४	३८	१२	७	५२	३६	२१	६	५०	३५	१९	४	४८	३३	१७	२	४६	३१
	३७	३१	३	३४	६	३८	९	४१	१२	४४	१६	४७	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२२	०	३२	३	३५	७	३८	१०	४२	१३	४५	१६
	३	३७	१४	५१	२८	५	४२	१९	५६	३३	१०	४७	२४	१	३८	१५	५२	२९	६	४३	२१	५८	३५	१२	४९	२६	३	४०	१७	५४
	६	३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	३१	३४	३७	४०	४३	४६	४९	५२	५५	५९	२	५	८	११	१४	१७	२०	२३	२७	३०
	२७	६	१२	१९	२५	३२	३८	४५	५१	५८	४	१०	१७	२३	३०	३६	४३	४९	५६	२	९	१५	२१	२८	३४	४१	४७	५४	०	७
	००	२७	५४	२१	४८	१५	४२	९	३६	३	३०	५७	२४	५१	१८	४५	१२	३९	६	३३	०	२७	५४	२१	४८	१५	४२	९	३६	३

अग्राङ्क पटल	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	११	११	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१८	१८	१९	१९	१९	२०	२०	२१	२१	२१	२२	२२
	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	८	३१	५४	१७	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२४	४७	१०	३३
	२२	१९	१८	१२	९	५	२	५९	५६	५२	४१	२६	४३	३९	३६	३३	३०	२६	२३	१०	१७	१३	१०	७	४	०	५७	५४	५१	४७
	१५	०	४४	२९	१३	५८	४१	२७	१२	५६	४५	२५	१०	५४	३९	२२	८	५२	३७	२१	६	५०	३५	१९	४	४८	३३	१८	२	४७
	४८	२०	५१	२३	५४	२६	५८	२९	१	३३	४	३६	७	३९	११	४२	१४	४६	१७	४९	२०	५२	२४	५५	२७	५८	३०	२	३३	८
	३१	८	४५	२२	५९	३६	१३	५०	२८	५	४७	१९	५६	३३	१०	४७	२४	१	३८	१५	५२	२९	६	४७	७	५७	३४	११	४९	२६
	३३	३६	३९	४२	४५	४८	५१	५४	५८	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२६	२९	३२	३५	३८	४१	४४	४७	५०	५४	५७	०	३
	१३	१९	२६	३२	३९	४५	५२	५८	५	११	१८	२४	३०	३७	४३	५०	५६	३	९	१६	२२	२८	३५	४१	४८	५४	१	७	१४	२०
	३०	५७	२४	५१	१८	४५	१	२९	६	३३	७	२७	५४	२१	४८	१५	४२	९	३६	३	३०	५७	२४	५१	१८	४५	१२	३९	६	३३

इसी प्रकार प्रत्येक मध्यम ग्रहकी भी सारिणी वन सकती है अर्थात् इसका छठा भाग अंशादि ० । ० । ० । ० । २२ । ५६ । ४४ ॥ ३१ । ३७ । ३ । ६ । २७ । को प्रथम कोष्ठमें रखकर ६० कोष्ठोंमें इतना २ ही जोडकर रखदियें ।

शाके १४४२ चैत्र शु० १ भौमे इस दिनसे ग्रहलाघवीय गणित आरम्भ हुवा है इसके १ दिन पहले अर्थात् सोमवारको ग्रहलाघवीय राहु राश्यादि ० । २७ । ३८ । ० (क्षेपक) था और इसी दिन मकरन्दीय अहर्गणके सर्व दिन १६८७८५१ थे तथा वल्ली हुई ७ । ४८।५०।५१ इतनी थी वल्ली द्वारा मकरन्दसारिणीसे राहु लानेसे राश्यादि ० । २७ ।५९ । २८ यह अर्द्धरात्रिका हुवा प्रातः ६ बजेका बनानेपर क्योंकि (ग्रहलाघवीय राहु प्रातः ६ बजेका है) राहुकी कलादि ३ । ११ वक्रगतिका ¾ पौंना कलादि २ । २३ को और जोडा तो (ऋण उलटा धन किया) राश्यादि० । २८ । १ । ५१ यह प्रातः ६ बजेका हुवा. इसका और ग्रहलाघवीय ० । २७ । ३८ । ० अन्तर किया तो राश्यादि ० । ० । २३ । ५१ उस समय इतना कम था अर्थात् मकरन्दीयमें इतना ऋण करना था ।

अब इसका यह क्रम है कि, मकरन्दीय दिनग्रह वल्लीमें, पूर्वोक्त वल्ली ७ । ४८ । ५० । ५१ घटाकर जो शेष रहे (यह शेष है जो ग्रहलाघवीय अहर्गण है) शेप वल्ली द्वारा राहुकी अन्तर सारिणीसे मध्यम ग्रह लानेकी भांति लाकर उसे ६ गुणा करके जो राश्यादि हो उसमें पूर्वोक्त अन्तर कलादि २३ । ५१ जोड लेवे जो प्राप्त होय उसको मकरन्दीय राहुमें घटा देनेसे जो राश्यादि होय वह प्रातः ६ बजेका ग्रहलाघवीय राहु स्पष्ट होजावेगा ।

अब इसका उदाहरण समझाते हैं-संवत् १९८२ शाके १८४७ माघ कृष्ण ३० गुरौ इस दिन मकरन्दीय ग्रह दिन वल्ली पूर्वोक्त ८।३०।१ । ५ है और अस्योपरि राहु प्रातः ६ बजेका पूर्वोक्त राश्यादि ३ । ४ । ४८ । १६ हैं इसी दिन प्रातः ६ बजेका ग्रहलाघवीय राहु

जानना है तो दिन वल्ली ८। ३०। १। ५ में ७। ४८।५०।५१ को घटाया तो शेष वल्ली ०। ४१। १०। १४। हुई (यह ग्रहलाघवीय अहर्गण भी होगया) इस शेष वल्ली ०। ४१। १०। १४ के अनुसार अन्तर राहु चक्र द्वारा मध्यम ग्रह साधनकी भाँति बनाया तो राश्यादि ०। १। ३४। २८ हुवा। इसमे पूर्वोक्त अन्तर कलादि २३। ५१ को जोडा तो राश्यादि ०। १। ५८। ९ यह स्पष्टअन्तर हुवा इसको मकरन्दीय राहु ३। ४। ४८। १६ मे घटाया तो राश्यादि ३। २। ४९। ५७ यह ग्रहलाघवीय राहु स्पष्ट होगया। यह भी प्रातः ६ बजेका हुवा। इसी प्रकार बनालेना चाहिये और जिस ग्रहका अन्तर जानना हो सो भी इसी प्रकार सारिणी बनाकर जान सकता है।

शेष वल्ली०। ४१। १०। १४ द्वारा अभ्यास।

	०। ०। ०। ५
मकरन्दीय ३। ४। ४८। १६	०। ०। ३। ४९
अन्तर ०। १। ५८। १९	०। १५। ४०। ४६
ग्रहलाघवीय ३। २। ४९। ५७	०। १५। ४४। ४०
	६ गुणा
	०। १। ३४। २८
	अन्तर कलादि २३। ५१ पूर्वांतर
	०। १। ५८। १९

अब संवत्सर प्रवेश ज्ञानविधि उदाहरण लिखते हैं—

शाकेको २ स्थानोंमें रखकर एक स्थानमें २२ से गुणाकरके ४२९१ जोडकर १८७५ का भाग देवे जो वर्षादि लब्धि हो सो केवल वर्ष जानकर दूसरे स्थानके शाकेमें जोडकर ६० का भाग देकर शेषमें एक और जोडकर प्रभवादि संवत्सर जाने और जो (वर्षादि लब्ध मेंसे वर्ष निकालकर मासादि होयँ) मासादि है वह भुक्त मासादि जाने। भुक्त मासादिको १२ मासमें घटानेसे जो शेष रहे सो उस संवत्सरके भोग्य मासादि जाने। यह मासादि सूर्य राशि सूर्यमास तुल्य जाने। उसकालसे फिर आगेवाला संवत्सर प्रवेश करेगा। इस सिद्धान्तसे यह

संवत्सरज्ञानचक्रम्।

प्लवंग	४१	सर्वजित्	२१	प्रभव	१
कीलक	४२	सर्वधारी	२२	विभव	२
सौम्य	४३	विरोधी	२३	शुक्ल	३
साधा'ण	४४	विकृत	२४	प्रमोद	४
विरोधक	४५	खर	२५	प्रजापति	५
परिधावी	४६	नन्दन	२६	अंगिरस	६
प्रमादी	४७	विजय	२७	श्रीमुख	७
आनन्द	४८	जय	२८	भाव	८
राक्षस	४९	मन्मथ	२९	युवा	९
नल	५०	दुर्मुख	३०	धाता	१०
पिंगल	५१	हेमलंब	३१	ईश्वर	११
कालयुक्त	५२	विलंब	३२	बहुधान्य	१२
सिद्धार्थ	५३	विकारी	३३	प्रमाथी	१३
रौद्र	५४	शर्वरी	३४	विक्रम	१४
दुर्मति	५५	प्लव	३५	वृष	१५
दुंदुभि	५६	शुभकृत्	३६	चित्रभानु	१६
रुधिरोद्गारी	५७	शोभन	३७	सुभानु	१७
रक्ताक्ष	५८	क्रोधी	३८	तारण	१८
क्रोधन	५९	विश्वावसु	३९	पार्थिव	१९
क्षय	६०	पराभव	४०	व्यय	२०

(संवत्सरके विश्वाआदि ज्ञान तथा संक्रांति वाहनादि विवाह लग्नादि साधनक्रम मेरी बनाई गंगाधर बृहत्सारिणीके अंतमें है।)

विनय.

हे जगदीश सुनहु विनती मोरी भक्ति अचल हृदय बिच पाऊं।
घटभीतर त्रिवेणी संगम प्रेम सहित अस्नान कराऊं ॥
जो जो भोजन मिलै रैनदिन जो कछु खाँउ सो भोग लगाऊं ॥१
जो कहिं चलौं करौं परिकरमा पवन चलत सोइ चँवर डुलाऊं।
अनहद बाजे बजत रैनदिन कहा शंख मृदंग बजाऊं ॥ २ ॥
सुष्मन सेज अधर गगनामें कृपा करहु प्रभु तब चलिआऊं।
अंगुरी पकड़के पहुंचा पकड़हुँ कंठ लागि उर तपन बुझाऊं ॥३
सचराचर प्रभु सबमें व्यापक सहजभाव घटहीमें पाऊं।
भजन प्रभाव पितर सब तारौं जन्मजन्मके पाप नशाऊं ॥४॥
अगुण सगुणसे उच्च नाम धन सुन प्रताप जियमें हर्षाऊं।
सो निर्विघ्न दान प्रभु दीजे जगतपिता मैं बाल कहाऊं ॥ ५ ॥
सदा सहायक भक्तवत्सल प्रभु निशिदिन मैं तेरो यश गाऊं।
भक्त अनेक दयानिधि तारे कौनकौनके नाम गिनाऊं ॥ ६ ॥
मन दासी कर्मनके सबफल पांचपचीस अरु तीन गुणाऊं।
इनमें कहो कहा है मेरो है सब तोर तोहि सौंपाऊं ॥ ७ ॥
मैं अजान प्रभु अन्तर्यामी बिन जाने किस विधि बतलाऊं।
जासों रीझ होय सो दीजे जिस विधि भगवन् तोहि रिझाऊं॥८
तो प्रभु दया करहु दयामय कौन यतनसे तरनि चुकाऊं।
क्षमा करहु आयो शरणागत शांति देहु प्रभु तब सुख पाऊं९॥
सतगुरु दीनदयालु दयासो सबसंतनको शीश नवाऊं।
गुरु हरिशरण दास गंगाधर चरणकमल पर बलि बलि जाऊं१०

दोहा–है सबमें सबसे अलग, जैसे गगन अखंड।
गंगाधर प्रभु अकथ है, रोम रोम ब्रह्मंड।

इति श्रीज्योतिषी गंगाधर टंडन हरदोई (अवध) निवासीकृत
मकरंदसारिणी भाषा सोदाहरण सोपपत्ति सम्पूर्ण ॥